रचयिता

रघुवीर शरण 'मित्र'

प्रकाशक
भारतीय साहित्य प्रकाशन
२३२-स्वराज्य पथ,
सदर, मेरठ

तृतीय संस्करण
दीपावली, १९६०

मूल्य १५.००

मुद्रक
निष्काम प्रेस,
मेरठ

अमृत के दानी को अर्घ्य

प्राण का दीपक बुझा कर,

सो गई कविता चिता पर,

किन्तु उसकी एक अद्भुत ज्योति जग मे जल रही है ।

हृदय की जलती चिता पर—

आँसुओ का काव्य लेकर—

ढूँढती गति एक जिन्दा लाश जग मे चल रही है ।

महाकाव्य लिखते लिखते एक दिन मैने कहा —

"कहते है महाकाव्य की पूर्ति पर किसी निकटवर्ती की मृत्यु होती है।"

उसने बिना एक पल भी सोचे तुरन्त कहा—

मेरी मृत्यु होगी क्योंकि मै ही आपके सबसे अधिक निकट हूँ।"

और जब महाकाव्य के अन्तिम सर्ग मे अन्तिम पद्य लिख रहा था तो वह इस ससार से विदा हो गई। पर देह से दूर होकर वह प्राणो मे मिल गई है। तब मै उसे मिट्टी की उस देह मे देखता था जिसे हम गगा तट पर जला आये, और अब वह मुझे मन मे दिखाई देती है।

भूमिका

कई महीने बीत चुके "मित्र जी" ने जब "जननायक" का कुछ अंश पढ कर मुझे सुनाया था तो सुन कर मेरे हृदय पर अच्छा प्रभाव पडा था और मैने उनका आग्रह मानकर कहा था कि जब यह पुस्तक छप कर तयार हो जायेगी तो मै चन्द शब्द भूमिका के रूप मे लिख दूँगा।

इसी आशा से जैसे जैसे पुस्तक छपती गयी वह मेरे पास छपे फारम भेजते गये पर समयाभाव के कारण मै उसे पढ नही पाया। अब जब उसके प्रकाशित होने के दिन आ गये तो मैंने उसे उलट पुलट कर देखा।

मैं कवि नहीं हूँ और न अपने को कविता का पारखी मानता हू। जिस तरह साधारण मनुष्य कविता पढते है और उसमें रसास्वादन पाते है, वसा ही मै भी करता हूँ। मुझे इस मे रस मिला।

यह केवल एक छन्दबद्ध महात्मा गाँधी जी के जीवन की कहानी मात्र नहीं हैं। इसमें ओज ह, सुन्दर वर्णन है, करुणा हैं, और ललकार भी है।

आशा ह पाठक इसे अपनायेगे।

राजेन्द्र प्रसाद

साधुवाद

'जननायक' २१ सर्गो का बडा काव्य है। महात्मा गाँधी का जीवन इसका विषय है। उनके जन्म से अन्त तक के उनके विस्तृत कार्यों का छन्दो मे यह कलात्मक वर्णन है। कवि ने गाँधी जी का चित्र उरेहने के लिये विस्तृत पट का सहारा लिया है। उनके जीवन की बहुत घटनाओ को सामने रखा है। साथ ही भारत के परिवर्तनशील इतिहास के एक महत्व-पूर्ण युग का रगमच खुल जाता है और बहुत मे परिचित पात्र अपना कार्य करते हुए दिखाई देते है। अत काव्य का बहुत बढ जाना स्वाभाविक था।

जैसे तुलसीदास जी ने रामायण मे राम के ईश्वरत्व का सदा सब घटनाओ मे स्मरण रखा है वैसे ही मित्र जी ने गाँधी जी के अद्भुत व्यक्तित्व और देवत्व को सब ही चित्रण मे मुख्य स्थान दिया है।

कवि की प्रतिभा काव्य भर मे दिखाई देती है। छन्द रचना मे मित्र जी सिद्धहस्त है। उन्होंने कई प्रकार के छन्दो का प्रयोग किया है और इस प्रकार पाठक को ऊबने की भावना से बचाया है। भाषा भी परिमार्जित और प्रौढ है।

बहुत स्थानो पर कविता मार्मिक और हृदय तल को छूने वाली है। काव्य को पढने पढने पाठक अपने भावो मे पवित्रता का सचार पाता है।

पुस्तक मुझे सुन्दर और उत्कृष्ट लगी। मित्र जी ने इस कृति से हिन्दी का उपकार किया है। मै उनको हृदय मे बहुत बधाई देता हूँ।

पुरुषोत्तमदास टण्डन

विचार और विवेचन

"मै यह नही जानता कि गणेशशंकर की आत्माहुति व्यर्थ गई। उसकी आत्मा मेरे दिल पर काम करती रहती है, और मुझे जब उसकी याद आती है तो उसकी ईर्ष्या होती है। इस देश मे दूसरा गणेशशंकर नही हुआ, उनकी परम्परा समाप्त हो गई, लेकिन वह इतिहास मे अमर हो गया। उनकी अहिंसा सिद्ध अहिंसा थी। उसी की तरह कुल्हाडी के प्रहार सहते हुए मै शान्तिपूर्वक मरूँ तो मेरी अहिंसा भी सिद्ध होगी। मेरा भी यह सुखस्वप्न है कि मै उसी की तरह मरूँ। एक तरफ से एक मनुष्य मुझ पर कुल्हाडी चला रहा हो, दूसरा दूसरी तरफ से बर्छी मार रहा हो, तीसरा लाठी मार रहा हो और चौथा लात और घूसे बरसाता जाता हो। ऐसी अवस्था मे भी मैं खुद शान्त रहूँ और लोगो से भी शान्त होने को कहूँ और खुद हँसता हुआ मरूँ, ऐसा भाग्य मै चाहता हूँ। मै चाहता हूँ कि मुझे ऐसा मौका मिले और आपको भी मिले।" —गाँधी जी

महात्मा गाँधी जी ने अपनी यह आकाक्षा अपनी शहादत के पौने आठ वर्ष पहले प्रकट की थी और "जो इच्छा करिहौ मन माही, राम कृपा कछु दुर्लभ नाही" इस सिद्धान्त के अनुसार, उनका वह 'सुखस्वप्न' पूर्ण हुआ और उन्हे भी उसी प्रकार की शानदार मृत्यु प्राप्त हुई, जैसी अमर शहीद गणेशशंकर जी विद्यार्थी को प्राप्त हुई थी।

सुप्रसिद्ध अमरीकन लेखक थोरो ने, जिनके कि महात्मा जी भी बडे प्रशंसक थे, एक जगह लिखा था — "Only half a dozen or so have died since the world began." यानी 'जब से इस सृष्टि का प्रारम्भ हुआ है, करीब आधे दर्जन आदमियो को ही असली मृत्यु प्राप्त हुई है।' इस परिभाषा के अनुसार भी महात्मा जी का शुभ नाम उस अल्प-संख्यक सूची मे शामिल किया जा सकता है। थोरो ने इस प्रसग मे एक

वडी मनोरजक वात कही थी। "लोगो को मै यह कहते हुए सुनता हूँ कि हम मर रहे है या मरने जा रहे है। यह सब वात फालतू है। मै उन्हे चुनौती देता हूँ कि वे मर कर दिखावे! उनमे जीवन ही कहाँ है, जो मरेंगे!"

महात्मा जी के जीवन की खूबी यही थी कि वे जिन्दा शहीद थे और मृत्यु भी उनको शहीदो जैसी ही मिली।

महात्मा जी जैसे महापुरुष शत शताब्दियो के बाद इस भूमि पर अवतरित होते है और यह सर्वथा स्वाभाविक है कि अनेक लेखक और कवि उनका गुणगान करके अपनी कलम को पवित्र करें। इस महाकाव्य के प्रणेता श्री रघुवीरशरण जी 'मित्र' की भी हार्दिक भावना यही रही है और उन्होने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये अनथक परिश्रम भी किया है। उनके इस श्रद्धापूर्ण यज्ञ की आलोचना करने की न तो मुझ मे योग्यता है और न इच्छा। वैसे मै पुस्तको को प्राय पढता नही। छापेखाने के इस युग मे उनकी सख्या इतनी अधिक है कि जन्म-जन्मान्तर तक भी उनको पढना असम्भव है। हाँ, ग्रन्थो के पीछे जो व्यक्तित्व होता है उसको पढने की अभिलाषा मेरे मन मे अवश्य वनी रहती है, पर उनके लिये समय चाहिये। खेद है कि अपने अस्तव्यस्त जीवन मे मुझे इतना वक्त नही मिला कि मित्र जी के व्यक्तित्व का विधिवत अध्ययन कर उनका एक सजीव रेखाचित्र ही प्रस्तुत कर देता, फिर भी दो चार वार मिलने पर जो भाव मेरे मन पर चित्रित हुए है, उन्हे यहाँ लिपिवद्ध किये देता हूँ।

मित्र जी हिन्दी जगत के लिये कोई नवीन व्यक्ति नही है। उन्होने पाँच छै उपन्यास लिखे है, जिनमे 'आग और पानी' काफी प्रसिद्ध है। कविता की छै किताबे लिखी है— यथा प्रतिध्वनि, जलते तारे, फांसी, प्रेरणा, वन्दी और गीले गीत। दो नाटक लिखे है और एक आलोचनात्मक ग्रन्थ। इनके अतिरिक्त वाल साहित्य की पन्द्रह किताबे भी आपने रची है।

इतनी रचनाओ के बाद भी उन्हे साहित्य क्षेत्र मे वह स्टेटस या पद

नहीं मिल पाया, जिनके कि वे अधिकारी हैं। इनके कई कारण हो सकते हैं। शायद मिश्र जी उन हथकंडों से वाकिफ नहीं हैं, जिनके बिना विज्ञापन की इस दुनिया में प्रतिष्ठा पाना अत्यन्त कठिन है। दूसरों को धक्का देकर आगे बढ़ने की प्रवृत्ति उनमें है ही नहीं। यह भी सम्भव है कि वे अपनी रचनाओं में वह चमत्कार न ला पाते हों, जो एक साथ हृदय पर काबू करने में समर्थ होता है और जिसके बिना बृहदाकार ग्रन्थ भी जहाँ के तहाँ पड़े रह जाते हैं। पर इतना हम अवश्य जानते हैं कि मिश्र जी में लगन है और परिश्रमशीलता भी, अन्यथा अपने कुल जमा तेंतीस वर्षीय जीवन में वे इतने ग्रन्थ न लिख पाते।

मिश्र जी ने दुनिया देखी है, हृदय के अन्तर्द्वन्द्व में वे गुजरे हैं और अनेक सामाजिक आघात उन्हें सहने पड़े हैं। उनकी कई फुटकर रचनाओं में उनका संघर्ष स्पष्ट बोल उठा है— यथा 'दोषी कौन ?' और 'द्रोपदी का घाव'। इस महाकाव्य में उन्हें कहाँ तक सफलता मिली है, इस प्रश्न का उत्तर देना कठिन है। एक बात तो स्पष्ट है, वह यह कि हिन्दी का कोई भी वर्तमान कवि ६०० पृष्ठों के विस्तृत मार्ग में पाठकों के मन को लगाये नहीं रह सकता। इसके लिये जिस अनन्त धैर्य की आवश्यकता है वह आज के औसत दर्जे के पाठक में है ही नहीं। पर महात्मा जी का जीवन बहुमुखी था और कार्यक्षेत्र अत्यन्त विस्तृत, सम्भवतः इसीलिये मिश्र जी को मजबूरन विस्तार करना पड़ा।

लेकिन यह दोष केवल मिश्र जी का ही नहीं, हिन्दी के अधिकांश कवियों तथा लेखकों का है। वे अपनी रचनाओं को कसते नहीं, उनमें काट छाँट नहीं करते। पर इसके बावजूद मिश्र जी की इस रचना के अनेक स्थल चमत्कारपूर्ण बन पड़े हैं। मिश्र जी को 'मोती' शब्द से बहुत प्रेम है, वह उनका तकिया-कलाम है। तीन चार पृष्ठ के भीतर १०-१२ 'मोती' हमें मिले। श्री सुमित्रानन्दन जी पन्त ने सुवर्ण या स्वर्ण का प्रयोग इतनी दफा किया है कि उसे देखकर आश्चर्य होता है। कवियों की ये छोटी छोटी कमजोरियाँ हमारा मनोरंजन करती हैं। 'मोती' शब्द के साथ साथ

सदूक्ति रूपी मोती भी मित्र जी की रचना मे यत्र तत्र विखरे पडे है।
यथा —

"पथ मे आशा और निराशा, चक्कर काटा ही करती हैं।
पर जो नही रुके बाधा से, बाधाये उनसे डरती हैं॥"

*

"यह धरती वियोग की क्रीडा।
यहाँ सभी को रोते देखा॥"

*

"जीवन वह जो पीडा मे भी शान्त रहे मुसकाता जाये।
जीवन के अनमोल पलो से खिलता और खिलाता जाये॥"

*

"जीवन-पथ पर चलते चलते, बडी बडी उलझन आती हैं।
आँखे कभी उठा करती हैं, कभी शर्म से झुक जाती हैं॥
मन मे टीस चीस होती है, फिर भी मुसकाना पडता है।
छाती को छलनी करके भी, मन को समझाना पडता है॥"

*

"ओ मनुष्य! तू बैठ न थककर, पथ के साथ साथ आगे बढ।
रुक न देखकर चट्टानो को, सागर मे घुस, पर्वत पर चढ॥"

*

"जो औरो के हृदय जीत ले, उसकी हार नही होती है।"

*

"मेघो मे बिजलियाँ छिपी हैं, फूलो मे अर्चन अधीर है।
किरणो मे आरती सजग है, विप्लव का वाहन समीर है॥"

*

"एक स्वर निकला अनेको गीत फूटे।
नमन धनु का था अनेको तीर छूटे॥"

*

"माँग मे सिन्दूर भर लाई उषा।
रँग शहीदो का चुरा लाई उषा॥"

एक बात से हमे आश्चर्य भी हुआ और हर्ष भी, वह यह कि अहिसा के पैगम्बर महात्मा जी की पवित्र चरित गाथा लिखते समय भी मित्र जी सशस्त्र क्रान्ति के पुजारियो को नही भूले और उनके प्रति मित्र जी ने न्याय ही किया है। पचशील के इस जमाने मे यह भावना युगधर्मानुकूल ही कही जायगी।

ईट उठाई अँगरेजो ने, पत्थर ले ये बढे अगाडी।
कवच पहिन कर चली देवियाँ, छोड छोड रेशम की साडी॥
बिस्मिल चले, लाहडी भभके, कूद पडे अशफाक समर मे।
सर से कफन, हृदय मे ज्वाला, बाँध बाँध पिस्तौल कमर मे॥

*

काकोरी के मुँह से सुन लो– इन वीरो की अमर कहानी।
स्वतन्त्रता के लिये मिटी है– इनकी उठती हुई जवानी॥

*

इतिहासो मे अमर रहेगी इन वीरो की अमर कहानी।
कवि की वाणी, माँ का मस्तक, इन बलिदानो पर अभिमानी॥
आओ हम इनकी समाधियाँ हृदय हृदय मे आज बना दे।
आओ हम इनके चरणो मे श्रद्धा के दो फूल चढा दे॥

इस ग्रन्थ के अनेक स्थल बडे सजीव बन पडे है। इसमे गाँधी जी के व्यक्तित्व का चित्रण अनूठा बन पडा है और इस काव्य मे गाँधी जी की पगध्वनि के साथ हमारा युग मुखर है। महात्मा जी के नेतृत्व मे सत्याग्रही वीरो की शहादत का वर्णन काफी प्रेरणाप्रद और स्फूर्तिमय है।

प्रकृति-पटी पर रक्तधार ने एक नया इतिहास लिख दिया।
वीर निहत्थो के शोणित ने ब्रिटिश राज्य का नाश लिख दिया॥

तिरगे झडे के विषय मे लिखी हुई पक्तियाँ भी काफी ओजस्वी बन पडी है —

तिरगा झूमता निकला,
गगन को चूमता निकला।

सिन्धु पर लहरता था वह,
शिखा पर फहरता था वह ॥
शहीदो की चिता पर था,
जवानी की अदा पर था।
देवियाँ गीत गाती थी,
जवानो को जगाती थी ॥

बापू के बलिदान का दृश्य निस्सन्देह काफी प्रभावोत्पादक है —

चुग्गा छोड दिया चिडियो ने, गउओ ने छोडे तृण खाने।
जलचर थलचर नभचर रो रो दु.ख दृगो से लगे बहाने ॥
पल भर मे सब पत्ते टूटे, ऋतु वसन्त मे पतझड आया।
सूरज ने मुँह ढका शर्म से, जो देखा वह रोता पाया ॥

निस्सन्देह मित्र जी ने इस महाकाव्य के अनेक स्थलो पर अपनी आत्मा उडेल कर रख दी है। ऐसे स्थलो पर उनकी भाषा और भाव दोनो सुन्दर बन पडे है और विभिन्न रसो का अच्छा परिपाक हुआ है। इसमे सन्देह नही कि यह काव्य हिन्दी के श्रेष्ठ ग्रन्थो मे गिना जायगा। उनका मगलाचरण जितना मार्मिक है '—

जिनकी चरण-धूलि चन्दन है, दीपक! उनके चरणो मे जल।
जिनकी पूजा मे प्रसाद है, वाणी! उनके मन्दिर मे चल ॥
जहाँ अनेक एक मे मिलते, काव्य-कला! उस सगम पर गा।
आँखे अर्घ्य चढाने आई, भक्ति! रसामृत-गगा भर गा ॥

उतनी ही प्रसादगुणयुक्त इस ग्रन्थ की इतिश्री भी है —

काल तुम को डस न पाया,
मौत को तुमने हराया।
तुम न मर कर भी मरे हो,
फूल मे खुशबू भरे हो।

हर चमन मे चहकते हो,
हर महक मे महकते हो।
आग पर चलते रहे तुम,
दीप से जलते रहे तुम।

तुम पुरातन पर नये हो,
चाँद सूरज दे गये हो।
तुम सुवह के रथ वने हो,
तुम पथिक से पथ वने हो॥

एक वात से हमे विशेष हर्ष हुआ, वह यह कि मित्र जी ने जहाँ सेनापति को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की है, वहाँ वे सिपाहियो को भी नही भूले। दक्षिण अफ्रिका की वीर सत्याग्रही शहीद 'वलिअम्मा' का भी उल्लेख उन्होने किया है।

यहाँ पर अपने दृष्टिकोण को प्रगट कर देना अप्रासगिक न होगा। हमारी समझ मे इतिहास और जीवन चरित लिखने की वह प्रणाली पुरानी पड चुकी है, जिसमे सारी की सारी कीर्ति रूपी मिठाई महान पुरुषो तथा सेनाध्यक्षो को ही अर्पित कर दी जाती है, जवकि तथाकथित क्षुद्र कार्यकर्ता और सिपाही विल्कुल उपेक्षित रह जाते है। इस अवसर पर हमे महात्मा जी के उन शव्दो की याद आती है, जो उन्होने दक्षिण अफ्रिका से विदा होते समय जोहान्सवर्ग मे कहे थे। महात्मा जी ने कहा था—"इस जोहान्सवर्ग नगरी मे कुमारी वलिअम्मा का जन्म हुआ था, जिसने सत्याग्रह-यज्ञ मे अपने प्राणो की आहुति दे दी। आज इस समय भी उसका चित्र मेरी आँखो के सामने है। वलिअम्मा मे श्रद्धा का भाव था, यद्यपि उसके पास वह ज्ञान नही था, जो मेरे पास है। सत्याग्रह किसे कहते है, यह वह नही जानती थी। वह यह नही जानती थी कि सत्याग्रह से दक्षिण अफ्रिका के समाज को क्या लाभ होगा, लेकिन फिर भी उसके हृदय मे असीम उत्साह था। वह जेल गई और वहाँ उसका स्वास्थ्य विल्कुल भग

हो गया, और वहाँ से निकलकर थोडे ही दिनो के भीतर वह चल बसी। इस जोहान्सवर्ग ने ही नागप्पन और नारायण स्वामी को भी जन्म दिया था। ये दोनो सुन्दर युवक अभी वीस वर्ष के भी न हुए थे कि इन्होने सत्याग्रह सग्राम मे अपने जीवन अर्पित कर दिये। मै और श्रीमती गाँधी तो आपके सामने जीवित खडे है। हम दोनो को तो काफी यश मिला है, पर उन लोगो ने तो विना किसी विज्ञापन या कीर्ति के काम किया था। वे यह नही जानते थे कि वे किधर जा रहे है। बस उन्हे इतना ही ज्ञान था कि जो कुछ हम कर रहे है, ठीक कर रहे है। यदि किसी को कही प्रशसा मिलनी चाहिये, तो उन तीनो को— वलिअम्मा, नागप्पन और नारायण स्वामी को— मिलनी चाहिये। वे ही इसके सुयोग्य अधिकारी है ।"

भारत के स्वाधीनता सग्राम मे भी वलिअम्मा, नागप्पन और नारायण स्वामी जैसे सैकडो दृष्टान्त मिल सकते है, पर क्या उन्हे एक जगह पर एकत्रित करने का प्रयत्न भी किसी ने किया है? महात्मा जी का जीवन चरित, चाहे वह गद्य मे हो या पद्य मे, लिखना आसान है, क्योकि उसके लिये मसाला प्रचुर मात्रा मे मौजूद है, पर उन अज्ञात सिपाहियो को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करना कठिन है, क्योकि उसके लिये लेखक को समस्त भारत की तीर्थयात्रा करनी पडेगी। हम उन लेखको या कवियो की प्रतीक्षा कर रहे है, जो वादविवादो के जजाल से ऊपर उठकर विना किसी भेदभाव के स्वाधीनता सग्राम के सिपाहियो को अपनी लेखनी द्वारा विस्मृति के गढे से निकाल सके। देखे इस भगीरथ प्रयत्न के लिये कौन कौन तय्यार होते है!

जिनके पास दिल्ली तक आने के साधन है, वे राजघाट पहुँच कर महात्मा गाँधी जी की समाधि पर फूल चढा सकते है, पर भारत के करोडो ही व्यक्तियो को इस राजधानी के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त नही हो सकता, इसलिये उनके आस पास ऐसे शहीदो के स्मारक होने चाहिये, जो उनके बीच मे से ही उत्पन्न हुए हो और जिनकी समाधि की तीर्थयात्रा वे आसानी से कर सके। जो लोग यह समझे वैठे है कि हमारे देश ने जो

स्वाधीनता प्राप्त करली है, वह विना किसी त्याग तथा वलिदान के अनन्त काल तक स्थायी वनी रहेगी, वे मूर्खों के स्वर्ग मे रहते है। 'Eternal vigilance is the price of liberty' 'निरन्तर जागरूक रहना ही स्वाधीनता का मूल्य है।' और इस निरतर जागरूकता के लिये यह अनिवार्यत आवश्यक है कि वलिदानो के दृष्टान्त जनता की आँखो के सामने वरावर मौजूद रहे।

इस ग्रन्थ के प्रणेता ने इस दृष्टि से अत्यन्त प्रशसनीय कार्य किया है, क्योकि महात्मा जी का वलिदान हमे युग युगान्तर तक प्रेरणा प्रदान करता रहेगा। इस काव्य मे इतिहास, राजनीति और सस्कृति का सुन्दर समन्वय है। पर एक वात को हम न भूले, वह यह कि जहाँ महात्मा जी महाकाव्य के अधिकारी है, वहाँ अन्य शहीद जीवन चरित अथवा खण्डकाव्य या एक दो कविताओ अथवा रेखाचित्रो के अधिकारी तो है ही। ग्राम ग्राम मे सतियो के जो स्मारक हमे अव भी दीख पडते है, वे इसी पवित्र भावना के प्रतीक है। वन्धुवर सियारामशरण जी गुप्त और भाई हरगोविन्द गुप्त ने अमर शहीद गणेशशकर जी विद्यार्थी पर अपनी अपनी काव्य पुस्तिकाये लिखकर जिस स्वस्थ परम्परा का श्रीगणेश किया था वह अभी विल्कुल ही अधूरी तथा अपूर्ण पडी है। और तो और चन्द्रशेखर आजाद पर भी खण्डकाव्य लिखने वाला हमारे यहाँ कोई कवि पैदा नही हुआ। श्री मन्मथ नाथ जी गुप्त ने उनका एक सक्षिप्त जीवन चरित अवश्य लिखा था और 'विप्लव' ने एक विशेपाक निकाला था।

अन्त मे एक निवेदन और भी। आज जितना ध्यान हम पद्य की ओर दे रहे है उसका शताश भी गद्य की ओर नही दे रहे। लोग इस वात को भूल गये है कि पद्य की तरह गद्य भी ओजपूर्ण वन सकता है। 'काकोरी के शहीद' नामक पुस्तक मे शहीद रामप्रसाद 'विस्मिल' ने अपने साथी अशफाक को जो श्रद्धाञ्जलि अर्पित की है वह प्रभावशाली गद्यकाव्य का एक नमूना है। इससे वढकर दुर्भाग्य की वात और क्या हो सकती है

कि उस ग्रन्थ का द्वितीय सस्करण अब तक नही छपा, पहला तो जब्त हो ही गया था।

बन्धुवर मित्र जी का मै कृतज्ञ हूँ क्योकि उन्होने मुझे इस वृहद् ग्रन्थ के प्राक्कथन के बहाने अपने विचार पाठको के सम्मुख रखने और साहित्यिक विवेचन करने का दुर्लभ अवसर प्रदान किया है। वैसे तो समस्त देश ही— बल्कि यो कहना चाहिये कि सम्पूर्ण ससार ही— महात्मा गाँधी जी का ऋणी है, पर मेरी तरह के सहस्रो ही व्यक्ति ऐसे भी है, जो व्यक्तिगत तौर पर बापू के कर्जदार रहे है। हम लोग जन्म-जन्मान्तर मे भी उस ऋण से मुक्त नही हो सकते, पर उसे– आशिक रूप मे ही सही– चुकाने के भिन्न भिन्न तरीके है। कोई भगवान की वन्दना करता है तो कोई भगवान के भक्तो की। मित्र जी को पहली पद्धति पसन्द है, हमे दूसरी। हम अपनी श्रद्धा के पुष्प केवल राजघाट पर ही नही, बल्कि समस्त देश मे फैले हुए उन पवित्र स्थलो पर चढाना चाहते है, जहाँ किसी ने समाधि नही बनाई, जो आज सर्वथा उपेक्षित पडे है, पर जिन्हे भूल जाना हमारे लिये घोर कृतघ्नता की बात होगी। वस्तुत हम दोनो के दृष्टिकोण परस्पर विरोधी नही, बल्कि पूरक है।

बधाई

श्री रघुवीर शरण 'मित्र' का लगभग ६०० पृष्ठो का महाकाव्य 'जननायक' देखकर वडी प्रसन्नता हुई। यह भारतवर्ष की जनता के सव से महान् नेता का केवल जीवन ही नही है बल्कि पिछले पचास-साठ वर्षो का जीवन्त इतिहास भी है। गान्धी जी के जीवन पर और भी ग्रन्थ लिखे गए है, और लिखे जायेगे। उनका जीवन कवियो को काव्य-स्फूर्ति देने का वहुत वडा प्रेरणादायक मन्त्र है।

महात्मा गान्धी आधुनिक युग के सव से श्रेष्ठ जननायक थे। उनके प्रत्येक आचरण मे सच्ची प्रेरणा और स्फूर्ति का स्वर भरा हुआ है। भारतवर्ष को विदेशी शासन के फौलादी पजे से निकालना उन्ही जैसे महापुरुप का करतव था। यह स्मरण रखने की वात है कि भारतवर्ष की राजनीतिक स्वतन्त्रता केवल एक देश को पराधीनता और परमुखा-पेक्षिता के पाश से मुक्त करने का प्रयत्न नही है वल्कि यह सारी मनुष्य जाति को मुक्त करने का प्रथम और मुख्य सोपान है। महात्मा जी ने भारतवर्ष के ४० करोड लोगो को विदेशी शासन से मुक्त करके समूचे विश्व की पददलित मानवता के उद्धार का कार्य किया है। भारतवर्ष के स्वाधीन होते ही जिस वेग से एशिया के अन्यान्य देशो के शिकजे टूटे हैं और अफ्रीका के देशो के शिकजे टूटते जा रहे है, वह इस वात के सवूत है, परन्तु यह नही समझना चाहिए कि राजनीतिक पराधीनता से मुक्ति दिलाकर गान्धी जी का कार्य समाप्त हो गया, वस्तुत वह शोपक और शोपित दोनो को लोभ और भय जैसे महान् शत्रुओ से उद्धार करने का साधु प्रयत्न है। अत्याचार से जो पीडित है वे तो सव प्रकार की दुर्दशाओ के शिकार होते ही है पर जो अत्याचारी है उनका भी कम पतन नही

होता। महात्मा जी ने कहा था कि भारतवर्ष की राजनीतिक स्वतन्त्रता स्वीकार करने से अग्रेज़ जाति का भी उपकार होगा। निस्सन्देह उनका कथन सत्य था। धीरे-धीरे अग्रेज जाति इस सत्य को अनुभव करती जा रही है और भविष्य मे भी अनुभव करेगी।

महात्मा जी भारतवर्ष की हज़ारो वर्ष की उच्चतम साधना के प्रतीक थे। उन्होने जिस मैत्री और सत्य का सन्देश दिया, वही भारतवर्ष का वास्तविक सन्देश है। उनके जीवन मे हमारी साधना का सर्वोत्तम मूर्त रूप धारण करके प्रकट हुआ है। ऐसे महापुरुष का जीवन यदि शताब्दियो तक ससार की जनता को प्रेरणा और स्फूर्ति देता रहा तो कोई आश्चर्य की वात नही।

मित्र जी ने सरल और ओजस्वी भापा मे और प्रसन्न शैली मे उनके जीवन को जनमनोग्राह्य वनाने का प्रयत्न किया है। जैसा कि मैने पहले कहा है यह भारतवर्ष का पिछले पचास-साठ वर्षो का जीवन्त, सरस और प्रेरणादायक इतिहास है। इन पक्तियो मे भारतवर्ष के अतीत, वर्तमान और भविष्य वोल रहे हैं। मित्र जी काफी अरसे से साहित्य की सेवा करते आ रहे है, परन्तु मेरा विश्वास है कि यह उनकी हिन्दी साहित्य को सर्वोत्तम देन है। कितना रम कर आपने इस महाकाव्य को लिखा है! पिछले वर्षो के सघर्षमय जीवन मे जो हलचल, आलोडन और विस्फोट हुए है, उनके भीतर महात्मा जी का व्यक्तित्व निष्कम्प दीपशिखा की भाँति जलता हुआ चित्रित हुआ है, जो कभी अन्धकार को पास फटकने नही देता।

इस सुन्दर कृति के लिये सहृदयगण निश्चय ही मित्र जी का उपकार मानेगे। मेरी हार्दिक वधाई!

मित्र

धरती चाहे अवतारों का अहसान न माने पर महात्मा गाँधी के पुण्यों से उऋण नहीं हो सकती। यदि बापू न आते तो धरती कभी की मर चुकी होती। सावित्री ने यम से सत्यवान के प्राण वापिस लिये थे, पर गाँधी जी के तप ने पृथ्वी के प्राण सुरक्षित रक्खे। विज्ञान की विनाशकारी ज्वाला उन चरणों को छूकर ही शान्त हो सकती है। बापू तन से ससार थे, मन से सबकी शान्ति थे और धन से धरती।

गाँधी जी का जन्म उस नयी विचारधारा का जन्म है जिससे शान्ति और सुन्दर व्यवस्था सुरक्षित है। धन्य है वह नये प्रकार की तलवार जो मनुष्य के शरीर को नहीं उसके मन और मस्तिष्क के विकारों को काटती रही, जो फूलों की सुगन्ध की तरह दिल और दिमाग में घुसी चली गई। कहा जा सकता है कि बापू के जन्म से तलवार को फूल का जन्म मिला, आग पानी बनकर प्रकट हुई, मृत्यु में जिन्दगी मुस्कराई।

इतिहास उनके चरणों से बदला है, पीड़ा को उनके प्राणों से शान्ति मिली है, मृतकों को उनकी वाणी ने जीवन दिया है, और दासता को उस मुक्त की महिमा से मुक्ति मिली है। गाँधी जी देश को स्वाधीन कराने वाले एक क्रान्तिकारी महापुरुष ही नहीं थे, अपितु उन्होंने हर कुरूपता पर अपना सौन्दर्य उड़ेला है। उन्होंने असुन्दर को सुन्दर किया है। न जाने कितने पाप उनके पुण्यों से दीपक राग बन गये। उनमें अद्भुत चमत्कार था। उनकी वाणी के स्पर्श से मृतक भी बोल उठे। जिसको उस महापुरुष की छाया मिल गई वह हार से जीत बन गया। बापू ने मिट्टी के खिलानों को जीवन दिया है। उन्होंने राख में से इन्सान बनाये है।

ऐसे ज्योतिवन्त को श्रद्धाजलि के रूप में मैंने 'जननायक' काव्य रचा है। न मेरे पास कोई महानता है न कोई कला, पूजा के लिये मेरे पास सुगन्धित फूल भी नहीं हैं, मन्दिर में आगे बढ़कर आरती करने का मेरे लिये मौका भी नहीं है। मैं तो दिवाली के मेले में अपने आप को एक

अछूत शलभ की तरह मानता हूँ। मुझे तो इतना ही अधिकार है कि दूर से अपने भगवान् की आरती उतारता रहूँ। भीड से छूटकर यदि दयालु की दृष्टि मेरी तरफ आगई तो ठीक है, नही आई तो भी मै प्रसन्न हूँ।

प्रसन्न इसलिये कि मै गाँधी जी के अमर तत्त्वों का पुजारी हूँ। बापू के चरणचिह्नों में चाँद और सूरज की अन्तर्मुखी ज्योति है। उनकी ध्वनि में शाश्वत सत्य है। पुरातन उनके प्रकाश से दमक उठा और नूतन उनकी कला से मुखर है। वे समन्वय की सुन्दर इकाई है। राम, कृष्ण और बुद्ध उनके हृदय में आ बसे थे। उनमें उन ऐतिहासिक देवताओं का अमृत हिलोरें लेता रहा जो भारतीय सस्कृति के प्राण-स्रोत है।

वह संध्या मेरी आँखों में है जब गाँधी जी शहीद हुए थे। उस समय शून्य भी रो रहा था। सारी धरती मातम मना रही थी, किन्तु मै रोया नहीं, पीडा कलम में भरली। मैने तभी से गाँधी जी पर महा-काव्य लिखने के विचार को क्रियात्मक रूप दिया। उस दिन से जब तक काव्य पूरा नहीं हुआ मै लिखने में लगा ही रहा। मेरे लिये लिखना कोई आसान काम न था। क्यो न था, यह मै क्या बताऊँ! यही कह सकता हूँ कि 'मति मम रक मनोरथ राऊ'। जैसे तैसे यह तीर्थ यात्रा मैने पूरी की।

'जननायक' का यह तीसरा सस्करण है। इसमें मैने कुछ घटाया है, कुछ बढाया है और कुछ बदला है। मनुष्य यदि अपनी कमियों को घटाता रहे, अच्छाइयो को बढाता जाये और घृणा को प्यार में बदलता रहे तो वह सुखो की सृष्टि करता हुआ दुःखो से छूटता चला जाता है। मनुष्य को वह छोड देना चाहिये जो अनावश्यक है। 'जननायक' में से मैने कुछ वह हटा दिया है जो मुझे आज असुन्दर या अनावश्यक लगा। मेरा यह घटाना बढ़ाना आपके लिये अमृत हो चाहे विष, मुझे डर नहीं। आप समर्थ है, देवताओ की तरह अमृत भी पी सकते हैं और शिव की तरह विष भी। आशा है, पुराने फूलो में नयी सुगन्ध आपको आनन्द देगी।

—रघुवीर शरण 'मित्र'

क्रम

प्रथम सर्ग

मंगल ज्योति

जिनकी चरण-धूलि चन्दन है, दीपक! उनके चरणो मे जल।
जिनकी पूजा मे प्रसाद है, वाणी! उनके मन्दिर मे चल ॥
जहाँ अनेक एक मे मिलते, काव्य-कला! उस सङ्गम पर गा।
आँखे अर्घ्य चढाने आई, भक्ति! रसामृत-गङ्गा भर गा ॥

आँसू वे हैं जो धरती पर, युग युग के दीपक बन जाये।
दीपक वे है जो मन्दिर मे, शलभो की आरती सुनाये ॥
पूजा उसकी जो विप पी ले, नर से नारायण बन जाये।
हलचल मे सन्तरण वही जो, तरणि विना तट तक खे लाये ॥

जीवन वह जो पीडा मे भी, शान्त रहे मुसकाता जाये।
जीवन के अनमोल पलो से, खिलता और खिलाता जाये ॥
जीवन और जवानी वह है, लहरो के प्रतिकूल चले जो।
मैं तो दीपक उसे कहूँगा, झझाओ के बीच जले जो ॥

पकज पर ब्रह्मा को देखे, सूर्य सजग हो छाया ताने।
प्यासी धरती की पीडा से, जाग उठे सोये परवाने ॥
राही वह है जो चल चल कर, सत्यम् शिवम् सुन्दरम् ला दे।
नमन उसे है जो जल जल कर, जन जन मे प्रकाश बरसादे ॥

कवि वह है जिसके जीवन मे, दीप-शिखा जल करे उजाला।
सुन्दरता वह नित्य नयी जो, अन्धकार मे गूँथे माला ॥
गति वह है जो समय बदल दे, प्रेम वही जो प्यास बढाये।
विरह वही जो रचना रच दे, पीर वही जो पार लगाये ॥

कसक रही पीडा जगल मे, मगल की चिर चाह लिये हूँ।
वल है बस आँखो के जल का, खारी जल मथ अमृत पिये हूँ।।
श्री गणेश, शारदे, नेति, जय! जग की पीडा मे कुछ गादो!
भावो के बादल घिर आये, शब्दो के मोती बरसादो!!

स्नेह जल चुका था दीपो का, नयन ज्योति को तरस रहे थे।
आहो से कम्पित धरती पर, रह रह आँसू बरस रहे थे।।
सूरज पर थे काले बादल, कमलो पर था घोर अँधेरा।
सान्ध्य पथिक तम की बटिया पर, ढूँढ रहा था स्वर्ण-सवेरा।।

तडप रही थी प्रकृति पतन मे, हृदय रक्त मे डूब रहे थे।
तन बन्दी था, मन रोता था, प्रेम-पथ से ऊब रहे थे।।
अमर पुत्र अमरत्व छोड कर, धरा रक्त से सीच रहे थे।
जग-जननी धरती माता की, खाल पुत्र ही खीच रहे थे।।

भारत माता सिसक रही थी, मानवता मुँह ढक रोती थी।
जड के पिँजरे मे चेतनता, आँखे बन्द किये सोती थी।।
पशुता के नगे नर्त्तन मे, विश्व-वेदना चसक रही थी।
क्रान्ति कैद थी, शान्ति बन्द थी, कवि की वाणी कसक रही थी।।

सिले हुए थे ओठ झूठ से, मन पिँजरो मे बन्द पडे थे।
सारे रत्न तीन तेरह थे, तम के तीखे शूल खडे थे।।
भूल रहे थे, भटक रहे थे, खटक रहे थे नयन नयन मे।
पश्चिम मे दिनमान बन्द था, पराधीन थे जलज शयन मे।।

पहिन दासता की जजीरे, झूठे टुकडे चबा रहे थे।
'राम' नाम सब भूल काम मे– बडे बडे देवता बहे थे।।
'हाय! हाय! हिसा! हिसा!' मे– हक की चिता जलाते थे हम।
कृषको की सूखी ठठरी पर– पैने दाँत चलाते थे हम।।

सेवा करने वालो को हम, 'दुर! दुर! दुर!' दुतकार रहे थे।
'हट भगी! हट रे चमार! हट', हम मद मे फटकार रहे थे॥
श्रमिको के श्रम-कण पी-पी कर, रक्तिम प्यास वुझाते थे हम।
धरती माँ के व्यथित हृदय पर, घी के दीप जलाते थे हम॥

मन के मैले, तन के उजले, द्वेष-अग्नि मे जलते थे हम।
फूलो मे विषधर रखते थे, सच्चाई को छलते थे हम॥
ग्रामीणो की भोपडियो पर, अपने महल खडे करते थे।
सव कुछ था लेकिन सव देकर, सव के सव भूखे मरते थे॥

पश्चिम की 'मेनका' मुखर थी, ऋषि भूले से नाच रहे थे।
स्वर्ण सर्पिणी की लहरो मे– वडे वडे तैराक वहे थे॥
हिसा की पतवार हाथ ले, खूनी पाल डाल पापो की–
माँझी विना खोल दी तरणी, अग्नि जल उठी अभिशापो की॥

प्रलयङ्कर तूफान उठे थे, लगी डूवने नाव हमारी।
तट था कोसो दूर, फूट से– भरी हुई थी नौका सारी॥
डूव रही थी नाव भँवर मे, तट पर कोई तप करती थी।
मन से प्रभु के चरण पकड कर, चरणो मे दीपक धरती थी॥

ईश्वर की अर्चना साधना, करती थी निष्काम भाव से।
पूजा करती, फूल चढाती, हाथ जोडती वडे चाव से॥
चौमासो मे व्रत करती यह, सूर्य देख कर ही खाऊँगी।
जव तक सूर्य नही निकलेगा, तव तक प्रभु के गुण गाऊँगी॥

श्रद्धा और भक्ति से दिव्या, तप, व्रत साधे जप करती थी।
कभी चढाती फूल कूल पर, कभी पगो मे सर धरती थी॥
उस देवी ने तट पर से जव– देखी जग की नाव भँवर मे।
सहसा नाव पार करने को, पहुँचे उसके भाव भँवर मे॥

'पुतलीबाई' की पुतली मे– दुनिया की तसवीर खिंच गई।
दयामूर्ति के दिव्य दृगो मे– दुखियो की तकदीर खिंच गई॥
उसकी आँखो के आगे आ, दुनिया 'त्राहि! त्राहि!' चिल्लाई।
मानो दुखो ने दिव्या को, अपनी सारी व्यथा सुनाई॥

मानो मन ने माँ के आगे, रोया अपना सारा रोदन।
देख देश की दशा दया से– दयामूर्ति का पिघल गया मन॥
डूब रही थी नाव, तैरते– चले भाव-तृण राम-नाम से।
उसको कौन डुबा सकता है, जिसकी लौ लग गई राम से!

अच्छे कर्म किये 'पुतली' ने, राम-नाम से ध्यान लगाया।
वर मे 'करमचन्द' को पाकर, दुनिया भर मे दीप जलाया॥
स्नेह भरी हसो सी जोडी, बनी भाग्य-लिपि मानव-मन की।
मरणासन्न तृपित जनता को, ज्योति दिखाई दी जीवन की॥

दम्पति की दीपित दिवि द्युति मे, दीनबन्धु ने दया दिखाई।
बजी काम की मधुर बाँसुरी, यौवन मद ने ली अँगडाई॥
सब कहते है काम बुरा है, किन्तु काम ही काम आ गया।
कहते है अभिशाप जिसे सब, वह बन कर वरदान छा गया॥

जब मनोज की केलि कला मे, दुइ दोनो ने मार हटाई।
निराकार साकार ज्योति बन, दम्पति की गोदी मे आई॥
'करमचन्द' 'पुतलीबाई' के, मन-मोहन ने जन्म ले लिया।
ईश्वर ने सारी दुनिया को, युग युग का वरदान दे दिया॥

खेले तीनो लोक गोद मे, दिया उजाला अन्धकार ने।
सवत् उन्निस सौ पच्चीस मे, रूप धरा उस निराकार ने॥
आश्विन बदी द्वादशी तिथि को, उगने वाला सूर्य धन्य है!
उस अनन्त को अभिवादन है, जो जनता है, जो अनन्य है॥

जिस दिन जन्म लिया मोहन ने, शशि ने सुधा-धार बरसाई।
मीठे मीठे गाने गा गा, पक्षी देने लगे बधाई॥
निशि ने कर श्रृङ्गार चाव से, जन्मोत्सव मे दीप जलाये।
कवि अपने कोमल भावो की, माला गूँथ गूँथ कर लाये॥

चली सुगन्धित वायु विश्व मे, मानो उसको 'राम' मिल गये।
मगल गाते हुए घिरे घन, स्वागत मे सब फूल खिल गये॥
मानो पाप भस्म करने को, आग उगलते आँसू आये।
या जननी की व्यथा देखकर, अम्बर ने मोती बरसाये॥

आज बधाई, आज बधाई! सरिताओ की लहरे बोली।
गाओ गाओ, खुशी मनाओ! नगर नगर की नहरे बोली॥
स्वागत, स्वागत, स्वागत, स्वागत! हरी हरी हरियाली बोली।
धन्य आज जग! धन्य आज जग! नभ से नयी दिवाली बोली॥

धन्य! 'सुदामापुरी' जहाँ पर– मन-मोहन ने जन्म ले लिया।
माता पिता धन्य! वे जिनको– प्रभु ने दिव्य प्रकाश दे दिया॥
धन्य! 'पोरबन्दर' की मिट्टी, मोहन जहाँ खेलते डोले।
धन्य! धन्य! वे सब जिन जिन से– मोहन तुतला तुतला बोले॥

जिसमे चित्र लिखे मोहन के, उस मिट्टी का प्यार धन्य है!
जिसमे जन्म लिया मोहन ने, वह 'गाँधी परिवार' धन्य है!!
आँखो के तारे मोहन को, 'पुतलीबाई' लगी खिलाने।
बडे प्यार से झोटे दे दे, मन-मोहन को लगी झुलाने॥

कभी पिलाती दूध, कभी वह– चूम चूम कर शाक चटाती।
कभी पिता की गोदी मे से, माँ मोहन को पास बुलाती॥
कभी बदलती वस्त्र, कभी वह– अच्छी अच्छी बात सुनाती।
कभी लगाती चपत, कभी वह– अपनी छाती से चिपटाती॥

कभी लोरियाँ दे दे कर माँ, कहती "मेरे मुन्ना ! सो जा।"
कभी प्यार से वर देती यह, "तू भी 'राम' 'कृष्ण' सा हो जा !"
कभी बाँधती हाथ खाट से, मन-मोहन के दोष देख वह।
मुँह से कहती "मर जा, गड जा !" मन से कहती "सदा अमर रह !"

सब कुछ खोकर सब कुछ मिलता, माँ सा प्यार नही मिलता है।
रवि से खिलते कमल, पुत्र से– माँ का मुरझा मन खिलता है ॥
भूलभुलैया मे भूले थे, शाश्वत को पहिचान न पाये।
"ले माँ ! पकल, दौलता हूँ मैं", शिशु ने माँ को खेल खिलाये ॥

मीठे मीठे हृदय-निधि के तोतले बोल भाते।
प्यारे प्यारे कमल-कुल से तैरते हस आते ॥
ढूँढो मोती मनन मन के, हस लाया मराली !
गोदी मे ले सुमन शिशु को गीत गा गा उजाली !

लीला देखो परम प्रिय की, खेल कैसे खिलाते।
वीणा जैसी पकड उँगली, बीन माँ को सुनाते ॥
चन्दा मामा 'पकल' मुझको ! दौडता, देखता है।
गगा जैसी मधुर गति मे, चाँद सा खेलता है ॥

जाओ मेरे हृदय ! पढने, भेजती माँ सवेरे।
पाओ विद्या नयन-गुरु से, दूर होगे अँधेरे ॥
जाओ, पूजो चरण गुरु के, वात मानो बडो की।
वे ही तो हैं जनक जन के, जान है वे जडो की ॥

जो पाते है चरण गुरु के, ज्ञान की नाव पाते।
तूफानो मे प्रलय-जल मे, तैरते पार जाते ॥
काले काले कुलिश घन भी, ज्ञान से हारते हैं।
ज्ञानी ही तो निविड तम को, प्रेम से मारते हैं ॥

मानो देशभक्ति ने उस दिन, पहिन लिया बालक का चोला।
मानो फिर 'प्रह्लाद' जन्म ले, बालक के चोले मे बोला॥
मानो 'हरिश्चन्द्र' का सच फिर, प्रभु को देने लगा परीक्षा।
सात वर्ष का मोहन बालक, गुरु से लेने पहुँचा दीक्षा॥

व्यर्थ खेल मे मन न लगाता, पढने लगा पाठशाला मे।
डरता रहा झूठ से बालक, गुँथा रहा सच की माला मे॥
ईर्ष्या-ज्वाला बुझा स्नेह से, गुरु पर श्रद्धा-सुमन चढाये।
जाग उठी जिज्ञासा मन मे, सङ्कल्पो के बादल आये॥

बुरी बुरी बातो को मोहन, दूर दूर ही रहा भगाता।
झेपा करता था बच्चो मे, छेडखानियो से शरमाता॥
विद्यालय मे एक दिवस जब, 'श्री जाईल्स महोदय' आये।
पहली कक्षा के छात्रो से, शब्द पट्टियो पर लिखवाये॥

पर मोहन ने उन शब्दो मे, 'केटिल' शब्द अशुद्ध लिख दिया।
और सभी ने टीप टीप कर, शब्द स्लेट पर शुद्ध लिख लिया॥
"तूने टीप न शुद्ध लिखा क्यो ?" शिक्षक ने यह भूल बताई।
"स्लेट देख लेता दिवान की, अरे बावले! मूर्ख! 'गदाई'!

मैं ने मार बूट की ठोकर, तुझको चुपके से चेताया।
सब समझे सकेत देख कर, तेरी नही समझ मे आया॥"
मोहन बोला-- "आप उस समय, देखरेख को घूम रहे थे।
चोरी करना महा पाप है, तुमने ही ये शब्द कहे थे॥

यदि दिवान की स्लेट देख कर, 'केटिल' शब्द शुद्ध लिख लेता।
'श्री जाईल्स' निरीक्षक को मैं, धोखा खाकर धोखा देता॥
चोरी नही करूँगा गुरु जी! गलती को स्वीकार करूँगा।
चाहे मुझे जला दो जिन्दा, सच्चाई से प्यार करूँगा॥

जिस में 'हरिश्चन्द्र' राजा थे, मैं हू उसी देश का बालक।
मैं भी 'ध्रुव' 'प्रहलाद' बनूँगा, सत्य सदा मेरा सचालक ॥"
वह सच्चा बालक जो जग की, तृष्णाओ मे नही भटकता।
इस दुनिया की गरल घूंट से, वह भी हाय ! नही बच सकता ॥

वह जो अभी खेल मिट्टी मे, कपडे मैले कर लेता था।
ब्याह-जाल मे डाल दिया वह, जो 'माँ ! माँ !' कह रो देता था ॥
खेल समझ कर ब्याह, चाव मे– मोहन फूले नही समाये।
मैं यह नया खेल खेलूँगा, मन मे नये भाव ये आये ॥

एक नयी लडकी देखूँगा, सर पर स्वर्ण-मौर बाँधूँगा।
नये नये कपडे पहिनूँगा, घोडी की चढ्ढी खालूँगा ॥
वह कलिका सी कन्या होगी, मैं मधु-कुमुद-समीर बनूँगा।
वह सुन्दर सी सरिता होगी, मैं तट की तसवीर बनूँगा ॥

वह वीणा वाली सुकुमारी, मैं उसकी झनकार बनूँगा।
वह 'रत्ना' सी रमणी होगी, मैं 'तुलसी' का प्यार बनूँगा ॥
वह थाली की पूजा होगी, मैं थाली का फूल बनूँगा।
वह नौका पतवार बनेगी, मैं नौका का कूल बनूँगा ॥

वह चन्दा सी हँसती होगी, मैं चकोर की चाह बनूँगा।
वह दुनिया मे राही होगी, मैं दुनिया मे राह बनूँगा ॥
वह तम मे दीपक सी होगी, मैं दीपक पर बनूँ पतगा।
जिस मे सारा विश्व बहा ले, ऐसी बहे प्रेम की गगा ॥

वह आँगन मे रास रचेगी, मैं उस रस की प्यास बनूँगा।
वह कल्याणी क्रीडा होगी, मै उसमे मधुमास बनूँगा ॥
वह 'कस्तूरी' की सुवास है, मैं मृग की चिर चाह बनूँगा।
वह दुखियो का हृदय बनेगी, मैं दुखियो की आह बनूँगा ॥

वडे चाव मे मन ही मन मे, मोहन लड्डू फोड रहे थे।
भावनगर मे व्याह रचाकर, मुख से नाते जोड रहे थे॥
और उधर 'वा' के मन मे भी, रग विरगे वहुत भाव थे।
गुड्डे गुडिया व्याह करेगे, 'वा' के मन मे उठे चाव थे॥

गुडियो से वह खेल रही थी, सखियो से वाते करती थी।
व्याह रचा गुड्डे गुडिया का, भावो की पत्तल धरती थी॥
वह सुन्दर कलिका थी जिस पर, प्रकृति-रश्मियाँ झलक रही थी।
जिस पर अभी पराग नही था, भावुक लहरे छलक रही थी॥

छलक रही थी उस कलिका पर, गगा की निर्मल कल कल ध्वनि।
छलक रही थी उन आँखो मे, दुखी आँसुओ की छल छल ध्वनि॥
उस पार्थिव शरीर मे मानो, व्यापक थी त्रिभुवन की लीला।
गोरी गोरी सखियो ने मिल, वा' के मला उवटना पीला॥

मानो त्याग तपस्या को वे– प्रेमामृत मे नहलाती थी।
मानो कलिका को रवि-किरणे– धीरे धीरे सहलाती थी॥
वडे प्यार से स्नान करा कर, सखियो ने शृङ्गार सजाया।
हाथो मे कगन पहिनाये, चन्दा का झूमर लटकाया॥

पहिना दिया हार हीरो का, कानो मे कुण्डल पहिनाये।
तोडो से सज गई कलाई, मछली से वुन्दे लटकाये॥
तारो जैसा दामन दमका, चमक उठी चुँदडी वनारसी।
उँगली उँगली मे अगूठी, अगूठे मे सजी आरसी॥

सव सखियो ने फूल गूँथ कर, चोटी करी मेघमाला-सी।
मोहन के मन मे वसने को, 'वा' सज गई देववाला-सी॥
'वा' की माँ 'व्रजकुँवरि' मग्न थी, देख कली सी सुता मनोहर।
सोच रही थी पर-धन है यह, मन-मोहन की धरी धरोहर॥

'गोकुलदास मकन जी' पति से, 'ब्रजकुवरि' मुसका कर बोली—
"चार दिनो खेली आँगन मे, अब बेटी पर घर की हो ली ॥
आवभगत मे कमी न आये, जनवासे का हाल बताओ !"
यह सुन कर कह उठे 'मकन जी'— "बारौठी का थाल सजाओ ॥

द्रव्य निकालूँगा दहेज को, कहाँ तिजोरी की ताली है?
ले जाते हैं अभी बटहरी, बस बरात आने वाली है ॥"
'गोकुलदास' और 'ब्रजकुवरि', अभी यहाँ तो अभी वहाँ थे।
आवभगत मे बेटी वाले, कभी वहाँ तो कभी यहाँ थे ॥

दौड दौड कर काम ब्याह का, मजदूरो से करते थे वे।
किसी बात मे कमी न आये, इसी बात से डरते थे वे ॥
सज-धज कर बरात आ पहुँची, नौशे से चन्दा शरमाया।
बाजे बजे, बजी शहनाई, दर्वाजे पर दूल्हा आया ॥

'ब्रजकुवरि' ने थाल सजा कर, नौशे की आरती उतारी।
दूल्हे के दर्शन करने को, आगे आई सखियाँ सारी ॥
हृदय-हार ले शरमाती सी, 'बा' खिडकी से लगी झाँकने।
मानो अपने प्रेम-मूल्य से, अपनी निधि को लगी आँकने ॥

मन मे मनमोहन के बस के,
दृग मे मन-मोहन मूँद लिये।
मन से मन का शुभ ब्याह रचा,
दृग-फूल चढा, पग चूम लिये ॥
हृद-हार गले प्रिय के पहिना,
शशि सी कलिका मधु सी बरसी।
छलकी मन-मोहन की मदिरा,
मद-दर्शन को दुनिया तरसी ॥

देख दूर से छटा मनोहर, 'वा' मन ही मन मे मुसकाई ।
आँखे चार हुई दोनो की, दुलहन घूँघट मे शरमाई ॥
सिमट एकदम सकुचाती सी, घर के अन्दर चली गई वह ।
अल्हड मनहर चचल सखियाँ, समझ गई गोरखधन्धा यह ॥

हँस कर बोली, शरमा मत अलि! आ हम दूल्हा तुझे दिखाये ।
कमला के कमरे मे चल तू, तेरे मन का कमल खिलाये ॥
वहाँ झरोखे मे से आली! दूल्हा तुझे दिखाई देगा ।
पर अपना मुँह तब दिखलाना, जब वह मुँह दिखलाई देगा ॥

'वा' शरमाती सी यह बोली, मत छेडो अलि! जाओ जाओ ।
मैं कब गई देखने दूल्हा, अपने मन से बात बनाओ ॥
सब सखियो ने फिर चुटकी ली, मन मे लड्डू फोड रही है ।
दूल्हे के दिल मे जा बैठी, साथ हमारा छोड रही है ॥

फिर सब सखियाँ बडे चाव से, गाने लगी गीत स्वागत मे ।
पलक पाँवडे बिछे मार्ग मे, प्रीति बस गई अभ्यागत मे ॥
केलो के मण्डप मे दूल्हा, चन्दा सा बैठा फेरो पर ।
शुभ्र चाँदनी सी ज्योतिर्मय, कस्तूरी थी सजी बराबर ॥

ऊँचे स्वर से मन्त्र बोल कर, पडित ने फेरे फिरवाये ।
अग्नि-ज्योति के आगे उन को, जीवन के दर्शन करवाये ॥
वर ने वचन दिये कन्या को, 'वा' ने वर से वचन भर लिये ।
दोनो हृदय एक स्वर मे थे, दिल से कौल करार कर लिये ॥

गा गा देने लगी सीठने, समधी को समधने सलोनी ।
'वा' यह सब ऐसे सुनती थी, सुनती हो जैसे मृगछौनी ॥
फेरे फिरे, बरात जीम ली, आई सुता-विदा की वेला ।
मानो लेने लगा विदाई, 'ब्रजकुवरि' के घर का मेला ॥

'व्रजकुवरि' ने जोड जोड कर, सबको सजा दहेज दिखाया।
तियल रेशमी, बर्तन, भूपण, शीशे वाला पलँग सजाया॥
जो कुछ भी वह दे सकती थी, सब दहेज मे ला कर रक्खा।
करने लगे विदा बेटी को, माँ ने हाथ हृदय पर रक्खा॥

बारह वर्ष रही गोदी मे, अब बिटिया हो गई पराई।
करते समय विदा कन्या को, ममता उमड आँख भर लाई॥
बेटी पर-धन ही होती है, पिता रो पडे कहते कहते।
रोई सब सखियाँ सुकुमारी, विदा रूप हो आँसू बहते॥

रम्भाई वह गाय जिसे 'बा'– बडे प्यार से सहलाती थी।
बोल उठा वह तोता जिसको– राम नाम 'बा' सिखलाती थी॥
और पडौसिन के बच्चे ने, रो रो 'बा' का पल्ला पकडा।
बोला, मैं भी साथ चलूँगा, छेडा उसने शाश्वत झगडा॥

और घुटनियो चल चाची का– 'ई ई' करता मुन्ना आया।
'बा' ने बडे प्यार से उसको, अपनी छाती से चिपटाया॥
पर उतारने लगी उसे जब, बालक पटरागो सा चिपटा।
'बा' ने दिये खिलौने शिशु को, तब शिशु का मधु झगडा निबटा॥

बडी कठिनता से वह बालक, चाचा जी की गया गोद मे।
दुनिया विदा समय रोती है, या रोती है मिलन-मोद मे॥
इस समाज मे बेटी वाला, जब तक चाहो तब तक रो ले।
चलते समय पोछ कर आँखे, 'गोकुलदास मकन जी' बोले–

"मै गरीब हूँ, क्षमा करो सब, सेवा मे जो कमी रह गई।"
मानो श्रद्धा हाथ जोड कर, अपने मन की बात कह गई॥
फिर जननी ने नयन पोछ कर, सुन्दर शुभ सन्देश दिया यह–
"भूत, भविष्यत्, वर्तमान मे, बेटी! तेरी अमर कीर्त्ति रह॥

यदि पति ससुर सास डाँटे तो, वेटी ! कभी क्रोध मत करना ।
सत्य वोलना, सेवा करना, बुरे मार्ग पर पैर न धरना ॥
भारत माँ की आशा है तू, देश-भक्ति की दीपशिखा वन ।
राम नाम हृदयगम करले, पति ही है तेरा तन, मन, धन ॥

तू दो घर की लाज आज से, वेटी ! इस पर आँच न आये ।
चाँद ! चाँद पर कालस कह कह, कोई उँगली नहो उठाये ॥
मोहन के मन की वशी वन, घर की दीप्त दिवाली वन तू ।
अखिल विश्व की फुलवारी वन, मन की मधुर उजाली वन तू ॥"

मन-मोहन के मन की मुरली—
छवि-सागर मे शशि सी चलती ।
चलते चलते विछवे वजते,
किरणे उतरी, विजली जलती ॥
जग की जय सी वह दीपशिखा—
जिस ओर चली, जय-दीप जले ।
कच-मेघ मयक लिये निकले,
चितचोर मयूर चकोर चले ॥

दृग नाच रहे मन-आँगन मे,
वँधते दृग दो दृग चचल मे ।
जल मे तरणी चलती गति से,
मछली फुदकी फिरती जल मे ॥
लहरे जग-जीवन-सागर मे,
पुतली मृग-नाव उतार रही ।
नभ-दीप लिये विधु-वाहन मे,
परिये दृग-पख पसार रही ॥

द्वितीय सर्ग

क्रीड़ा

करुणा बने बीन जन जन की, रोये तो बरसे गगा-जल।
बोले तो दीपक जल जाये, उमड़े तो खिल जाये उत्पल।।
लहरे तो झण्डे लहराये, मचले तो हिल उठे धरातल।
चचल हो तो चन्दा नाचे, प्यास लगे तो बरसे बादल।।

तान छिड़े तो विषधर रीझे, छेड़े से बरसे अगारे।
झूमे तो वीणा झकृत हो, रिमझिम हो तो झरे फुहारे।।
सिहरे तो फूलो पर नाचे, उलझे तो उलझन बन जाये।
रग भरे तो बने तूलिका, सुलझे तो उलझन सुलझाये।।

प्यासी आँखो की पुतली ने, चन्द्रमुखी दुलहन को देखा।
मानो प्यासी धरती माँ ने, करुणा के सावन को देखा।।
मोर नाचने लगे बनो मे, आँगन मे कल कल ध्वनि गूँजी।
रुनझुन करती लक्ष्मी आई, प्यास बुझी, छल छल ध्वनि गूँजी।।

'करमचन्द' 'पुतली बाई' के– घर मे दुलहन बनी दिवाली।
पास पड़ौसिन लगी देखने– चन्दा सी घर की उजियाली।।
कुछ दिन की मधु रँगरलियो मे– कलिका खिलकर फूल हो गई।
यौवन के मनहर उपवन मे– दो फूलो से भूल हो गई।।

उलझे बिना न सुलझा कोई, यह है उलझी एक पहेली।
मेल किसी से जब हो जाता, खेल सकी है कौन अकेली।
कलिका खेली साथ सुमन के, दम्पति जग के कूल बन गये।
फूलो पर पराग आते ही, कामदेव के तीर तन गये।।

प्रति पल मधुर मोम से मन मे, रस की चाह बनी रहती थी।
कब हो रात्रि, मिलूँ कब अलि से, मन की कली यही कहती थी ॥
खिली चाँदनी पर क्रीडा को, सोने नही दिया करते थे।
मन के उजियाले दीपक को, मन्दा नही किया करते थे ॥

मधुर जवानी के सागर ने, लहरो की अँगडाई आँकी।
आशा आतुर की आँखो मे, खजन-नयन झुका कर झाँकी ॥
हृदय नाचने लगा मोर सा, नयनो की निर्मल निधि पाई।
दमक उठी चाँदनी गुलाबी, मन मे चाह मचल शरमाई ॥

चचल चाव चकोर लिये अलि!
आज कहो मत चाँद न चूमा।
रात रँगी मधु घोल रहे मन,
पावस पाकर कौन न झूमा!
सावन मे रस पी प्रिय का छवि!
भूल प्रिया कब डाल न भूली!
बात बडी रस की रति की अलि!
बादल पाकर कौन न भूली!

दो हृदयो के प्रथम प्यार मे, शिशु से आशाओ के मोती।
सूरज की किरणे पडते ही, कलिका कितने हार पिरोती ॥
अलि से कली कहा करती है, उर मे छिपो शर्म आती है।
कोई देख न ले दोनो को, कहती हुई सिमट जाती है ॥

"जब से मैं आई हूँ तब से, घर मे नाथ! घुसे रहते हो।
घर का काम न करने देते, अपनी ही अपनी कहते हो ॥
आप चले जाते हैं घर से, मेरी आँख झुकी रहती हैं।
उनके साथ सिली रहती है, सखियाँ छेड छेड कहती हैं ॥"

घटो तक बाते करते थे, पत्नी हाँ मे हाँ कहती थी।
चलते फिरते भी प्यासे के, पत्नी अधरो पर रहती थी॥
किन्तु एक पत्नी व्रत लेकर, मोहन ने यह प्यार सजाया।
मानो उस व्रत ने दुनिया को, पत्नी व्रत का दीप दिखाया॥

बिना चाँदनी चाँद न रहते, अलग न छवि होने देते थे।
नयी जवानी मे जीवन का, मधु बरसाते, रस लेते थे॥
पत्नी व्रत पालक बन कर वे, पत्नी की रखवाली करते।
सती साधना गगा जल सी, निर्मल रूप-ज्योति से डरते॥

या पवित्रता की रक्षा हित, वे चौकीदारी करते थे।
दाग न आ जाये चादर पर, मोहन इस डर से डरते थे॥
बिना पढी थी पर अनुभव से, दुलहन ने सब जान लिया था।
जान गई थी नर को नारी, दुनिया को पहिचान लिया था॥

कभी खेलते, कभी खीजते, कभी लडाई, कभी मेल था।
कभी रूठना, कभी मनाना, जीवन का अनमोल खेल था॥
मानस के मनहर सुमनो से, पत्नी का शृङ्गार सजाते।
कभी पढाते, कभी लिखाते, कभी स्नेह से दीप जलाते॥

इधर प्यार का आकर्षण था, उधर पाठशाला जाते थे।
पर इस प्रेम प्यास मे मोहन, माँ के आगे शरमाते थे॥
पढते थे वे हृदय लगाकर, वाणी की पूजा करते थे।
श्रद्धा रखते थे गुरुजन मे, झूठी बातो से डरते थे॥

रसिक देववाणी के थे वे, रस-घट थे सच्ची बातो से।
पर कुरीतियो के शिकार बन, वातचक्र थे व्याघातो से॥
पढने से या सस्कारो से, मोहन छात्र-वृत्ति पाते थे।
रोज पिता के पैर दबाते, रोज भ्रमण करने जाते थे॥

कभी कृपक की खेती मे वे– हरियाली के दर्शन करते।
कभी मेघमालाओ मे वे– जगतीतल के मोती भरते॥
कभी किनारे पर सागर के– लहरो से वाते करते थे।
कभी चाँद के दर्शन करके– स्वर मे शान्ति-सुधा भरते थे॥

कभी खिले फूलो से वोले, वाते करी कभी कलियो से।
मन की कही कभी कमलो से, प्रिय की सुनी कभी अलियो से॥
कभी रात्रि के चित्र आँकते, रोज देखते थे 'ध्रुव तारा'।
सुमन चढा कर कह देते थे– तू त्रिलोक का पूज्य किनारा॥

कभी प्रकृति के दृश्य देखते, कभी नाचता मोर देखते।
पश्चिम के पीले प्रकाश मे– स्वतन्त्रता का भोर देखते॥
सकल्पो के वीच तैरते, करते थे कल्पना करोडो।
कभी कही से यह ध्वनि सुनते, तोडो, माँ के वन्धन तोडो!

रजनी रानी से कहते थे– दीपक अभी जला मत पगली!
स्वतन्त्रता के लिए रोक ले, मोती अभी गला मत पगली!!
उस भावुक वालक के मन मे– सकल्पो की वाढे आई।
सागर की चचल लहरो पर– अम्वर की निधियाँ लहराई॥

एक तरफ कडुवी धारा थी, एक तरफ थी मधु की धारा।
लौकिक और अलौकिक रस मे– जा कूदा आँखो का तारा॥
हँस कर या रो कर सवने ही, इस दुनिया का जहर पिया है।
पर जो हँस कर पचा गया विप, वही पहुँच कर पार जिया है॥

मोहन खिला फूल सा वालक, कैसे काँटो से वच जाता!
अप्रिय यदि होता न जगत मे, कैसे प्रिय गुणवान कहाता!!
खेल खेल मे ही मोहन का, दुश्चरित्र से मेल हो गया।
मेल भयकर भूल, भूल से– कही स्वप्न सा खेल खो गया॥

एक मित्र से हुई मित्रता, जिसमे बहुत बुरी बाते थी।
चोरी करता, जुआ खेलता, वेश्या के कटती राते थी॥
मुन्ने! इसका साथ छोड दे, माॅ ने मोहन को समझाया।
मत पड तू इसके कुसग मे, भाई भाई पर झुँझलाया॥

पत्नी ने समझाया पति को, स्वामी! इस का साथ छोड दो!
नाथ! साथ मत लगो बुरे के, काॅटो की जजीर तोड दो!!
पर होनी बलवान, किसी के– समझाये से कैसे रुकते!
अपने पर अभिमान बहुत था, मृदुल नमन से कैसे झुकते!!

कहने सुनने समझाने से, अधकार का साथ न छोडा।
वह कैसे बचता गड्ढे से, जिसने आॅखो से मुँह मोडा॥
बिना चाॅद के गहरे तम मे, किसे चाॅदनी दी दिखलाई!
वह चादर ही क्या है जिस पर, जग ने स्याही नही लगाई!

बहका फुसला जाल डाल कर, उस पापी ने मास खिलाया।
बातो की जजीर डाल कर, बकरे का शोरबा पिलाया॥
मातृ-भक्त ने मास खा लिया, पर माँ से यह बात छिपाई।
दुश्चरित्र उस दुष्ट दोस्त मे– मन की क्रीडा दी दिखलाई॥

छिप छिप कर, आॅखो से बचकर, मन मसोस कर आमिष खाया।
मांस खा लिया लेकिन मन मे, मरा हुआ प्राणी रम्भाया॥
पीते पीते प्यास बढ गई, खाते खाते चाट पड गई।
पर आत्मा मे यही भाव था, मन की कोई कली सड़ गई॥

मन मे यही बडी पीडा थी, मैंने माॅ से बात छिपाई।
धोखा दिया स्वयम् को, उनको, अपने मन की ज्योति बुझाई॥
इन भावो के तेजपुज मे, किया एक दिन यह दृढ निश्चय।
'मास नही खाऊँगा अब से, इससे मन की हुई पराजय॥'

दुष्ट सग के इन्द्रजाल ने, फिर उस वालक को फुसलाया।
वाते छेडी व्यभिचारो की, कामदेव का जाल विछाया॥
काम कामना करते ही वस, अपना जाल डाल देता है।
विना रस्सियो के मनुष्य को, मन का भूत वॉध लेता है॥

किसी कामिनी की चर्चा ही, पल मे पागल कर देती है।
माया की छाया पडते ही, रति मति पकड खीच लेती है॥
नारी की छाया छूते ही, लोहा पिघल मोम वन जाता।
कोई नही काम से वचता, काम कल्पना ही से आता॥

तरुणी के उठते यौवन मे, वडे वडे ऋपि मुनि तक डूवे।
छवि चुम्वक मे लोहे चिपके, भूले भक्त भक्ति से ऊवे॥
विना पिये चढती शराव यह, नशा रूप-रस का चढ जाता।
गर्दन तोड वुखार सदृश यह, हवा सूँघते ही चढ आता॥

यौवन की जजीर डाल कर, नारी नचा दिया करती है।
एक मधुर मुसकान हृदय को, वरबस खीच लिया करती है॥
तृप्ति नही तेरी मनुष्य ! यह, प्यास नही वुझती पी पी कर।
जग से प्यासा ही जायेगा, चाहे जितनी पी जीवन भर॥

राम नाम वेदो का रस है, जो पीता वह अभिमत पाता।
वह न छूटता जन्म जन्म मे, जो इन जालो मे फँस जाता॥
उठती आयु और मन चचल, मोहन पहुँचे वेश्या के घर।
मन के साथ पैर वढते थे, पर पग पग पर ठिठक ठिठक कर॥

डर था लेकिन मन का चालक, उडन खटोला खीच ले चला।
हाय ! कुसगति के जालो ने, मन-मोहन का मधुर मन छला॥
पर ईश्वर जिसका रक्षक है, वह कैसे गड्ढे मे जाता !
जिसने राम नाम अपनाया, वह नर मुँह माँगा वर पाता॥

वेश्या के कमरे मे पहुँचे, झिझके से बैठे खटिया पर।
आँखे नीची हुई शर्म से, मन के अन्दर बैठ गया डर॥
मानो कोई अधा गूँगा, बैठा था आँसू के आगे।
बाई ने गालियाँ सुनाई, मोहन नगे पैरो भागे॥

गणिकाओ की यही कहानी, आँसू हँसता, आँसू गाता।
याद बुढापे की जब आती, यौवन बन कपूर उड जाता॥
क्या निर्धनता की मारी ये, बेच रही तन मन टुकडो पर ?
या कुछ पापी मास खा रहे, इनके तन मन बेच बेच कर॥

खेल रहे है हम इनसे या– ये हम सबसे खेल रही है ?
हम इनको विष पिला रहे है, या ये जहर उडेल रही हैं ?
गणिके ! कर ईश्वर उपासना, चला गया बालक समझाता।
राम नाम वह जादू है जो– भवसागर तक से तैराता॥

बडी भूल करने वाले थे, पर ईश्वर ने उन्हे बचाया।
गड्ढे मे गिरने वाले थे, ईश्वर ने दीपक दिखलाया॥
हाय ! कुसगति से मोहन मे, एक निमिष को दुर्गुण आया।
सिगरट पीने के चस्के ने, मोहन को झूठा खिलवाया॥

चुरा चुरा सिगरट की झूठन, आग चिता की सिर पर धर ली।
बालक साँप पकडने दौडा, मन मसोस कर चोरी कर ली॥
उनका मासाहारी भाई, बुरी चाट मे ऋण ले आया।
उस भाई ने इस भाई को, अपने चक्कर मे फुसलाया॥

कडा काट बेचा सोने का, दोनो ने मिलकर चोरी की।
ऋण भुगताया, चाट उडाई, मोहन ने मक्खन चोरी की॥
कडा काट कर बेच दिया पर, मन बेचैन हुआ मोहन का।
न्याय सदा सोचा करता है, कैसे दाग धुले जीवन का॥

चोरी वापू को वतलादी, सच कह उसे रुलाई आई।
पिता रो पडे, उस रोने ने– जीवन भर की ज्योति दिखाई॥
रोते रोते करी प्रतिज्ञा– अव मैं चोरी नही करूँगा।
पिता! तुम्हारी शपथ मुझे है, वुरी वात से सदा डरूँगा॥

कहो कुसगति से दुनिया मे, किस प्राणी ने दुख न भोगा!
गिरा कुसगति मे जो कोई, उसको कहाँ सहारा होगा!
सत्सगति मे सुधा-धार है, और कुसगति मे विप-धारा।
जो सत्सगति की नौका मे, वह डूवे के लिए किनारा॥

सत्सगति वह गति है जिसमे– रस मिलता आनन्द-लोक का।
सत्सगति वह दिव्य लोक है– नाम नही है जहाँ शोक का॥
सत्सगति मे अमर ज्योति है, तम कुसग मे भरा हुआ है।
खिलते हुए कमल को देखो, सत्य धरा पर धरा हुआ है॥

जीना अगर चाहते हो तो, गरल कुसगति का मत पीना!
आँख खोल कर चलो साथियो! आँख मूँद कर कैसा जीना!!
जिनको कोई काम नही वे, विना वात झगडा करते हैं।
सत्सगति मे रहने वाले– वुरी आदतो से डरते हैं॥

'सीता' मे यदि सत्य न होता, कैसे वच जाती जलने से।
प्राण-कमल मुरझा जाते ह, सत्सगति-सूरज ढलने से॥
सत्सगति के ही प्रभाव से– राही ने भूला पथ पाया।
'रम्भा वाई' के प्रताप से– मुँह मे राम नाम रस आया॥

'रम्भा' थी सेविका राम की, मोहन की सेवा करती थी।
चातक से प्यासे कानो मे, राम नाम का रस भरती थी॥
मोहन डरते थे भूतो से, उसने मन का भूत भगाया।
सर्प समझते थे रस्सी को, ज्योतिमयी ने दीप दिखाया॥

एक चचेरे भाई उनके, सस्वर 'रामायण' पढते थे।
प्रति दिन राम नाम गुण गाते, उन्नति की सीढी चढते थे॥
जो नर राम नाम रस पीते, वे नर अमर हुआ करते हैं।
जो नर राम नाम भजते हैं, उनसे बुरे काम डरते हैं॥

जिसे सहारा राम नाम का, उस पर कोई भूत न आता।
राम-नाव मे बैठ गया जो, वह वैतरणी से तिर जाता॥
राम-नाम का ध्यान न छोडो, सद्ग्रन्थो का पाठ न छोडो!
तोड कुसगति-जाल जलादो, सत्सगति से मुँह मत मोडो!!

सत्सगति से ही मोहन ने, राम नाम लिख लिया हृदय मे।
राम सारथी रहे रथी के, मनुष्यता की महा विजय मे॥
सुनने लगे भागवत मोहन, सद्ग्रन्थो मे हृदय लगाया।
पूज्य पिता जी की सेवा से, जग हित मनवाछित फल पाया॥

सेवा से मेवा मिलती है, चमडी का क्या घिस जाता है।
क्या नश्वर तन का घट जाता, सेवा कर नर सुख पाता है॥
सच्ची सेवा मे ईश्वर है, सुख का मुक्ति-द्वार खुल जाता।
सेवा से दीपक जल जाते, दिल का अमिट दाग धुल जाता॥

सेवा करते रहो हृदय से, सबके आशीर्वाद मिलेगे।
सेवा से तुम सूर्य बनोगे, पाप-पक मे कमल खिलेगे॥
सेवा से सागर को मथ कर, जिसने चौदह रत्न निकाले॥
आँखो से मोती बरसा कर, कवि-वाणी! उसके गुण गा ले!

हृदय-सुमन से पैर पूज कर, भावो से आरती उतारूँ।
धन्य धन्य जग के उजियाले! तुझ पर तन मन धन सब वारूँ॥
झुका पिता के चरणो मे सिर, धीरे धीरे चरण दबाये।
देख पुत्र का स्नेह पिता की– आँखो मे आँसू भर आये॥

पैर दवाता रहा प्रेम से, वालक अपने परम पिता के।
रोगी 'करमचन्द' खटिया पर, देख रहे थे स्वप्न चिता के॥
खुली स्वप्न से आँखे उनकी, वोले, अव जा सोजा मोहन!
मन से आशीर्वाद दिया यह, जग का जीवन हो जा मोहन!

सेवाओ से सरिता फूटी, हिमगिरि का मन भर भर आया।
प्यार उमड कर चला दृगो से, सुत को छाती से चिपटाया॥
कहा प्रेम से, दिन मे ही अव— रात वहुत हो गई अँधेरी।
जग के अधकार के दीपक, वेटे! वडी आयु हो तेरी॥

वापू वोले, चाचा वोले, सो जा, अव सो मोहन वेटे!
लेकर आशीर्वाद पिता का, मोहन शैया पर जा लेटे॥
वेटा ओझल हुआ आँख से, होने लगी रात अँधियारी।
उस दिन मोहन के मानस मे— शरमाई थी शर्म विचारी॥

छोटे भाई ने अग्रज के, आँसू पोछे, पैर दवाये।
मानो 'रामचन्द्र' के 'लक्ष्मण'— फिर अवतार धारकर आये॥
'करमचन्द' के लिए आ गया— नारायण का अटल वुलावा।
लम्वे लम्वे श्वास चल पडे, सहसा किया मृत्यु ने धावा॥

मिट्टी के पिँजरे को तज कर, प्राण-पखेरू उडे हवा मे।
कहा किसी ने दवा पिलाओ, पर अव क्या था वहाँ दवा मे॥
नही मौत की दवा कही भी, खेल स्वप्न सा खत्म हो गया।
पाँच तत्त्व का पुतला जग से— अपनी आँखे मूँद सो गया॥

एक निमिष मे हस उड गया, मिट्टी का तन पडा रह गया।
क्षण मे छिपा उषा का तारा, पानी का वुलवुला वह गया॥
सेवक शयन-कक्ष मे पहुँचा, मोहन को आवाज लगाई—
"जल्दी चलो, वडे वापू की— तवियत वहुत अधिक घवराई॥"

सुनकर भौचक्के से मोहन– कूद खाट से खडे हो गये।
बोले, 'क्या ?' उत्तर यह आया– "पिता सदा के लिए सो गये॥"
"हाय ! पिता चल दिये छोड कर, उठी छत्र छाया सिर पर से।
अन्त समय मे मैं हतभागा, दूर रहा अपने अन्तर से॥"

निकली एक टीस मानस से, मानस पतझड सा मुरझाया।
पिता-मृत्यु से रोया मानस, काम-वासना से शरमाया॥
लज्जा से दृग झुके पुत्र के, मन से मन की बात कही थी।
लेकिन हस उड चुका था अब, केवल पीडा शेष रही थी॥

शव से चिपट चिपट कर मोहन, छाती फाड फाड कर रोये।
नही बोलते, दृग न खोलते, पिता ! आज तुम कैसे सोये ?
रोया सब परिवार उस समय, पर रोने से क्या होता है !
इसी तरह से आँख मूँद कर, प्राणी सोता, जग रोता है॥

शव की अर्थी बना ले चले, तट पर शव की चिता बनाई।
प्यारे मोहनदास पुत्र ने, पूज्य पिता की चिता जलाई॥
धू धू करके चिता जल उठी, धुआँ गगन मे उडा चिता का।
मोहन ही क्या कर सकता था, दाह देखता रहा पिता का॥

अरे ! यही है अन्त मनुज का, उडता उडता धुआँ कह गया।
पाँच तत्त्व का पुतला जलकर, एक राख का ढेर रह गया॥
बुझी पिता की चिता, फूल चुग, गगा जी मे फूल बहाये।
कवि ने भी उनकी समाधि पर, शब्दो के आँसू ढुलकाये॥

✓ एक दिवस मरना निश्चित है, फिर भी पाप किया करता वह।
अन्त सोच कर भी न सँभलता, हाय ! हृदय कैसा पापी यह॥
अहकार मे भरा हुआ मन, क्षणभगुर की पूजा करता।
करता पाप, सताता सबको, पापी नही 'राम' से डरता॥

मृत्यु अन्त, परिणाम सामने, फिर भी तो मन नही मानता।
एक रोज़ सब का यह पथ है, कौन नही यह बात जानता!
फिर भी तो सर्पिणी भयकर– लिपट लिपट फुकार रही है।
दुनिया की इस रगीनी मे– घोर तपस्या हार रही है॥

कहते है उस पार सत्य है, देखे है इस पार तमाशे।
सब के अन्तर मे ईश्वर है, सब के नयन रूप के प्यासे॥
फूल यहाँ दे रहे निमन्त्रण, सब को मीठे बोल बुलाते।
सुख की नीद वही सोता है, जिसे प्यार के श्वास सुलाते॥

समझ स्वयम् को अमर भोग मे– मानव भौंरा हो जाता है।
निकल नही पाता फूलो से, मनुज नशे मे खो जाता है॥
राम-रोष से डर मोहन ने– जीवन-पथ पर पैर बढाया।
तम कब ठहरा उसके पथ मे, जिसे राम ने दीप दिखाया!

ऊँचे नीचे टेढे जग मे, बडे बडे ठोकर खाते है।
पर जो 'राम! राम!' रटते है, वे गिरने से बच जाते है॥
राम नाम के चिर प्रकाश मे, सारे दृश्य दिखाई देते।
वे 'तुलसी' की तरह अमर है, जो जन राम नाम ले लेते॥

वह न राम को क्षण को छोडे, जो भव तापो से घिर जाता।
'बाली' से 'सुग्रीव' न बचते, अगर राम का तीर न आता॥
राम नाम को भूल विश्व मे, मानव सुख खोजा करता है।
मानो सूखे हुए कुएँ मे, डोल डाल पानी भरता है॥

चलते रहो राम के पथ पर, मुक्ति मिलेगी, जय पाओगे।
करो राम से काम विश्व मे, राम स्वयम् ही बन जाओगे॥
मन मे राम, हाथ मे दीपक, पथ दिखलाते बढे अगाडी।
लघु जीवन से लगे खीचने, जग-जीवन की भारी गाडी॥

रहो मेरी आँखो मे राम !
तुम्हे पूजूँ निशि दिन निष्काम ।।

न छोड़ूँ मैं क्षण भर को तुम्हे,
न भूलूँ मैं तुम को भगवान !
हृदय मे रहो, दृगो मे बसो,
राम ! तुम भव-जलनिधि के यान।
नही कुछ मुझे चाहिये और,
बना बस रहे तुम्हारा ध्यान।
सामने खडे रहो साकार,
हृदय-निधि निराकार भगवान !

तुम्हारा रसना पर हो नाम !
रहो मेरी आँखो मे राम !

दीप मानस के जलाकर, आरती उसकी उतारो !
प्रेम से उसको रिझाओ, हृदय से उसको पुकारो !
दुःख जिसका दीप बनता, आह उसकी चाह बनती ।
चाँदना जिसके हृदय मे, चाह उसकी राह बनती ।।

फूल स्वागत मे उसी के, डाल पर मुसका रहे हैं।
आरती उसकी पुजारी, मन्दिरो में गा रहे हैं ।।
रात की रानी दिवाली, आरती के दीप आली !
उन पगो की धूलि है यह, चाँद सूरज की उजाली ।।

ओस के आँसू लिये निशि, भोर की लिखती कहानी ।
कालिमा धोता सवेरा, जागती सोयी जवानी ।।
तप रहा दिनमान देखो, चल रहा पथ पर निरन्तर ।
ढूंढता फिरता उसे वह, 'वेद' कहते जिसे ईश्वर ।।

ढूंढने उसको चला जो, वह स्वयम् वनता उजाला।
प्रेम की प्यासी वरसती, उन पगो मे मेघ-माला ॥
नाम-नाविक से गिरा-गुरु, नाव ले आती किनारे।
प्यास बुझती है उसी से, चातकी जिसके सहारे ॥

गा रही चचल जवानी, नाचती क्रीडा नगीली।
मौत की चादर विछाकर, गा रही दुनिया रँगीली ॥
खेल लो दो चार क्षण को, फिर न आयेगी जवानी।
खेल वह खेलो धरा पर, खेल वन जाये कहानी ॥

चाँद उगा वरसी रसना, रस–
धार वनी जल मे खिल चाँदी।
पागल पावस! चाँद चुरा कर–
आग लगा मत, छीन न नाँदी ॥
सिन्धु लिये दृग मे भव-भारत–
माँ जल गूँथ सुहार पिरोती।
कीचड! नीरज से चिपटे मत,
तोड न हस! धरा पर मोती ॥

तृतीय सर्ग
विलायत यात्रा

दुनिया क्या है ? नयी समस्या, जीवन क्या है ? प्रश्न और हल।
जन्म मरण है एक कल्पना, जन्म मरण मे सँभल सँभल चल !
कहाँ जा रहा है ओ यात्री ! मजिल भूल कटकित पथ पर।
भग्न स्वप्न से पागल प्राणी ! पैर न अपना इधर उधर धर ॥

ओ मनुष्य ! तू बैठ न थक कर, पथ के साथ साथ आगे बढ !
रुक न देखकर चट्टानो को, सागर मे घुस, पर्वत पर चढ !
यहाँ वही जीवित रहता है, जिसने सीख लिया है चलना।
सूरज कब मेघो से बुझता, क्योकि उसे आना है जलना ॥

यहाँ जन्म के साथ साथ ही, चिन्ताये घिर घिर आती है।
मन की बाते आँखो मे आ, आँसू बन कर रह जाती हैं ॥
पिता सिधारे स्वर्ग, आ गई– बच्चो के कन्धो पर गाडी।
किसलय के कोमल प्राणो से– खेल खेलने लगे खिलाड़ी ॥

'करमचन्द' के मित्र एक थे, बात सदा हित की कहते थे।
पूज्य 'माव जी दवे' पुत्र को– परामर्श देते रहते थे॥
वे 'पुतलीबाई' से बोले, "मोहन चला विलायत जाये।
पढना उन्नति की सीढी है, पढकर वह पारस हो आये ॥

केवल तीन वर्ष मे मोहन, वैरिस्टर बनकर आयेगा।
बहुत बडा हो जायेगा यह, बहुत अधिक यह पढ जायेगा ॥"
'जोशी जी' मोहन से बोले, "पुत्र ! विलायत पढने जाओ।"
"बात बहुत अच्छी चाचा जी ! जाने की उलझन सुलझाओ !

रोक रही है अर्थ-समस्या, रूढिवाद ने पकड लिया है।
मन की कलिका सी इच्छा को, बाधाओ ने जकड लिया है॥
आशीर्वाद मिले माता का, भैया से आज्ञा दिलवाओ !
किसी तरह भी मुझे विलायत, चाचा जी ! पढने भिजवाओ॥

यही पिता जी की इच्छा थी, पढकर मै वकील बन जाऊँ।
दूर देश मे पढूँ हृदय से, भारत-माता के गुण गाऊँ॥"
आशा-वृक्ष लगा मानस मे, 'जोशी जी' चल दिये वहाँ से।
मोहन लगे सोचने मन मे, जाऊँ कैसे और कहाँ से ?

कहा बडे भैया ने, "मोहन ! 'लैली साहब' से मिल आओ।
उन पर है अधिकार हमारा, उनको मन की बात सुनाओ॥
हो सकता है किसी तरह से, तुम्हे विलायत भिजवादे वे।
शायद बाबा के प्रभाव से, अर्थ-समस्या सुलझादे वे॥"

'लैली साहब' के बंगले को, घर से मोहनदास चल दिये।
मानो प्यासा कुआँ चल पडा, कुआँ खोदने बिना जल पिये॥
कही उलझते, कही सुलझते, पहुँचे शीघ्र 'पोरबन्दर' वे।
शरमाये से खडे हो गये, जा 'लैली' के बँगले पर वे॥

'लैली साहब' से यह बोले, "मुझे विलायत पढने भेजो !
अपनी कृपा-कोर से मुझको, उन्नति-पथ पर चढने भेजो !!"
सुन 'लैली साहब' यह बोले, "पहिले 'बी ए' पास करो तुम !
तब मिलना, तब मदद करूँगा, उर मे और प्रकाश भरो तुम !"

कहते हुए चल दिये 'लैली', मोहन मन मसोस कर आये।
जला न आशा-दीप वहाँ पर, उलटी और निराशा लाये॥
लेकिन मृगतृष्णा से मन मे— चाह विलायत जाने की थी।
निशा निराशा की छाई थी, आशा दीप जलाने की थी॥

पथ मे आशा और निराशा, चक्कर काटा ही करती हैं।
पर जो नही रुके बाधा से, बाधाये उनसे डरती हैं॥
जग की बाधाओ से भिड भिड, जो राही आगे बढ जाते।
पथ के पत्थर तोड तोड वे, लक्ष्य पैर के तले दबाते॥

भाई ने भाई को देखा, बोले, "मैं प्रबन्ध कर दूँगा।
शिक्षा सब से बडा धर्म है, इसके लिये कर्ज कर लूँगा॥"
पर माँ ने यह कहा उसी क्षण, "मै न विलायत जाने दूँगी।
मदिरा पीने नही भेजती, मास नही मैं खाने दूँगी॥"

मोहन ने यह करी प्रतिज्ञा, "माँ ! मैं मास नही खाऊँगा।
कभी नही मदिरा पीऊँगा, कभी न दुर्पथ पर जाऊँगा॥"
'जोशी जी' 'बेचर स्वामी' ने– माता को विश्वास दिलाया।
जननी ने भी आज्ञा दे दी, मातृ-प्रेम ने मार्ग दिखाया॥

पत्नी ने प्रिय प्यार सजाकर, जीवन-पथ पर दीप जलाये।
टेढी मेढी पगडण्डी पर, सद्भावो ने फूल बिछाये॥
माँ के भाव नाव बन आये, सद् इच्छा पतवार बन गई।
भैया नाविक बने नाव के, पत्नी पथ का प्यार बन गई॥

सब सहपाठी छात्रो ने मिल, मोहन का उत्साह बढाया।
सूरज ने उसके स्वागत मे, पथ पर स्वर्ण-विहान बिछाया॥
मोहन जाने लगे विलायत, किन्तु जाति मे मची खलबली।
आगे बढता देख किसी को, जग के मन मे ज्योति कब जली !

उसे देख दुनिया जलती है, जो उठने को कदम उठाता।
नागिन उसको जहर पिलाती, जो अपना भण्डार लुटाता॥
हाय ! पथिक के पथ पर दुनिया, रोडा बनकर अड जाती है।
बचने वाले बच जाते हे, लडने वाली लड जाती है॥

आती है तूफान बनी वह, तिनका बनकर उड जाती है।
सीधे पैरो आती है पर, उलटे पैरो मुड जाती है॥
"नही 'मोढ बनियो' मे अब तक, गया विलायत पढने कोई।
मोहन का दुस्साहस है यह, उसने लाज जाति की खोई॥"

"वह जा सकता नही विलायत," पचो ने यह बात सुनाई।
'मोढ जाति' के इस निर्णय पर, बढ मोहन ने लात लगाई॥
इस पर उन निर्मम पचो ने– उनका बहिष्कार कर डाला।
हुक्का पानी बन्द कर दिया, 'मोढ जाति' से उन्हे निकाला॥

मोहन के सागर से भैया, तनिक न इस निर्णय से डोले।
'सोच न कर, जा चला विलायत!' अटल हिमालय से वे बोले॥
भाई से हिमगिरि सा बल पा, कर्मवीर 'बम्बई' आ गये।
बडी बडी आशाये लेकर, भावो के घन घुमड छा गये॥

यात्रा का सामान साथ ले, करी 'विलायत' की तैयारी।
'मजुमदार त्र्यम्बका राय' के– साथ यान मे मिली सवारी॥
शरमाये से, सकुचाये से, चले 'बम्बई' के बन्दर से।
वातायन से झाँक रहा था, यात्रा मे प्रकाश अन्दर से॥

देश-प्रेम बन गया गुप्तचर, माँ का प्रेम बन गया छाया।
अटल प्रतिज्ञा से दृढ मन का, लहरो ने कुछ पार न पाया॥
लहरे उसको हिला न पाई, जो हिमगिरि सा अटल रहा है।
ज्वाला उसको जला न पाई, जो सूरज की तरह दहा है॥

भारत की पवित्र मिट्टी मे, लोट लोट वह फूल खिला था।
हार हार कर विजय मिली थी, डूब डूब कर कूल मिला था॥
बदली ने पहले चन्दा पर, अपना काला जाल बिछाया।
मदिरा पीने को ललचाया, मास खिलाने को फुसलाया॥

कहा, 'छुरी कॉटे से खाओ, खेलो खूब पश्चिमी रँग में।
मौन न बैठे रहो यान मे, बाते करो हवा के सॅग मे ।।'
भारत के उज्ज्वल भविष्य को, उनकी उलटी बात न भाई।
जब जब जाल बिछे पश्चिम के, तब तब मॉ आँखो मे आई ।।

भूखा रहा किन्तु तापस ने– फुसलाने से मास न खाया।
वह वह लोहा रहा कि जिसको– ज्वाला ने भी नही गलाया ।।
फलाहार मे पत्ते खाये, आत्मा का सम्मान न खोया।
वह जीवन भर काटा करता , जिसने बचपन मे कुछ बोया ।।

अपने साथ ले गये थे वे, थोडा सा पकवान मिठाई।
खाया वही कठिन यात्रा मे, पानी पी पी प्यास बुझाई।।
इसी तरह हलचल मे चलकर, जा पहुँचा जलयान किनारे।
'साउदेम्पटन बन्दर' पर जा, उतरे 'मोहनदास' हमारे ।।

श्वेत कोट पतलून पहन कर, मानो रवि जहाज से उतरा।
शान्ति सुधा वर्षा करने को, मानो चॉद ताज से उतरा ।।
'मजुमदार' के साथ यान से– जाकर वे होटल मे ठहरे।
वहॉ विलायत मे मोहन के, मित्र 'प्राण जीवन' थे गहरे ।।

तार दे दिया था मोहन ने, वे मोहन से मिलने आये।
नये देश मे प्रिय मोहन को, पथ के रग ढग समझाये ।।
देख निराले ढग वहॉ के, वे मन ही मन मे शरमाये।
'विक्टोरिया' विकट होटल मे, अपना खर्च देख घबराये ।।

होटल छोड दिया मोहन ने, लिया एक कमरा भाडे पर।
लेकिन उस सूने कमरे मे, आने लगा याद उनको घर ।।
मॉ का प्रेम याद आते ही, आँखो से आँसू बह जाते।
मानो आँसू मॉ की पीडा, जग से बह बह कर कह जाते ।।

तडप कर जो भाव निकले, गीति वे ही हैं।
दृगो से जो पिघल निकले, प्रीति वे ही हैं॥
आँसुओ के रँग भरे ह, चित्र कैसे ये!
दुख सह पाते न आँसू, मित्र कैसे ये!!

जिसके मन मे दीप याद का, उसको नीद नही आती है।
मातृभूमि की याद तडप कर, आँखो ही मे रह जाती है॥
कभी याद करते भैया को, कभी याद पत्नी की आती।
गउएँ, गाँव, वाग, मित्रो की– मनहर चाह चीस भर जाती॥

रह रह याद देश की आती, रह रह चीस चुभा करती थी।
मानो आ आ नयी परीक्षा, प्रति पल नये प्रश्न धरती थी॥
क्षण क्षण नयी समस्या आकर, मोहन को उलझा लेती थी।
पर ईश्वर की अमर प्रेरणा, प्रश्न सभी सुलझा देती थी॥

सयम वचन भग करने को, दौडे वाधाओ के घोडे।
पीडाओ के पत्थर वरसे, धर्म न छोडा, वचन न तोडे॥
जो सच्चे पथ पर चलते हैं, उनका सदा सहायक ईश्वर।
सच्चे पर ईश्वर की करुणा, सच्चे को जग मे किसका डर!

मोहनदास करमचद गाँधी– टस से मस न हुए तिल भर भी।
हिला न पाई वह रगीनी, गा गा और गले मिल कर भी॥
अन्त विजय पाई मोहन ने, हार गई सारी वाधाये।
भूल भक्त की फूल रूप हो, तज कर कीच कमल वन जाये॥

एक निरामिष भोजनगृह की– ओर उन्हे ले चले दयानिधि।
जो रचना मे रचना करता, वह साधक वन जाता है विधि॥
उस दिन पेट भरा मोहन का, मनचाहा आहार मिल गया।
जो डाली पर मुरझाया था, पानी पी वह फूल खिल गया॥

खिला फूल लेकिन पश्चिम की– सुन्दरता ने जाल बिछाया।
सभ्य देश की रगीनी ने, अपना रूप अनूप दिखाया॥
रग बिरगे साज सजा कर, मनहर छटा दिखाने आई।
बडे बडे मद भरे नयन से, बालक को फुसलाने आई॥

कभी बनी नर्तकी सुन्दरी, कभी काम के स्वर मे बोली।
कभी 'मेनका' सी मस्ती बन, मन-मोहन के पीछे हो ली॥
गोरे गोरे अङ्ग नचाकर, कभी नचाने लगी हृदय को।
सन्ध्या से स्वर्णिल बालो मे, कभी फँसाने लगी निलय को॥

वह विलायती जादूगरनी, अपना जादू लगी चलाने।
पर मन-मोहन आत्माबल से, उसके जादू लगे जलाने॥
उस रगीन देश मे मोहन, रग देखने लगे रँगीले।
मरने वाला फूल देखकर, उनके नयन हो गये गीले॥

भारत का गौरव घट जाता, कैसे वे असभ्य कहलाते!
इन भावो के ज्वार भाट मे, कभी कभी बह कर तिर जाते॥
धन्य! धन्य!! भैया मोहन के, किया न हृदय अनुज का छोटा।
धन्य! धन्य!! वह मोहन जिसने– किया न काम कभी भी खोटा॥

निर्धनता मे भी भैया ने– भेजी स्वर्ण घडी भैया को।
वह कितना अनमोल स्नेह जो– तट तक ले आये नैया को॥
बढिया वस्त्र पहिन मोहन ने– बाँधी नयी घडी सोने की।
धन्य! धन्य!! वह घडी कि जिससे– आई घडी मुक्त होने की॥

छैल छबीले बन कर छैला, मानो चले छलो को छलने।
रोडे चूर चूर करने को, मोम लगा रोडो पर चलने॥
मानो आग शान्त करने को, पानी चलने लगा आग मे।
सोने के पिंजरे मे गिर गिर, आँसू जलने लगे फाग मे॥

पैर नृत्य के लिए उठाया, किन्तु ठिठक कर वही रुक गये।
प्रखर सत्य की ढाल देख कर, दुर्व्यसनो के तीर झुक गये॥
सीख 'वॉयलिन' सरस वजाया, पर उससे भी ऊव गये वे।
सीख लिया सगीत सुरीला, खेलो मे भी खूब गये वे॥

यौवन मे अँगडाई लेती, युवती एक लुभाने आई।
अपना रूप अनूप उभारे, रमणी वहाँ रिझाने आई॥
उसका रूप अनूप देख कर, सिहर उठा तन, मुसकाया मन।
मन-शिशु से हँस हँस कर खेला, युवती का मदमाता यौवन॥

वह सुन्दर मस्ती थी जिस पर— साधे सभी चिपक जाती है।
जिसे देख कर चचल आँखे— मचल मचल गति मे गाती हैं॥
सँगमर्मर से मुखमण्डल पर, शशि सी आभा चमक रही है।
विजली जैसी हँसी हृदय की, दो ओठो पर दमक रही है॥

स्वर्णिल वाल मेघमाला से, इधर उधर को वल खाते ह।
मानो नागिन वीन वजाती, नाग वीन पर लहराते ह॥
कोमल खिले फूल से तन पर, मन-मदिरा विखरी पडती है।
सौरभ से समीर से हिल मिल, रूप ज्योति निखरी पडती है॥

नील कमल से उन नयनो मे— साध साधनाएँ करती हैं।
या कि साधनाएँ आँखो मे— श्रद्धा से मस्तक धरती हैं॥
या नयनो ने होड वदी है, या कि तपस्या करते हैं दृग।
या आँखो के स्नेह-नीर पर, उलझ रहे हैं तृष्णा के मृग॥

या मानस-मछलियाँ दृगो मे— छल छल जल-क्रीडा करती हैं।
या मनहर मस्तानी आँखे— मस्ती मे व्रीडा भरती ह॥
पक्षी सी पुतलियाँ उलझ कर, दृग-नीडो मे कैद पडी ह।
मधुकर सी वे नाच रही ह, चचल मन मे गडी खडी हैं॥

मानो धवल दूध की गगा– मौन निमन्त्रण देने आई।
या कि दिव्य सुन्दरता कोई– फूलो से आँचल भर लाई॥
'वेटर' की उस रूप राशि ने– मोहन पर लीला फैलाई।
ललित लाज की चादर सी वह, तन पर फहरी, मन पर छाई॥

ले मोहन को साथ सुन्दरी, रोज हवा खाने जाती थी।
मधुर इशारे से तन मन को– अपने साथ खीच लाती थी॥
चचल, इठलाती, वल खाती, पग पग पर मुसकाती जाती।
मधुर कल्पना सी उडती थी, वातो के मोती वरसाती॥

सुन्दर सुन्दर उपवन मे वह– झरनो के नीचे गाती थी।
कभी घास पर वैठ रागिनी– मन के पास खिसक आती थी॥
कभी हवा मे उडती थी वह, कभी पहाडी पर चढ जाती।
कभी हृदय से हृदय वाँध कर, वरवस हर लेती थी थाती॥

एक दिवस भोले यात्री को– किसी पहाड़ी पर ले आई।
देख प्रकृति का रम्य रुप रँग, वह मन ही मन मे शरमाई॥
घूम पहाड़ी पर वह देवी, विजली सी उतरी कानन मे।
मानो दमक दामिनी दौडी, पलक मारते ही सावन मे॥

शिशु से मोहन खडे रह गये, क्षण मे उतर गई वह तरुणी।
हँसी उडाने लगी धरा पर, रह रह कुछ कुछ कह कह तरुणी॥
वोली, ऊपर आकर मोहन! हाथ पकड कर खीच ले चलूँ।
तुम वच्चे हो या मैं तुमको– निज गोदी मे भीच ले चलूँ॥

शरमाये से हँसकर मोहन– धीरे धीरे नीचे आये।
उस देवी ने शावाशी दी, सुन मोहन मन मे शरमाये॥
उस गुलाव के मधुर प्यार मे– अद्भुत रस अद्भुत मिठास था।
कोयल और सुधा सी वोली, कवियो जैसा हृदय पास था॥

वह न वासना की पुतली थी, उसमे जीवन सार भरा था।
प्रीति-रीति की गति-विधि थी वह, कुन्दन जैसा हृदय खरा था ॥
उसके कोमल मधुर रसीले– भाव हृदय के लिए नाव थे।
भाव लहरियो पर अनन्त के, सुन्दर सुन्दर बहुत चाव थे ॥

करती थी सत्कार अतिथि का, मन की हारी हुई जीत से।
हार-जीत की वीणा लेकर, रिझा रही थी मधुर गीत से ॥
वह पागल है जो कहता है, पश्चिम का सौन्दर्य जहर है।
वह चचल है जो कहता है, पश्चिम का आनन्द लहर है ॥

हम अपने सिकुडे स्वभाव से– नाप रहे उनकी गहराई।
हम अपनी थोथी दुनिया मे– कहते है पर्वत को राई ॥
ऐसे एक "आयटन" मे भी, मिली एक देवी चमकीली।
बडी रँगीली अलबेली छवि, बाते करती बडी रसीली ॥

मधुर स्नेह की दीपशिखा वह, दिल की दुनिया दिखा रही थी।
या कि प्रीति की रीति विश्व को, वह कल्याणी सिखा रही थी ॥
मोहन छिपा व्याह की बाते, बोले, हुई न मेरी शादी।
क्षण भर को उस प्रेम रग मे, पिघल गया मानव फौलादी ॥

उसकी चमकीली चचलता, चिपक गई मोहन के मन से।
मचलो मत मानस की लहरो, तरुणी के क्रीडा-बन्धन से ॥
मै वन वन का विहग, मुझे तुम– कोमल बन्धन मे मत बाँधो!
मुझे मुक्त कर दो पिँजरे से, कचन से तन मे मत बाँधो!!

जो अणु अणु मे व्याप्त शुभे! तुम– उस जीवन-धन से मिलने दो!
हर पत्ते पर, हर डाली पर, हर नर के मन मे खिलने दो!!
सजीवन को भुला अभागिन! क्यो नागिन से खिला रही हो?
राम-नाम-गगाजल तज कर, रूप-गर क्यो पिला रही हो?

बहुत पी चुका गरल आज तक, अब दो घूँट सुधा पीने दो ।
बहुत रह चुका बन्धन मे मैं, अब मुझको स्वतन्त्र जीने दो ! ।
मुझे बन्द कर रूप-जाल मे, मेरे जीवन से मत खेलो ।
मुझे छोड दो राम नाम पर, मेरे यौवन से मत खेलो ।।

मत पकडो मदमाती तितली । नश्वर यौवन से मत बाँधो ।
मिल जाने दो उस अनन्त मे, मदमाते तन से मत बाँधो ।।
पिघले मानस का जीवन-रस— मानसरोवर ही मे ठहरा ।
हृदय-हस मोती चुगने को— लगा तैरने लहरा लहरा ।।

भूल रहे थे, भटक गये थे, हृदय-ज्योति ने पथ दिखलाया ।
या कि बचाने को दलदल से, 'बा' का प्यार दौड कर आया ।।
जाने किसने रूप जाल मे— मरघट का ककाल दिखाया ।
या माँ 'पुतली' के तप व्रत की— छाई चचल मन पर छाया ।।

साफ साफ कह दिया युवक ने, कलिके । मेरा ब्याह हो गया ।
झूठ बोलता रहा बहिन । मैं, जाने क्यो मैं कहाँ खो गया ?
नही ब्याह ही केवल देवी ! एक हो चुका है बालक भी ।
झूठ नही चल सकता पैरो, देख रहा सब का पालक भी ।।

सुन मोहन की बात सुन्दरी, सहम गई पर फिर मुसकाई ।
बडे प्रेम से उस दिव्या ने, बाल-ब्याह की हँसी उडाई ।।
तन से दूर हो गई देवी, मन के बिलकुल पास आ गई ।
अब तक थी अधरो पर, पर अब— बदली बनकर प्यास छा गई ।।

उस दिन से वह छवि-मोहन से, 'भैया । भैया ।' कह कर बोली ।
वही प्रेम की गगा मन मे, जली वासनाओ की होली ।।
जिस होली मे झूठ जल गया, जिस गगा मे जहर बह गया ।
बजी प्रेम की अनहद बशी, मन मे केवल सत्य रह गया ।।

पैर पड गया था फिसलन पर, गिरते गिरते संभल गये वे।
वीच भँवर मे डूव रहे थे, तट के ऊपर निकल गये वे॥
जव से सत्य हृदय मे देखा, सच न वोलने मे सकुचाये।
धन्य! धन्य!! वह देवी जिसने— मानस मे भगवान दिखाये॥

विश्व की उलझी पहेली, हृदय उलझाती रही है।
चेतना की चाह भगुर, स्वप्न सुलझाती रही है॥
मुक्त को वन्दी वनाते, स्वप्न छाया से रँगीले।
कल्पना साकार करते, आँसुओ के गीत गीले॥

खेल विखेर विलीन कहाँ खग,
टूट गिरा नभ से जव तारा?
स्वप्न गिरा पल मे नभ से वह,
शेष रहा दृग मे कण खारा॥
गा मत प्यार! सितार वजाकर,
सागर ने दृग नीर सुखाया।
स्वप्न न देख यहाँ प्रिय पावस!
धूप! न ढूँढ यहाँ तरु-छाया॥

चतुर्थ सर्ग

पथ का प्रसाद

खिला चन्दा गाता, कुमुद खिलते, दीप चलते ।
उषा की प्याली मे कमल खुलते, सूर्य जलते ।।
कभी बन्दी भौरे, नयन मुँदते, लाज ढलती ।
कभी नौका डूबी, जल भर कभी नाव चलती ।।

दिये दो पीडा के, मृगतृषित, शोले बरसते ।
निराली आँखो मे घन हृदय धो धो तरसते ।।
चिता के शोलो मे जल जलज का गौरव बढा ।
शिखा से पूछो जाकर, पथिक कैसे बढ चढा ।।

जीवन-पथ पर चलते चलते, बडी बडी उलझन आती हैं ।
आँखे कभी उठा करती हैं, कभी शर्म से झुक जाती हैं ।।
मन मे टीस चीस होती है, फिर भी मुसकाना पडता है ।
छाती को छलनी करके भी, मन को समझाना पडता है ।।

आँखो के निर्मल पानी मे– साध बहानी ही पडती है ।
अपने ही हाथो से अपनी– चिता जलानी ही पडती है ।।
मानव अमर बिम्ब ईश्वर का, मानव-जीवन दीप धूप है ।
दु खो मे जो सुख बन जाये, वह केवल सच्चा स्वरूप है ।।

मेरे मोहन के पथ मे भी, बडी बडी बाधाये आई ।
उस उलझन से उलझ उलझने, हार हार कर भी टकराई ।।
विषय वासना के चिन्तन से– सग-दोप पैदा होता है ।
सग-दोष से काम, काम से– इच्छा मे मानव रोता है ।।

इच्छा ही से क्रोध, क्रोध से– मोह, मोह से भ्रम आता है।
स्मृति भ्रम की जलती ज्वाला मे– बुद्धिमान नर जल जाता है।।
सद्ग्रन्थो के पढने से ही– सुख, सच्चा स्वरूप मिलता है।
श्रद्धा और तपस्या से ही– मिलता सत्य, सुमन खिलता है।।

सद्ग्रन्थो मे सत्सगति है, सद्ग्रन्थो मे अमृत भरा है।
सोने मे सुगन्ध ग्रन्थो मे, ऋषि मुनियो का हृदय धरा है।।
सत्साहित्य सुधा-सागर है, जिसमे कमी नही रत्नो की।
कमी नही है किसी वात की, कमी सदा रहती यत्नो की।।

सद्ग्रन्थो को मथ मथ कर जो, रत्नो का भडार लुटाते–
वे है अमर देवता, उनके– युग युग मे पग पूजे जाते।।
सद्ग्रन्थो एव ईश्वर मे, जिसका भी विश्वास नही है–
वह पीडित है, वह मिट्टी है, उसमे कोई श्वास नही है।।

मोहनदास करमचँद गाँधी– सद्ग्रन्थो के भक्त वन गये।
जिस से जहर अमृत वन जाये, वे वह निर्मल रक्त वन गये।।
वे 'शकर' की तरह जहर का– प्याला पीते ही जाते थे।
माँ के फटे हुए पल्ले को– गति से सीते ही जाते थे।।

लेकिन सुख की कुछ फुलझडियाँ, पथ से पथिक हटाने आई।
वडी वडी चमकीली आँखे, जादू चला डिगाने आई।।
"पोर्टस्मथ" वन्दर मे मोहन, सम्मेलन मे गये निमन्त्रित।
वहाँ वहुत हैं दुराचारिणी, पथ कर देती हैं अनियन्त्रित।।

नारी किस को नही वाँधती, नारी के आगे नर हारा।
नारी भँवर भयकर जिसमे– नर को मिलता नही किनारा।।
कैसा भी तैराक मनुज हो, डूवे विना नही रह सकता।
नारी के मँझधार पार का, सारा सार नही कह सकता।।

एक सुन्दरी के घर पर ही, मेरे मोहन को ठहराया।
खेल खेल मे मचल उठा मन, काम कल्पना से लहराया ॥
निर्बल के बल राम, राम ने– जिसको चाहा उसे उठाया।
भारत माता की किस्मत ने– बीच भँवर से उन्हे बचाया ॥

देख कुपथ पर पैर मित्र का, सच्चे साथी ने मुँह खोला।
'यह कलियुग, यह पाप, अरे यह, भागो भागो!' वह यह बोला ॥
आँखे झुकी, हृदय उठ बैठा, बुरे मार्ग से तभी हट गये।
राम-नाम की तेज धार से– कामदेव के तीर कट गये ॥

✓ भक्तो के भगवान साथ हैं, गज को गोदी मे ले लेते।
अपनी छाती से चिपटा कर, अपनी अमर ज्योति दे देते ॥
राम-भक्ति के ही प्रताप से– बचे गढे मे गिरते गिरते।
जो नर विमुख राम-चरणो से– उसके पथ मे बादल घिरते ॥

✓ राम-नाम की प्रखर-रश्मि से– काले बादल फट जाते हैं।
बढते चरणो की चोटो से– पथ के पत्थर हट जाते हैं ॥
चाहे जितना कठिन कार्य हो, राम-कृपा से पूरा होगा।
जिसने आश्रय लिया राम का, उसने कभी नही दुख भोगा ॥

✓ जीवन की सारी बाधाये, राम-कृपा से फूल बनेगी।
जीवन की सारी मँझधारे, राम-कृपा से कूल बनेगी ॥
राम-नाम से राम रूप हो, जड चेतन के बने सहारे।
मैं भी तुम्हे ढूँढता हूँ प्रभु! कहाँ मिलेगे चरण तुम्हारे ?

वह आगे बढता जाता है, जिसने उसकी कीमत आँकी।
नारायण ने दीप दिखाया, देखी 'हेमचन्द्र' की झाँकी ॥
'नर-नारायण हेमचन्द्र' के– मन की गाँठे टूट चुकी थी।
कृत्रिमता की कलुषित बाते– उनके मन से छूट चुकी थी ॥

शान्त सादगी मे रहते थे, 'हेमचन्द्र' के भाव शुद्ध थे।
मानो उनके मधुर हृदय मे– दीपक वन कर वसे 'वुद्ध' थे॥
पारस ने कठोर लोहे पर– अपनी स्वर्णिम छाप छोट दी।
मन के उच्छृङ्खल घोडे की– सीधी ओर लगाम मोड दी॥

गये 'कार्डिनल मैनिंग' ऋषि से– मिलने को उनके आश्रम मे।
वे मानवता के प्रतीक थे, कमी न थी जीवन के क्रम मे॥
ये भारतवासी उनसे मिल, जीवन-पथ पर धन्य हो गये।
मिले महात्माओ से जो जन, वे जन मन के मैल धो गये॥

आर्प 'कार्डिनल मैनिंग' ऋषि ने– उनकी आवभगत की रह रह।
भला करे भगवान तुम्हारा, ऋषि ने आशीर्वाद दिया यह॥
साधु पुरुप से मिल वे दोनो– साधु वन गये, साध वन गये।
मन मे जितने भी कीडे थे, सत्सगति से सभी छन गये॥

देश विदेश घूमते डोले, लेकिन अपना देश न भूले।
कभी कही शूलो पर भूले, कभी कही फूलो पर भूले॥
चमक दमक देखी 'पैरिस' की, देखी दुनिया की प्रदर्शिनी।
निर्धनता मे यात्रा की वह, मन की साधे रही सगिनी॥

निर्धनते! मत रोक मुझे तू, मजिल मेरे साथ चलेगी।
इस गरीव यात्री के पथ पर– मनुष्यता की ज्योति जलेगी॥
पगली! नही जानती क्या तू, वे अमीर तेरे वल पर हैं।
तू फकीर इसलिये कि ये सव– वादशाह तेरे दम पर है॥

वैसे तो यदि करो कल्पना, यह सारी दुनिया मेला है।
इस दुनिया मे वही अमर है, जो पापाणो से खेला है॥
अपव्यय किये विना मोहन ने– 'पैरिस' की सुन्दरता देखी।
शीशो सी सुन्दर सडको पर– यौवन की निर्मलता देखी॥

ससृति की अलको पर 'पैरिस',
या विधु हास सुहाग लुटाता।
मानव की उस काव्य-कला पर–
नृत्य रचा अलि-गायक गाता॥
सावन की बरसात वही मधु,
केसर फूल गुलाब वही है।
हीरक-हार वही घन मे, मणि–
मानव की जग-आब वही है॥

'पैरिस' रूप-राशि धरती की, 'काशमीर' की एक मद-झलक।
मनु की निर्मित नयी सुन्दरी, श्री पर खडी हुई है अपलक॥
दृश्य वहाँ के देख मनोहर, दृग-गायक गाते रहते है।
'पैरिस' की मृदु सुन्दरता से, यौवन शरमाते रहते है॥

'पैरिस' के वे मन्दिर देखे, जिनमे स्वयम् शान्ति रहती है।
'नाट्रेडम' की कला चातुरी, जिसमे कृषि कविता कहती है॥
चित्रकार की चित्रकला मे– कलियाँ क्रीडा करती देखी।
चित्रकला मे 'इन्द्रपुरी' की– परियाँ पानी भरती देखी॥

सुन्दर शान्त मूर्ति 'मरियम' की, जिसके आगे बैठे थे नर।
श्रद्धा से उस दिव्य रूप पर, झुका रहे थे सब अपना सर॥
कला-केलि के उस आँगन मे– 'पैरिस' का फैशन भी देखा।
भोग विलास प्यास अधरो की, बल खाता यौवन भी देखा॥

'एफिल टावर' पर भी चढ कर, पढी भावनाओ की रेखा।
जो न कभी बूढा होता है, 'पैरिस' मे वह यौवन देखा॥
कर कर केलि कला-कानन मे, मधुर हँसी से रहे बिखरते।
जितने भी वे घुसे आग मे, उतने ही वे रहे निखरते॥

मिले विलायत के मित्रो मे, 'सत्रो' मे भी हुए उपस्थित।
लेकिन उन सारे 'सत्रो' मे, मेरे मोहन रहे व्यवस्थित ॥
इन भोजो मे गये किन्तु वे– पास नही फटके शराव के।
भोजो मे फल फूल चखे पर– किये नही दर्शन कवाव के ॥

प्रिय छात्रो के साथ भोज मे– पथ से विचलित नही हुए वे।
दाग नही ग्राया चादर पर, चमके, कलुपित नही हुए वे ॥
वे विश्वासी कीचड मे भी, श्वेत कमल की तरह रहे हैं।
उसने उतने ही सुख भोगे, जिसने जितने दुख सहे हैं ॥

दुख कसौटी है जीवन की, जिस पर नर परखा जाता है।
दु:खो मे जो धैर्य छोडता, वह दर दर ठोकर खाता है ॥
दुख ग्रौर सुख के भूले मे, मोहन ग्रपना देश न भूले।
वे फूलो की तरह खिले हैं, जो नर शूलो पर भी भूले ॥

गोरो के गर्वित प्रदेश मे, इसी तरह शिक्षा मिलती है।
सभ्य देश मे खिला पिला कर, विद्या की भिक्षा मिलती है ॥
गुरु के साथ वहाँ तो मानव, भोजो से वैरिस्टर होते।
सभ्यो से मिलते जुलते हे, शिक्षक देख देख कर होते ॥

लेकिन सव दुर्व्यसनो से वच, मोहन देते रहे परीक्षा।
पढते रहे प्रेम से प्रतिदिन, दुर्व्यसनो से भी ली दीक्षा ॥
इस दुनिया की वात वात मे, यदि खोजो तो पाग्रोगे कुछ।
वुरी वात मे भी ग्रच्छाई, यदि ढूँढो तो लाग्रोगे कुछ ॥

जो खो गया खत्म है वह नर, जिसने खोजा उसने पाया।
जो कि खोजने चला विश्व मे, वह भगवान ग्रमर फल लाया ॥
'व्रुम' की 'कॉमन लॉ' पुस्तक पढ, कुछ कानूनी ज्ञान वढाया।
ग्रौर 'इक्विटी' पुस्तक को भी, मित्र वनाया, मन वहलाया ॥

'ह्वाइट' 'ट्यूडर' के पढने से, ज्ञान वढा, कुछ मिला मसाला।
कानूनी साहित्य पढा वह, जो उलझा मकडी का जाला॥
इसी तरह से मेरे मोहन, पढ कानून हुए वैरिस्टर।
प्रश्नो मे उत्तीर्ण हो गये, ले ले तूफानो से टक्कर॥

जीवन-पथ पर प्रश्न अनेको, और अनेको ही हैं उत्तर।
पूरी करी परीक्षा अपनी, बाँधा घर चलने को विस्तर॥
बैरिस्टर तो हुए किन्तु मन- मेरे मोहन का अशान्त था।
बैरिस्टरी किस तरह होगी, इस दुविधा से हृदय भ्रान्त था॥

जितना ज्ञान हुआ था उनको, उतने पर विश्वास नही था।
वडी बडी आशाये थी पर- बढा चढा अभ्यास नही था॥
जो कुछ वहाँ पढा था वह तो- भारतीय अध्याय नही था।
अपने देश धर्म का उसमे- ज्ञान नही था, न्याय नही था॥

हृदयगम कानून नही था, इसीलिये उससे डरते थे।
अपनी दुर्वलता की वाते, अपनी ताकत से करते थे॥
भारत की पवित्र सस्कृति का- पश्चिम मे सम्मान नही था।
हिन्दू शास्त्र तथा इस्लामी- कानूनो का ज्ञान नही था॥

अपने मित्रो से मोहन ने- अपनी दुर्वलता वतलाई।
उन मित्रो ने पथ दिखलाया- उपयोगी हे 'दादा भाई'॥
उनसे जाकर मिलो, तुम्हे वे- आगे का पथ वतलायेगे।
अधकार के दुर्गम पथ पर- 'दादा' दीपक दिखलायेगे॥

या तुम 'कट्टर पथी' दल के- 'मिस्टर पिकट' से मिल आओ।
वे सहृदयता के प्रतीक हैं, उनको अपनी वात सुनाओ॥
स्वच्छ सौम्य सरिता सा मानस, सव से मधुर वात करते हैं।
प्रेमपूर्ण पावन भावो से, मानस की पीडा हरते हैं॥

मोहनदास करमचँद गाँधी– मिले चरण छू जिज्ञासा से।
'फ्रेडेरिक पिंकट' ने उनको– समझाया दीपित आशा से॥
इन बुजुर्ग ने मोहन का मन– अपने सद्भावों से धोया।
सज्जनता की कृपा-कोर से– उनके मन में मोती बोया॥

जिस पर कृपा करी सज्जन ने, उसको दुर्दिन नही सताता।
जिस पर हाथ धरा दुर्जन ने, वह जीवन भर ठोकर खाता॥
'फ्रेडेरिक' से मिले मोहन ने– मातृभूमि की राह पकड ली।
मोह विलायत का तज डाला, भारत माँ की चाह पकड ली॥

स्मृति भारत की उनके मन मे–
मचली जल मे मछली जैसी।
पल मे मन मे बनती मिटती,
उठती स्मृति मे लहरे कैसी॥
हम देख रहे पथ को कब से,
दृग भारत-दर्शन के प्यासे।
किसकी पग-धूलि टटोल रहे,
तरुओ! झुक के किस आशा से?

भारत देश महान जहाँ पर–
सागर-हार, हिमालय ऊँचा।
जो विप पी शिव से शुभ से मृदु,
शंकर रूप शिवालय ऊँचा॥
पीर जहाँ, पतवार जहाँ, रण–
धीर जहाँ, ऋषि-लोक जहाँ है।
ज्ञान लिये, सुर-सार लिये गुरु–
गौरव भारत देश वहाँ है॥

छोड विलायत की रगीनी, कूच किया 'आसाम यान' से।
आशा और निराशा मानो, टकराई विधि के विधान से॥
क्षुब्ध उदधि था, क्षुब्ध हृदय था, सागर मे सागर चलता था।
या कि हृदय मे सागर भर कर, सागर मे गागर चलता था॥

उधर गर्जती सिन्धु-लहरियाँ, इधर दृगो मे गगा लहरी।
उधर अथाह थाह सागर की, इधर थाह मानस की गहरी॥
उधर सुधा-घट था सागर मे, इधर सुधा था उन पाँखो मे।
उधर नीर मे रत्न छिपे थे, इधर रत्न थे दो आँखो मे॥

मोती हीरे लाल जवाहर, मणियो का था जल मे संगम।
लाखो लाल अनेको मोती, मन-मोहन के थे हृदयगम॥
सागर की गोदी मे शशि था, उनका मुख था पूर्ण शान्त शशि।
जिससे महाकाव्य लिख जाते, उनकी उँगली मे थी वह मसि॥

कवि ने मोहन के जीवन से– महाउदधि की होड लगादी।
सागर के तूफानी जल मे– गागर जैसी नाव चलादी॥
कवि की उडी कल्पना जिसने– देखी सागर की गहराई।
सागर के अन्तस्तल मे घुस, गिरि पर अपनी ध्वजा चढाई॥

सारे अम्बर मे उड उड कर, गहन गगन का हृदय टटोला।
वे ही बोल सुने कानो मे, जो मोहन बचपन मे बोला॥
अतल तलातल भूतल मे उड, घूम वही आ गई कल्पना।
चरण धूलि बन सौरभ फैली, छाया वन छा गई कल्पना॥

बाते करते हुए उदधि से, गाँधी जी 'वम्वई' आ गये।
तट पर गले मिले भैया से, आज 'भरत' भगवान पा गये॥
दुनिया का विस्तार साथ ले, सागर की गहराई लेकर।
उडते हुए कल्पनाओ मे, मेरे मोहन आये तट पर॥

दीप जलाने वाला हो यदि, जग मे रहता नही अँधेरा ।
दूर देश जाने वाला वह, लेकर आया नया सवेरा ॥
स्वर्ण सवेरे का शुभ स्वागत, सूरज सा भाई करता था ।
प्यासी मिट्टी मे आँखो से, सूरज गगाजल भरता था ॥

चन्दा ढूँढ रहा सूरज को, सूरज चन्दा के वियोग मे ।
कुमुद कमल दोनो खिलते हैं, चन्दा सूरज के सुयोग मे ॥
वर्षो से प्यासे नयनो ने— प्रिय भाई के दर्शन पाये ।
वही प्रेम की गगा धारा, दोनो ने आँसू बरसाये ॥

दोनो भैया के पलो मे— बरस पड़े आँखो से मोती ।
कही गले मिलते है भाई, कही प्रेम की हत्या होती ॥
मिल कर गले कहा मोहन ने— "भैया ! जल्दी घर चलना है ।
मेरा मानस भटक रहा है, जल्दी से माँ से मिलना है ॥"

उत्तर मे उनकी दृग-वाणी— डब डब डब बरसात बन गई ।
दिन से दीपित ज्योति-सुन्दरी— क्षण को काली रात बन गई ॥
सिसक सिसक कर अग्रज बोले, "भैया ! माँ परलोक सिधारी ।
अन्त समय तक उत्सुकता से, बाट देखती रही तुम्हारी ॥

दुःख न हो तुमको विदेश मे, इसीलिये यह खबर न भेजी ।
निर्मम काल कराल निमिष मे— खीच ले गया प्राणो से जी ॥"
आँसू निकल पडे मोहन के, भिगो दिया धरती का आँचल ।
मानो फूट पडा धरती पर— मानस आज हिमालय का गल ॥

माता का प्रतिबिम्ब धरा की— गोदी मे मोहन ने देखा ।
माँ की प्यार भरी सेवा ही— ससृति पर नदियो की रेखा ॥
अपना मानस खुदवा कर माँ— पुत्रो को देती है मोती ।
माँ की छाया कल्पवृक्ष है, माँ की छाती जीवन होती ॥

माँ वात्सल्य-मूर्ति है, माँ के– ऋण से उऋण कौन हो पाया !
"भैया ! कहाँ गई बतलाओ, उस अमूल्य छाया की छाया ?
माँ मर गई ! हाय ! मैं माँ के– अन्त समय दर्शन न कर सका।
अन्त समय माँ के चरणो मे– रो रो कर आँसू न भर सका ॥"

ईश्वर की इच्छा है इसमे, कोई कर ही क्या सकता है !
क्षण-भगुर दुनिया मे नश्वर, अधिक ठहर ही क्या सकता है !
एक दिवस सब को जाना है, चार दिनो का यह मेला है।
पानी की लहरो के ऊपर, क्षणिक बुलबुलो का रेला है ॥

बच्चो जैसा खेल जिन्दगी, जिसमे हम भूले रहते हैं।
हम प्रभात के तारे है पर– व्यसनो मे फूले रहते हैं॥
आता एक, एक जाता है, प्रतिपल खेल यही होता है।
कोई रोता आता, कोई– अर्थी के ऊपर सोता है ॥

लहरो पर लिख रही लेखनी–
जीवन और मरण का लेखा।
यह धरती वियोग की क्रीडा,
यहाँ सभी को रोते देखा ॥

हरे हरे हिलते पल्लव ये–
पतझड की कह रहे कहानी।
हँसने की आँखो से तोलो,
रोने की आँखो का पानी ॥

पंचम सर्ग

मुस्काते आँसू

आशा और प्यार की प्रतिमा, मोती लिये देखती थी पथ।
तृषित दृगो का तीर्थ आ गया, मगल गाने लगे मनोरथ॥
मानो भरी हुई भावो से, पलक-किनारे नाव आ गई।
या कि प्रतीक्षा करते करते, प्रतिमा की मनुहार छा गई॥

मोती लुटा लुटा मानस के, स्वाति-विन्दु चख रही चातकी।
छाई चारो ओर चाँद के, चाह मधुर चाँदनी रात की॥
मन के भाव अधर तक आकर, पति की ओर चोर से लपके।
अमृत वरसने लगा चौक मे, हँस हँस शिशु चकोर से लपके।

फूलो की मुरझाई डाली, प्रिय को पाकर हरी हो गई।
मानो रजनी के आँगन मे, मदमाती चाँदनी सो गई॥
ललित लाज से चाव हृदय के, चरणो ही मे झुके रह गये।
मन के मोती वरस पगो मे, विरह व्यथा की कथा कह गये॥

चूम रही लहरे मधु का मुख,
पॉखुडियो पर पावस नाचा।
अकित योग वियोग युगो पर,
योग वियोग प्रभा पर वाँचा॥
मेघ मिले कृपि से करुणा कर,
आज हँसी हरि पा प्रिय खेती।
ग्रीष्म गया, वरसात सुहागिन–
प्यास वुझा मधु के घट देती॥

वोल उठे मोहन के आँसू, "आज कही यदि माँ भी होती—
तेरा प्यार चढाता मोती, माँ का प्यार लुटाता मोती ।।
धरती माँ ! मेरी माँ को क्यो— भेज दिया अपनी गोदी से ?
कहाँ गई माँ जिसने मुझको— तेज दिया अपनी गोदी से ।।"

माँ के दर्शन को अधीर थे, नीर किन्तु रह गया दृगो मे ।
वह भी सुखा लिया आँखो मे, आँसू प्यासे रहे मृगो मे ।।
जल मे जलते रहे किन्तु मन— जन जन के आगे न दिखाया ।
पथ पर चलते रहे प्राण प्रिय, मन मे माँ का घाव छिपाया ।।

फिर भैया के साथ साथ वे— मित्र 'मेहता' के घर आये ।
'रेवा शकर जगजीवन' से— हाथ जोडकर हाथ मिलाये ।।
परिचय हुआ कमल का रवि से, पथ मे नया दीप मुसकाया ।
'रायचन्द्र' मे सूरज देखा, सद्भावो का सचय पाया ।।

सच्चरित्र, ज्ञानी, कवि थे वे, भावुक मित्र, शतावधान थे ।
शब्द-कोप थे, आत्मज्ञान थे, शास्त्र-विज्ञ थे, बुद्धिमान थे ।।
कवि के मानसरोवर मे थी— केवल चाह आत्म-दर्शन की ।
हरि-दर्शन की प्यासी आँखे— अमर आरती थी अर्चन की ।।

व्यापारी थे पर आँखो मे— दुनिया का व्यापार नही था ।
ईश्वर-दर्शन के भूखे थे, नश्वर जग से प्यार नही था ।
लाखो के सुलझे व्यापारी, जग की गति विधि निरख रहे थे ।
सद्ग्रन्थो के सागर मे से— हीरे मोती परख रहे थे ।।

शुद्ध आत्मज्ञानी ऋषि कवि ने— मोहन का मन किया प्रभावित ।
मेरे गुणग्राहक मोहन ने— अपना मानस किया प्रकाशित ।।
'रायचन्द्र कवि' गाँधी जी से— हर क्षण धार्मिक वार्ता करते ।
जीवन का पथ दिखलाते थे, मन मे धर्म-भावना भरते ।।

सुनते और सुनाते थे वे, 'रायचन्द्र' की अनहद बाते।
बातो मे दिन घट जाते थे, बातो मे घट जाती राते ॥
धर्म ज्ञान को छोड वहाँ पर– और नही चर्चा होती थी।
'रायचन्द्र' की छाप हृदय मे– भावो के मोती बोती थी ॥

'रायचन्द्र' के धर्म ज्ञान ने– ज्ञान बढाया, मार्ग दिखाया।
उस ज्ञानी ने गाँधी जी को– सच्चा ईश्वर-ज्ञान सिखाया ॥
मिलो गुणी से गुण बढते है, मोहन के मन मे गुण आये।
मिली धर्म की ज्योति, खिला मन, गुरु ने उज्ज्वल भाव जगाये ॥

गुरु वह माली है जो मन मे– सद्भावो के फूल खिलाता।
जो न देख पाता ब्रह्मा भी, गुरु वह सब जन को दिखलाता ॥
बडे पुण्य से, बडे भाग्य से, बडे ज्ञान से, गुरु मिलते हैं।
जिज्ञासा की अमिट चाह से, मानस मे मोती खिलते हैं ॥

गुरु-सेवा जिज्ञासु करे जब– तब होती पहिचान स्वयम् की।
गुरु-चरणो के प्रिय प्रताप से– रह पाती है आन स्वयम् की ॥
जिसको गुरु दर्शन दे देते, वह न कभी होता है गाफिल।
पा गुरु से गुण ज्ञान ध्यान गुर, प्राण हुए दुनिया मे दाखिल ॥

जिनके चरणो मे यह दुनिया– वे दुनियादारी मे आये।
ऊँची नीची पगडण्डी पर– उलटे सीधे थप्पड खाये ॥
मोहन के ऊपर भाई ने– बडी बडी आशाएँ बाँधी।
आशा के शिशु से सुमनो पर– नाच उठी चावो की आँधी ॥

मोहन बैरिस्टर हो आये, फूले नही समाये भैया।
बहुत बडे हो जायेगे हम, पार लगेगी घर की नैया ॥
मन मे सोचे बैठे थे वे– घर मे ढेर लगेगे धन के।
कीर्ति मिलेगी, पद पायेगे, भाव सुनहरी मचले मन के ॥

इन चावो मे भोले भैया— नयी कामना मे उडते थे।
कभी पहुँच जाते रत्नो मे, कभी कल्पना मे उड़ते थे॥
मोहनदास हुए बैरिस्टर, अब घर मे लक्ष्मी आयेगी।
वडे बड़े ओहदे मिलेंगे, मुँह माँगी निधि मिल जायेगी॥

ऋण का बोझ उतर जायेगा, सब घर का सम्मान करेंगे।
रहन सहन मे, बोल चाल मे, मोहन पर अभिमान करेंगे॥
घोडा गाडी, कोठी होगी, कमी न होगी किसी बात की।
देखेंगे अवसान रात का, देखेंगे किरणे प्रभात की॥

चावो मे वे पख लगाकर— हृदय-गगन मे उछल रहे थे।
मानो तम के मेघ चीर कर— मन के सूरज निकल रहे थे॥
इस जग मे क्षण-भगुर मानव— कितनी चाह किया करता है।
आशा और निराशा मे नर— आँसू घोल पिया करता है॥

पग पग पर ठोकर खाता है, पग पग पर उठता जाता है।
दु खो को सह सह कर प्राणी, दु खो से छुटता जाता है॥
आशा के स्वर्णिल स्वप्नो मे— भाई ने सज-धज दिखलाई।
चावो से अपने भैया की— वडी शान से शान बढाई॥

चीनी के वर्तन मँगवाये, चाय और कॉफी मँगवाली।
'कोको' आया, बिस्कुट आये, 'ओटो की लपसी' भी आ ली॥
कोट, वूट, पतलून डाटकर, मोहनदास ठाठ से निकले।
या मोहन के शुद्ध देह पर, खटमल चन्द खाट से निकले॥

भाई से मिलकर छैला जी, पत्नी के कमरे मे आये।
अपनी आँखो के प्रकाश से, छवि ने अपने नयन मिलाये॥
नये रूप मे देख नाथ को, छवि पति से मुसका कर बोली—
"चोली जैसा कोट पहन कर, किससे चले खेलने होली?

'यह इजार सी क्या पत्नी है, मर पर धरा टोकरा मा क्या ?
मूछ कहाँ उड गई तुम्हारी, दिल पर धरा मोगरा सा क्या ?"
'मिले नयन से नयन प्रेम मे, मुँह मे मुँह की बात रह गई।
आँखो से प्रेमामृत बरसा, जिसमे सारी याद वह गई ॥

सीता सी पतिव्रता प्रिया ने– लगा लिया प्रियतम छाती से।
और फूल से सुन्दर सुख को– प्यार किया मन की थाती से ॥
अपने, भाई के बच्चो को– मोहन विद्या लगे पढाने।
शारीरिक शिक्षा से उनका– शारीरिक बल लगे बढाने ॥

मन बहलाते, भाव बढाते, विद्या धन से भर देते थे।
आध्यात्मिक बातें कह कह कर, जीवन निर्मल कर देते थे ॥
बच्चो को शिक्षा देते थे, बच्चो से मन बहलाते थे।
रसना-रस की सुधा धार से, सब बच्चो को नहलाते थे ॥

किन्तु जाति का झगडा अब भी– उनके सर पर चढा हुआ था।
रूढी की चिपटू जोको का– गुस्सा अब भी बढा हुआ था ॥
डर कर भाई ने मोहन को– गगा-जल मे स्नान कराया।
फिर भैया ने 'राजकोट' मे– क्रूर जाति को भोज खिलाया ॥

'खा खा भोज जाति वालो का– गुस्सा कुछ कुछ शान्त हो गया।
हाय ! रूढियो के रोगो से– मानव कितना भ्रान्त हो गया ॥
भारत माता के घावो से– इनके पत्थर दिल न हिल सके।
बहिष्कार के कारण मोहन– सास ससुर तक से न मिल सके ॥

सास ससुर कहते थे इनसे, हमसे छिप छिप कर मिल जाओ।
मोहन को यह बात न भाई, साफ कहा, चोरी न कराओ !
'लोगो की आँखो से छिप छिप, कैसे तुमसे मिल जाऊँगा ?
कहो कि ईश्वर की आँखो से, कैसे भेद छिपा पाऊँगा ?

पचम सर्ग

छिप छिप हरगिज नही मिलूँगा, चाहे तरस तरस मर जाऊँ।
अपनी आँखो के अम्बर से, चाहे बरस बरस झर जाऊँ॥
निश्चय पर रह अटल अचल ने– आशाओ से खर्च बढाया।
नयी नयी रगीनी मे रँग– दर्वाजे पर हाथी आया॥

किन्तु खर्च के साथ आय का, हुआ नही था कही ठिकाना।
बिना विचारे जो करता है, उसको पडता है पछताना॥
चली न नयी वकालत उनकी, गति विधि का अभ्यास नही था।
अभी नये बैरिस्टर थे वे, अपने पर विश्वास नही था॥

काम मवक्किल का पैसे का, फीस दसगुनी कैसे लेते ?
कैसे किसी राह भूले को– मानव होकर धोखा देते ?
राह बनाते, चाह बढाते, मोहन फिर 'बम्बई' आ गये।
अनुभव, आशा, अभ्यासो के– तारे चमके, मेघ छा गये॥

रचा नया घर, रख रसोइया, मोहन रहने लगे वहाँ पर।
पर सीधा ब्राह्मण रसोइया, खिला न सकता था रोटी कर॥
मैली धोती, मैला कुर्ता, जग का कुछ भी ज्ञान नही था।
बिना पढे ग्रामीण सत्य मे, लेशमात्र अभिमान नही था॥

सन्ध्या थी हल और कुदाली, ईश्वर उसके लिए खटकरम।
जाने किन पुण्यो से पाया, उसने सत्यम् शिवम् सुन्दरम्॥
अपना करना, अपना खाना, मोहन लगे बनाने रोटी।
जो होते हैं बडे हृदय के, उनकी बात न होती छोटी॥

अच्छे को तो सभी निभाते, किन्तु बुरे को कोई बिरला।
कितनी मीठी रात हो गई, जब कि रात मे चन्दा निकला॥
बुरी बात से घृणा करो पर– ठुकराओ मत किसी बुरे को।
उसके लिए बुराई काफी, तुम क्यो खूनी करो छुरे को ?

उसे प्यार से पुचकारो तुम, उसकी बुरी बात छुटवाओ।
बुरा न कोई बने विश्व मे, गाँधी की भाषा मे गाओ॥
इसी तरह 'वम्वई' शहर मे— अपनी वैरिस्टरी जमाई।
आया नही मुकदमा कोई, गाँधी की तबियत घबराई॥

'तैयब जी' की सुनी प्रशसा, सुनी 'फिरोज शाह' की बाते।
छक्के छूट गये मोहन के, पथ रोका करती है माते॥
किसी तरह से मिला मुकदमा, पहली वार 'ममी वाई' का।
घर का खर्च बढा जाता था, खोया स्वप्न वडे भाई का॥

ठहरे तीस रुपय वादी से, इस पर भी दलाल चढ आये।
कहा, कटौती लाओ हमको, सुन सुन कर मोहन घवराये॥
लेकिन दमडी दी न दलाली, टस से मस न हुए तिल भर भी।
वडे भाग्य से मिला मुकदमा, वापिस किन्तु गया मिल कर भी॥

'स्मॉल कॉज़ न्यायालय' मे वे— गये मुकदमे मे पहले दिन।
पहली वार अदालत मे वे— गये प्रश्न के उत्तर गिन गिन॥
प्रतिवादी के वैरिस्टर थे, पहली वार जिरह करनी थी।
पहली वार परीक्षा थी यह, शिक्षा की लज्जा रखनी थी॥

पर न्यायालय मे जव पहुँचे— पैर काँपने लगे पथिक के।
मानो श्रम सीमा पर पहुँचा, भाव हाँपने लगे श्रमिक के॥
खडे जिरह के लिए हुए पर— हृदय धडकने लगा, हिल गये।
धरती काँपी, घूम गया सिर, धैर्य तडकने लगा, खिल गये॥

गाँधी की आँखो के आगे— न्यायालय तक लगा घूमने।
मानो गाँधी के मस्तक मे— दुर्वल मद्यप लगा झूमने॥
भूल गये सव कुछ गाँधी जी, आँखो मे छा गया अँधेरा।
हँसी आ गई जज साहव को, मोहन को मूर्च्छा ने घेरा॥

रख कर मिसल अदालत ही मे, बैठ गये मोहन मूर्च्छित से।
और पैरवी करने की वह– चाह हट गई उनके चित से॥
कोई और वकील करो तुम, कहा मवक्किल से गाँधी ने।
मैं न पैरवी कर पाऊँगा, साफ कहा दिल से गाँधी ने॥

छोड मुकदमा चले गये वे, मन ही मन मे लज्जित होकर।
निश्चय किया, करूँ न वकालत, जब तक निकल न जायेगा डर॥
उसके बाद अर्जियाँ लिख लिख, डग मग डग मग चले अगाडी।
बिना आय के घर के व्यय की, कैसे खिँच सकती है गाडी!

सोचा, कही पाठशाला मे– जाकर अध्यापक बन जाऊँ।
बिना आय के घर गृहस्थ का– कैसे आगे काम चलाऊँ?
घर की चिन्ता मे घुल घुल कर, गाँधी घुलते ही जाते थे।
बिना अर्थ के अब मोहन पर, बडे बडे सकट आते थे॥

✓ इस गृहस्थ के चक्कर ने भी– बडो बडो का पथ रोका है।
जब भी पैर बढा बढने को– तब गृहस्थ ने ही टोका है॥
पिलते पिलते, पिसते पिसते, घर मे शान्ति नही मिल पाती।
फुकते फुकते, बिँधते बिँधते, छाती छिल छलनी हो जाती॥

कैसे गृहस्थ जन को जग से न बाँधे!
कोई कहो हृदय की निधि छोडता क्या?
प्यारा प्रभात पकडा शशि ने दिवा पा।
खोया किसान दिन मे शशि सा बिचारा॥

जाडे और धूप मे गाँधी, रोज कचहरी पैदल जाते।
लेकिन कुछ भी हाथ न आता, खाली हाथ हिलाते आते॥
होकर व्यय से तग उन्होने– दिया प्रार्थना-पत्र कही पर।
मिली नही नौकरी वहाँ भी, वापिस आये धक्के खाकर॥

किया वहुत श्रम, फल न मिला कुछ, वे लाचारी मे क्या करते !
चिन्तित हुए वडे भाई भी, भाग्य-चक्र मे रहे विचरते ॥
हार गये 'वम्वई' शहर से, भागे डण्डा डेरा लेकर।
झोली झाड चल दिये वापिस, अपने टके गाँठ के देकर ॥

मानो विपदाओ ने आ आ— गाँधी जी का हृदय टटोला।
'राजकोट' आ गये पुन वे, अलग एक कार्यालय खोला ॥
डाल कचहरी मे कुरसी को— वैठ गये कुरसी पर खाली।
भाई के कहने सुनने से— मोहन देने लगे दलाली ॥

वडे परिश्रम से गाँधी का— थोडा सा सिलसिला वन गया।
मानो पिघल शुद्ध मानस से, उनका रूठा भाग्य मन गया ॥
एक वार क्या, जीवन मे तो— वार वार धक्के आते ह।
दुर्वल गिरते, सवल सँभल कर— दलदल मे से उठ जाते हैं ॥

एक वार गद्दी पर वैठे— 'राणा' एक 'पोरवन्दर' मे।
मन्त्री वने इन्ही के भाई, किन्तु नाव आ गई भँवर मे ॥
'राणा साहव' को भाई जी— परामर्श देते रहते थे।
"उलटी वात सिखाते हैं ये", दुनिया वाले यह कहते थे ॥

'राणा' को भडकाते हैं ये, इन पर यह अभियोग लगाया।
गये 'राजनीतिक प्रतिनिधि' पर, उसने इन्हे तलव करवाया ॥
"तुम इस पद से अलग हटोगे।" उसने इनको धमकी दी यह।
कही विलायत मे मोहन को— पहले कभी मिल चुका था वह ॥

घर आकर भाई मोहन से— वोले, "तुम उनसे मिल आओ।
तुम हो उनके मित्र, जरा तुम— मेरे भावो को समझाओ ॥
कहो 'राजनीतिक प्रतिनिधि' से— वुरे नही ह मेरे भाई।
मित्र नही वह दुश्मन होता, जो कि किसी की करे वुराई ॥"

पचम सर्ग

जो आगे बढ़ता है उसको– जग पीछे खीचा करता है।
पर वह बढता ही जाता है, सच न दुर्जनो से डरता है॥
सुन भाई की बात ध्यान से, गाँधी ने यह बात विचारी।
उनके मानस-सागर को यह– बात लगी लोहे सी भारी॥

बोले, "आशा नही मुझे कुछ, दो दिन का परिचय ही क्या है !
अभी मित्रता, अभी शत्रुता, दुनिया का अभिनय ही क्या है !
मेल रेल का खेल जिस तरह, ऐसे ही मेरा परिचय है।
यहाँ मित्रता कहाँ ? यहाँ तो– स्वार्थ भरा झूठा अभिनय है॥

फिर जब नही बुराई की कुछ, तब क्यो हाथ फलाये आगे ?
सब को देने वाला ईश्वर, लेने वाले से क्यो माँगे ?"
हठ हो गई किन्तु भाई को, आज्ञा-पालक अनुज चल पडे।
चलते चलते ठिठके, झिझके, अन्तस्तल मे बहुत बल पडे॥

बात न टाल सके भाई की, इच्छा के विपरीत गये वे।
मन मे कोई कहता था यह– सतयुग के दिन बीत गये वे॥
जब दुखो की करुण कहानी– सुख की मधुर घडी सुनती है।
अपना और पराया दुनिया– अपनी आँखो से चुनती है॥

बाते करते हुए स्वयम् से, गये 'राजनीतिक प्रतिनिधि' पर।
किन्तु विलायत और यहाँ पर– बहुत मित्रता मे था अन्तर॥
अब वे मित्र नही थे, अब तो– अधिकारी की कुरसी पर थे।
कहाँ मित्रता, कहाँ हुकूमत ! अलग अलग धरती अम्बर थे॥

आज 'राजनीतिक प्रतिनिधि' थे, कैसे याद मित्रता होती !
उससे बात न करती कुरसी, जिसका पथ निर्धनता खोती॥
बडी कठिनता से गाँधी ने– उन साहब को याद दिलाई।
मिले विलायत मे जब उनसे, वह पहली मित्रता बताई॥

कही हृदय की वात प्यार से, कच्चे पक्के चिट्ठे खोले।
किन्तु हुकूमत की कुरसी पर– साहव टेढे मेढे वोले॥
कही वहुत सी उलटी वाते, अच्छा बुरा वहुत कुछ कह कह।
दोष तुम्हारे भाई का है, क्षमा नही हो सकता है वह॥

यह सव सह सह कर भी मोहन– अपनी वाते रहे सुनाते।
वडी युक्तियो से भैया को– वार वार निर्दोष वताते॥
जो कुछ कभी माँगने जाता– वह नर धरती मे गडता है।
अपनी गरज वावली होती, सव कुछ सहना ही पडता है॥

कुरसी पर वैठा मतवाला– जो कुछ भी कहले वह थोडा।
घोडा तव सीधा चलता है, जव कि कमर पर पडता कोडा॥
साहव गुस्से से यह वोले– "तुम कमरे से वाहर जाओ!
हम न एक भी वात सुनेगे, वापिस तुम अपने घर जाओ!!"

इस पर पुन कहा गाँधी ने– "पूरी वात सुनो तो मेरी।"
साहव ने यह कहा विगड कर– "मुझे हो रही है अव देरी॥
चपरासी, चपरासी! जल्दी," "जी हुजूर! हाँ, जी हुजूर!" खाँ!
"इसको अभी निकालो वाहर", लपका वह दरवान नूरखाँ।

हाथ खीचकर धक्का देकर– उसने वाहर अतिथि निकाला।
भाई की खातिर गाँधी को– पीना पडा जहर का प्याला॥
स्वाभिमान की चोटे चसकी, गाँधी मन ही मन मे रोये।
मानस मे आँसू भर भर कर, गहरे घाव हृदय के धोये॥

घर आकर अपने भैया से– गाँधी ने सव कही कहानी।
सुन सुन मोहन की वातो को– आँखो मे भर आया पानी॥
आँसू ने लिख दिया धरा पर, ऐसा नही करूँगा अव से।
स्वाभिमान की छाती पर मे– पत्थर नही धरूँगा अव से॥

समय बडा बलवान, समय पर– सगे शत्रु होते देखे हैं।
विपदाओ के घन घिरते हे, बडे बडे रोते देखे हे॥
नृप से रक, रक से राजा, इस दुनिया की रीति यही है।
ठोकर खाकर उठे सँभल कर, समझदार की नीति यही है॥

एक नही, दो नही, दस नही, पग पग पर ठोकर खाओगे।
यदि तुम को पाना है कुछ तो– अपना कुछ खोकर पाओगे॥
दुनिया मे इतिहास प्यार का– आँसू से लिखना पडता है।
जग मे वही लक्ष्य पर पहुँचा– जो चट्टानो पर चढता है॥

जलता हुआ सूर्य खिलता है, हँसता हुआ चाँद रोता है।
काँटो पर गुलाब हँसता है, रोता हुआ प्यार सोता है॥
दुखो भरा हृदय दुनिया से– एक कहानी कह जाता है।
आँसू की कीमत ही क्या है, हँसता हँसता बह जाता है॥

मानस ऊजड़, बोल न कोयल!
गा मत सुन्दर गीत रसीले।
आँचल आज पसार रहे मृग,
आकुल गायक के दृग गीले॥
सावन के घन! बोल, धरा पर–
क्यो दृग से धन-कोष लुटाया?
आज खिला, कल फूल गया गिर,
ठोकर ने कब फूल उठाया!

षष्ठ सर्ग

अफ्रिका गमन

सागर मे वडवानल या,
लहरे लघु दीपक चूम रही हैं।
दीपक सी स्मृतियाँ जलती जव,
क्यो वदली वन धूम रही हैं ?
आग लिये मधु मेघ! रहो चुप,
पत्थर से मन क्या सुनते हैं ?
शूल खडे पर फूल खिले अलि !
आग पतग यहाँ चुगते हैं॥

शिव की तरह अमर है वह नर, जिसने पिया जहर का प्याला।
छाला वही देख सकता है, जिसकी छाती मे है छाला॥
जिसका हृदय शुद्ध गगा-जल, वही मुक्त है, वही मुक्ति है।
शूलो पर जो खिले फूल सा, वह सुगन्ध से भरी युक्ति है॥

सागर मे घुस, शूलो पर चल, जो आगे वढते जाते हैं—
उसके पैर चूम कर काँटे, धरती मे गडते जाते हैं॥
मन की हलचल मे गाँधी जी— सोच रहे थे पथ आगे का।
कहा किसी ने, तेरे पथ मे— जाल विछा कच्चे धागे का॥

तेरी आँखो के पानी से— जाल स्वयम् गलता जायेगा।
तेरे अन्तर की ज्वाला से— पाप स्वयम् जलता जायेगा॥
इतने ही मे भाई उनके, नयी राह का दीपक लाये।
खुश हो कहा, "अफ्रिका जाओ, तेरे लिए निमन्त्रण आये॥

वहुत बडे 'मेमन व्यापारी', रहते यहाँ 'पोरवन्दर' मे।
उनकी खुली हुई दूकाने, दूर दूर के शहर शहर मे ।।
'दादा अब्दुल्ला' के साझी, बडे सेठ 'अब्दुल करीम' हैं।
बडे भले व्यापारी है वे, मन मे सच, मुँह मे रहीम हैं।।

उनका एक मुकदमा भारी, जो चालीस हजार पौड का।
तुम 'दक्षिण अफ्रिका' देश मे- दिखा सकोगे काम कौध का ।।
बडे बडे बैरिस्टर उसमे- "अब्दुल्ला" ने किये हुए हैं।
'अमेरिकन' 'अँगरेज' हर्ष से- बडा मुकदमा लिये हुए हैं ।।

ख्याति मिलेगी, अनुभव होगा, उन सबका परिचय पाओगे।
यह अवसर है, चले गये यदि- तो तुम पारस बन जाओगे ।।"
भैया 'लक्ष्मीदास' दीप की- बात बहुत गाँधी को भाई।
मानो शुभ अवसर देने को- आई ईश्वर की परछाई ।।

मिले सेठ 'अब्दुल करीम' से, उसने सब घटना समझाई।
कहा, "अधिक कुछ काम नही है, जाने मे है बहुत भलाई ।।
पहुँच गये अफ्रिका अगर तुम- परिचय बडो वडो से होगा।
जिसने अनुभव किया विश्व मे- उसने अनुभव का सुख भोगा ।।

दूर दूर का पानी पी पी- भारत मे जीवन लाओगे।
मेरा आशीर्वाद तुम्हे है, नर! नारायण बन जाओगे ।।
एक वर्ष तक रहना होगा, काम अधिक कुछ नही वहाँ पर।
जो कुछ वहाँ मिलेगा तुमको, मिल न सकेगा अभी यहाँ पर।

तुम्हे एक सौ पाँच पौड हम- व्यय से अलग भेट कर देगे।
और जीत यदि गये मुकदमा- तुम्हे बहुत कुछ ईश्वर देगे ।।"
बात मान 'अब्दुल करीम' की, करी कल्पना गाँधी ने यह-
अनुभव होगा, जागृति होगी, सिर पर है रक्षक ईश्वर वह ।।

एक नयी दुनिया देखूँगा, दुनिया की पहिचान मिलेगी।
कवि की काव्य-कला यह वोली– भारत माँ को शान मिलेगी ॥
जाने का निश्चय कर मन मे, करी 'अफ्रिका' की तैयारी।
पति को जाता देख पास से, पत्नी रोने लगी विचारी ॥

वोली, "दूर देश जाते हो, स्वामी! मुझे भूल मत जाना।
प्राण! प्रतीक्षक है मेरा मन, दूर देश से जल्दी आना ॥
पथ पर भूखी प्यासी आँखे– तका करेगी राह तुम्हारी।
यह विश्वास दिला जाओ तुम, तुम्हे रहेगी याद हमारी ॥

सारे दुख सहन होते हैं, पर वियोग कव सहन हो सका!
कहो आँख से आँसू गिर कर, कव धरती का खून धो सका!
योग नही भाता वियोग मे, प्राण! 'कृष्ण' की कथा न भूलो।
मछली सी तडपी थी 'राधा', विरह कथा वह, तथा न भूलो ॥"

पति ने पत्नी को समझाया– शुभे! हृदय मे हो तुम मेरे।
वुरे मार्ग से वच जाता हूँ, देवी! अमर प्यार से तेरे ॥
पत्नी ने यह कहा प्यार से– उन्नति पथ मे सदा साथ हूँ।
तुम ईश्वर हो, मैं श्रद्धा हूँ, चरणो की सेविका नाथ! हूँ ॥

मेरे मानस की प्रतिध्वनि ले, पवन प्राण के साथ चले।
स्वप्नो मे मैं चरण दबाऊँ, कुसुम झूम झुक व्यजन झले ॥
माला वने विरह के आँसू, स्मृति की पलके हो वाहन।
देखूँ तुम्हे चाँद मे प्रियतम! मधु वरसाते हो सावन ॥

सिर पर जो सन्दूक वने वह– छाया क्या, पथ की दलदल है।
जीवन मे जो वने सहारा– वह साथी जीवन का हल है ॥
यात्रा का सामान वाँध कर, पत्नी ने तैयार कर दिया।
यात्रा के हर उठते पग मे– 'वा' ने अपना प्यार भर दिया ॥

चले 'पोरबन्दर' से गाँधी, आकर चढ बैठे जहाज में।
जगह कठिनता से मिल पाई, वडे अफसरो के समाज मे ॥
बैठ गये गाँधी जहाज मे, घरर घरर जलयान चल पडा।
भारत का अभिमान खोजने— भारत का उत्थान चल पडा ॥

वाते घुटी यान नायक से, कुछ ही क्षण मे मित्र बन गये।
आदि अन्त के अन्तस्तल पर— दुखी दृगो के चित्र बन गये ॥
वे शतरज खेल मे प्रति दिन— गाँधी से चिपटे रहते थे।
'जीवन ही शतरज खेल है', नायक गाँधी से कहते थे ॥

उनके साथ साथ गाँधी भी— यात्रा मे शतरज खेलते।
ऐसे खेले खेल खिलाडी, जैसे जल मे कज खेलते ॥
खेल खेलते हुए बुद्धि से, चलते चलते तट पर पहुँचे।
तेरह दिन की यात्रा करके, पहले "लामू" बन्दर पहुँचे ॥

तीन चार घटे बन्दर पर— वहाँ यान ठहरा करता था।
लेकिन सागर के उस तट से— सावधान नायक डरता था ॥
गाँधी से नायक यह बोला— सावधान सागर से रहना।
धोखेबाज समुद्र यहाँ का, ध्यान रहे यह मेरा कहना ॥

जल्दी से वापिस आ जाना, कह कर यह कप्तान चल दिया।
किन्तु पहेली सी वातो का— गाँधी ने कुछ नही हल किया ॥
उतर यान से जल्दी जल्दी— चले गये वे गाँव देखने।
वहाँ डाकघर मे जा पहुँचे, रहन सहन के भाव देखने ॥

हिन्दुस्तानी भाई भी कुछ— मिले उन्हो से वहाँ चाव से।
उनके साथ करी कुछ बाते, गाँधी जी ने प्रेम भाव से ॥
वातो मे कुछ समय न सूझा, मानो लगे देखने अभिनय।
रहन सहन मे दिलचस्पी ली, किया हब्शियो से भी परिचय।

तट पर आकर चढे नाव मे, सागर मे था ज्वार जोर का।
थोडी दूर यान था लेकिन– पता नही था ओर छोर का॥
नाव यान से टकरा टकरा– फिर फिर पीछे हट जाती थी।
बाँध रहे थे नाव किन्तु वह– नही यान से बँध पाती थी॥

सीटी दे दी थी जहाज ने, गाँधी जी मन मे घबराये।
'सागर धोखेबाज' शब्द वे– अब उनके मस्तक मे आये॥
लेकिन वह कप्तान यान का– ऊपर से यह देख रहा था।
आँखो से यह कहा चीख कर– मैंने तुमसे तभी कहा था॥

रोका उसने यान किन्तु वह– सीढी ऊपर खिंच आई थी।
बार बार जा जाकर जिससे– नाव बिचारी टकराई थी॥
अन्त एक मछुवा गाँधी को– कन्धे पर ले गया उठा कर।
रस्सी के बल से मछुवे ने– गाँधी को पहुँचाया ऊपर॥

मछुवा क्या, भगवान स्वयम् ही– गाँधी को ऊपर ले आये।
ईश्वर हम तुम मे रहता है, पर हम तुम पहिचान न पाये॥
भक्तो की पुकार पर ईश्वर– नगे पैर इस तरह आते।
करुण हृदय की तडप देखकर– वे तो बिना बुलाये जाते॥

यान चल पडा और बहुत से– यात्री ऊपर नही चढ सके।
जो बढने से डरे कभी भी– वे मजिल तक भी न बढ सके॥
वे यात्री देखते रह गये, यान सिन्धु मे बढा अगाडी।
जो धीरे धीरे चलते ह, पडे रहे वे सदा पिछाडी॥

'लामू' से 'मुम्बासा' आया, आये 'जजीबार' वहाँ से।
आगे की यात्रा करनी थी, नये यान मे बैठ जहाँ से॥
उतरे 'जजीबार' यान से, बडे यान के बन्धन खोले।
चलो, सैर कर आये चलकर, नायक गाँधी से यह बोले॥

एक और अँगरेज मित्र भी– साथ साथ चल दिया घूमने।
वडे प्रेम से तीनो साथी– नये नगर मे लगे भूमने॥
एक मुहल्ले मे जा पहुँचे, थी हब्शी औरते जहाँ पर।
गाँधी जी यह लगे सोचने, हम तीनो आ गये कहाँ पर॥

नायक के मन की वातो को– गाँधी नही समझ पाये थे।
सिर्फ घूमने के विचार से– गाँधी वहाँ चले आये थे॥
हब्शी सुकुमारी के घर मे– उनको एक दलाल ले गया।
घर मे घुसे, किन्तु गाँधी के– निर्मल मन को काल ले गया॥

बैठे रहे मूक कमरे मे, औरो ने करली मनमानी।
औरत के तीखे कटाक्ष पर– पागल है दुनिया दीवानी॥
उस अँगरेज और नायक ने– आँखो पर से शर्म उतारी।
किन्तु शर्म के मारे गाँधी– बन बैठे घूँघट मे नारी॥

ईश्वर का उपकार कि उसने– बचा लिया उनको ज्वाला से।
छाया रूप साथ पत्नी थी, बचे रहे हब्शी बाला से॥
कमरे मे 'तो चले गये पर, मन मे बार बार शरमाये।
ईश्वर की आँखो के आगे– गाँधी बार बार पछताये॥

निकल आग से चले घूमने, तीनो साथ प्रकृति-कानन मे।
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् देखा, प्रकृति-सुन्दरी के आनन मे॥
कवि कर सकते नही कल्पना, जैसी वह हरियाली देखी।
वडे वडे तरु और फूल फल, दैविक दिव्य दिवाली देखी॥

आठ रोज के बाद यान से– तैरे 'जजीबार' छोड कर।
चले तैरते हुए यान मे– दुर्बलता के बाँध तोड कर॥
करते हुए सैर सागर की, पहुँच गये 'नेटाल' हृदय-धन।
प्रकृति परी सज कर ले आई– गाँधी के स्वागत मे चन्दन॥

नभ मे नाच उठी मालाये, गा गा लाखो दीप जलाये।
गाँधी जी का स्वागत करने– वहाँ 'सेठ अव्दुल्ला' आये॥
आये वहाँ वहुत से गोरे, स्वागत मे अपनो अपनो के।
देखे चित्र यथार्थ वहाँ पर, भारत माता के स्वप्नो के॥

उन गोरो के लाल दृगो मे– भारतीय का मान नही था।
क्षुद्र समझते थे गाँधी को, उस गुरुता का ज्ञान नही था॥
देख कुतूहल से गाँधी को– मन मन मे दुतकार रहे थे।
पगडी वाँधे हुए देख कर– वार वार फटकार रहे थे॥

अव भारत ठोकर खाता था, कभी चरण पूजे जाते थे।
कभी विश्व के शिक्षक थे जो, अव दर दर ठोकर खाते थे॥
वुल्ला कुल्ले पर लडता है, यह हिन्दू है, वह है मुल्ला।
किन्तु प्रेम से गाँधी जी को– घर ले गये 'सेठ अव्दुल्ला'॥

गाँधी जी से मिले इस तरह– जैसे गले मिले हो भाई।
वुरा न देखे, वुरा न सुनते, वुरा न करते, करे भलाई॥
जो जल जल औरो के सिर पर– छाते से छाया करते है–
वे ही तप तप कर दुनिया मे– ईश्वर वन जाया करते है॥

वडे 'सेठ अव्दुल्ला', उन को– व्यवहारिक अध्ययन वहुत था।
तत्त्व ज्ञान इस्लाम धर्म का, आँखो देखा मनन वहुत था॥
पढे नही थे अधिक किन्तु वे– अनुभव से सुलझे ज्ञानी थे।
हृदय शुद्ध था, वुद्धि तेज थी, वे सच्चे हिन्दुस्तानी थे॥

उनकी 'पेढी' वहुत वडी थी, पर कुछ खोजी सा स्वभाव था।
पढा धर्म साहित्य उन्होने, दृष्टान्तो का वहुत चाव था॥
वात वात मे सुन्दर सुन्दर, वे दृष्टान्त दिया करते थे।
गाँधी से इस्लाम धर्म की– चर्चा रोज किया करते थे॥

गाँधी जी से धर्म विषय पर– वार्तालाप रोज ही होता।
मूल्य उसी का हुआ विश्व मे– जो जन समय ज्ञान मे खोता ॥
'सेठ' साथ अपने गाँधी को– 'डरबन' न्यायालय मे लाये।
अपने सव परिचित मित्रो से– गाँधी के परिचय करवाये ॥

पास बैठ अपने वकील के– परिचय से परिचय करवाया।
उस वकील से हाथ जोडकर– गाँधी जी ने हाथ मिलाया ॥
पगडी पहिने हुए प्रेम से– पहुँचे न्यायालय मे गाँधी।
मजिस्ट्रेट को गुस्सा आया, दौड़ गई मस्तक मे आँधी ॥

रहा देखता मुँह गाँधी का, कहा, 'उतारो अपनी पगडी !'
गाँधी ने इन्कार कर दिया, मजिस्ट्रेट की त्यौरी अकडी ॥
किन्तु एकदम उठकर गाँधी– न्यायालय से वाहर आये।
झगडे सह सह कर गाँधी ने– वड़े वडे झगडे सुलझाये ॥

जीवन ही सघर्ष यहाँ है, जड मे कव सघर्ष हुआ है !
सघर्षो के निष्कर्षो से– वीरो का उत्कर्ष हुआ है ॥
भारत का अपमान तडप कर, उस क्षण गाँधी से यह बोला–
मेरे उर मे धधक रहा है– उड़ता हुआ फूट का शोला ॥

जिससे जल कर पगु हुआ मैं, दर दर से दुतकारा जाता।
मेरे मन-मरघट मे कोई, प्रतिपल मेरी चिता जलाता ॥
देखा यही वहाँ गाँधी ने, अलग अलग खिचडी पकती थी।
मेरे तेरे के झगड़े मे– कोई और रक्त छकती थी ॥

यह हिन्दू, वह अरव, पारसी, तू तामिल, मैं गिरमिटिया हूँ।
तू है 'ऑस्टिन' कार और मैं– 'शवरलेट' की फिटफिटिया हूँ ॥
अलग अलग जत्थो मे उनकी– अलग अलग तूती वजती थी।
मिलकर नही वैठ सकते थे, स्वतन्त्रता माला भजती थी ॥

इसीलिये तो भारतवासी– कहलाते थे 'कुली' वहाँ पर।
कैसे लगे न आग वहाँ पर, दहक रही हो फूट जहाँ पर॥
वे गोरे भारतवासी को– 'सामी' कहकर बुलवाते थे।
दो टुकडो का लालच देकर– मानव से दुम हिलवाते थे॥

उस गोरी चमडी के आगे– भारतीय इन्सान नही थे।
माथो के कलक थे हम सब, भारत के सम्मान नही थे॥
'कुली!' 'कुली बैरिस्टर!' कहकर– गाँधी से बोला करते थे।
हृदय-तराजू मे भारत के– आँसू वे तोला करते थे॥

भारत माँ के स्वाभिमान से– तडप उठा गाँधी का अन्तर।
मेरी पगडी नही, यहाँ पर– भारत की पगडी है सिर पर॥
चाहे मर जाऊँगा लेकिन– पगडी नही उतरवाऊँगा।
अगर उतार धरी पगडी तो– माँ को क्या मुँह दिखलाऊँगा?

गाँधी जी के शुद्ध हृदय मे– जाग उठा देशाभिमान था।
और 'सेठ अब्दुल्ला' के भी– मन मे माँ का स्वाभिमान था॥
बडे धैर्य से कहा उन्होने– बात नही हल्की हो सकती।
भारत की बरसाती पीडा– दिल के दाग नही धो सकती॥

हमे लूटने वाले ही अब– हमको यहाँ 'कुली' कहते हैं।
सुन सुनकर गालियाँ रात दिन– हम चुपचाप पडे रहते हैं॥
समाचार पत्रो मे भेजी– गाँधी ने पगडी की घटना।
करने लगे विरोध वहाँ पर, मन मे लगा राम से रटना॥

कोई उनका हुआ विरोधी, कोई उनसे हुआ समर्थित।
अखबारो ने गाँधी जी को– लिखा सूचना मे 'अनिमन्त्रित'॥
"बिना बुलाया हिन्दुस्तानी– अतिथि एक 'नेटाल' नगर मे।"
इस घटना से गाँधी जी की– ख्याति हो गई डगर डगर मे॥

वे 'दक्षिण अफ्रिका' देश मे– सूरज से प्रख्यात हो गये।
काली रजनी के आँगन मे– गाँधी स्वर्ण प्रभात हो गये॥
मेरे गाँधी का 'डरबन' मे– परिचय बढता ही जाता था।
भारतीय ईसाई दल भी– उनसे कुछ शिक्षा पाता था॥

इसी बीच मे 'प्रिटोरिया' से– बैरिस्टर का तार आ गया।
"शुरू हो गया यहाँ मुकदमा, सर पर सारा भार आ गया॥
शीघ्र 'सेठ अब्दुल्ला' आये, या वे भेजे और किसी को।
चूक न जाये, देर न करदे, आना है तारीख इसी को॥"

'अब्दुल्ला' ने गाँधी जी को– 'प्रिटोरिया' का पत्र दिखाया।
कहा, वहाँ तुमको जाना है, शीघ्र वकीलो ने बुलवाया॥
सुन 'आ ई ऊ' से गाँधी जी– पढने लगे मुकदमा सारा।
समझ बही खाता दिमाग मे– मन से सारा विषय विचारा॥

बडी कठिनता से गाँधी जी– समझ बही खाता पाये थे।
भली भाँति हृदयगम करके– सारा भेद खोज लाये थे॥
जब गाँधी ने बात समझ ली, हुआ आत्म-विश्वास उन्हे तब।
कहा 'सेठ' से गाँधी जी ने– 'प्रिटोरिया' जाता हूँ मैं अब॥

बोले सेठ, "कहाँ ठहरोगे ?" उत्तर मिला "जहाँ बतलाओ।"
उत्तर सुन 'अब्दुल्ला' बोले– "यह मेरी चिट्ठी ले जाओ॥
पहिले तुम मिलना वकील से, वे ही तुमको ठहरायेगे।
आगे क्या कैसे करना है, वे ही तुमको बतलायेगे॥

"'प्रिटोरिया' मे तुम्हे मिलेगे– मेरे 'मेमन' मित्र बहुत से।
और उन्ही 'मेमन' मित्रो के– प्रतिपक्षी जन मित्र बहुत से॥
'मेमन' मित्रो से प्रतिपक्षी– अक्सर मिलते ही रहते हैं।
यह मानव-स्वभाव है, मन की– बात दूसरे से कहते हैं॥

इसीलिये 'मेमन' मित्रो से- तुमको अलग ठहरना होगा।
जिसने अपना भेद बताया- उसने जीवन भर दुख भोगा ॥"
गाँधी जी ने कहा 'सेठ' से- "चिन्ता तज, सानन्द रहो तुम !
आपस मे भी निवटाने का- यत्न करूँगा, अगर कहो तुम !

जैसे भी होगा वैसे ही- मैं सब वहाँ ठीक कर लूँगा।
सेठ ! 'सेठ तैयब' जी को मैं- समझा कर राजी कर दूँगा ॥
'हाजी खान मुहम्मद तैयब'- आखिर रिश्तेदार तुम्हारे।
आपस मे जो चला मुकदमा- काम हुआ यह बिना विचारे ॥

व्यर्थ वकीलो का घर भरना- मुझे नही अच्छा लगता है।
मौत मुकदमा 'ठग बनारसी'- जो बहका बहका ठगता है ॥
लोटा और तवा तक बिकता, हाथ नही कुछ भी आता है।
जिसके सिर पर चढा मुकदमा- वह सिर धुन धुन पछताता है॥"

सुन गाँधी की बात चौक कर, कहा 'सेठ अब्दुल्ला' ने यह-
"भावुकता के इस प्रवाह मे- गिरे न यह तैराक कही बह !"
गाँधी बोले- "सावधान हूँ, मैं प्रवाह मे बह न सकूँगा।
जाल नही चल सकता मुझ पर, बात भेद की कह न सकूँगा ॥

यदि सच्चाई से मानेगे- तो मुझको इन्कार नही है।
किसी जाल मे फँस कर उनके- समझौते से प्यार नही है ॥"
कहा सेठ ने, "हाँ · आ आ यदि- समझौता हो तो सुन्दर है।
पर प्रतिपक्षी बाहर से कुछ, चाल जाल उसके अन्दर है ॥

इन जालो से सावधान रह, तुम उनसे बाते कर लेना।
जो कुछ करो, सुनो जो कुछ भी, हमको शीघ्र खबर दे देना ॥"
'प्रिटोरिया' के लिए सेठ ने- गाँधी का बिस्तर बँधवाया।
कहा, खर्च मे कमी न करना, अपना सब अनुभव बतलाया ॥

'डरबन' स्टेशन से गाँधी ने– टिकट लिया पहली श्रेणी का।
यात्रा मे निशान लहराया– भारत की ऊँची वेणी का॥
पाँच शिलिग अधिक देने से– गाडी मे सोने देते थे।
लेकिन हठ मद मे गाँधी जी– 'बिस्तर टिकट' नही लेते थे॥

गाँधी 'मेरित्स्बर्ग' आ गये, प्रकृति देखते हुए रेल मे।
बडे बडे झगडे आते हैं– जीवन के इस बडे खेल मे॥
कोई गोरा यात्री आया– 'मेरित्स्बर्ग' बडे स्टेशन पर।
पहली श्रेणी के डिब्बे मे– गाँधी से यह कहा बिगड कर–

"तू हिन्दुस्तानी है, तुझको– बता यहाँ किसने बैठाया?
निकल यहाँ से, बैठ 'थर्ड' मे!" गोरे ने इनको धमकाया॥
गाँधी ने यह कहा नम्र हो– "फर्स्ट क्लास का टिकट पास है।"
गोरे ने यह कहा अकड कर– "यह गोरो के लिए खास है॥

काला हिन्दुस्तानी कोई– सफर 'फर्स्ट' मे कर न सकेगा।
वह गुलाम है, बँधे पैर हैं, पैर यहाँ पर धर न सकेगा॥"
पर उस गोरे के कहने से– गाँधी हिले नही बिस्तर से।
उस गोरे ने उतर रेल से– किस्सा कहा एक अफसर से॥

एक रेलवे अधिकारी ने– आकर गाँधी को फटकारा।
निर्दयता से गाँधी जी को– धक्के देकर तले उतारा॥
बिस्तर फेक दिया गाँधी का, सच्चाई का खून कर दिया।
जाडे की ठिठरी रजनी मे– पाले का अगार धर दिया॥

रेल चल पडी, पर गाँधी जी– स्टेशन पर ही पडे रह गये।
मानो उस सुनसान डगर मे– पथ खोये से खडे रह गये॥
गोरो से ठुकराये जाते– हम भारत माता के बेटे।
बाँधे अपने कपडे लत्ते, स्टेशन पर कोने मे लेटे॥

कभी सोचते थे वे मन मे- भारतवर्ष चला जाऊँ मैं।
कभी सोचते वढूँ अगाडी, कदम लक्ष्य पर फैलाऊँ मैं॥
भारत माता के मस्तक से- दाग गुलामी का धो डालूँ।
चढा रक्त का अर्घ्य देश पर- पूजा से स्वतन्त्रता पा लूँ॥

सन सन करती हवा मौत सी- उनको पथ से लगी हटाने।
जाडो की नागिन सी रजनी- गाँधी पर फण लगी चलाने॥
पर गाँधी ने साहस वल से- सव नागो का जहर उतारा।
सुख मे 'राम' न भूले यात्री, दुखो मे भी 'राम' पुकारा॥

सुवह दूसरी गाडी से वे- साहस कर चल दिये अगाडी।
गाडी पर वे चले या चली- गाँधी के कन्धो पर गाडी॥
कभी उलझते, कभी सुलझते- सुवह 'चार्ल्स टाउन' मे आये।
और 'चार्ल्स टाउन' मे गाँधी- घोडा गाडी पर घवराये॥

आगे की यात्रा करनी थी- उनको घोडा गाडी से अव।
पर वे थे परतन्त्र, इसलिये- विना कष्ट यात्रा होती कव!
वह वन्दी माँ का वेटा था, गोरो का साम्राज्यवाद था।
लेकिन गाँधी की नस नस मे- भारत माता का विषाद था॥

घोडा गाडी पर जव आये, गाडीवाले ने दुतकारा।
उसमे जो गोरे वैठे थे- उन सव ने इनको फटकारा॥
किसी तरह से कोचवान के- पास विठाया उस सपूत को।
इतने पर भी क्रोध वहुत था- एक किसी अँगरेज भूत को॥

उसने कहा- "अरे ओ गाँधी! कुली! वैठ पैरो मे आकर।
जगह हवा के लिए छोड यह, अवे! वैठ जा पायदान पर॥"
इस पर गाँधी जी यह वोले- "तुम तो गद्दी पर वेठे हो।
तुम गद्दी पर, मैं तख्ते पर, फिर भी तुम मुझसे ऐंठे हो॥

मेरी जगह बैठ कर भी तुम– मुझको नही बैठने देते।
जो मेरा अधिकार उसे तुम– मेरा गला दवा कर लेते ।।
जिस हाँडी मे खाते हो तुम– छेद उसी हाँडी मे करते।
बिना बात झगडा करते हो, तुम न तनिक ईश्वर से डरते ।।"

इस पर उस गोरे ने उनको– दाँत पीस घूँसो से मारा।
बुरी बुरी गालियाँ सुनाई, सीमा रहित चढ गया पारा ।।
गाँधी कहते रहे यही, "मै– नही बैठ सकता जूतो मे।
अभी देश का स्वाभिमान है– भारत माता के पूतो मे ।।

यही बहुत है तुमने मुझको– कोचवान के पास बिठाया।
यही बहुत है तुमने मेरे– स्वाभिमान पर दाँत चलाया ।।"
अब वह गोरा गाँधी जी को– लगा खीचने हाथ पकड कर।
पर गाँधी जी ने गाडी के– पकड लिये सीखचे जकड कर ।।

निश्चय करके कहा उन्होने– "चाहे आज कलाई टूटे।
किन्तु हटूँगा नही यहाँ से, चाहे आज देह भी छूटे ।।"
इस पर गोरे ने गाँधी को– बुरी तरह घूँसो से मारा।
रुका न गोरा, हटा न हिमगिरि, गाँधी जी ने 'राम!' पुकारा ।।

उसे मारता देख बरावर, अन्दर के यात्री यह बोले–
"उन्हे पीट सकता हर कोई– जो होते है दुर्बल भोले ।।
वही उसे बैठा रहने दो, व्यर्थ बिचारे को मत मारो।
उसने भी तो दिया किराया, फिर क्यो उसको तले उतारो ?"

तब दब उस अँगरेज भूत ने– गाँधी जी का पीछा छोडा।
घोडा-गाडी बढी अगाडी, ठपक ठपक ठक दौडा घोडा ।।
लेकिन रास्ते भर गाँधी को– गोरा रहा सुनाता गाली।
मेरे गाँधी के स्वागत मे– लाई उषा सजाकर थाली ।।

'स्टेण्डरटन' मे गाँधी जी का– रजनी स्वागत करने आई।
स्वच्छ चाँदनी दीप जलाकर– मोती आँचल मे भर लाई॥
वहाँ तसल्ली हुई पथिक को, भारतवासी दिये दिखाई।
गाँधी जी के अभिनन्दन को– आये हिन्दुस्तानी भाई॥

उनके साथ 'सेठ ईसा' की– गाँधी जी पहुँचे दुकान पर।
'ईसा' की दुकान पर उनको– खडी हो गई भीड घेर कर॥
यात्रा मे जो कुछ भी बीती– गाँधी ने सब कथा सुनाई।
गोरे के घूँसो से नीली– अपनी दुखती कमर दिखाई॥

क्या परतन्त्र देश के वासी– इसी तरह पीटे जाते है ?
क्या मानव मानव के हाथो– इसी तरह थप्पड खाते है ?
प्रात घोडागाडी मे फिर– गाँधी जी बढ चले अगाडी।
दिन भर चल 'जोहान्सबर्ग' मे– कही रात को पहुँची गाडी॥

गाँधी जी 'जोहान्सबर्ग' मे– पहुँचे किसी बडे होटल मे।
वहाँ लाल आँखे कर बोली– भरी हुई मदिरा बोतल मे॥
यहाँ ठहरती गोरी चमडी, काले को अधिकार नही है।
हाय ! गुलामी मे मानव का– किसी जगह सत्कार नही है॥

होटल से धक्के खा गाँधी– 'अब्दुल गनी सेठ' पर आये।
राह देखता था गाँधी की– सेठ सडक पर आँख बिछाये॥
होटल मे जो बीती उन पर– गाँधी ने वह कथा सुनाई।
यही हाल है यहाँ हमारा, बडे सेठ ने व्यथा बताई॥

हमे लात खानी पडती है– इन गोरी चमडी वालो की।
कौडी भर भी कद्र नही है– अँगरेजो मे हम कालो की॥
हमे बना ताशो के पत्ते– खेल रहे हैं खेल ताश का।
आगे का 'जोहान्सबर्ग' से– टिकट ले लिया फर्स्ट क्लास का॥

वैठ रेल मे चले अगाडी, 'जर्मिस्टन' स्टेशन पर आये।
उस डिब्बे मे टिकट देखने– गोरे गार्ड तोप भर लाये॥
बैठा देख वहाँ गाँधी को– गोरा गार्ड बहुत झल्लाया।
"अबे! तीसरे दर्जे मे जा", 'नादिरशाही' हुकुम सुनाया॥

"प्रथम कक्ष का टिकट पास है"– कहा गार्ड से गाँधी ने यह।
इस पर उसने कहा बिगडकर– "कुली! थर्ड मे जा! जा! चुप रह!"
उसी कक्ष मे कोई गोरा– यात्री अफसर दयावान था।
वह मानव था, उसके मन मे– मानवता का भरा मान था॥

बोला वह इन्सान गार्ड से– "कहो, सताते बिना बात क्यो ?
फर्स्ट क्लास का टिकट पास फिर– इसे हटाते बिना बात क्यो ?"
गाँधी जी की तरफ देखकर– बोला, बैठे रहो यही पर।
बक बक करता गार्ड चल दिया– अपना सा काला मुँह लेकर॥

✓ अच्छे और बुरे दोनो ही– दुनिया मे देखे जाते है।
सागर मे यदि सुधा भरा है, तो शकर विष भी खाते है॥
कमल कीच से ऊपर रह कर– नित आदर्श कथा कहते है।
नदी किनारे अलग अलग हैं, लेकिन साथ साथ रहते है॥

✓ कोई कितना भी दोषी हो, उसमे भी कुछ अच्छाई है।
बुरी बात मे छिपी भलाई, भली बात भी शरमाई है॥
शूलो मे ही फूल यहाँ पर– दुनिया ने खिलते देखे हैं।
तिमिर ज्योति मे, ज्योति तिमिर मे, निर्गुण गुण मिलते देखे हैं॥

✓ यात्रा मे पग पग पर प्राणी– प्रलय-सिन्धु मे लहराता है।
कोई डूबा बीच भँवर मे, कोई तैर निकल जाता है॥
पैरो से शोणित चूता है, शूलो से छाती छिलती है।
जब होता तादात्म्य सत्य मे– तब जाकर मजिल मिलती है॥

जिसके दृढ सकल्प साथ है, उसने हर मोती पिरो दिया।
गाली और तमाचे खाते, गाँधी जी पहुँचे 'प्रिटोरिया'॥
स्टेशन पर रजनी रानी के– मन्द मन्द दीपक जलते थे।
धुँधले दीपो के प्रकाश मे– मन्द मन्द गाँधी चलते थे॥

इधर उधर देखा स्टेशन पर, अपना कोई नजर न आया।
अब क्या करूँ ? निमिष भर सोचा, सोच समझ कर पैर बढाया॥
'प्रिटोरिया' स्टेशन से राही– चल 'जॉन्स्टन होटल' मे आये।
होटल मे तो आये लेकिन– बार बार मन मे सकुचाये॥

"मुझको जगह मिल सकेगी क्या ?" 'जॉन्स्टन' से झिझके से बोले।
"हाँ, हाँ, जगह मिलेगी तुमको", कमरे के दरवाजे खोले॥
'श्री जॉन्स्टन' ने कहा प्रेम से– "काला गोरा यहाँ एक है।
सब मिट्टी के, मिट्टी सब की, मानव ! तेरा पथ विवेक है॥"

बढते पग-कज टटोल रहे–
किसको, कहदो कुछ चाँद सितारे !
चलते चलते छिलते पग भी,
रुचते न कभी, जलते पथ हारे॥

जलते जग मे जल के झरने,
झरते झरते वन पावस झूमे।
बढता जन मजिल मजिल जो,
पथ ने उसके पग-पकज चूमे॥

सप्तम सर्ग

अमृतध्वनि

बाँध दो पत्थर परो से, पर न उडने से रुकूँगा।
कह रहा अम्बर उदधि से– मैं न चरणो मे झुकूँगा॥
पर क्षितिज को चूम लहरे– चाँद सागर मे बुलाती।
लोरियाँ दे दे गगन को– सिन्धु की लहरे सुलाती॥

क्षितिज किसके चूमता पग, सिन्धु छूकर उस किनारे ?
जागरण की चन्द्रिका मे– ढूँढते किसको सितारे ?
वश्यता वर्त्तुल विगत पर– वर्त्म की लिखती कहानी।
वश्य वर्जन से तिरोहित– तैरता दो बूँद पानी॥

चिन्ते चिते ! घेर मत मुझको, जीवन मे कुछ सुसताने दे !
पतझड के सूखे पत्ते पर, दो पल को तो मुसकाने दे !
दुख और सुख मे समान मैं, चिन्ता मेरा क्या कर लेगी !
पीडा मुझे न डस पायेगी, मेरी नही पराजय होगी॥

क्या चिन्ता यदि साथ न कोई, साथी प्यास, नीर धारा मे।
मुक्ति-मार्ग ढूँढा करता है, आत्मा नित तन की कारा मे॥
बाँध बाँधने लगे बुद्धि से, मन की खाई और झील के।
तारे गिन गिन रहे सोचते, प्रात घर पहुँचे वकील के॥

'ए० डब्लू० बेकर' वकील से– गाँधी जी ने हाथ मिलाया।
परिचित थे परोक्ष मे दोनो, अब प्रत्यक्ष मिलन दर्शाया॥
ऐसे मिले जिस तरह मिलती– सूखी खेती से बरसाते।
मानो दो युग युग के बिछडे– करने लगे प्रेम से बाते॥

ईश्वर भक्त 'पादरी वेकर', प्राड्विवाक पडित प्राजल थे।
यहाँ पैरवी, वहाँ पैरवी, सगम के मगलमय जल थे॥
ईश्वर सम्बन्धी चर्चा मे— गाँधी जी भी रस लेते थे।
'वेकर' सुन प्रष्टव्य प्रश्न सव, प्रेमामृत प्रसाद देते थे॥

कहा ब्रह्म 'वेकर' ने उनसे— "रग-भेद है वहुत यहाँ पर।
रग-भेद मैं नही मानता, मेरे लिए सत्य है ईश्वर॥
रग-भेद का भूत यहाँ पर— मानवता को डस जाता है।
जो भी भारतीय आता है, वही यहाँ गाली खाता है॥

रग-भेद का भूत देखकर— छाती का छाला छिलता है।
हिन्दुस्तानी के रहने को— घर तक यहाँ नही मिलता है॥
किन्तु एक भटियारी के घर, चलो! तुम्हे मैं ठहरा आऊँ।
वह निर्धन है, उस वाई से— चलो मित्र! परिचय करवाऊँ॥"

साथ साथ 'वेकर साहव' के— वे भटियारी के घर आये।
उस वाई के घर पर उनके— रहने के प्रवन्ध करवाये॥
होटल छोड दिया गाँधी ने, उस वाई के घर पर आये।
गाँधी जी को भक्ति मिल गई, या कि 'राम' 'भिलनी' ने पाये॥

'वेकर' की छप्पर-छाया मे— गाँधी जी मन लगे लगाने।
दूर देश का यात्री आया, स्वतन्त्रता का परिचय पाने॥
'दादा अब्दुल्ला' के परिचित— मित्रो से मित्रता वढाली।
हिन्दुस्तानी के कष्टो की— हृदयगम तसवीर वनाली॥

मन मे निश्चय किया निडर ने, सव वातो का मनन करूँगा।
जो भी चीज सामने आये, उसका मैं अध्ययन करूँगा॥
उनके भारतवासी भाई— निज दुखो के चित्र दे गये।
एक रोज अपने गिरजे मे— उनको 'वेकर' मित्र ले गये॥

'देवी हैरिस', 'वेग', 'कोट्स' से– परिचय वहाँ कराया इनका।
सुन्दर हृदय और सुन्दर तन, रह रह दमक रहा था जिनका॥
घुटने टेक टेक गिरजे मे, सब ने किया याद ईश्वर को।
मुक्ति शान्ति माँगी उन सब ने, दे दे धन्यवाद ईश्वर को॥

हाथ जोड कर कहा सभी ने– हम सब को तू राह दिखाना।
भक्ति-भाव से गा गा बोले– सब को सच्चा ज्ञान सिखाना॥
'हैरिस' और 'बेग' दोनो ही– मधुर चाँदनी सी चलती थी।
या कि किसी कवि के भावो की– मुखरित दीप-शिखा जलती थी॥

उनके घर पर साथ 'कोट्स' के– गाँधी मधुर चाय पीते थे।
धर्म विषय पर बात-चीत कर, अन्तर का चोला सीते थे॥
उमडे घन से 'कोट्स' सभी से– पावन प्यार किया करते थे।
गाँधी के सुन्दर भावो का– वे सत्कार किया करते थे॥

और 'कोट्स' के प्रिय मित्रो से– भक्ति-उदधि गाँधी मिलते थे।
मित्रो के शाश्वत प्रकाश से– मानो श्वेत कमल खिलते थे॥
बड़े बडे सद्ग्रन्थ 'कोट्स' से– माँग माँग कर गाँधी पढते।
सन्तो की रश्मियाँ पकड कर, धरती से अम्बर मे चढते॥

'वैष्णव कण्ठी' देख कण्ठ मे, 'कोट्स' मित्र गाँधी से बोले–
"यह क्या ढोग गले मे डाला ? बुद्धिमान होकर भी भोले॥
लाओ, इसे तोड दूँ गाँधी ! यह ढकोसला ढोग छोड दो !
तुम्हे नही शोभा देती यह, गाँधी ! इसको अभी तोड दो !।"

गाँधी जी बोले विनम्र हो– "यह मुझको माँ ने पहनाई।
इसे न बस इसलिये तोडता, नही बुराई, नही भलाई॥"
यह सब सुनकर 'कोट्स' हँस पडे, हँस कर बोले, अच्छा भाई !
'कोट्स' मित्र से लगे सीखने– गाँधी धर्म मर्म 'ईसाई'॥

परिचय से परिचय गाँधी का– इसी तरह वढता जाता था।
मानो गाँधी के दर्शन को– परिचय स्वयम् चला आता था॥
'तैयव हाजी खान मुहम्मद', सेठ वहाँ पर वहुत वडे थे।
ऊँची ऊँची दूकाने थी, ऊँचे ऊँचे महल खड़े थे॥

शुद्ध हृदय की दिव्य मूर्त्ति ने– किया पथिक से गहरा परिचय।
मुक्ति मार्ग पर खडा पुजारी– मिटा रहा था मन के सशय॥
गली गली मे घूम घूम कर, ढूंढे हिन्दुस्तानी भाई।
गोरे जिन्हे समझते कीचड, कमल कीच मे दिये दिखाई॥

अपने देशवासियो की तव– गाँधी जी ने सभा वुलाई।
भूल दिखाई, प्रेम सिखाया, हक की सच्चाई समझाई॥
"चाहे कुछ भी कार्य करो पर– व्यवहारो मे सत्य न छोडो।
करो वडे व्यापार किन्तु तुम– सच्चाई से मुँह मत मोडो!।

यह हिन्दू, वह मुसलमान क्या? कौन पारसी? क्या ईसाई?
मानव मानव सभी एक है, सव आपस मे भाई भाई॥
देख रहे हो यहाँ तुम्हारा– कौडी भर सम्मान नही है।
गोरे तुम्हे 'कुली' कहते हैं, यह थोडा अपमान नही है॥

भारत माँ के स्वाभिमान को– तुम गोरो से रुँदवाते हो।
अपनी दुर्वलता के कारण– अपने पैर उखडवाते हो॥
तुम क्या जानो, इन गोरो ने– वाँध दिये ह पैर तुम्हारे।
गोरो की छाती के नीचे– दवे हुए अधिकार हमारे॥

'ट्रान्सवाल' मे देखो देखो– अधिकारो की लाग चल रही।
और 'स्टेट ऑरेन्ज फ्री' मे– कानूनो से चिता जल रही॥
केवल 'कुली' रह गये हो तुम, छीन लिये अधिकार तुम्हारे।
होटल मे 'वेटर' वन रह ले, केवल ये सत्कार हमारे॥

कुत्ते वन कर रह सकते हो, झूठ चाटने को होटल मे।
वे तुमको 'सामी' कहते हैं, जो डूवे रहते वोतल मे॥
मत देने का या चलने का, कोई भी अधिकार नही है।
गोरो का अधिकार यहाँ पर, कालो का सत्कार नही है॥

अव आगे से भारतवासी– 'फुटपाथो' पर चल न सकेगा।
और नौ वजे वाद रात को– काला यहाँ निकल न सकेगा॥
तीन पौड देकर प्रवेश पा, दव कर यहाँ ठहर सकते हो।
गोरे जहाँ चले उस पथ पर– पैर नही तुम धर सकते हो॥

यहाँ रेल से भारतीय का– विस्तर फेक दिया करते हैं।
यहाँ देख गोरी चमडी को– भोले भारतीय डरते हैं।"
जितने भी थे वहाँ सभा मे, सव ने वात उन्हो की मानी।
गाँधी जी के साथ वढ चली– हक के पथ पर वदल जवानी॥

उमड घुमड कर भारत माँ ने– आँसू पोछे, आशा वाँधी।
भाषण-सुधा वहा वाणी से– नये मार्ग पर विचरे गाँधी॥
आया जव 'फुटपाथ' चल पडे– गाँधी जी अनुभव करने को।
मानवता का वीर पुजारी– आगे वढा पीर हरने को॥

वढा एक दो कदम सिपाही, देख सन्तरी दौड़ा आया।
गाँधी को धक्के दे देकर– पगडण्डी से तले गिराया॥
वुरी वुरी गालियाँ सुनाई, वडी जोर से लात जमाई।
अत्याचार देख गाँधी पर, धरती 'त्राहि त्राहि' चिल्लाई॥

जहाँ पिट रहे थे गाँधी जी– वहाँ कही से 'कोट्स' आ गये।
पिटता देख मित्र गाँधी को– आँखो मे अगार छा गये॥
खून उतर आया आँखो मे, मानो हिला हृदय आँधी से।
"इस पर करो मुकदमा दायर", कहा नम्र होकर गाधी से॥

"मैंने यह सब देख लिया है, इसको मजा चखा दूँगा मै।
यह काला कानून मिटेगा, काली रात हटा दूँगा मैं॥
इसकी काली करतूतो से– मुझे वहुत अफसोस मित्र! है।
मेरे दिल मे दाग हो गया, आँखो मे खिंच गया चित्र है॥"

गाँधी वोले, "इस भाई का– लेश मात्र भी दोष नही है।
गोरो के साम्राज्यवाद को– भले बुरे का होश नही है॥"
अपनी पशुता पर शरमा कर– चरणो मे गिर पडा सन्तरी।
क्षमा कर चुका था पहले ही– भारत माँ का वडा सन्तरी॥

इसी तरह पथ के दीपक ने– भारतीय दुर्दशा निहारी।
गाँधी की आँखो से झाँकी– देशवासियो की लाचारी॥
कितनी ही उलझने पडी थी, हर उलझन को सुलझाना था।
मौत मुकदमे के फन्दे से– 'अव्दुल्ला' को छुडवाना था॥

उलझा हुआ मुकदमा था पर, सुलझा हुआ वकील वहाँ था।
वह उस न्यायालय मे पहुँचा, कुरसी पर भगवान जहाँ था॥
हाथ जोड कर करी प्रार्थना, इसका न्याय करो तुम ईश्वर!
दो सम्वन्धी डूव रहे हैं, अदालतो मे भटक भटक कर॥

दुनिया का कानून नही कुछ, ईश्वर का कानून अमर है।
सत्य हकीकत ही विधान है, निर्वल की आशा ईश्वर है॥
वादी प्रतिवादी दोनो ही– पिसे जा रहे, राम! वचालो।
मैं यथार्थ सब तुम्हे सुनाता, ईश्वर! इनका पिंड छुडालो॥

ईश्वर से विनती कर गाँधी– 'तैयव' जी के घर पर आये।
कहा, "मुकदमेवाजी छोडो, निर्णय आपस मे हो जाये॥
निर्णय होगा और साथ ही– मनमुटाव भी मिट जायेगा।
अमृत मित्रता का पाओगे, खोया द्रव्य हाथ आयेगा॥

व्यर्थ वकीलो के चक्कर मे– अपने को बर्बाद मत करो।
लडवाना ही इनका पेशा, भेद-भाव से हृदय मत भरो ॥"
बिगड़ी बाते सुलझाने को– गॉधीजी जी तोड लग गये।
सच की करने लगे वकालत, गिरते तरु को छोड खग गये ॥

दोनो रिश्तेदार तग थे, पर हठवश हठधर्मी पर थे।
और अदालत के खर्चो से– दोनो कॉप रहे थर थर थे ॥
गॉधी जी की बात मानकर– उन दोनो ने पच बनाये।
पचो के सुन्दर निर्णय से– दोनो सीधे पथ पर आये ॥

दोनो पक्ष प्रसन्न हो गये, दोनो ही की बढी प्रतिष्ठा।
उनके सकट टल जाते हैं, जिनकी परमेश्वर मे निष्ठा ॥
गॉधी को सन्तोष मिल गया, उन दोनो की प्रीति बढ गई।
मानो हिमगिरि की चोटी पर– दोनो ही की जीत चढ गई ॥

जो खोजा करता सच्चाई– वह नर सब कुछ पा लेता है।
जो यथार्थ बल पर लडता है– वह डूबी नौका खेता है ॥
'प्रिटोरिया' मे गॉधी जी ने– धर्म कर्म की कुजी पाई।
जग की नब्ज देखनी सीखी, मन के हाथ हकीकत आई ॥

वादी प्रतिवादी न रहे अब, दोनो सच्चे मित्र बन गये।
दो मित्रो को बचा भँवर से– गॉधी मन के चित्र बन गये ॥
फिर 'श्री बेकर' गॉधी जी को– ईसाई गिरजे मे लाये।
अपना धर्म श्रेष्ठ बतलाने– बडे बडे 'ईसाई' आये ॥

गॉधी जी से कहा उन्होने, "तुम भी बन जाओ ईसाई"।
'ऐसी भूल न करना गॉधी!' ध्वनि अन्तर आत्मा से आई ॥
आत्मा जो कुछ भी कहता था– गॉधी वही किया करते थे।
करने से पहले ईश्वर से– गॉधी पूछ लिया करते थे ॥

हृदय-तुला पर तोल वात को– वुद्धि-कसौटी पर कसते थे।
धर्म वदलने की वाते सुन, मन मे वार वार हँसते थे॥
करो धर्म परिवर्त्तन अपना, वार वार 'ईसाई' वोले।
लेकिन गाँधी के मानस के– दर्वाजे ईश्वर ने खोले॥

गाँधी अटल सत्य से वोले, अपने अन्तर से निर्णय कर।
'ईसा' ईश्वर सम हैं यदि तो– जग का हर प्राणी है ईश्वर॥
'ईसा' मे श्रद्धा है मेरी, 'ईसा' ईश्वर नही मानता।
अद्वितीय दैविक शिक्षक थे, मानवता की ज्योति जानता॥

उदाहरण वलिदान उन्हो का, और न कोई चमत्कार था।
पूजनीय श्रद्धेय सत्य है, 'ईसा' का जो भी विचार था॥
लेकिन मैंने तो मथ मथ कर– हिन्दू धर्म पूर्ण पाया है।
मेरा सच्चा धर्म वही है– जो जननी ने सिखलाया है॥

एक तरफ ईसाई उनको– अपने पथ पर वहकाते थे।
और वहुत से मुस्लिम भाई– इस्लामी पथ दिखलाते थे॥
दो धारो के वीच तैरते, गाँधी अपने तट पर आये।
तनिक भँवर मे आये थे वे, पर 'कवि राय' किनारे लाये॥

गाँधी जी को लिखा 'राय' ने– "काम न करना विना विचारे।
कही फिसल कर गिर मत पडना, भारत माँ के भाग्य-सितारे!
हिन्दू धर्म पूर्ण सागर है, खोज खोज कर रत्न निकालो।
आत्म निरीक्षण, सूक्ष्म, गूढ सव, जो कुछ भी चाहो वह पा लो॥

मथो सभी धर्मो को भाई! देखो, रत्न कहाँ मिलते हैं।
देखो कहाँ रात है काली, देखो कहाँ कमल खिलते हैं॥"
सव धर्मो की पुस्तक पढ पढ– किया धर्म-मन्थन गाँधी ने।
वेद विधाता के चरणो मे– चढा दिया चन्दन गाँधी ने॥

घर जाने की इच्छा मचली, गाँधी जी 'डरबन' मे आये।
धन्यवाद के लिए 'सेठ' ने– सुन्दर सुन्दर साज सजाये॥
'अब्दुल्ला' ने गाँधी जी की– वार वार की बहुत बडाई।
काव्य-कला स्वागत कर बोली– मेरे गाँधी ! तुम्हे बधाई॥

सब मित्रो को किया निमन्त्रित, खान पान के ठाठ सजाये।
दावत करी 'सिडेवहैम" में, सब मिल हृदय-बधाई लाये॥
वही कही अख़बार पडा था, गाँधी जी वह लगे बाँचने।
एक खबर पढ चौक पडे वे, पुन खबर वह लगे जाँचने॥

'फ्रेन्चाइज इण्डियन' सूचना– गाँधी जी ने पढी ध्यान से।
चिन्ता दौड गई माथे पर, हृदय हट गया खान पान से॥
बोले सब मित्रो से गाँधी– "देखो, देखो ! ख़बर पढो यह।
तुमको 'मत-अधिकार' न होगा– बनता है कानून यहाँ वह॥

भारतीय के लिए यहाँ ये– कानूनी विष घोल रहे हैं।
भारतवासी चुप बैठे हैं, शब्द न मुँह से बोल रहे हैं॥
'फ्रेन्चाइज कानून' जहर है, इसका करो विरोध आज से।
अधिकारो के लिए लडो तुम, दृढ होकर गोरे समाज से॥"

उस जलसे मे से कुछ बोले– "आप जो कहे वही करे हम।
आप न जाये अभी यहाँ से, तभी हट सकेगा काला तम॥"
जलसे मे से बोला कोई– "गाँधी जी को मत जाने दो !"
प्राण न जाने दो हम सब के, मत वियोग के क्षण आने दो !!"

जलसे भर मे शोर मच गया– "यही ठीक है, यही ठीक है।"
प्रतिध्वनि मे मानवता बोली– "यही लीक है, यही लीक है॥
गाँधी जी को यही रोक लो, गाँधी जी को यही रोक लो।
इनके चरणो के प्रताप से– अन्धकार खो, हटा शोक लो !!"

सुधा छिडकते गाँधी बोले– "काम करो तो रुक जाऊँ मैं।
तन मन धन यदि दान कर सको– तो आन्दोलन फैलाऊँ मैं॥"
एक साथ आवाजे गूँजी– "जो आज्ञा हो, वही करे हम।
हम सब तन मन धन से प्रस्तुत, कहो, कलेजा चीर धरे हम॥"

गाँधी जी के अभिभाषण से– जलसा क्षण मे 'दधिचि' बन गया।
फिर क्या था! स्वागत का जलसा– कार्यकारिणी समिति बन गया॥
पचम स्वर मे कहा आह ने– गाँधी सब की चाह बन गये।
लक्ष्य दीप ले बोल उठा यह– गाँधी सब की राह बन गये॥

वह वाणी क्या, जिसने जग को– पीडा की पहिचान नही दी।
वह पतग क्या, जिसने जल जल– देश-दीप पर जान नही दी॥
वह बादल क्या, जो कि बरस कर– बुझा न दे धरती की ज्वाला।
वह दीपक क्या, जो जल जल कर– दे न सके सब को उजियाला॥

जहाँ हुआ अन्याय तनिक भी– गाँधी जी बस गये वहाँ पर।
'फ्रेन्चाइज बिल' के विरोध मे– खडे हो गये कमर बाँध कर॥
'दादा अबदुल्ला' के घर पर– गाँधी जी ने सभा बुलाई।
सभी हुए शामिल बैठक मे– हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई॥

बैठे सज प्रधान कुरसी पर– 'हाजी सेठ मुहम्मद दादा'।
भाषण होने लगा सभा मे– गाँधी जी का सीधा सादा॥
महापुरुष ने कहा वहाँ पर– "मिलकर सभी एक हो जाओ!
'फ्रेचाइज बिल' के विरोध मे– फौरन एक तार भिजवाओ!!

कल 'अध्यक्ष' महोदय को तुम– एक प्रार्थनापत्र भेज दो।
और उसी की प्रतिलिपियाँ कर– यत्र तत्र सर्वत्र भेज दो॥
देश-भक्ति के लिए भाइयो! शीघ्र स्वयसेवक बन जाओ।
बनो 'भगीरथ,' गगाजल से– अपने घर की आग बुझाओ॥"

'फ्रेंचाइज विल' के विरोध मे– लिखा प्रार्थनापत्र सोचकर।
देश-प्रेम मे दौड दौड कर– करवाये सव के हस्ताक्षर॥
'रुस्तम जी' 'जीवा' जी' जैसे– भारतीय सेवा मे आये।
गॉव गॉव मे घूम घूम कर– दस हजार हस्ताक्षर लाये॥

शीघ्र प्रार्थनापत्र शान्ति से– धारा सभा मध्य भिजवाया।
प्रतिलिपि अखवारो को भेजी, अखवारो का निर्णय आया॥
सव पत्रो ने किया समर्थन, अपने अग्रलेख भी छापे।
'फ्रेंचाइज विल' के अभ्यासी– ऊपर हँसे, हृदय मे कॉपे॥

वड़े बडे नेताओ ने भी– उस विरोध को उचित बताया।
दुनिया भर मे खबर छप गई, भारत के जी में जी आया॥
वह पहला प्रार्थनापत्र था– जो दुनिया मे बना ढिँढोरा।
वह पहला देशाभिमान था– जिससे कॉप उठा रँग गोरा॥

अव 'अफ्रिका' छोड कर गॉधी– भारत कैसे जा सकते थे!
आन्दोलन को छोड बीच मे– वापिस कैसे आ सकते थे!
अव 'नेटाल' निवासी भाई– दूरी कैसे सह सकते थे!
गाँधी जी के विना वहॉ पर– जिन्दा कैसे रह सकते थे!!

वन्धन मुक्त कराने वाले– जकडे गये प्रेम-वन्धन मे।
गॉधी जी वस गये प्रेम से– सव आँखो के नन्दन वन मे॥
गॉधी के वढते गौरव को– गोरे सहन नही कर पाये।
डरे वन्दरो से जितने हम– वन्दर उतने ही घुर्राये॥

न्यायालय है धर्म-तराजू, जिस पर सत्य तुला करता है।
गोरा हो या काला कोई, सत्य किसी से कव डरता है!
फरियादी ने कहा जोर से, न्याय तुला कम तोल रही है।
वर्णभेद का विप मत घोलो, जिसमे सच है योग्य वही है॥

पर गोरे तो यह कहते थे– हम ही यहाँ वकील रहेगे।
यदि कोई काला आया तो– हम सब उसको 'कुली' कहेगे॥
गोरो ने यह समझ लिया था– जर-खरीद 'नेटाल' हमारा।
गोरो ही की यहाँ वकालत, कालो! क्या है काम तुम्हारा?

भगी हो या भिश्ती कोई, धरती माँ सब को देती है।
दोनो हाथ बढा धन देती, सब कुछ देकर क्या लेती है?
कागज या चाँदी के टुकडे– मानवता का मान छीनते।
जो हम को जीवन देती है, हम उसकी अस्थियाँ बीनते॥

गोरो की दुर्नीति देखकर– गाँधी जी को गुस्सा आया।
पर गुस्सा पी गये शान्ति से, खोल न्याय का पृष्ठ दिखाया॥
बडी शान्ति से न्यायालय मे– माँगा न्याय व्यथित ने जाकर।
बोले, "वर्ण भेद यह कैसा? काले गोरे सभी बराबर॥"

न्यायालय ने आज्ञा दी यह– "गाँधी का कुछ दोष नही है।
जो गाँधी को गलत बताते– उनको अपना होश नही है॥"
बोले न्यायाधीश न्याय से– "गोरो की उक्तियाँ व्यर्थ हैं।
गाँधी जी ह ठीक मार्ग पर, गोरो के इन पर अनर्थ ह॥"

पगडी को उतार गाँधी ने– न्यायालय मे शपथ उठाई।
करने लगे वकालत जग की, महाउदधि मे नाव चलाई॥
आग्रह और अनाग्रह दोनो– सत्याग्रह के लिए जरूरी।
हठ से हक की हत्या होती, रह जाती साधना अधूरी॥

केवल अपना पेट पालना– शिक्षा का उद्देश्य नही है।
पूँछ हिलाकर पेट दिखाना, भिक्षा का उद्देश्य नही है॥
भिक्षा अगर माँगनी है तो– अपने सद्भावो को माँगो।
औरो का सुख फिरो माँगते, फाँसी की डोरी मत टाँगो॥

बने भिखारी का भिक्षुक जो– वह नर से नारायण होता।
जो दुखो मे सुख बन जाये– वह नर धर्म परायण होता॥
पेट पालना, पड कर सोना, गाँधी जी का ध्येय नही था।
भिक्षुक के भिक्षुक गाँधी का– जीवन-जलधि प्रमेय नही था॥

गाँधी जी का मुख्य लक्ष्य था– करना सार्वजनिक सेवाये।
आओ सेवक पर श्रद्धा से– भावो के दो फूल चढाये॥
भारत भाग्य 'मताधिकार बिल'– नाच रहा था उनके आगे।
जब सारी दुनिया सोई थी– तब गाँधी पहरे पर जागे॥

दुनिया ने जीवन पाया है– विष पीने वाले 'शकर' से।
मात्र प्रार्थनापत्र भेज कर– 'फ्रेचाइज बिल' टला न सर से॥
तब उस कर्मवीर गाँधी ने– पूरे आन्दोलन की ठानी।
पीड़ा से बिजली सी तडपी– उनकी जागी हुई जवानी॥

बादल बन कर गिरा आग पर– गाँधी की वाणी का पानी।
शब्द शब्द मे नया ग्रथ है, शब्द शब्द मे अमर कहानी॥
आन्दोलन के लिए कमर कस– सार्वजनिक सस्था रच डाली।
हम उपवन के खिले फूल है, गाँधी जी उपवन के माली॥

'महासभा काग्रेस' देश की, भारत मे भारत-माता थी।
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् सी माँ, दुखो मे सब की त्राता थी॥
'भारतीय नेटाल काग्रेस', नाम वहाँ भी रखा सभा का।
कहाँ कहाँ तक गुण गाये हम, गाँधी! तेरी अमर प्रभा का॥

बैठ नाव पर सकल्पो की– गाँधी ने 'काँग्रेस' बनाई।
'भारतीय काग्रेस' वहाँ भी– मानो नयी जवानी लाई॥
या कि भारती ज्योति फूट कर– आ चमकी 'नेटाल' देश मे।
या उस कल्याणी वाणी ने– दीप धरा दक्षिण प्रदेश मे॥

'दादा अब्दुल्ला' की बैठक– बदली, बनी नया कार्यालय।
गाँधी जी को मानव कहदूँ, या भारत माँ का न्यायालय॥
ऐसे बढे सदस्य सभा के, जैसे बढी कीर्ति गाँधी की।
ऐसे उठी भावना उनकी, जैसे परछाई आँधी की॥

बडी कठिनता से गाँधी जी– चन्दा प्राप्त किया करते थे।
एक पौड प्रतिमास सभा को– गाँधी स्वय दिया करते थे॥
मन्त्री थे, पथ के दीपक थे, कन्धो पर गाडी चलती थी।
भारत जननी के दुखो से– गाँधी की छाती जलती थी॥

मन्त्री अगर योग्य हो कोई, तो सस्था चलती रहती है।
अगर स्नेह भर दो दीपो मे, दीप-शिखा जलती रहती है॥
सद्भावो से लक्ष्य मार्ग पर– जो आगे आगे चलता है।
वह मानवता के मन्दिर मे– हृदय-दीप बन कर जलता है॥

सार्वजनिक कार्यो की महिमा– गाँधी जी ने पहिचानी थी।
सार्वजनिक पथ की कठिनाई– उस विरले ही ने जानी थी॥
चलते चलते पैर छिल गये, लेकिन चलता रहा बराबर।
प्रलयकर तूफानो मे भी– दीपक जलता रहा बराबर॥

जो न परिश्रम से थकता है, उससे बाधा दूर भागती।
जिसकी वाणी मे जीवन है, जनता सोती हुई जागती॥
जागो हिन्दुस्तानी भाई! गाँधी जी ने आँखे खोली।
बजी कृष्ण की मधुर बाँसुरी, गउएँ पीछे पीछे हो ली॥

पूजा की थाली सी चमकी– 'महासभा' 'नेटाल' देश मे।
मानो कष्ट दूर करने को– ईश्वर थे दक्षिण प्रदेश मे॥
गाँधी जी ने कदम बढाये, बदले बडे बडे 'दुर्योधन'।
गाँधी का नेतृत्व वहाँ पर– करने लगा तीव्र आन्दोलन॥

भारतीय 'अफ्रिका' निवासी– अपनी स्थिति पहिचान रहे थे।
उनके प्रेम भाव की महिमा– अन्तर्वासी जान रहे थे॥
गाँधी नर थे या नारायण, यह सब भेद भक्त ही जाने।
जो खुद को पहिचान न पाया, वह उनको कैसे पहिचाने॥

जिसके अन्तर मे आँखे हैं, वही सत्य पहिचान सका है।
नर नारायण दोनो ही थे, कवि केवल यह जान सका है॥
एक दिवस गाँधी के आगे– पिटा छिता मद्रासी आया।
जिसे देख कर मन ही मन मे– मेरा राम हृदय भर लाया॥

मुँह से खून, दाँत टूटे थे, रोता रोता हाँप रहा था।
हिडकी बँधी हुई थी उसकी, डर के मारे काँप रहा था॥
फटे पुराने वस्त्र देह पर, तन की चमडी उधड रही थी।
डर की डायन आँख फाड कर– अब भी उससे अकड रही थी॥

उसे हृदय से लगा हृदय ने– पूछा, कहो बात क्या भाई!
बोला वह, "गोरे मालिक ने– मार मार कर खाल उडाई॥
मै हूँ 'बालसुन्दरम्' स्वामी! गोरे की नौकरी करी थी।
बेकसूर, यह दशा बना दी, चाय मेज पर नही धरी थी॥

इसी बात पर बिगड गया वह, मुझको बेदर्दी से मारा।
अब तुम ही हो मेरे रक्षक, भला करे भगवान तुम्हारा॥
हत्यारे से मुझे छुडा लो, मेरा कोई नही यहाँ पर।
उससे मेरा पिड छुडा दे, ओ मुझ बेकसूर के ईश्वर!"

बालसुन्दरम् की हालत से– गाँधी जी के दृग भर आये।
पर आँखो ही मे आँसू पी, चरण न्याय के लिए बढाये॥
न्यायालय से न्याय माँगने– गाँधी दीनदयालु चल पडे।
गाँधी तब शिव रूप हो गये, जब माथे मे तीन वल पडे॥

सत्य उक्तियाँ रख गाँधी ने– न्यायालय से न्याय कराया।
'वालसुन्दरम्' का गोरे से– गाँधी जी ने पिड छुडाया ॥
सन्त देह के दृढ होते हैं, हृदय बहुत कोमल होता है।
सन्त हृदय मे गिर कर आँसू, दुनिया मे मोती वोता है ॥

'वालसुन्दरम्' ने गाँधी के– आगे अपनी पगडी घर दी।
और आँसुओ के मोती से– गाँधी जी की गोदी भर दी ॥
गाँधी जी शरमा कर वोले, पहले पगडी घर लो सिर पर।
ईश्वर का अधिकार मित्र! यह, मुझको देख रहा है ईश्वर ॥

जाने कोई सता किसी को, कैसे स्वयम् वडा वन जाता?
जाने पीकर रक्त किसी का, कैसे कोई नर कहलाता?
सच पूछो तो 'वालसुन्दरम्', भारत का साक्षात चित्र था।
जिसके कपडे फटे हुए थे, जिसका कोई नही मित्र था ॥

वूटो से उधेड कर जिसके– तन की चमडी चमडी छीली।
शरण माँगती थी पुत्रो से– जिस भारत की आँखे गीली ॥
घूँसे मार मार गोरो ने– जिसके दाँत तोड डाले थे।
'कुली' कहाने को गोरो से– दर पर पडे हुए काले थे ॥

भारतमाता के शोणित की– उनके ओठो पर प्याली थी।
कानूनो के छूरे भोक कर– हक की हत्या कर डाली थी ॥
गोरो की थी सडक वहाँ पर, गोरो की थी रेल वहाँ पर।
हमे खिलौना समझ तोडना, गोरो का था खेल वहाँ पर ॥

धरती माता की गोदी तो– सव पुत्रो के लिए वरावर।
सडक नही है वह, छिपे जो– आने वाले से शरमा कर ॥
नये नये कानून विपैले– लदे 'अफ्रिका' मे कालो पर।
विप फैलाने लगे देश में– श्वेत साँप फुङ्कार मार कर ॥

एक सर्प ने 'तीन पौंड कर'- लदवाया हिन्दुस्तानी पर।
अपने गाल सुर्ख कर डाले, 'गिरमिटियो' का खून चूस कर ॥
यम का कर था या पिशाच का, बच्चो तक पर भी वह कर था।
मानवता की शव-यात्रा मे- काले गोरे का अन्तर था ॥

खून पसीना बहा बहा कर- भारतीय खेती करते थे।
पर भूखे मरते थे काले, गोरे बडे पेट भरते थे ॥
गोरे क्या, उनके कुत्ते भी- भारतीय पर घुर्राते थे।
दूध पिया करते थे गोरे, कालो से पशु चरवाते थे ॥

कहते थे, काले जॅगली हैं, ये अच्छा खाना कब जाने!
अर्थ सभ्यता का न जानते, नही जानते गति के गाने ॥
अत्याचारो के विरोध मे- गॉधी ने आवाज उठाई।
जिनको अपना पता नही था- उनको उनकी दशा बताई ॥

जन जन मे चेतना जगाई, जीवन मे ज्वाला दहकादी।
बिजली सी दौडी रग रग मे, गॉधी जी ने क्रान्ति मचादी ॥
वाह्य जगत के साथ हृदय मे- महाशक्ति ने शक्ति जगाई।
अन्तरतम के अन्धकार मे- महापुरुष ने ज्योति जलाई ॥

मानव की मानसिक गुलामी- गॉधी के मानस ने धोई।
दुनिया की पीडा आ आकर- गॉधी की ऑखो मे रोई ॥
महासभा 'कांग्रेस' मुखर थी, शख बजाये, शान्ति जगादी।
जिस जीवन मे जान नही थी- उस जीवन मे क्रान्ति जगादी ॥

यदि गॉधी नेतृत्व न करते, महासभा 'कांग्रेस' न होती।
और अगर 'कांग्रेस' न होती, तो मानवता रह रह रोती ॥
धन्य! धन्य!! वे व्यापारी जो- गॉधी जी के लिए 'कर्ण' थे।
वर्ण-भेद से दूर दूर जो- एक देह थे, एक वर्ण थे ॥

आन्दोलन के लिए कमर कस— जो तन मन धन से तत्पर थे।
धन्य! धन्य!! वे वीर अमर हैं— जो विष पी भोले शकर थे॥
'अफ्रीका' मे छिडी लडाई, गाँधी जी ने शख बजाया।
सत्य, अहिंसा, आत्मशक्ति से— शान्तिपूर्ण सग्राम रचाया॥

गाँधी जूझ पडे गोरो से— 'गिरमिटिओं' की सेना लेकर।
जय जय जय जय जय चिल्लाये— भारतवासी सर दे देकर॥
कोडे खाये, गये जेल मे, फाँसी के तख्तो पर झूले।
तन मन धन बलिदान कर दिया, पर न देश का गौरव भूले॥

भूत, भविष्यत्, वर्तमान मे— अन्त सत्य की विजय हुई है।
श्रद्धा भक्ति तपश्चर्या से— भारत भक्ति अनन्य हुई है॥
जो क्षणभगुर भय से डरते— वे नर बार बार मरते हैं।
जो न कभी रोके से रुकते— वे दुनिया स्वतन्त्र करते हैं॥

आत्मज्ञान हो गया जिसे वह— जल मे मिल समष्टि बन जाता।
जो गहराई मे जाता है— वह नर रत्न खोज कर लाता॥
जिसने सच्चाई से ढूँढा— वह कीचड मे भी नीरज है।
वह जीवन, जागृति, ज्योतिर्मय, जिसके जीवन मे धीरज है॥

मेरे हृदय-हस गाँधी जी— मानस के मोती चुगते थे।
मेरे गाँधी के जीवन से— नये नये पौधे उगते थे॥
जो जीवन मे वही जगत मे, वही व्यक्ति ऊँचा चढता है।
रहन सहन वह खान पान का— असर दूसरो पर पडता है॥

कितना खोट, स्वर्ण कितना है, हृदय-कसौटी पर कसते थे।
किन्तु किसी के धर्म-जाल मे— गाँधी कभी नही फँसते थे॥
बडे बडे ईसाई पडित— कर न सके खडित गाँधी को।
मस्तानी हथकडियाँ आ आ— कर न सकी दडित गाँधी को॥

गाँधी जी के खान पान से– मचल गया ईसाई बालक।
गाँधी जी को देख बन गया– गाँधी जी का आज्ञा-पालक ॥
इस पर ईसाई महिला ने– गाँधी को घर से दुतकारा।
उस सीधे सच्चे बालक को– माँ ने बार बार फटकारा ॥

आँसू बहा कहा गाँधी से– "तुम तो मास नही खाते हो।
लेकिन मेरे बच्चे से क्यो– आमिष खाना छुडवाते हो ?
इससे वह बीमार पडेगा, कमजोरी भी आ जायेगी।
अतिथि! तुम्हारी मीठी वाणी– भोला बालक खा जायेगी।"

बडी शान्ति से गाँधी बोले– "अब मैं यहाँ नही आऊँगा।"
बालक अपनी माँ से बोला– "माँ! मैं मास नही खाऊँगा।"
गाँधी-वाणी हृदय खीचकर– सच की गगा मे नहलाती।
उन आँखो के आकर्षण से– मुक्ति स्वयम् चरणो मे आती ॥

गाँधी की तसवीर खिँच गई– 'अफ्रीका' के अन्तस्तल पर।
बडे प्रेम से बसा हुआ था– हृदय हृदय मे गाँधी का घर ॥
अच्छा बुरा सभी कुछ देखा, किन्तु चले वे सँभल सँभल कर।
उलझाने वाली रगीनी– डाल न पाई जादू उन पर।

'अफ्रीका' मे रहते रहते– तीन वर्ष हो गये उन्हे जब–
'बा' की याद बुलाने आई– अपने स्वामी गाँधी को तब ॥
रह रह कर भारत जाने की– चाह तडपने लगी पीर बन।
मानो चन्दा के वियोग मे– रात भटकने लगी नीर बन ॥

याद किसी की जब आती है, आँखो मे जल भर आता है।
पत्थर फोड विरह का पानी, गगा बन कर बह जाता है ॥
ऐसा कोई नही याद मे– जिसने आँसू नही बहाये।
किसने चाँद न जाता देखा, किसके नयन नही भर आये ॥

स्मृति की पलको पर प्यार लिये—
वरसे किसकी सुधि के मोती ?
किसकी कविता कहती कहती—
सरिता घन मे करुणा रोती ?
विजली वन 'वा' मन मे चमकी,
तडपी स्मृति, वोल उठी, आ! आ!!
प्रिय आ! प्रिय आ!! मधुमास लिया,
कव से कहती कलिका गा गा ॥

पावस सी चिर प्यास लिये प्रिय!
मैं दृग-कोप विखेर रही हूँ ॥
पीर भरी, मधु नीर भरी प्रिय!
गीत भरी पथ घेर रही हूँ ॥
भूल गये सुधि क्या करुणानिधि!
लूट रहा जग, रात अँधेरी।
क्यो वन वायु न प्राण! गये तुम,
जीवन को अव याद न मेरी ॥

अपने मित्रो से गाँधी ने— घर जाने की आज्ञा चाही।
आगे का पथ वता रहा था— आगे चलने वाला राही ॥
वोले, "मैं छ मास वाद ही— पास तुम्हारे आ जाऊँगा।
और यहाँ के लिए वहाँ से— नये नये साधन लाऊँगा ॥

हम पर जो कुछ यहाँ वीतती— वह सव वहाँ सुना आऊँगा।
भारत के अन्तस्तल तक मैं— व्यथा तुम्हारी पहुँचाऊँगा ॥
क्योकि यहाँ रहना है मुझको, अत वाल वच्चे ले आऊँ।
यदि 'कांग्रेस' और 'शिक्षा दल'— तुम सँभाल लो तो मैं जाऊँ?"

गाँधी जी के सब मित्रो ने– याद भरी धडकन पहचानी।
गाँधी जी ने आज्ञा चाही, गाँधी जी की आज्ञा मानी॥
'आदम जी' को मन्त्री पद दे, गाँधी जी ने कदम उठाया।
उमड घुमड सज धज बादल दल– उनके स्वागत मे घिर आया॥

दृग-दीपो के प्रिय प्रकाश मे– गाँधी ने सुन्दरता आँकी।
अन्तस्तल पर अंकित कर ली– 'दक्षिण अफ्रीका' की झाँकी॥
प्रकृति-परी के साथ साथ चल– वह विस्तृत भूखण्ड निहारा।
हवा बदलते रहे वहाँ पर, उमडी देशभक्ति की धारा॥

ऊँचे ऊँचे सुन्दर सुन्दर– शैलो पर सगीत सुनाये।
मानो पर्वत के मानस से– देशभक्ति के गीत लुटाये॥
सरिताओ के रम्य तटो पर– जीवन देते गाँधी घूमे।
लहरो की कल कल ध्वनि से वे– भावो के सागर मे झूमे॥

ऋतुओ के रूपो को देखा, रिमझिम की पग-ध्वनि पर बोले।
करुणा की बरसाते देखी, कलियो ने अवगुण्ठन खोले॥
डाल डाल पर कोयल देखी, किन्तु दृगो से नीर बहाती।
फूल फूल से बरस रही थी– कितनी ही आँखे बरसाती॥

आँसू आँचल मे भर गाँधी– सारे जग को फिरे दिखाते।
पलको से काँटे चुग चुग कर– शूल सहन कर फूल खिलाते॥
'पोगोला' जहाज चलता था, गाँधी रूप निहार रहे थे।
उमड उमड कर ज्वार जलधि से– उन पर मोती वार रहे थे॥

मानो श्वेत हस पर बैठे, गाँधी जल-विहार करते थे।
या सागर के खारी जल मे– चुग चुग कर मोती भरते थे॥
मन की लहरो मे लहराते, अमृत भरे चन्दा चलते थे।
लहरे साथ साथ चलती थी, दीपक साथ साथ जलते थे॥

आध्यात्मिक जीवन के रस मे– गाँधी का जलयान चल रहा।
देखो, कभी न बुझने वाला– अखिल भुवन मे दीप जल रहा॥
सभी पराये सब अपने है– एक तत्त्व सर्वत्र निहारा।
कदम बढाता चला भगीरथ, आ पहुँची गगा की धारा॥

यात्रा का आनन्द लूटता– यान किनारे पर आ पहुँचा।
या वियोगिनी के दृग तट पर– तडपा हुआ प्यार जा पहुँचा॥
'हुगली' का सौन्दर्य देखते– गाँधी जी 'कलकत्ता' आये।
मातृभूमि के लिए उदधि से– चुग चुग हीरे मोती लाये॥

पल्लव! प्रात-समीर लुटा अब,
क्योकि बजी प्रिय पावस-पायल।
गीत रसाल भरे भव मे भर,
स्वागत मे मधु कोयल श्यामल!
चाँद नही चित-चोर चकोर!
मयूर! न मेघ लिये शशि सावन
चाँद झुका कच-मेघ लिये अलि!
पूज रही पति के पग-पावन॥

अष्टम सर्ग

दीपांजलि

दीपक की यह ज्योति नही जग !
मोहन की मुख-ज्योति निराली।
सूरज जान न पकज ! तू खिल,
नीरज मे अलि ! रूप उजाली ।।
मेघ नही, अलि, अञ्जन 'बा' दृग-
मे मल बाल सॅवार रही है।
बादल आज कहाँ बदली ! फिर-
क्यो यह चाँद उभार रही है ?

पागल ! बादल आज नही पर,
मै प्रिय के अभिनन्दन मे हूँ।
जो वन मे सब को मधु दे अलि !
मैं वह सौरभ चन्दन मे हूँ।
दीपक पूजन के जलते अलि !
तू इनको समझी नभ-तारे।
जा ! मुझ निर्धन को न चिढा अलि !
दो दिन के सब फूल उधारे ।।

धरती माता ने गाँधी के- स्वागत को ससार बसाया।
गउओ ने गा गा गाँधी को- मीठा मीठा दूध पिलाया ।।
स्वागत की वेदी पर कवि ने- लाकर दीप धर दिया घी का।
उदित उषा ने मगल गा गा- लगा दिया रोली का टीका।

वैठी प्रिया प्रतीक्षा मे जो– उस वियोगिनी का धन आया।
युग युग से प्यासी धरती को– मेघो ने मधु घोल पिलाया॥
'कलकत्ता' से वढे अगाडी, प्रिय 'प्रयाग' के दर्शन करने।
गगा, यमुना, सरस्वती को– अपने अन्तस्तल मे भरने॥

या कि त्रिवेणी के सगम पर– गागर मे सागर जाता था।
या कि मानवो के हृदयो का– सगम पर सगम आता था॥
जग के सगम को पहिनाई– सगम की लहरो ने माला।
लहरो की लडियो पर वैठा– जग की आग बुझाने वाला॥

तीर्थ 'प्रयाग' जहाँ जग के धन–
    पूज रहे रस धार त्रिवेणी।
आँक रहे जन-नायक जीवन,
    खोल सँवार रही गति वेणी॥
पैर पखार चला जल मे जल,
    दीप जहाँ दृग मे जलते थे।
'वा'-दृग देख रहे कव से पथ,
    दो दृग से झरने चलते थे॥

उर-सागर मे सगम लेकर- मोहन 'राजकोट' मे आये।
'वा' देवी ने चरण पखारे, घर मे घी के दीप जलाये॥
वर्षो से सचित आँखो के– मोती प्रियतम पर वरसाये।
निर्निमेप आँखो से पति पर– 'वा' ने अन्तर-सुमन चढाये॥

गाँधी जी के दर्शन करने– लेकर प्यार पडौसी आये।
वचपन के साथी मित्रो मे– शैशव से वीते दिन पाये॥
'सीता' 'सावित्री' सी 'वा' ने– तीन वर्ष तक करी तपस्या।
पतिव्रत-धर्म-परायण 'वा' ने– सुलझाई यह अग्नि-समस्या॥

वर्षो से प्यासे चकोर ने– आज चॉद की कौली भर ली।
आज विरह से व्यथित मोर ने– नाच नाच मनचाही कर ली॥
चुम्बक से उस मधुर मिलन मे– गॉधी अपना मार्ग न भूले।
कच्चे धागो के झूलो पर– गॉधी सँभल सँभल कर झूले॥

याद न भूल सके जननायक,
दक्षिण के अवसाद खडे थे॥
फूल वहॉ पग चूम रहे पर–
अन्तर मे अति शूल गडे थे॥
वे कब जान सके सुख के दिन,
जो सुख मे दुख के दिन भूले!
घायल की पहिचान उसे कब,
जो असि की कटु धार न भूले!

हरी पुस्तिका' रची दृगो ने, 'अफ्रीका' की लिखी कहानी।
जसके पृष्ठो पर दिखलाया– कालो की आँखो का पानी॥
हरी पुस्तिका' पर पत्रो ने– लम्बे लम्बे लेख निकाले।
ोला नीर अग्रलेखो मे, फूट पडे भारत के छाले॥

हरी पुस्तिका' ने दुनिया मे, कालो की दुर्दशा दिखाई।
न्याय नही है, न्याय नही है!' कानो मे यह प्रतिध्वनि आई॥
ककालो के चित्र उतारे, दिखलाई दुखो की रेखा।
पराधीनता के कूडे पर– भारत के फूलो को देखा॥

फैला प्लेग किन्तु गाँधी जी– नही मौत से डर कर भागे।
दुनिया पैर फला कर सोई, गॉधी जी पहरे पर जागे॥
घर घर गली गली में जा जा– गन्दे पाखाने धुलवाये।
शुद्ध हवा आने जाने को– घर मे वातायन खुलवाये॥

रहन सहन को देख देख कर— गाँधी जी मन मे शरमाये।
वनियो की गन्दगी देख कर— उठे न उनके नयन उठाये॥
सोते वही, वही खाते थे, और वही गन्दा कर देते।
कभी भूल कर भी वाणी से— नाम नही ईश्वर का लेते॥

गली, सडक, मन्दिर, मस्जिद सव— गाँधी जी ने साफ कराये।
पलटा पृष्ठ नागरिकता का, रहन सहन के ढङ्ग वताये॥
अन्तर के उस देशभक्त ने— राजभक्ति का मुँह भी चूमा।
श्रद्धा के कानन मे मोहन— भौंरो के झुरमुट सा झूमा॥

किन्तु राजनिष्ठा गाँधी की— कभी स्वार्थ के लिए नही थी।
कोई ऐसी वात न वोले— जो परार्थ के लिए नही थी॥
किसी वात मे भी गाँधी ने— कभी व्यक्तिगत स्वार्थ न देखा।
पर-सेवा के लिए जिये वे, अङ्कित करी सत्य की रेखा॥

सेवा करने लगे सत्य की— नर नारायण ईश्वर सेवी।
गाँधी जी के हृदय कमल पर— गाने लगी अहिंसा देवी॥
वढती चली अहिंसा मन मे, वाणी पर शुभ शान्ति विराजी।
जहाँ शान्ति-सरिता वहती है, वहाँ नही रहती नाराजी॥

सव की सेवाये कर गाँधी— सेवा-सुधा पिया करते थे।
अपने जीवन की पूजा को— गाँधी नही जिया करते थे॥
सेवा सच्चाई मे सुख है, दुख न रहते दुनिया भर मे।
सेवा से परमेश्वर मिलते, नारायण वस जाते नर मे॥

'अफ्रीका' का दर्द पिघल कर— आँखो मे वादल वन छाया।
नगर नगर मे घूम घूम कर— गाँधी ने वह दर्द दिखाया॥
'न्यायमूर्त्ति रानडे' भक्त से— मिलने को 'वम्वई' आगये।
'न्यायमूर्त्ति' के खुले दृगो मे— गाँधी जी के चित्र छा गये॥

'तैयव जी' से मिल गाँधी ने– अपने मन की बात सुनाई ।
'तैयव जी' ने गाँधी जी को– अगली पगडण्डी वतलाई ॥
'विना ताज के वादशाह सर– शेर फिरोजशाह' पर आये ।
या कि भक्ति से किसी भक्त ने– अपने प्रभु के दर्शन पाये ॥

चित्रित किये चित्र 'दक्षिण' के– गाँधी जी ने उनके आगे ।
सुन सुन कर गाँधी की वाणी– सोते हुए शेर सब जागे ॥
'बिना ताज के वादशाह' ने– गाँधी जी को गले लगाया ।
'वाच्चा' 'कामा' दो दीपो से– काली रजनी मे पथ पाया ॥

शेरो ने 'वम्वई' शहर मे– प्रिय जनता की सभा बुलाई ।
'न्यायमूर्त्ति' के दर्शन करने– सारी जनता दौडी आई ॥
एक तरफ सागर की लहरे, और इधर जन-सागर उमडा ।
या कि उदधि से होड लगाने– सागर-तट पर जन-घन घुमडा ॥

सारी रात जाग गाँधी जी– अपना भाषण लिख लाये थे ।
भाषण पढकर 'न्यायमूर्त्ति' की– आँखो मे आँसू आये थे ॥
गाँधी की वाणी सुनने को– तट पर जन-समुद्र लहराया ।
नभ मे चमका चाँद, सिन्धु का– पानी उमड उमड कर आया ॥

'न्यायमूर्त्ति' मन के राजा जब– दिव्य ज्योति से चढे मच पर–
जनता मे जय जय ध्वनि गूँजी, उछल पडे करतल ध्वनि कर कर ॥
मानो पूजा ने फल पाये, कोटि कोटि जन जय जय बोले ।
गाँधी जी के लिए सभी ने– अन्तर के दर्वाजे खोले ॥

भापण देने खडे हुए जब– मेरे मन के दीपक गाँधी ।
गाँधी की आँखों के आगे– आई भावुकता की आँधी ॥
भावुकता वरदान बन गई, पुण्य फले, किसने क्या गाया ।
गाँधी जी का भाषण गूँजा, जनता मे सन्नाटा छाया ॥

जागा सूर्य, रश्मियाँ मचली, भाषण सब ने सुना ध्यान से।
फड़क उठी बिजलियाँ नसो मे, गर्ज उठे देशाभिमान से॥
आग भरे मीठे भाषण ने– श्रोताओ पर छाप छोड़ दी।
मोहन ने मन के घोड़े की– क्रान्ति मार्ग पर रास मोड़ दी॥

'न्यायमूर्त्ति' ने गाँधी जी की– बड़े गर्व से करी बड़ाई।
गाँधी जी के यश-दर्पण ने– मुक्ति-पर्व की दिशा दिखाई॥
एक एक करके गाँधी ने– सब मित्रो के हृदय टटोले।
कुछ तो उनके सुर मे बोले, कुछ बेसुरे राग मे बोले॥

गाँधी जी का प्रेम देखकर– भारत माता मुग्ध हो गई।
उसके दृष्टि-बिन्दु को समझो, जिसकी वाणी दाग धो गई॥
सच्चे देशभक्त गाँधी ने– पथ पहचाना, चाल टटोली।
तब तब मधु बरसा धरती पर, जब जब रवि ने वाणी खोली॥

'लोकमान्य' को हृदय चीर कर– दुखियो की तसवीर दिखाई।
'लोकमान्य' ने बीहड पथ पर– फूलो की बटिया बतलाई॥
बोले, 'भण्डारकर' धैर्य से– गाँधी! तुम जाकर मिल आओ।
स्वर हो एक, एक ही लय हो, एक सूत्र मे सब बँध जाओ॥

'भण्डारकर' सभापति पद ले– तो सारे दल मिल जायेंगे।
शोणित सनी मेदिनी पर फिर– फूल गुलाबी खिल जायेंगे॥
मिलो 'गोखले' से भी जाकर, उनसे तुमको मदद मिलेगी।
उनकी वाणी के मधु से सिंच– भारत की वाटिका खिलेगी॥

जब जब भी आवश्यकता हो– तब तब मुझ से मिलते रहना।
शूलो की दुनिया मे मोहन! तुम गुलाब से खिलते रहना॥
'लोकमान्य' के दर्शन करके– गाँधी जी कृत-कृत्य हो गये।
मोहन खिले लोक-प्रियता से, देशभक्ति के सुमन बो गये॥

मिले 'गोखले' से गाँधी जी, बड़े प्रेम से मिले 'गोखले'।
फूल न चुभ जाये छाती मे, मिलने वाले दिल टटोल ले।
पहला ही परिचय था लेकिन– मिले 'गोखले' पूर्व मित्र से।
गगाधारा के गीतो पर– अकित थे कल नाद चित्र से॥

गगाधारा बने 'गोखले', 'लोकमान्य' सागर से गरजे।
'शेर फिरोजशाह' हिमगिरि थे, जिनसें अत्याचारी लरजे॥
हिमगिरि पर चढना दुर्भर है, थाह नही मिलती सागर की।
गगा की महिमा अथाह है, गति है जीवन के गागर की॥

गगा की गोदी मे खेले, गाँधी थाह अथाह चाह के।
लहरो ने उनको नहलाया, तार छिड गये जब प्रवाह के॥
जलतरग पर गाँधी जी की– वीणा सरस्वती सी बोली।
"सामवेद" के शाश्वत सुर सुन, दुनिया पीछे पीछे हो ली॥

'भण्डारकर' मिले गाँधी से, प्रात भूले शाम मिले थे।
'रामकृष्ण' के दर्शन करके– नयनो से आराम मिले थे॥
दोपहरी मे मेरे मोहन– प्यास बुझाने वहाँ गये थे।
स्वाति-बिन्दु पाये चातक ने, चरण प्यास के जहाँ गये थे॥

'भण्डारकर' भक्त ने मन से– गाँधी जी की बात मान ली।
जीवन दिया हृदय-पौधे को, गाँधी की पहिचान जान ली॥
'पूना' के इन विद्वानो ने– त्याग तपस्या से तरु सीचा।
तरु पर खिले सुमन, सुमनो से– प्यासे भौरो ने मधु खीचा॥

'पूना' से 'मद्रास' पहुँच कर– गाँधी जी ने गीत सुनाये।
'बालसुन्दरम्' की घटना ने– गाँधी जी पर सुमन चढाये॥
'प्रिय परमेश्वर पिल्ले' जी ने– गाँधी सुमन सुधा से सीचा।
और 'सुब्रह्मण्यम्' भाई ने– डोल डाल कर जीवन खीचा॥

वच्चे वच्चे के मानस मे– गाँधी जी का प्रेम वस गया।
वन्धन नही प्रेम मे होता, किन्तु प्रेम मे हृदय फँस गया॥
चाहे लोहे के वन्धन हो, किन्तु स्नेह से गल जाते हैं।
प्रेमी के नयनो के जल से– पथ के काँटे जल जाते हैं॥

वोते हुए वेल भावो की, गाँधी जी 'कलकत्ता' आये।
इधर उधर विखरे फूलो की– माला एक गूँथ कर लाये॥
कही प्रेम से मिले 'वनर्जी', कही 'मुखर्जी' मे मधु पाया।
कही किसी ने धूलि समझ कर– ईश्वर को दर से ठुकराया॥

पथ के वडे वडे शूलो से– गाँधी जी ने हार न मानी।
फैली उठती हुई जवानी, मचली उठती हुई जवानी॥
'स्टेट्समैन' के सम्पादक ने– जग मे गाँधी-सुधा वहाया।
सच्चे 'इँग्लिशमैन' पत्र ने– गाँधी जी का स्वर अपनाया॥

न्याय धर्म है, न्याय नीति है, धर्म कर्म की सदा विजय है।
शत्रु मित्र के लिए वरावर, गाँधी का गौरव अतिशय है॥
'अफ्रीका' की स्वतन्त्रता का– झण्डा लहराते चलते थे।
भारत की हर गली सडक पर– गाँधी दीपक से जलते थे॥

टूट गिरे जव फूल धरा पर,
वाग उजाड रही जव आँधी।
गूँथ रहे तव फूल कली पर,
पूज रहे जन के पग गाँधी॥

मानव का जव शङ्ख वजा तव–
गूँज उठी जग मे जन-वाणी।
पैर जहाँ पडते प्रभु के मृदु,
मन्दिर भीड वहाँ पर प्राणी॥

अष्टम सर्ग

सहसा 'डरबन' से गाँधी को– तार मिला, जल्दी आ जाओ !
'पार्लमेंट' की बैठक होगी, तट पर तुम मँझधार लगाओ !!
पत्नी को वह तार सुनाया, बोली– "चरण कहाँ पाऊँगी ?
मुझे छोड़ कर गये अगर तुम– मैं वियोग मे मर जाऊँगी ॥

अब न अकेले जा पाओगे, स्वामी ! मैं भी साथ चलूँगी ।
अगर छोड़ जाओगे स्वामी ! तो जीवित दिन रात जलूँगी ॥"
लगा हृदय से बोले गाँधी– "तुम न अकेली यहाँ जलोगी ।
मेरे पथ के अधकार मे– तुम दीपक सी साथ चलोगी ॥"

सुन स्वामी की बात प्यार से, सूखी सरिता मे जल आया ।
पतझड़ मे बसन्त ऋतु आई, मन मे खिला फूल लहराया ॥
पहिन पारसी साडी छवि ने– मेघो जैसे वाल सजाये ।
गाँधी जी ने गूँथ गूँथ कर– फूलो के गहने पहिनाये ॥

गाँधी जी के दोनो बच्चे– 'बा' को उँगली पकड़ चल पडे ।
मानो दीपक-राग छिड गया, दीपक अपने आप जल पडे ॥
प्रेमामृत से सीच हृदय को, 'बा' मानस का मैल धो गई ।
बैठ गये 'कुरलैंड यान' मे, फिर से यात्रा शुरू हो गई ॥

चला इधर से यान, उधर से– आग लिये तूफान आ गये ।
काले बादल घिरे गगन मे, छाती पर अङ्गार छा गये ॥
सागर गरजा, अम्बर लरजा, तूफानो से यान हिल गया ।
बड़े भाग्यशाली थे यात्री, गाँधी जी का साथ मिल गया ॥

सब ने साहस छोडा लेकिन– हिम्मत नही उन्होने हारी ।
माँझी ने पतवार हाथ ले– दूर करी बाधाये सारी ॥
सागर की उत्ताल तरगे– उससे आ आ कर टकराई ।
किन्तु हिमालय के सीने से– वे चचल लहरे घबराई ॥

बोला यात्री, डरो न माँझी! तट पर यह मँझधार चलेगा।
आज भँवर से होड लगी है, आज जीत का दीप जलेगा॥
डगमग डगमग यान हो गया, फण फैला लहरें टकराईं।
तूफानो के लगे थपेडे, लहरे छाती पर चढ आईं॥

यान डूबने लगा बीच मे, यात्री 'राम! राम!' चिल्लाये।
दुखियो के मन की पुकार सुन– ईश्वर वहाँ दौड कर आये॥
मौत नाचती है जब सिर पर– उसकी याद तभी आती है।
समय काम करता है अपना, आयु समय मे बह जाती है॥

बडे बडे भूचाल काँप कर– गाँधी-वाणी से भागे थे।
'कुम्भकर्ण' से सोने वाले– गाँधी-वाणी से जागे थे॥
काली काली घटा हट गई, सूर्य निकल आये सागर मे।
मोहन ने कन्धे पर रक्खा– सारा सागर भर गागर मे॥

मँझधार जहाज चला डिगता,
लहरे लपकी भभकी जल मे।
जल मे मनमोहन याद किये,
भगवान पुकार लिये पल मे॥
तम चीर प्रभा-किरणे बिखरी,
दुख मे सुख के प्रिय दीप जले।
पतवार सँभाल सुहाग चले,
दिनमान विहान लिये निकले॥

नवम सर्ग

अंगारों की राह

वे सावन के सरस मेघ थे, रसना से झरते थे मोती।
पीडा पूछ रही प्राणो से, वदली क्यो सावन मे रोती॥
किसके कोमल भाव कुसुम हैं? जिसका सौरभ फूल फूल मे।
माली की कह रहा कहानी, खिला हुआ हर फूल शूल मे॥

वे फूलो की तरह डाल पर– खिल खिल कर झूला करते थे।
वे रोटी की तरह आग पर– तप तप कर फूला करते थे॥
वे दीपक की तरह तिमिर मे– जल जल कर प्रकाश भरते थे।
वे कीचड से निकल उदधि मे– पकज पर निवास करते थे॥

बड़वानल की लहरो मे घुस, 'डरबन'-तट पर लगर डाला।
सूर्य तैर कर तट पर पहुँचा, सारे जग मे खिला उजाला॥
खार खा रहे थे गाँधी पर– गोरे आग बबूला होकर।
उसका बाल न बाँका होता, जिसने धरा हथेली पर सर॥

गोरे जले भुने बैठे थे, वह गगा-धारा सा निकला।
चला खेलने अङ्गारो से, कही न बैठा, कही न फिसला॥
'डरबन' के गोरे कहते थे– हम गाँधी को खा जायेगे।
वह गोरो का दुश्मन, उसको– हम फाँसी पर लटकायेगे॥

कालो से 'नेटाल' भरेगा, इसीलिये गाँधी आया है।
काले भारतवासी भर भर– वह 'कुरलैड यान' लाया है॥
सत्य अहिसा की गगा पर– हिसा के अङ्गारे धधके।
आग बबूला होकर गोरे– भोले गाँधी जी पर भभके॥

दाँत पीस कर बोले गोरे– गाँधी जी को कच्चा खा लो !
लाल लाल हो, सुर्ख़ आँख कर, धमकी दी– सागर मे डालो !!
गली गली मे, सडक सडक पर– सुलग रही थी दुर्द्धर ज्वाला।
आग बुझाने, फूल खिलाने– चला घुमडता बादल काला ॥

डाल दिया लङ्गर गाँधी ने, आँधी से गोरे घिर आये।
रूई नही, हिमालय गाँधी, कैसे आँधी उसे उडाये ?
गाँधी के गोरे साथी ने– गाँधी पर भेजा सन्देशा।
सावधान रहना गोरो से, पल पल प्राणो का अन्देशा ॥

मिस्टर 'लाटन' आकर बोले– गाँधी ! मेरे साथ चलो तुम।
डरो न गोरो की धमकी से, पकड मित्र का हाथ चलो तुम ॥
लुक छिप कर प्राणो के भय से– मुझे नही भाता है जाना।
जब की लिख दी, तभी मरेगे, मरने से कैसा घबराना !

गोरे इधर उधर बिखरे हैं, आम मार्ग पर शान्ति इस समय।
छिप कर जाना उचित नही है, सारे जग मे विचरो निर्भय ॥
अच्छा सुनो, बाल बच्चे तुम– 'रुस्तम जी' के घर भिजवाओ !
मेरे साथ साथ गाँधी जी ! आम राह से पैदल आओ !!

गाँधी साथ चले 'लाटन' के, भेज बाल बच्चे गाडी मे।
'राम', 'कृष्ण' का रक्त भरा था, उस मृत्युञ्जय की नाडी मे ॥
रुका नही वह पथिक आग से, तूफानो से हार न मानी।
मानो उठी जवानी लेकर– मचल उठा सागर का पानी ॥

जैसे ही उतरे जहाज से– गोरे बच्चो ने पहिचाना।
'गाँधी ! गाँधी !' चिल्लाये वे, बन्द हो गया आना जाना ॥
भीड इकट्ठी हुई सडक पर, कैद हुए चौराहे चारो।
'गाँधी ! गाँधी ! ! दौडो ! दौडो ! ! पकडो ! पकडो ! ! मारो ! मारो ! !'

भीड चीखती चली साथ मे, गोरो ने घेरा गाँधी को।
पथ पर खडी हुई दीवारे– रोक नही सकती आँधी को॥
बढने लगा भीड का हल्ला, गोरे दौड पडे गाँधी पर।
मिस्टर 'लाटन' अलग कर दिये, गाँधी जी पर बरसे पत्थर॥

पगडी फेकी, कपडे फाडे, गले सडे अडो से मारा।
ककड मारे, पत्थर मारे, डाला भर नाली का गारा॥
थप्पड लात और घूँसो से– गाँधी जी की कमर तोड दी।
गोरो ने अपने घूँसो से– अपनी ही तकदीर फोड दी॥

हड्डी, चर्वी, मास फेक कर– गाँधी को बेहाल कर दिया।
इतने ही मे और किसी ने– उनके सिर पर बूट धर दिया॥
गाँधी जी को मूर्च्छा आई, चक्कर खाते गिरे धरा पर।
पकड सीखचे खडे हो गये, रुके नही थे अब भी पत्थर॥

बदन छिल गया, सूज गया मुँह, गर्म रक्त बह चला कमर से।
जय भी जीती नही वीर से, पीछे भागे नही समर से॥
जीत न होती है हिसा से, जय को भी धोखा होता है।
जिसे सहारा राम नाम का– वह नर कभी नही रोता है॥

पिटते पिटते गाँधी जी ने– मुँह से 'राम! राम!!' उच्चारा।
'राम! राम!!' की वाणी गूजी, डूबे को मिल गया किनारा॥
राम-नाम-पतवार हाथ ले– माँझी पार चला जाता है।
बीच भँवर मँझधार हार कर– गीत किनारे के गाता है॥

राम! कृपा करके सुनलो–
हम आज पुकार रहे तुमको।
प्यास भरे जल को तरसे–
दृग राम! निहार रहे तुमको॥

आज कृपा करके दुख मे-
मन से न टलो तन से टलना ।
दीप जले तम मे तुम हो-
दृग! देख रहे अपना जलना ॥

चतुर्भुजी भगवान राम! तुम रक्षा करो हमारी ।
हम आये शरण तुम्हारी ॥

तुमने ही 'प्रहलाद' बचाये, आज बचालो हमको ।
तुम प्रकाश हो, मार्ग दिखादो, भस्मसात कर तम को ॥
राम! हमारे पीछे गोरी चमडी पडी हुई है ।
राम! बीच मे भावुकता की कविता खडी हुई है ॥

मन-मोहन के लिए बन गई स्नेह सृष्टि हत्यारी,
चतुर्भुजी भगवान राम! तुम रक्षा करो हमारी ।
हम आये शरण तुम्हारी ॥

राम-प्रेरणा से आ पहुँची- पत्नी वहाँ पुलिस-नायक की ।
या कि स्वयम् ईश्वर ही आये- सुन पुकार अपने बालक की ॥
वीर-काव्य की महामूर्ति या- मानवता की माया आई ।
छाता खोल दिया देवी ने, गाँधी जी पर छाया छाई ॥

अब यदि चोट करे भी गोरे- तो गाँधी जी बच जाते थे ।
'अलेकजेंडर' की छाया मे- गाँधी 'राम! राम!!' गाते थे ॥
गाँधी जी की रक्षा करने- पुलिस पुलिस-चौकी से आई ।
आग बरसती थी मानव पर, छाया जैसी देवी छाई ॥

कहा पुलिस ने गाँधी जी से- आप पुलिस-चौकी पर ठहरें ।
जब ज्वाला पानी बन जाये, तब चाहे अपने घर ठहरें ॥
लेकिन गाँधी जी ने उनकी- प्रेम-पगी यह बात न मानी ।
बोले, जग की रीति यही है, मैंने यह दुनिया पहिचानी ॥

न्याय बुद्धि पर अटल भरोसा, ईश्वर मेरे साथ रहेगा।
सागर बन कर बरस पडेगा, दृग से जितना नीर बहेगा॥
रुके न रोके से गाँधी जी, 'रुस्तम जी' के घर पर आये।
'रुस्तम जी' ने चोटे सेकी, सती प्रिया ने पैर दबाये॥

मरहम पट्टी कर न सके थे, गोरो ने आकर घर घेरा।
'रुस्तम जी' के दर्वाजे पर- डाल दिया गोरो ने डेरा॥
शाम हुई, हो गया अँधेरा, गुस्से से गोरे चिल्लाये।
'रुस्तम जी' के दर्वाजे पर- लाल लाल गोरे गुर्राये॥

गोरो की किलकारी गूँजी, गाँधी जी को करो हवाले।
हम गाँधी को कत्ल करेगे, यहाँ नही रह सकते काले॥
देख वहाँ सगीन मामला, दौडे 'अलेकजेडर' आये।
तिकडम तरकीबो से उसने- गाँधी जी के प्राण बचाये॥

बुद्धिमान ने गाँधी जी पर- भेजे दो तैराक गुप्तचर।
उन दोनो ने गाँधी जी से- करी प्रार्थना हाथ जोड कर॥
'रुस्तम जी', पत्नी, बच्चो की- तुमको जान बचानी होगी।
बीच भँवर मे नाव आ गई, मिल कर पार लगानी होगी॥

पहिनो शीघ्र पुलिस का बाना, वेश बदल कर निकल चलो तुम।
ये भूखे भेडिये, इन्हो को- वेश बदल कर आज छलो तुम॥
इसी तरह से 'रुस्तम जी' का- जान माल हम बचा सकेगे।
इसी चाल से ये लोहे के- चने वज्र से पचा सकेगे॥

और अगर यह नही करोगे- गोरे अभी फूँक देगे घर।
गाँधी जी ने बात मान ली, रक्खा निज छाती पर पत्थर॥
पहिन पुलिस की वर्दी, सिर पर- पीतल की तश्तरी बाँध ली।
ऊपर सिर पर कसा रुपट्टा, दुष्ट जनो से करी धाँधली॥

वे दो गुप्त पुलिस के अफसर– कपड़े बदल बने व्यापारी।
हिन्दुस्तानी के चोले मे– नौ दो ग्यारह की तैयारी॥
गाँधी जी को बचा पास की– किसी गली से दूर ले गये।
गोरे लडते रहे, तोड कर– गाँधी जी अगूर ले गये॥

आँखो मे मिर्चे भरते वे– अपनी गाडी तक आ पहुचे।
गोरो के जमघट से बचकर– गाँधी थाने पर जा पहुँचे॥
खुफिया अफसर, चतुर एस० पी०– गाँधी जी के बसे हृदय मे।
मानो ईश्वर आ बैठे थे– मानस के कोमल किसलय मे॥

बिना आग मे तपे स्वर्ण को– कभी निखरते देखा है क्या ?
रवि के बिना प्रकाश विश्व मे– कभी बिखरते देखा है क्या ?
जो जितना भी तपा आग मे– उतना ही वह निखर रहा है।
फूलो पर गाँधी का जीवन– रूप-रश्मि सा बिखर रहा है॥

गोलो के सागर मे वह कर– गाँधी जी थाने पर आये।
गोरो पर 'अलेकजेडर' ने– उनके ही हथियार चलाये॥
बुद्धिमान ने भीड रोक ली– 'रुस्तम जी' के दर्वाजे पर।
अपने दाँव चलाते थे वे– गोरो को बहका फुसला कर॥

हँसी उडा बोले गोरो से– गाँधी जी को सबक बतादे।
चलो, इसी इमली के ऊपर– गाँधी को फाँसी लटकादे॥
जब कि नीति से गाँधी जी को– जाल डाल कर दिया सुरक्षित।
तब उन सब गोरो के आगे– बात भेद की करी प्रस्फुटित॥

बोले, अन्दर जाकर देखो, अब तो वहाँ शिकार नही है।
कानूनो की हत्या करना– मानव का अधिकार नही है॥
अपने लिए कब्र मत खोदो, बीच भँवर से नाव बचालो।
फिर भी यदि हठधर्मी ही है– तो तुम उनको ढूँढ निकालो॥

यदि वे घर मे मिल जायेगे– तो जो चाहो वह कर लेना।
जीवन-जलधि उफान ले रहा, सुधा छोड, विष मत भर लेना!
गोरो ने निज प्रतिनिधि भेजे, हाथ हिलाते वापिस आये।
आँखे नीची हुई सभी की, बार बार मन मे शरमाये॥

कुछ गुस्से मे, कुछ शरमाते, कुछ पछताते हुए चल दिये।
उलझी हुई गुत्थियाँ सुलझी, गाँधी जी ने प्रश्न हल किये॥
सत्य अहिसा महाशक्ति ने– न्याय-दण्ड को नही पुकारा।
बदला नही लिया करता था– क्षमामूर्ति गाँधी बेचारा॥

सत्य अहिसा के आराधक, मृत्युञ्जय की अमर कला है।
स्वतन्त्रता देवी के आगे– वीरो का बलिदान फला है॥
क्षमामूर्त्ति के चरणो मे झुक– अन्यायी ही शरमाता है।
प्रेम-पथ पर चलने वाला– अपना लक्ष्य ढूँढ लाता है॥

उलझन मे सुलझन गाँधी से– बोल उठी पत्नी बेचारी–
"सब की उलझन सुलझाते हो, घर की चिन्ता नाथ! विसारी॥
बिना अर्थ के आँसू पी पी– कब तक जीवन चल सकता है?
बिना स्नेह के नाथ! बताओ, कब तक दीपक जल सकता है?"

चाँद पर रीझ चाँदनी आज–
मान पर रीझ माननी आज–
कला पर रीझ कामिनी आज–
मेघ पर रीझ दामिनी आज–

कह रही अपने मन की व्यथा।
कह रही पीडा जग की कथा॥
कह रहे आँसू मन की बात।
कह रही तारो से कुछ रात॥

गाँधी वोले, मैं भूला पर– ईश्वर तुम्हे नही भूला है।
भूलो, वडे प्रेम से भूलो, उसकी करुणा मे भूला हैं॥
वच्चो के पढने लिखने की– वही व्यवस्था करने वाला।
वह वच्चो का पालक पोपक, अधकार मे वही उजाला॥

जनता के सेवक को अपने– घर का ध्यान नही रहता है।
जिसने उसको जहाँ पुकारा– वह भगवान वही रहता हे॥
वच्चो ! आओ, पढो, पढाऊँ, वापू उनको लगे पढाने।
अपने अमर ज्ञान की गगा– जन मन गण मे लगे वहाने॥

कोढ चूता द्वार उनके– एक दिन आया भिखारी।
भीख दे वावा ! मुझे कुछ, नयन भर लाया भिखारी॥
कह रहा था दुख आँसू, आह ने आ कर पुकारा।
या स्वयम् भगवान ने ही– हाथ भिक्षुक वन पसारा॥

सामने भिक्षुक खडा था, सोच मे गाँधी पडे थे।
द्वार पर पल्ला पसारे– स्वयम् नारायण खडे थे॥
आरती के वोल गूँजे, दास हूँ, सेवा करूँगा।
पोछ पलको से पसीना, घाव पर मरहम मलूँगा॥

धोने लगे घाव कोढी के– अमर 'भगीरथ' गगा-जल से।
सेवाओ का सुधा पिलाया, रत्न लुटाये अन्तस्तल से॥
चतुर नर्स की तरह हृदय से– वे रोगी की सेवा करते।
सेवाओ के आराधक पर– हर पूजा के झरने झरते॥

अस्पताल मे वीमारो की– सच्ची सेवा करते हैं वे।
पलको से चोटे सहलाते, घाव हृदय से भरते हैं वे॥
एक दिवस की वात कि गाँधी– घर मे वच्चे खिला रहे थे।
मीठी मीठी वाते कह कह– दूध गर्म कर पिला रहे थे॥

सहसा पत्नी वोली उनसे– "मेरी तवियत घवराती है।
प्रसव-वेदना शुरू हो गई, रह रह उवकाई आती है॥
दाई वहुत दूर है घर से, जल्दी नाथ! उपाय करो कुछ।"
साहस से गॉधी यह वोले– "किसी वात से नही डरो कुछ॥"

दाई स्वयम् वन गये गॉधी, सारा प्रसव-कार्य निवटाया।
'वा' की भरी हुई गोदी मे– सुन्दर लाल और मुसकाया॥
ईश्वर की अद्भुत लीला है, धरती गाती, गगन गा रहा।
इस मेले का मोल न कोई, एक जा रहा, एक आ रहा।

इस मेले मे मेरे ईश्वर, वच्चो से क्रीडा करते हैं।
कभी खिलाते, कभी हँसाते, कभी सुधा-धारा भरते हैं॥
जाने कहॉ छिपा बैठा है, सव को खेल दिखाने वाला।
जाने क्यो रूठा वैठा है– रस की धार वहाने वाला॥

अनहद शब्द सुनो वाणी के, कल्याणी तसवीर निहारो!
ईश्वर तुम्हे निहार रहा है, ईश्वर की आँखो के तारो!
जीवन नही खिलौना जिसको– खेल खेल मे तोड फोड दे।
जो युग युग मे दीप दिखाये– जीवन मे वे पृष्ठ जोड दे॥

राग मिटा, मन वोध वना अव,
काम कला तज ब्रह्म जवानी!
क्यो कव डूव गई गल के वय,
याद न क्यो वह आयु पुरानी?
काम वडा वलवान भयकर,
फूल गिरा चलती यह आँधी।
ब्रह्म प्रभात स्वरूप बने अव,
आग वुझा जल मे चल गॉधी!

जीवन धन्य तभी होता है– जब जन को आसक्ति न घेरे।
भोग मात्र की वस्तु न दारा, जीवन और मरण के फेरे॥
ब्रह्मचर्य व्रत विना विश्व मे– दुखो से उद्धार नही है।
सयम विना न सुख मिलता है, जीवन का विस्तार नही है॥

ब्रह्मचर्य व्रत के साधक को– ईश्वर अमर शक्ति देता है।
अपनी गोदी मे वैठाकर– अपनी अमर भक्ति देता है॥
अन्तर मे आसक्ति दवा कर– कामदेव पर विजय प्राप्त की।
शिव शकर की महाशक्ति से– ब्रह्मचर्य की शक्ति व्याप्त की॥

वापू को वैराग्य मार्ग पर– जब भी कोई वाधा आई।
तभी भस्म कर भाव गर्त के- अमर ज्योति ने ज्योति दिखाई॥
शक्ति स्वरूप नारियाँ जाने, क्यो आसक्ति वनी जाती है!
देश-भक्ति रूपी 'वा' की जय, सतियाँ ज्वाला पर गाती हैं॥

ब्रह्म ब्रह्म को खोज रहा है, यह कैसी रहस्य की लीला?
आँखे जिसे टटोल रही हैं, कहाँ छिपा है वह चमकीला?
महापुरुप गाँधी की जय है, जिसने मन मथ ब्रह्म निकाला।
उस मानव के ब्रह्म तेज ने– सारे जग मे किया उजाला॥

जिसने ब्रह्मचर्य-रस पाया– उसे नही अमरत्व चाहिये।
जो न कभी घटता वढता है– कवि को भी वह स्वत्व चाहिये॥
ब्रह्मचर्य व्रत की महिमा का– मैंने ज्ञान नही जाना है।
'भीष्म' और 'शिव' को प्रणाम है– जिनसे काम हार माना है॥

यह व्रत वह आनन्द कि जिसमे– कोई चाह नही रहती है।
ब्रह्मचर्य व्रत से रस झरता, मन से सुधा-धार वहती है॥
पैनी धार, वचा कव कोई, 'नारद' जैसे हार चुके हैं।
'पण्डू' मरे, 'पराशर' हारे, तप तज 'विश्वामित्र' झुके हैं॥

पर गाँधी जी व्रत धारण कर– भक्ति बढा भगवान बन गये।
आँसू सागर बन कर ठहरा, विषधर झूमे, तान बन गये॥
प्यासे बहुत अमृत पीने को, विष तो शकर ही पी पाये।
जग के लिए सुधा की धारा– गाँधी सागर मथ कर लाये॥

ब्रह्मचर्य-रस चखना है यदि– तो जिह्वा के स्वाद त्याग दो।
खट्टी मीठी चाट छोड कर– काम कला की याद त्याग दो॥
वन के खिले फूल फल खाओ, मन उपवासो से ठहराओ।
सयम से रोको घोडे को, मन न इन्द्रियो से बहलाओ॥

बनो वियोगी काम कला के, बढे चलो वैराग्य-मार्ग पर।
चाहे जितनी लहरे आये, 'शिव' से पहुँचो पार तैर कर॥
उभरे यौवन को मत देखो, देखो ईश्वर के स्वरूप को।
नाच सिनेमा के मत देखो, देखो 'नटवर' के स्वरूप को॥

गन्दे गन्दे गीत मत सुनो, भक्ति-मार्ग के गीत गवाओ।
काम कला की बात मत करो, ईश्वर के गुण-गान सुनाओ॥
भक्त देव-दर्शन करता है, कामी कीचड मे धँस जाता।
एक देह की पूजा करता, एक अनश्वर के गुण गाता॥

तुम क्या हो, देखो क्षणभगुर! पहचानो अपने स्वरूप को।
देखो मात न होने पाये, करो सुरक्षित आत्म-भूप को॥
मन है पवन, वेग गति जिसकी, वश मे करना सरल नही है।
ब्रह्मचर्य व्रत कडवा रस है, किन्तु अमृत है, गरल नही है॥

काम कला वरदान सृष्टि की, पर अभिशाप बनी जाती है।
जब उड जाता हस हाथ से– तब यह दुनिया पछताती है॥
धधक उठी वासना भूख सी, रक्त तृषित मानव की भूखी।
नागिन गाती, नाश नाचता, चूस न पागल! हड्डी सूखी॥

रखो राख उडा मत अपनी, देख सामने चिता धधकती।
सुन्दरता के रग महल मे– पल भर की रागिनी झमकती।।
तिमिर-मार्ग मे दीप जलाओ, मुक्ति मिलेगी राम-भक्ति मे।
भगुर शाश्वत बन जाते हैं, ब्रह्मचर्य की महाशक्ति से।।

फूस जला देती चिनगारी, पानी मे गिर कर बुझ जाती।
शलभ! दीप पर क्यो जलता है? शिखा स्वयम् जल तुझे जलाती।।
फूल फूल पर गाने वाले, भौंरे का रस क्षणभगुर है।
यह बिजली का फूल अनोखा, काँटो का गहरा अकुर है।।

चाह का यह चमकीला जाल–
बना जाता जीवन का काल।।
सादगी तुझको रही पुकार।
एक मझधार, एक पतवार।।

जिसको भी आँसू दिखलाये– वही बन गया दियासलाई।
जिस पर फूल चढाये हमने, उसने ही बारुद बिछाई।
गोरे नाई ने गाँधी के– बाल न काटे, मना कर दिया।
अपने आप हजामत करके, अपना जीवन सरल कर लिया।।

कैंची और उस्तरा लेकर– खडे हुए शीशे के आगे।
उलटे सीधे बाल काट कर– गाँधी छोड गुलामी भागे।।
कपडे धोने लगे हाथ से, मानस की रस-धार निचोडी।
आ, हम भी कुछ शिक्षा ले ले, इस दम्पति से अरी निगोडी!

पहली बार कलफ कालर मे– सूखे पत्ते सा दे डाला।
गाँधी से मजाक करने का– मित्रो को मिल गया मसाला।।
पर हँसने वालो पर गाँधी– मन मे मन्द मन्द मुसकाते।
सब के लिए विनोद बन गये, गाँधी हँसते और हँसाते।।

स्वावलम्व से चल राही ने– मजिल मजिल पर सुख भोगा।
अपना ही अवलम्व जिसे है– उसने कभी नही दुख भोगा ।।
प्यारी पत्नी वडे प्रेम से– पति की सेवा मे रत रहती।
कपडे धोती, पैर दबाती, गा गा प्रेम-नदी मे बहती ।।

बच्चो के लालन पालन मे- कोई चूक नही करती थी।
कोई उलटा काम न करदूँ, इसी बात से वह डरती थी ।।
हँसा हँसा कर हँसते हँसते– दम्पति का जीवन चलता था।
या दम्पति के जलज अङ्क मे– जग का मधुर प्यार पलता था ।।

'देवदास' गोदी मे लेकर– उँगली पकडी 'मणीलाल' की।
'रामदास' ने दौड लगाई मृग गति 'हीरालाल' चाल की ।।
गाँधी जी प्यारे बच्चो से– आते जाते मन बहलाते।
घर मे रास रचाया करते, बाहर राम-रूप वन जाते ।।

इसी बीच मे 'अफ्रीका' मे– सहसा 'बोअर' युद्ध छिड गया।
चिघाडे खूँखार भेडिये, सोने का भेडिया भिड गया ।।
'बोअर' के 'जोहान्सबर्ग' पर– 'जेमीसन' ने किया आक्रमण।
शोणित सने श्वेत साँपो ने– इधर उधर को फैलाये फण ।।

पहले तो सोचा गाँधी ने– मै 'बोअर' का बनूँ सहायक।
जो है मूल निवासी उनका– मुझे चाहिये बनना पायक ।।
पर फिर सोचा राजभक्त मैं, कैसे राज-द्रोह को जाऊँ ?
अपनी निर्मल राजभक्ति मे– कैसे काला दाग लगाऊँ ?

राजभक्ति वह जो कि राज्य का– झण्डा ऊँचा सदा उठाये।
वीर वही है युद्ध-भूमि मे– जो शोणित का अर्घ्य चढाये ।।
गोरो की रक्षा को गाँधी– राजभक्ति के गीत गा रहे।
गाँधी की वाणी सुन सुन कर– गिरमिटिया मजदूर आ रहे ।।

'वोग्रर' के 'कूगर' की सेना– बड़े वेग से सावधान थी।
कृपको, मजदूरो की सेना– तम की वटिया पर विहान थी ॥
गोरो की सेवा को आया– राजभक्ति का अमर पुजारी।
भारतवासी गिरमिटियो ने– गाँधी जी की वात विचारी ॥

चले घायलो की सेवा को– गाँधी जी की आज्ञा पाकर।
वडी वीरता से गाँधी ने– अर्पित की सेवाये जाकर ॥
जली युद्ध की आग भयकर, ठाँय! ठाँय! गोलियाँ चल पडी।
दनन दनन दन गोले वरसे, लकडी सी हड्डियाँ जल पडी ॥

'वोग्रर' टूट पडे विजली से, गोरो की सेना थर्राई।
उखडे पैर, हटी पीछे को, 'वोग्रर-प्रजा' हवा सी आई ॥
तव घवरा कर अँगरेजो ने– वाहर से फौजे वुलवाई।
गाँधी-सागर से उड उड कर– मेघो ने आँधियाँ उडाई ॥

वढे झूमते वीर फूल से, नभ से गोले वरसाते थे।
युद्ध-क्षेत्र मे खडे सिपाही– गोली सीने पर खाते थे ॥
जल जाते थे, गड जाते थे, किन्तु न माँ का दूध लजाते।
जो रण मे शहीद होते है– मुख से स्वर्ग लोक मे गाते ॥

गोले कही, कही वम-वर्षा, गाँधी-दल सेवा करता था।
वीर घायलो के घावो मे– मनमोहन मरहम भरता था ॥
'स्वस्तिक चिह्न' वाँध वाजू मे– 'धन्वन्तरि' भगवान वहाँ थे।
ईश्वर का आकार वही है– गाँधी जी के चरण जहाँ थे ॥

गाँधी जी की राज-भक्ति से– गोरे 'वोग्रर' का रण जीते।
वे हर घर के उजियाले है– जो दीपक जल जल रस पीते ॥
सन्त हिमालय की आँखो से– वर्षा से झरने झरते थे।
पिघल गये पाषाण दुख से, पत्थर भी आँखे भरते थे ॥

जो औरो का हृदय जीत ले, उसकी हार नही होती है।
वदली रोती, पर धरती की- पीडा धोने को रोती है॥
सच्चा सन्त वही है जिसका- मानस पर-दुखो से पिघला।
औरो की आँखो का आँसू- जिसकी आँखो से बह निकला॥

कारा मे बन्दी भारत माँ-
तडप तडप घुट-घुट रोती थी।
आँचल मे आँसू भर भर कर-
दाग गुलामी का धोती थी॥

मातृभूमि का मूक निमन्त्रण-
गाँधी जी को लेने आया॥
भारत माँ का रुदन फूटकर-
वाणी मे आँसू भर लाया॥

दशम सर्ग

स्वदेश यात्रा

प्राण पजर से खडे है, खेलते आँसू धरा पर।
अर्घ्य ग्रामो पर चढाता, काव्य-गति हिमगिरि गिराकर ।।
मेघमाला मेखला वन, दीप मजिल पर जलाती।
दर्द किसका गा रहा है, वन्दिनी ! किसको बुलाती ?

वेदना विस्तार वन कर– मूक सी छाई हुई है।
श्रृङ्खलाये झनझनाती, कौन गरमाई हुई है ?
मुकुट जिस माँ का हिमालय, नयन उसके झुक रहे है।
आग मे वैठी तपस्या, द्वार दृग के ढुक रहे है ।।

कौन सुनता है किसी की, तू किसे तप से वुलाती ?
पुतलियो के पालने मे– वावली किसको सुलाती ?
दूरदर्शी देवता के– स्वप्न से छाये दृगो मे।
तडप ले आई दुखी की, दौड कर चपला मृगो मे ।।

तडप कर स्मृति ने हृदय मे– दे दिया उनको निमन्त्रण।
पत्र पाकर कव कटे है– काटने से विरह के क्षण !
देश की स्मृति ने झँझोडा, मन उठा उनका वहाँ से।
फूल ! वोलो घर कहाँ है ? आ रहा सौरभ कहाँ से ?

गाँधी जी वोले मित्रो से– अव मुझको भारत जाने दो !
याद देश की वुला रही है, माँ की चरण-धूलि पाने दो ! !
साथी सिसक सिसक कर वोले– चाँद रोक कव सकी चकोरी ?
विरह-वेदना से तडपेगे, मन की करी चाँद ने चोरी ।।

पहले प्रेम-पाश मे बाँधा, अब तुम छोड चले जाते हो।
प्रेम बने आये थे पर अब– निष्ठुर! हृदय छले जाते हो॥
मन के राजा! छोड जा रहे, तडप रही गोपियाँ बिचारी।
हमे न योग सिखाओ मोहन! हमे लगी है प्यास तुम्हारी॥

कोमल मक्खन सा मन भी क्यो– अब पाषाण बना जाता है?
सह न सकेंगे विरह-वेदना, रह रह हृदय भरा आता है॥
बोले मोहन, शीघ्र अवधि तक– पास तुम्हारे आ जाऊँगा।
इसी भूमि पर ढूँढ कही से– सब के लिए स्वर्ग लाऊँगा॥

गाँधी जी का जाना सुनकर– मित्रो का मानस भर आया।
आँखो से आँसू बरसाकर– प्रेमामृत मे स्नान कराया॥
गाँधी जी के अभिनन्दन मे– स्वर्णिम मान-पत्र रच डाले।
थाल बहुत से दिये भेट मे, हीरे मोती मणियो वाले॥

मनमोहन के लिए नजर को– बडी बडी थैली भर लाये।
सोने मणियो के आभूषण– गाँधी जी की नजर चढाये॥
जगमग जगमग झिलमिल करता, 'बा' के लिए हार ले आये।
लाख लाख मन की माला थी, लाखो के नजराने लाये॥

हीरे मोती की मालाये, सोने के जडवा जेवर थे।
मणियो की अगूठी घडियाँ, प्रेम भरे आँसू से तर थे॥
हीरे मोती की नजरो से– बालक से मोहन शरमाये।
रुपया सोना हीरे मोती– मानो त्याग परखने आये॥

वे पागल की तरह रात भर– रहे स्वर्ण की चकाचौध मे।
कभी चमकते, कभी दमकते, चौक चौक कर तडप कौध मे॥
गाँधी जी को फँसा रही थी– माया अपने मोह-जाल मे।
माया की रुनझुन से डरते, रहने वाले मस्त खाल में॥

सेवा की निष्काम भाव से, उसके बदले मे कैसा धन ?
मैं माया का हो जाऊँगा, अगर फँस गया माया मे मन ॥
माया-ठगनी ठग कर मन को– शान्ति नही मिलने देती है।
नारायण से दूर हटाती, फूल नही खिलने देती है॥

मानव का मन बाँध न चचल !
जाल बिछा मन मजुल माया !
रूप अनूप दिखा ठगनी ! मत,
छीन न जीवन का सरमाया ॥
रीझ नही सकता मन पत्थर,
कचन थाल सजा कर लाई।
साँपिन ! साँप न सकट का डर,
'शकर' ने अब भस्म रमाई ॥

माया की यह घात पिता ने– अपने बच्चो को समझाई।
'गहने कपडे क्या करने हैं?' पत्नी से भी बात बनाई ॥
'बा' ने कहा बिगड कर उनसे– "तुम्हे नही तो मुझे चाहिये।
बच्चो को बहकाया तुमने, सारे गहने मुझे लाइये !

मुझे न पहिनाओ पर मेरी– बहुओ को तो पहिनाओगे।
बडे प्रेम से भेट करे हैं, तुम वापिस करने जाओगे ?"
रोते हुए कहा यह 'बा' ने– "वापिस करना ठीक नही है।
उनकी श्रद्धा वापिस करना, यह तो कोई लीक नही है ॥"

गाँधी जी बोले, "बच्चो का– अभी नही तू ब्याह कर रही।
जब होगा तब सब कर दूँगा, अभी व्यर्थ यह चाह कर रही ॥"
"हाँ, मैं तुम्हे जानती हूँ प्रिय ! मुझे बहुत पहिनाये तुमने।
जो बहुओ को पहिनाओगे, अच्छे सबक सिखाये तुमने ॥

अभी फूल से वच्चे हैं ये, तुम वैरागी वना रहे हो।
रग चढा आये वच्चो पर, अव मुझको भी मना रहे हो।।
पर ये गहने हरगिज भी मैं– तुम्हे न वापिस करने दूँगी।
हार दिया है मुझे भेट मे, दिल मे प्रेम-हार रख लूँगी।।"

"हार मिला मेरी सेवा से"– गाँधी प्रेम-भाव से वोले।
"मैं तुम दोनो एक प्राण हैं"– 'वा' की वाणी ने रस घोले।।
"जिन चरणो ने सेवा की है– मैं उन चरणो की दासी हूँ।
तुम जिस पथ के पथिक बने हो– मैं उस पथ की अभ्यासी हूँ।।"

फिर गाँधी जी ने समझाया– "हार हार के लिए नही है।
तुम हो जहाँ, वही हैं गहने, कमी प्यार के लिए नही है।।"
नारी को समझाना ही क्या, अगर प्यार से समझाओ तुम।
दो धारो के वीच खडी 'बा'– बोली, "वापिस कर आओ तुम।।"

ट्रस्ट वना कर गाँधी जी ने– वह सारा धन जमा कर दिया।
वातो के गहने पहिना कर– भोली 'बा' का पेट भर दिया।।
गाँधी जी यदि भावुकता थे– तो वह कविता बन कर बोली।
गाँधी जी की पग-ध्वनि सुनकर– रुनझुन पीछे पीछे हो ली।।

गाँधी जी चल पडे देश को, प्रेम-आँसुओ से आँखे भर।
वायु वेग से चले झूमते– स्वतन्त्रता देवी के पथ पर।।
लौट देश मे कुछ दिन तक वे– जाली मे से रहे झाँकते।
भारत माता के स्वरूप को– विधि की निधि से रहे आँकते।।

'महासभा' के अधिवेशन मे– फिर गाँधी 'कलकत्ता' आये।
गगा जैसे मिले 'गोखले', नेताओ के दर्शन पाये।।
'शेर फिरोजशाह' से मिल कर– एक नया प्रस्ताव बनाया।
जिसमे 'दक्षिण अफ्रीका' का– फोटो सा खाका दिखलाया।।

महासभा 'कॉग्रेस' देश मे– अन्धकार मे उजियाली थी।
जिसका सौरभ शक्ति बन गया, वह उन फूलो की डाली थी॥
जिसकी जलती हुई ज्योति ने– देशभक्ति का किया प्रकाशन।
वीर 'दीनशा एदलजी' से– शोभित था प्रधान का आसन॥

महासभा कॉग्रेस-सूर्य का– फैला था प्रकाश भूतल पर।
स्वतन्त्रता का दीपक देखा– जिसकी किरणो पर चल चल कर॥
'कलकत्ता' के अधिवेशन मे– रंग बिरंगी चहल पहल थी।
देशभक्ति की मधुर वायु मे– जग की मंजिल बहुत सहल थी॥

अब प्रबन्ध भी देखे आओ, देखो खडे स्वयसेवक है।
मातृभूमि को गर्व इन्ही पर, मातृभूमि पर इनके हक है॥
लेकिन सब कर्त्तव्य भूल कर– बाते बहुत घडा करते है।
काम न करते, नाम चाहते, भूले भक्त लडा करते है॥

वह उससे कहता– 'तू करले', वह कहता– 'गोविन्द करेगा।'
कुरसी उसके लिये सजी है– जो कि हाथ पर हाथ धरेगा॥
गाँधी जी ने देख गढगी, झाडू देकर करी सफाई।
सारा काम किया भगी का, मैली पगडण्डी धुलवाई॥

जहाँ कही भी मैला देखा– झाडू देकर साफ कर दिया।
बने 'कारकुन', 'बैरा' बन कर– सेवा से भण्डार भर दिया॥
सेवा कार्य देख गाँधी के– वे सारे सेवक शरमाये।
गाँधी जी की चरण-चाप सुन– सेवा-पथ पर आगे आये॥

मनमोहन ने सेवाये की, पर मन मे अभिमान न आया।
सेवा कर निष्काम भाव से– गाँधी जी ने दीप जलाया॥
सूरज की स्वर्णिम किरणो ने– गाँधी जी के शब्द लुटाये।
सेवाओ का स्नेह डालकर– घर घर मे दीपक जलवाये॥

थोड़े दिन मे 'महासभा' के– सारे यन्त्र तन्त्र पहिचाने।
अगुआओ से भेट हो गई, नेताओ के कहने माने॥
'महासभा' का भव्य दृश्य था, बडे बडे विद्वान वहाँ थे।
वहाँ कमी कैसे रह जाती, गाँधी जी के चरण जहाँ थे॥

सुन प्रधान का भाषण श्रोता– 'वाह! वाह!' करते जाते थे।
श्रद्धा से सिर हिला हिला कर– नेताओ के गुण गाते थे॥
वायुयान जैसी गति से अब– सब प्रस्ताव पढे जाते थे।
भारत-भाग्य-विधाता नेता– कार्य शान से निबटाते थे॥

गाँधी के मन मे हलचल थी– शायद वह प्रस्ताव न आये।
पास 'गोखले' के जा पहुँचे, गगाजल पर फूल चढाये॥
धीरे से बोले गाँधी जी– "मेरी बात भूल मत जाना!"
"वह प्रस्ताव ध्यान है मेरे"– गगाजल का छिडा तराना॥

"जल्दी देख रहे हो पर मैं– गाँधी! तुम्हे न भूल सकूँगा।
मन-मोहन के बिना अकेला– कभी न भूला भूल सकूँगा॥"
इतने मे 'कुछ और नही क्या?' शेर 'फिरोजशाह' यह बोले।
कहा 'गोखले' ने सहसा यह– "बैठे है गाँधी जी भोले॥

जो मेरे गाँधी ने रक्खा– वह प्रस्ताव अभी बाकी है।
'दक्षिण अफ्रीका' की हालत– गाँधी-वाणी से झाँकी है॥"
'वह प्रस्ताव जँचा भी तुमको?' 'बिलकुल ठीक', गोखले बोले।
'गाँधी! पढ कर उसे सुनाओ,' वीर 'गोखले' ने पर खोले॥

कम्पित वाणी से गाँधी ने– अपना वह प्रस्ताव सुनाया।
कच्चा चिट्ठा खोल धर दिया, 'अफ्रीका' का दृश्य दिखाया॥
गगाजल मे जलतरग से– वीर 'गोखले' चढे मच पर।
गाँधी के स्वर मे सुर घोला, निर्विरोध प्रस्ताव दिया कर॥

वीर गोखले ने गाँधी को– अपना प्यारा अनुज बनाया।
थपक थपक कर पीठ प्यार से– गाँधी का उत्साह बढाया॥
'कलकत्ता' की गली गली मे– गाँधी जी ने गति विधि आँकी।
सत्यम्, शिवम् छिपे बैठे थे, पश्चिम की सुन्दरता झाँकी॥

बडे महाराजा राजा सब– गोरो को सलाम करते थे।
तलवारो के धनी विजेता– गोरी चमडी से डरते थे॥
'कर्जन' का दरबार लगा था, सज-धज कर आये गुलाम सब।
वेश खानसामा जैसा था, पराधीन थी रजपूती तब॥

गाँधी जी ने कहा उन्हो से– "छोड दिया क्यो अपना बाना ?
वस्त्र गुलामी के क्यो पहिने ? रूपान्तर कर लिया जनाना॥
बिजली सी तलवार तुम्हारी– क्यो न टूट कर गिरी जवानो !
दीपशिखा धिक्कार रही है, जले न दीपक पर परवानो !!

'पानीपत' 'चित्तौड दुर्ग' के– खँडहर तक धिक्कार रहे हैं।
जौहर की जलती ज्वाला के– कितने आँसू आज बहे है॥"
शरमा कर राजे यह बोले– "हाथ सलामी ने जकडे है।
अँगरेजो के हाथ पैर हम, पैर गुलामी ने पकडे है॥

गोरो को सलाम करना है, इसीलिये यह वेश सजाया।
हीरो के आभरण पहिनकर– हमने नारी को शरमाया॥
लटक रही तलवार कमर मे, किन्तु गुलामी की दासी है।
गोरो के आगे झुकने की– अब रजपूती अभ्यासी है॥"

धन, सत्ता, यश मनुष्यत्व से– सारे पाप करा लेते हैं।
यश नर की अन्तिम दुर्बलता, ज्ञानी इसे त्याग देते हैं॥
'कालीचरण बनर्जी' से मिल– काली के मन्दिर मे आये।
'जय काली कलकत्ते वाली !' भक्तो के ये रव भर्राये॥

दर्वाजे पर भिखमगे थे, भीड लगी थी जेबकटो की।
हट्टे कट्टे खडे भिखारी– देख रहे थे लहर लटो की॥
भीख माँगते शर्म न आती, हट्टे कट्टे बने भिखारी।
भीख माँगना महापाप है, बाबा ! शिक्षा सुनो हमारी॥

जिस जिह्वा से भिक्षा माँगे– वह जिह्वा कट कर गिर जाये।
जग मे हर दाता भिक्षुक है, भिक्षुक भिक्षुक से क्या पाये ?
फिर गाँधी जी ने मन्दिर मे– बलि के बकरे कटते देखे।
बहती देखी नदी लहू की, मास वहाँ पर बटते देखे॥

जीभ निकाले काली माई– ताजा खून पिये जाती थी।
बाल बिखेरे फाड फाड मुँह– बकरे भेट लिये जाती थी॥
यह वीभत्स दृश्य गाँधी जी– एक निमिष भी देख न पाये।
किसके दर्शन ? किसकी पूजा ? गाँधी उलटे पैरो आये॥

मछली से तडपे गाँधी जी, निकल पडे आँसू आँखो से।
आँखे नीची हुई शर्म से, चिपक गये पत्थर पाँखो से॥
अपने बगाली मित्रो से– गाँधी जी ने कही कहानी।
जिनके मुँह को खून लग गया– उन पर कौन चढाये पानी ?

बकरे के प्राणो की कीमत– नर-प्राणो से न्यून नही है।
जड चेतन मे व्यापक ईश्वर– देता किसको चून नही है ?
फिर बकरो की हत्या करके– पापी पेट पालना कैसा ?
अगर कसाई ही बनना है– तो बन 'सदन कसाई' जैसा॥

'शुद्धि शुद्धि' रटते रटते ही– मुझको देह छोडनी होगी।
ईश्वर के निर्मल चरणो से– मन की कडी जोडनी होगी॥
एक सूर्य की सारी किरणे, एक जीव मे है सब प्राणी।
मानव बचे महापातक से, ऐसी करुणा कर कल्याणी !

शक्ति! यही विनती है मेरी, अपने मन्दिर शुद्ध करो तुम।
भारत को भगवान बनादो, पैदा फिर से 'बुद्ध' करो तुम।।
प्रतिध्वनि मे कण कण यह बोला– तुम ही तो भगवान! खडे हो।
भक्त तुम्हे पहिचान चुके हैं, भक्तो से भगवान! बडे हो।।

बगाली साहित्य देख कर – सब धर्मो की गतियाँ आँकी।
आँका 'ब्रह्म समाज' हृदय मे, बगाली तसवीरे झाँकी।।
साधु 'विवेकानन्द' जलज के– सूरज दर्शन करने आये।
'बेलर मठ' तक पैदल चलकर– निराकार के दर्शन पाये।।

उस एकान्त भव्य आसन पर– मन की शान्ति नृत्य करती थी।
रास रच रही थी चचल गति, सत् से सजी हुई धरती थी।।
कल कल छल छल उछल उछल कर– निर्मल मानस-जल बहता था।
हीरो सी उज्ज्वल लहरो पर– चाँद मधुर कविता कहता था।।

किन्तु 'विवेकानन्द' उस समय– आसन पर साकार नही थे।
अन्य कही पर थे स्वामी जी, लेकिन शान्त विचार वही थे।।
चौरगी के एक महल मे– 'निवेदिता' के घर पर आये।
रूप तेज के दर्शन करके– मनहर मन ही मन शरमाये।।

हिन्दू धर्म और भावो की– रूप-राशि या चित्र-कला थी।
गाँधी जी के अन्तराल मे– वीणा-भणित पवित्र कला थी।।
बैठ गया 'बगाल'-हृदय मे, परिचित मित्र घनिष्ट बन गये।
सन्त 'गोखले' की छाया मे– सिर पर पुष्प-वितान तन गये।।

'ब्रह्मदेश' भी गये, वहाँ पर– मक्खी-मार 'फुगिये' देखे।
'पैगोडा' के दर्शन करके– छोड दिये सब दूर परेखे।।
मन्द मन्द बत्तियाँ मोम की– मन्दिर मे झिलमिल जलती थी।
सजी व्योम मे दीपमालिका, मन्द मन्द राते चलती थी।।

किन्तु गर्भ-गृह मे चूहे थे, 'दयानन्द' की याद आ गई।
पुरुषो की मन्दता वहाँ थी, महिलाओ की प्रगति भा गई।।
'ब्रह्मदेश' के दर्शन करके- ज्ञान 'गोखले' के घर आये।
मानो चाँद चकोर मिल गये, मधुबन मे मनमोर नचाये।।

ज्ञान-सागर 'गोखले' की-
प्रेम-यमुना मे नहाये।
विश्व की यश-वाटिका मे-
फूल फल से लहलहाये।।
'गोखले' आकाश-गगा,
चाँद से विकसित कमल ये।
हस मोती चुग रहा है,
उमडते मानस धवल ये।।

गुणी 'गोखले' गाँधी जी से- कुछ भी गुप्त नही रखते थे।
देशभक्ति के लिए कभी भी- मानस सुप्त नही रखते थे।।
जो भी सज्जन मिलने जाते- गाँधी से परिचय करवाते।
अपने साथ घूमने उनको- घोडागाडी मे ले जाते।।

मिले 'राय' से जो कि त्याग वह- मानवता की महामूर्ति थे।
निर्धन की खाली झोली मे- 'राय'-राशि श्रद्धेय पूर्ति थे।।
रुपया मिला आठ सौ मासिक, किन्तु लोक-सेवा मे देते।
अपने लिए आठ सौ मे से- नोट चार दस दस के लेते।।

शुद्ध देश-सेवा मे तत्पर, क्षण भी व्यर्थ नही खोते थे।
प्रहरी खडे रहे पहरे पर, कभी न जागरूक सोते थे।।
पराधीनता चुभती प्रति क्षण, दम्भ असत्य नही भाते थे।
और देश की निर्धनता मे- तन मन धन भरते जाते थे।।

देशभक्ति को छोड कहीं भी– मन न 'गोखले' का लगता था।
देशभक्ति के आगे उनको– कोई काम नहीं ठगता था॥
'अपने हित के लिए करो कुछ', जब भी उनसे कहता कोई–
'देशभक्ति मे ही मेरा हित, भारत की स्वतन्त्रता खोई॥

मुझे और कुछ नही चाहिये, भारत की स्वतन्त्रता लूँगा।
तब ही खुशी मनाऊँगा मैं– जब भारत स्वतन्त्र कर दूँगा॥'
बात बात मे देशभक्त वे– वीर 'रानडे' के गुण गाते।
बात बात मे उदाहरण दे– अपना पूजा भाव दिखाते॥

देशभक्ति वह मानवता के– ये हैं रत्न, प्रणाम करो सब!
बोलो वीर 'गोखले' की जय, मातृभूमि की पीर हरो सब!।
कुम्भकार! जब मर जाऊँ मैं, मेरी राख बहा मत देना!
चुग चुग फूल सजा थाली मे, मिट्टी मुट्ठी मे भर लेना!

देशभक्त की यादगार पर– फूल चढा चन्दन मल देना!
अर्घ्य चढाने आया हूँ मैं, सागर मे दृग-जल भर लेना!
देशभक्त की ही समाधि पर– मैं दीपक बन कर जल जाऊँ।
देशभक्त की यादगार पर– मैं जीवन भर गीत सुनाऊँ॥

सच्चे मित्र 'गोखले' से जब– गाँधी विदा माँगने आये।
विरह सहन कब हुआ किसी से, महापुरुष आँखे भर लाये॥
तन से दूर दूर, पर मन से– प्रेम दूर कब हुआ बताओ!
आँखे खोलो, सूर्य सामने, मदमाते सरोज! मुसकाओ॥

यह सम्बन्ध अनन्त, इसे क्या– दूरी कभी मिटा पायेगी!
अन्तर्वासी अन्तर मे है, मन की लगन ढूंढ लायेगी॥
प्रेम-मिलन के बाद 'गोखले'– उनके साथ रेल पर आये।
गाँधी विदा हुए गाडी मे, मित्रो ने मोती बरसाये॥

चलो, तृतीय कक्ष मे चलकर– महापुरुष के दर्शन करले ।
चरण-धूलि मल कर मस्तक पर, आज हृदय-परिवर्तन करले ॥
कम्वल, कोट, तौलिया, लोटा, कुर्ता, धोती, बैग लिये हैं ।
दर्शन करलो महापुरुष के, ये आँखो के लिए दिये हैं ॥

ये जीवन की रेल खीचकर– मुक्ति द्वार तक ले जाते हैं ।
ये हैं हस, दूध पानी को– अलग अलग कर दिखलाते हैं ॥
रेलो की दुर्दशा देखते, 'वाराणसी' किनारे पहुँचे ।
कल्याणी 'काशी' मे मानो– दुनिया के दृग-तारे पहुँचे ॥

गगा-तट पर खडे हो गये, कल कल करती लहरे आई ।
गा गा स्वागत-गीत प्रीति के, हीरक-मालाये पहनाई ॥
कही युवतियाँ जल-क्रीडा मे– अपनी व्रीडा भूल रही थी ।
कही हिँडोलो पर लहरो के– मस्त नारियाँ झूल रही थी ॥

कही रूप मे मदमाती वे– गोल बाँध कर नहा रही थी ।
अपने यौवन की गगा मे– भोला सा मन बहा रही थी ॥
वे कपोल थे या कि गुलावी– फूल झूलते थे लहरो पर ।
या फूलो की दृष्टि गडी थी– उनके मुसकाते अधरो पर ॥

यौवन के उभार मे उभरी– शिशु-गेदो से खेल रही थी ।
अपने अङ्गो की गगा मे– मन को खीच धकेल रही थी ॥
सुन्दरता को सजा रहे थे– लहरो की जाली के अम्बर ।
बदन स्वर्ण सा दमक रहा था– गगा की लहरो के अन्दर ॥

कितनी ही पापी आँखे आ– सुन्दरता नगी करती थी ।
किन्तु किसी की पावन आँखे– झरनो सी झर झर झरती थी ॥
सुन्दरता को देखो, लेकिन– उस पर पाप-दृष्टि मत डालो ।
मूल्य आँक कर पूजा कर लो, कलाकार का मूल्य चुका लो ॥

तट पर खड़े हुए मनमोहन— दृश्य देख दर्शन करते थे।
भावों में गोते खाते थे, आँखों में अम्बुधि भरते थे॥
आलिंगन कर लहरें बोलीं— हमें छोड़ कर चले न जाना!
चरण चूम कर तट यह बोला— मुक्त! मुझे भी मुक्ति दिलाना!!

फिर 'काशी' में गाँधी जी ने— रोदन देखा विधवाओं का।
मन से चीख निकल कर बोली— हाय! कौन इन अबलाओं का?
देखे बड़े पेट पंडों के, देखे बगुले भक्त बोलते।
देखे भिखमंगे मन्दिर में, आस पास बदमाश डोलते॥

अगणित बारमुखी 'काशी' में— यौवन से इङ्गित करती थीं।
तीर्थ-क्षेत्र था, लेकिन उससे— हृदय-साधनायें डरती थीं॥
कैसा ईश्वर-भजन? वहाँ तो— यौवन का बाजार लगा था।
कैसी पूजा पाठ? वहाँ तो— पंडों का दरबार लगा था॥

जिसको ईश्वर पर शंका हो— वह इस तीर्थ-क्षेत्र को जाये।
कर्मों से ईश्वर मिलते हैं, जिसने ढूँढे उसने पाये॥
मोटे पेटों के पंडों ने— मन्दिर की मन-मूर्ति जकड़ ली।
'काशी' छोड़ चल दिये गाँधी, 'राजकोट' की राह पकड़ ली॥

मिले 'माव जी दवे' वहाँ पर, मिले 'भरत' से भैया प्यारे।
मन-मोहन ने बड़े भाव से— नयन-नीर भर पाँव पखारे॥
वहाँ बहुत से मिले मुकदमे, सच्चाई से गाँधी जीते।
जीत उसी के चरण चूमती, जो 'शंकर' बन कर विष पीते॥

हम स्वप्नों में ऐसे खोये, चतुर चोर ने रत्न चुराया।
सत्य स्वरूप निडर गाँधी ने— नीर क्षीर का ज्ञान कराया॥
हाथी से अँगरेज भला कब— चींटी को पहिचान सके हैं?
चींटी में कितनी ताकत है— दुर्बल ही यह जान सके हैं॥

तर्कों सी उलझन सुलझाते– गाँधी जी 'वम्बई' आ गये।
जग के सूरज पर छाने को– भूरे भूरे भूत छा गये॥
भक्त 'गोखले' की इच्छा थी– गाँधी जी भारत मे ठहरे।
स्वतन्त्रता के सिहासन पर– गाँधी विजय-ध्वजा से लहरे॥

'महासभा' मे गाँधी जी की– कीर्ति चाँद सूरज सी चमके।
जीवन की जागरण-ज्योति मे– दृग-तारे नीलम से दमके॥
सागर-तट पर इन्द्रपुरी से, वे 'वम्बई' शहर मे ठहरे।
धन्य हुआ 'गिरगाँव' मुहल्ला, जहाँ लहर पर हिमगिरि लहरे॥

घर मे सुख के रास रचाती– हसमुखी सी 'वा' गाती थी।
शिक्षा देती थी वच्चो को, वच्चो से मन वहलाती थी॥
गाँधी-मानसरोवर मे 'वा'– मधुर हसिनी सी हँसमुख थी।
पीडा से पिघले पावस सी, गाँधी के जीवन मे सुख थी॥

सगम से दाम्पत्य प्रेम के– चित्र खीचने लगा चितेरा।
आँगन के 'मणिलाल' फूल को– वडे तेज ज्वर ने आ घेरा॥
कहा डॉक्टरो ने, "वच्चे को– मुर्गी का शोरवा पिलाओ!
दवा नही कुछ असर करेगी, अण्डे, मुर्गी, मास खिलाओ!"

गाँधी जी वोले डॉक्टर से– "मास न खाना परम धर्म है।
क्यो मानव भी पशु वन जाता? यह मनुष्य का दैत्य-कर्म है॥"
फिर वालक से वोले वापू– "वेटे! अण्डे खाओगे क्या?"
वोल उठा वालक वापू से– "अपना धर्म भुलाओगे क्या?

ईश्वर सवका भला करेगा, मेरी करो चिकित्सा जल से।
जीवन कैसे मिल सकता है– प्राणी की हत्या के फल से?"
वढता वढता ज्वर तेजी से– चार डिग्रियो तक चढ आया।
'वा' घवराई, लेकिन मेरा– वापू कभी नही घवराया॥

ईश्वर की यह हुई प्रेरणा– पथ से कभी न विचलित होना ।
कोशिश करना धर्म तुम्हारा, धर्म नहीं है रह रह रोना ॥
गाढे की धोती गाँधी जो– पानी मे तर कर ले आये ।
उसमे बच्चे को लपेट कर– ऊपर कम्बल खेस उढाये ॥

बदन तप रहा था सूरज सा, तन से लपटे निकल रही थी ।
ऐसा कोई रोग न जिसकी– सजीवन बूटियाँ नही थी ॥
बालक 'बा' को सोप थके से– गाँधी टहले चहल पहल मे ।
सडको पर मजदूर पडे थे, रँगरलियाँ मन रही महल मे ॥

ये सब दृश्य देखते गाँधी– 'चापाटी' की तरफ आ गये ।
सौरभ बरसाया समीर ने, थके बटोही शान्ति पा गये ॥
सागर-तट के शान्त निलय मे– मुँह से 'राम! राम!' गाते थे ।
अपनी पूजा के प्रसाद से– गाँधी भक्ति-सुधा पाते थे ॥

आ पहुँचे 'धन्वन्तरि' घर पर, सुधा पिला लौटे बालक को ।
किसी बात की कमी नही है, जो न भूलता है पालक को ॥
घर की ओर चल पडे गाँधी, दिल धक धक करता जाता था ।
और उधर घर पर मन का मणि– 'बापू! बापू!' चिल्लाता था ॥

"बापू आये? बापू आये?" बालक अपनी माँ से बोला ।
"हाँ भाई! आ गया, आ गया!" गाँधी-वाणी ने मधु घोला ॥
बोला बालक– "बापू! बापू! मैं गर्मी मे मरा जा रहा ।
वर्षा सा आ रहा पसीना, सारा बिस्तर भरा जा रहा ॥"

गाँधी जी ने देखा 'मणि' को, अब बुखार का नाम नही था ।
माथे पर मोती की बूंदे, ज्वर का नाम निशान नही था ॥
जिनको ईश्वर मे श्रद्धा है– ईश्वर उनको नही भूलते ।
मैने अनुभव मे पाया है– भक्त हिंडोले चढे झूलते ॥

नैतिकता शिव और सत्य मे– मेरे मोहन भूल रहे हैं।
जग के झूठे इन्द्रजाल मे– हम ईश्वर को भूल रहे हैं॥
वैसे ही वानक वन जाते– जैसे नर नारायण चाहे।
जिसको ईश्वर रखने वाला– उसके लिए खुली हैं राहे॥

कण कण के अन्तर मे वस कर 'राम! राम!' गाऊँ मैं।
राम! भक्ति दो, पृथ्वी तल को स्वर्ग वना जाऊँ मैं॥

राम! तुम्हारा वनूँ पुजारी, झूठे झगडे छोडूँ।
जन्म मरण से छूट राम! मे जग के वन्धन तोडूँ॥
मानव मे मानवता देखूँ, नयन लगे मुसकाने।
अधरो से वरसे सावन से, मुक्ति-मार्ग के गाने॥

व्यष्टि सृष्टि सव व्याप्त राम मे, राम! तुम्हे पाऊँ मैं।
कण कण के अन्तर मे वसकर 'राम! राम!' गाऊँ मैं॥

मेरे राम वहुत अच्छे हैं।

याद जव कभी भी करता हूँ–
दर्शन दे जाया करते हैं।
वीच भँवर मे पडी नाव को–
तट तक खे जाया करते है॥

ले जाया करते हैं मेरे–
पापो का वोझा ढो ढो कर।
अन्तर-दीप जला जाते हैं–
मेरा अन्तर-तम धो धो कर॥

मेरे राम वहुत अच्छे हैं।

समय चल रहा अपनी गति से, यात्री अपनी गति से चलता।
दीपक अभी यहाँ जलता है, दीपक अभी वहाँ पर जलता॥
धीरे धीरे कदम बढाते, गाँधी जी 'सान्ताक्रुज' आये।
पल्लव-पखा झला पवन ने, पेडो ने गुलाब बरसाये॥

'सान्ताक्रुज' के चित्र चित्र मे– सत्य अहिंसा के दर्शन है।
छोटा सा जीवन है, लेकिन– जाने कितने परिवर्तन है॥
कुछ सोचो पर कुछ हो जाता, नारायण की अद्भुत लीला।
परिवर्तन की रँगरलियो मे– नाच रहा यह विश्व रँगीला॥

सहसा तार मिला गाँधी को– "फिर 'दक्षिण अफ्रिका' पधारो।
नाव डूबने लगी हमारी जल्दी आकर इसे उबारो॥"
जमा जमाया काम छोड कर, फिर 'दक्षिण अफ्रिका' सिधारे।
हर पग-ध्वनि पर अर्घ्य चढाने– चरणो मे आगये किनारे॥

उस कर्त्तव्यनिष्ठ को कोई– पत्थर पथ से हटा न पाया।
जिसको जग से मोह नही है– उसने जग मे दीप जलाया॥
पथ की चट्टानो ने रोका, लेकिन बढता रहा पथिक वह।
जिसे कैद कर लिया मोह ने– वह पिसता रहता पीछे रह॥

जो जीवन मे उन्नति चाहे– पहले मोह छोड दे वह नर।
घर की माया मोह न घेरे, बढा चले अपनी मजिल पर॥
यही परम पुरुषार्थ मनुज का– नारायण के दर्शन कर ले।
श्रद्धा से पाये ईश्वर को, जीवन सार्थक कर रस भर ले॥

गाँधी घर का मोह छोड कर– देश विदेश घूमते डोले।
हर मजिल पर सम्बल से वे– मधुर मौन भाषा मे बोले॥
मजिल मजिल चलते चलते– भाग्य-विधाता 'डरबन' आये।
चातक से प्यासे नयनो ने– मनमोहन के दर्शन पाये॥

खिले पुन अरविन्द वृन्द अलि, दिन निकला, सूरज मुसकाये।
'डरवन' वालो ने श्रद्धा से– गाँधी जी पर सुमन चढाये॥
'चेम्वरलेन' चतुर से मिलने– गाँधी जी तत्काल चल दिये।
गाँधी जी ने आम लगाये, पर उसने विपयुक्त फल दिये॥

बोला, "गोरो को राजी रख– तुमको यहाँ चाहिये रहना।
उनकी पूजा करो प्रेम से, पालन करो उन्हो का कहना॥
उपनिवेश पर हम गोरो की– सत्ता नाम मात्र की ही है।
अँगरेजो से प्रेम करो तुम, कीमत प्रेम-पात्र की ही है॥"

इस उत्तर से प्रतिनिधियो पर– वरसा ठडा ठडा पानी।
गाँधी की वाणी से गूंजी– जोश वढाती हुई जवानी॥
जिसकी लाठी भैस उसी की, मुर्दो का ससार नही है।
जो न लाठियाँ सहन कर सके– उनका कुछ अधिकार नही है॥

अभी अहिंसा के मन्दिर मे– रमने वाले वीर नही हैं।
अभी लाठियाँ सहने वाले– देशभक्त रणधीर नही हैं॥
यहाँ 'एशिया' वालो का अब– गोरो सा सत्कार नही है।
यहाँ उन्हो को स्वतन्त्रता से– रहने का अधिकार नही है॥

गाँधी ऐसे पथिक न थे जो– थक कर मजिल से हट जाये।
वे वे नाविक थे जो नौका– बीच भँवर से पार लगाये॥
'चेम्वरलेन' समीर वेग से– फिर जब 'ट्रान्सवाल' मे आये।
उनसे मिलने को गाँधी ने– पुन बुद्धि से दाँव लगाये॥

किसी तरह 'परवाना' लेकर– 'ट्रान्सवाल' तो पहुँच गये पर–
विधि विधान आये दर पर से– गोरो के दुतकारे सह कर॥
सत्ता मे गर्वीले गोरे– गाँधी जी से घबराते थे।
सत्य अहिसा के प्रतीक से– सभी हृदय मे थर्राते थे॥

अतः रचे षड्यन्त्र बहुत से, गाँधी जी का पत्ता काटा।
पर उस पत्ते से शरीर ने– जीवन में सागर को पाटा॥
आँसू श्रम-कण बन कर बरसा, बोने लगा राख में सोना।
गाँधी-वाणी की वर्षा से– हरा हो गया कोना कोना॥

अग्नि-पुंज पर जिसका जीवन– सावन बन कर बरस न जाये।
वह आँखो के आँसू युग युग– कैसे फिर मोती बरसाये?
उलझे प्रश्न, बने वे सुलझन, विष की घूँट पी गये गट गट।
विष भी जीवन बन जाता है– जिसको राम-नाम की हो रट॥

राम-नाम सब लिखो पढो, यह सत्य नाम है।
शान्ति यही, सुख यही, और यह सुधाधाम है॥

रटो राम का नाम, राम का नाम रटो सब!
बीत रही है आयु, रटोगे 'राम! राम!' कब?
तन की पूजा छोडो, जोडो प्रभु से नाता।
नश्वर यह संसार, एक दिन नर मर जाता॥

राम-नाम में रमो, नाम यह सुख विराम है।
राम-नाम सब लिखो पढो, यह सत्य नाम है॥

कब कहाँ कैसे मिलोगे राम!
रात दिन रटना तुम्हारा नाम॥

मै घिसूँ चन्दन, लगाओ नाथ!
राम! तुम मेरा निभाओ साथ॥
डूबता हूँ, तुम पकड लो हाथ।
हृदय-बन्धन से जकड लो नाथ!

किस तरह मन से मिलोगे राम!
कब कहाँ कैसे मिलोगे राम!

'अ आ इ ई' से फिर गाँधी ने– उन भूलो को सबक पढाया।
मानव-धर्म यत्न करना है, फल के लिए व्यर्थ ललचाया ॥
भारतवासी श्वान नही है– जो टुकडे खा पूँछ हिलाये।
ये वे जलते हुए दीप हैं– जो ज्वाला पी पी मुसकाये ॥

साहस छोड थक गये साथी, लेकिन शाश्वत हृदय न हारा।
सागर समा लिया आँखो मे, पलको मे बस गया किनारा ॥
त्याग भाव की अमृत-मूर्त्ति ने– जब 'रत्ना' सी रसना खोली।
मुक्ति-मार्ग पर अमर ज्योति सी– दुनिया पीछे पीछे हो ली ॥

फूल डाल पर खिलता है पर– सौरभ उडता है समीर पर।
पानी बह कर आ जाता है– पाषाणो का हृदय चीर कर ॥
अरे अभगुर ! अमर देवता ! ओ भारत माँ के ध्रुव तारे !
कवि के अक्षर अक्षर मे आ ! ढूँढ रहे हैं नयन बिचारे ॥

विभा लिये विराम दीप आरती उतारती।
गिरी पडी सँवार घास घोसला सुधारती ॥
प्रभात ज्योति को धरा सुहाग ले पुकारती।
विकास राशि को प्रभा प्रकाश से निहारती ॥

एकादश सर्ग

लपटें और लहरें

आग के पथ पर भगीरथ, शान्ति की धारा बहाता।
गीत गाता बढ रहा है, सत्य का दीपक दिखाता॥
जब दमन लपटे उगलता, क्रान्ति के स्वर लहलहाते।
राह जब रहती न कोई, पग स्वयम् ही पथ बनाते॥

रश्मि-रेखा पर पथिक वह– पथ बनाता जा रहा है।
चाँद सूरज का उजाला, बिजलियो मे गा रहा है॥
चूम पगडण्डी पगो को, दूब लेकर साथ चलती।
धार गगा की धरा पर, फोड कर पत्थर निकलती॥

रात चमकीली गगन के– पूजती पग दीप लेकर।
हृदय मे हँसियाँ बसी है, बिजलियो के हार देकर॥
जल रहा सूरज निरन्तर, दे रहा जग को उजाला।
चल रहा राही अकेला, राह लेकर खडी माला॥

सिन्धु के सुन्दर किनारे, कल्पना साकार मेरी।
चाँदना सा आ रहा है, दूर हटती है अँधेरी॥
चाँदनी पर मेघ मनहर– भ्रमर से मँडरा रहे हैं।
रूप पर मोती गगन से– झूम झुक बरसा रहे हैं॥

तरु हरे हैं चरण-जल पा, झूलते हर डाल पर फल।
मान अनुशासन पथिक का, पक्ति बाँधे तरु रहे चल॥
गा रहा सौरभ सुमन मे, सुन रहे श्रोता विजन मे।
पाँव बढते जा रहे है, आज कैसी गति पवन मे?

कितने चले, चलेंगे कितने, राह न हारी, पथिक न हारे।
हाथो मे आकाश कैद है, पैरो मे बँध गये किनारे ॥
शिव पार्वती भ्रमण को निकले, मरा हुआ हर दुखी जिलाया।
नीलकण्ठ ने कालकूट पी- दिशा दिशा को अमृत पिलाया ॥

जिसकी वाणी गीता बन कर- जग मे बनी ज्ञान की गगा।
जिसके ज्ञान और गौरव से- लहरो पर उड रहा तिरगा ॥
उसके जीवन का अब अगला- पृष्ठ खोल रस-धार बहाता।
उसकी ज्योति-रश्मियाँ लेकर- नीरज नयनो मे मुसकाता ॥

गीता के मर्मज्ञ पुरुष मे- युग युग का आलोक भरा है।
जिस मे कमी नही रत्नो की, वह गति ऐसी अमर धरा है ॥
जो कुछ भी देखा गाँधी ने- उसमे सारा जग व्यापक है।
विश्व एक मे, एक विश्व मे, प्राणी ईश्वर का बालक है ॥

✓ पर ऐसा वह कौन कि जिसने- जीवन मे विष नही पिया है ?
यह दुखो की दुनिया, इसमे- मोह-जाल ने दुख दिया है ॥
ऐसा पत्थर कौन कि जिसने- विरह-आग मे नीर न डाला ?
ऐसा सागर कौन कि जिससे- बुझी विरह की अन्तर्ज्वाला ?

पिता सदृश भाई भारत मे- गाँधी के विछोह मे तडपे।
पडे मृत्यु-शय्या पर भाई, कृश तन, विरह मोह मे तडपे ॥
दिया अनुज को तार उन्होने- तुम से मिलने को व्याकुल हूँ।
पर अब शायद मिल न सकूँगा, मृत्यु निकट, उडती बुलबुल हूँ ॥

यदि मुझ से अपराध हुआ कुछ- तो तुम मुझे माफ कर देना !
अपने भाई की समाधि पर- स्नेह भरा दीपक धर देना ! !
तार दूसरा पहुँच गया यह- भाई अब न रहे इस जग मे।
जब न रहे माँ-जाया भाई, फिर क्या रक्खा है जगमग मे !

मृत्यु न दया किसी पर करती बन जाती है बहरी।
छाया देने वाले तन पर छाई है दोपहरी॥
छोड़ गये भैया दुनिया को, मोहन रहे अकेले।
प्रेम नहीं देते भाई सा दुनिया के ये मेले॥

तार मिला जब गाँधी जी को- छूटे जल के तार दृगों से।
मानो मेघ उदधि बरसाते, जल देती मरुभूमि मृगों से॥
निकली एक कराह हृदय से बोले- 'कहाँ सिधारे भाई!
कहाँ गया वह अमृत-सरोवर, जिसने यह जिन्दगी बनाई?

दुनिया में मेला है लेकिन- मृत्यु सत्य है प्यार कहाँ है?
महा सिन्धु में तैर रहा मैं माँ! तेरी पतवार कहाँ है?
रोते हुए पक्षियो! बोलो- कहाँ गई वह नर की छाया?
भाई सब कुछ मुझे दे गये मैं अर्थी तक उठा न पाया॥

जनता के सेवक को जग में- शूलों पर चलना पड़ता है।
अपने तन का दीप बनाकर- द्वार द्वार जलना पड़ता है॥
चाहे घर में मुर्दा हो पर- पहले उनका काम जरूरी।
सब अपने सुख के साथी हैं, व्यर्थ यहाँ मेरी मजबूरी॥

बलिवेदी पर गाँधी जी ने- प्रतिपल रक्त-अर्घ्य डाला है।
स्वतन्त्रता के इस पौधे को- बड़ी मुसीबत से पाला है॥
'मांस न खाओ!' इस प्रचार से- तन मन धन की आहुति डाली।
एक हजार पौंड की थैली- माँग ले गई महिला जाली॥

वापिस नहीं दिये गाँधी को, गाँधी ने वह कर्ज चुकाया।
वह धन एक मवक्किल का था, सब पैसा पैसा भुगताया॥
जो भी रोग हुआ समृति में- तन मन से उपचार किया है।
काँटे अपने आप ले लिये, फूलों का संसार दिया है॥

फल फूलो के पेड प्रकृति मे, फूल तोडते है सैलानी।
भौरो के अधरो पर रस है, फूलो के गालो पर पानी॥
सयम से रस पान करो रे! सदा आत्म-बल से जय होती।
जय मानव के लिए मुक्ति है, खिलती दुनिया, मिलते मोती॥

मधुर मोतियो के मानस मे– मोहन को जीवन भरना था।
हर अनीति पर महापुरुष को– शीतल आन्दोलन करना था॥
गाँधी-वाणी धोने निकली– जग मे फैली हुई बुराई।
गोरे पचो की ज्वाला पर– गाँधी ने रसधार बहाई॥

गाँधी जी जो भी करते थे– वह न किसी से कभी छिपाते।
और वकीलो के पेशे से– वे मन ही मन मे शरमाते॥
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, पारसी– गाँधी का घर सब का घर था।
काला हो या गोरा कोई– सब मे सम गाँधी हरि हर था॥

सेवा-भाव बहुत था उनमे, इतना जितना लिख न सकूँगा।
उस अगाध जीवन-सागर मे– खो जाऊँगा, दिख न सकूँगा॥
घर आये सेवक तक का भी– आदर से मल मूत्र उठाते।
और प्रिया पत्नी के भी वे– घर मे साथ काम करवाते॥

वह भारत की भोली नारी– धोती पाखाने, रोता मन।
गालो पर मोती बरसाती, ले जाती मूतो के बर्तन॥
ले जाती मल मूत्र उठा कर, पर 'बा' की छाती जलती थी।
लाल लाल आँखो से पति को– उलाहना देती चलती थी॥

प्रेमी पति को गुस्सा आया, रोना अखरा, यौवन निखरा।
घर मे झगडा शुरू हो गया, शान्तिदूत पत्नी पर बिखरा॥
बोले– "देखो, व्यर्थ बखेडा– मेरे घर मे चल न सकेगा।"
पत्नी बोली– "घर को रक्खो, अब यह मोम पिघल न सकेगा॥"

'लो, मैं चली', वात यह सुनकर– गुस्से को गुस्सा चढ आया।
धक्का देकर, हाथ पकड कर– दरवाजे तक खींच भगाया॥
आधा द्वार खोल कर बोले– "अरी! निकल जा मेरे घर से।"
वह आँखो से गगा बोली– "नाथ! न दो धक्के इस दर से॥

भारतीय नारी पति का घर– मरने ही पर छोडा करती।
डोली मे नाता लाती है, अर्थी पर ही तोडा करती॥
तव भी तन का साथ छूटता, मन का साथ वना रहता है।
प्यार न मरने पर मरता है, प्यार न पानी मे वहता है॥

शर्म करो कुछ, विश्व हँसेगा, वोलो! कहाँ चली जाऊँ मैं?
यहाँ नही माँ वाप जिन्हो के– घर पर जा टुकडे खाऊँ मैं॥
जल्दी द्वार वन्द कर लो प्रिय! अन्दर चलो, लजाओ स्वामी!"
नयन झुका गाँधी जी वोले– "आओ, मुझे वचाओ स्वामी!"

पत्नी की यह सहनशीलता– डूवी नाव किनारे लाई।
पति पत्नी का कैसा झगडा, अभी मेल है, अभी लडाई॥
यह वह मीठा झगडा जिसमे– हृदय पास मिलते जाते हैं।
यह वह भक्ति-भावना जिससे– नारायण मिलने आते हैं॥

गाँधी जी की चरण-चाप पर– छवि रुनझुन करती चलती थी।
उन के पीछे पीछे पथ पर– शीतल दीपक सी जलती थी॥
अन्तर से जो ध्वनि होती थी– वही प्रेरणा मूर्त्त-रूप थी।
मेरे मोहन की पगडण्डी– सारी धरती से अनूप थी॥

ईश्वर के स्वरूप का परिचय– शब्द किस तरह से वतलाये?
श्रद्धा से अनुभव होता है, जिसे न देखा कहाँ दिखाये?
जाने किसका विरह सताता, जाने कैसी वशी वजती।
हर मनुष्य के अन्तराल मे– प्रकृति राम की माला भजती॥

जो भी सेवा करने आये– वे मोहन के हृदय वन गये।
भक्त वने अँगरेज वहुत से, गाँधी मन की विजय वन गये ॥
जव भी मैल देखते मोहन– मानस सौ सौ वार छानते।
वेतन भोगी परिचारक को– वे वेटे की तरह मानते ॥

लघु लेखन के लिए पास मे– ‘मिस डिक’ ‘स्कॉच कुमारी’ आई।
उस पल्लव सी सुकुमारी को– गाँधी जी ने सुता बनाई ॥
वह कल्याणी गाँधी जी के– अन्तराल के मधु पर वैठी।
कुछ ही क्षण मे श्वास वन गई, कुछ शव्दो मे घर कर वैठी ॥

कलिका सी सुकुमारी ‘डिक’ का– गाँधी पर विश्वास अटल था।
यात्री एक हवा से हल्का– पथ पर चलता हुआ अचल था ॥
‘डिक’ ने जीवन-साथी खोजा, कन्यादान दिया गाँधी ने।
अधिकारी को सौप धरोहर, प्रभु से प्रेम किया गाँधी ने ॥

विदा हो गई वेटी घर से, एक दूसरी शिष्या आई।
लघु लेखन के लिए ‘श्लेशिना’– सुमन बीन अजलि भर लाई ॥
रग द्वेष से दूर दूर वह– मन के पास खिंची आती थी।
हृदय शुद्ध था, झिझक नही थी, गौरव भरे गीत गाती थी ॥

त्याग-भाव की दिव्य मूर्ति थी, साहस मे वीरो की जय थी।
सुन्दर विमल चाँद, गगा सी, राजपूतनी सी निर्भय थी ॥
चाहे रात दिवस थक जाये, पर न कभी भी थकती थी वह।
वह दिन रात काम करती थी, पवन-वेग-सी इधर उधर बह ॥

तन से कोमल कली ‘श्लेशिना’, मन से शेर ववरनी थी वह।
गाँधी की श्रद्धा थी उसमे, पूजा वनी रागिनी वह वह ॥
जव आन्दोलन छिडा वहाँ पर, गाँधी कैद हुए कारा मे।
तव ‘श्लेशिना’ सिहनी श्रद्धा– आगे तैर चली धारा मे ॥

आन्दोलन का कार्यभार ले- तरणी चली तीर सी जल मे ।
'मिस स्लेशिना!' प्रणाम तुम्हे है, तुम पावनता हो निर्मल मे ॥
अमर 'गोखले' की वाणी ने- कल्याणी 'स्लेशिना' सराही ।
जो पथ पर जलता चलता है- राह दिखाता है वह राही ॥

हम जिनकी निन्दा करते हैं- वे देवियाँ पूज्य सबला है ।
और आज भारत की बहिने- घूँघट काढ बनी अबला है ॥
वे क्षत्राणी जो कि दुर्ग पर- दीवारे बन खडी हुई थी ।
इन आँखो ने देखा वे ही- हाथ बाँध कर पडी हुई थी ॥

भारत माँ की वीर वेटियो! उलटा आज प्रवाह बहा है ।
बोझ मत बनो, बनो शक्ति तुम, गाँधी तुम्हे पुकार रहा है ॥
पत्र 'इण्डियन ओपिनियन' मे- गाँधी मूर्त्तिमान हो आये ।
तन मन धन से पाल पत्र को- भारत माता के गुण गाये ॥

पत्र 'इण्डियन ओपिनियन' का- सेवा से करते सचालन ।
यदि अखबार निरकुश हो तो- करते है कुरीति का पालन ॥
जैसे उलटे जल-प्रवाह मे- लाखो गाँव डूब बह जाते ।
ऐसे ही अखबार निरकुश- मिला दूध मे विष फैलाते ॥

अगर लेखनी विष उगलेगी- सरिता की गति जल जायेगी ।
अच्छी बुरी वस्तुएँ जग मे, अच्छाई शुभ फल पायेगी ॥
लिखे पत्र मे लेख अनेको, जीवन का निचोड भर डाला ।
अपनी आत्मा को उडेल कर- सारे जग मे किया उजाला ॥

जो भी जहाँ बुराई देखी- गाँधी-वाणी ने धो डाली ।
जिससे पाप धुले दुनिया के- ऐसी गगा नदी निकाली ॥
भारत मे समाज-सेवी को- भगी, ढेढ, मेहतर कहते ।
उनको कह अछूत ठुकराते, आप बडे महलो मे रहते ॥

पापो का परिणाम कि हम सब– दक्षिण मे भगी कहलाये ।
इसीलिये 'अफ्रिका' देश मे– गोरो के दुतकारे खाये ॥
याद 'कुली लोकेशन' जिसमे– गाँधी ने विष पी, मधु घोला ।
जहाँ अछूत बने थे हम सब, आओ देखे 'भगी टोला' ॥

जहाँ फैल कीटाणु रोग के– भारत माँ को रुला जलाते ।
वहाँ पहुँच मेरे मन-मोहन– सीधे पथ पर हमे चलाते ॥
लगे रोगियो की सेवा मे, मिट्टी पानी का बल लेकर ।
साथ 'नर्स' ने सेवाये की, पर वह सत् सेविका गई मर ॥

भली नर्स को प्लेग लग गया, चली गई वह छोड कहानी ।
दुनिया मे दो दिन का मेला, नश्वर दुनिया आनी जानी ॥
बडे भले अँगरेज बहुत से– साथ साथ सेवा करते थे ।
मेरे गाँधी के चरणो मे– श्रद्धा से मस्तक धरते थे ॥

जहाँ प्लेग के कीडे देखे, गाँधी इन्जेक्शन से धाये ।
रोग न बढने दिया निमिष को, 'लोकेशन' से सभी हटाये ॥
खाली 'लोकेशन' करवा कर– प्लेग-रोग मे आग लगाई ।
रोग भरी वह खाली बस्ती– म्युनिसिपैलिटी ने जलवाई ॥

इतने कभी न खिलते देखे, जितने कमल खिले गाँधी से ।
पत्र 'क्रिटिक' के उपसम्पादक– 'पोलक' प्राण मिले गाँधी से ॥
पुस्तक 'रस्किन'-रचित 'अन्टु-दी-लास्ट' भेट मे दी पढने को ।
इस पुस्तक ने पथ बतलाया– नाव पहाडो पर चढने को ॥

कवि वह है जो अन्तस्तल की– सुप्त भावना जाग्रत कर दे ।
सब का भला भला अपना है, घट मे यही सुधा-घट भर दे ॥
नाई और वकील एक से, सादा श्रम जीवन प्रभात है ।
जो मिट्टी मे जीवन भरदे– बात असल मे वही बात है ॥

वह पुस्तक क्या जो जीवन मे– एक नया निर्माण न करदे ।
जो अपने मधु की वर्षा से– मुर्दो मे भी प्राण न भरदे ॥
इस पुस्तक के सत्यभाव से– सस्था बनी 'फिनिक्स' वहाँ पर ।
वही नया निर्माण हो गया– गाँधी के पग गये जहाँ पर ॥

इस सस्था मे सब सेवक थे, क्षण बेकार न करते थे वे ।
अपने अवलम्बन के बल से– जग की पीडा हरते थे वे ॥
पत्र 'इण्डियन ओपिनियन' मे– सारे काम स्वयम् करते थे ।
अक्षर जमा, यन्त्र मे जुटते, अर्थ सहित लक्षण धरते थे ॥

प्रात पत्र निकलना था पर– चलते चलते यन्त्र रुक गये ।
मानो गाँधी के चरणो मे– चल चल थक थक श्रमिक झुक गये ॥
सब कोशिश कर कर हारे पर– यन्त्र न टस से मस कर पाये ।
थक कर स्वेद-बिन्दु बरसाते– गाँधी जी के सम्मुख आये ॥

गाँधी जी मजदूर बन गये, हाथो से वे यन्त्र चलाये ।
छूते ही वे यन्त्र चल पडे, थके पथिक सब नाचे गाये ॥
जो कि आलसी होकर जग मे– खाट तोड रोटी पाते है ।
रोटी नही, खून अपना पी, श्रमिको का आमिष खाते है ॥

जो तन मन धन से श्रम करते– स्वर्ग उन्हो के लिए हर जगह ।
जो कि आलसी, नारकीय वे खाट तोडते रोगी रह रह ॥
श्रम को क्या असाध्य है जग मे ? मिट्टी से सोना निकाल ले ।
पानी पर पत्थर तैरादे, उँगली पर हिमगिरि उछाल ले ॥

गाँधी के साहस-सरोज पर– 'पोलक' भौरे से मँडराये ।
सत्य साधना के प्रताप से– गोरे चरण कमल मे आये ॥
सारी दुनिया ने यह देखा– 'पोलक' गाँधी भाई भाई ।
मधुकर मुग्ध हुआ भावो पर, निर्धन ने पारस निधि पाई ॥

धनाभाव के कारण 'पोलक'– प्रतिपल विरह व्यथा सहते थे।
प्रेम किसी कलिका से था पर– मन की बात नही कहते थे॥
मनमोहन ने मन की जानी, बोले– "अपना व्याह करो तुम!
मै हूँ साथ तुम्हारे 'पोलक'! किसी बात से नही डरो तुम॥

उधर विरह मे वह जलती है, इधर विरह मे जलते हो तुम।
आँसू बन कर ढल जाते हो, मन ही मन मे गलते हो तुम॥"
उनकी बात मान 'पोलक' ने– पत्र लिखा अपनी प्यारी को।
दिया व्याह के लिए निमन्त्रण– उस विलायती सुकुमारी को॥

विरह-अग्नि पर अमृत छिडक कर– गाँधी जी ने व्याह कराया।
प्रिया और प्रिय गले मिल गये, आँसू पोछे, हृदय मिलाया॥
इसी तरह से 'लेस्टर' कन्या– बनी 'वेस्ट' की प्रिया व्याह कर।
जगल मे मगल महकाया, गाँधी जी ने मधुर चाह भर॥

छोटी सी बस्ती 'फिनिक्स' मे– ये सब साथी साथ बस गये।
पर यात्री का बसना ही क्या, चले कही पर कही फँस गये॥
अफ्रीकी अँगरेज राज्य ने– "जुलू-वासियो" पर कर ठोके।
जो कर लेने आये उनके– पैर 'जुलू' वालो ने रोके॥

कर वसूल करने जो पहुँचा– वह अगरेज उन्होने मारा।
इस पर धधका राज्य क्रोध से, दहक उठा भीषण अङ्गारा॥
जल कर चढे 'जुलू' पर गोरे, धधक धधक कर दिया आक्रमण।
राजभक्त गाँधी जी के भी– उसी ओर चल पडे दृढ चरण॥

'सारजेट मेजर' के पद पर– मेरे गाँधी चले भक्ति से।
जल्दी जल्दी कदम चल पडे– गाँधी जी की महाशक्ति से॥
खूनी बलवा हुआ 'जुलू' मे, उडने लगे मुण्ड अम्बर मे।
रुधिर पिपासी महाचडिका– भरने लगी खून खप्पर मे॥

वढती चली राज्य की सेना, जल पर शान्त सरोज विराजा।
रक्त रँगी धरती के ऊपर– वजा राज्य का विजयी वाजा॥
सावन भादो से गाँधी जी– फिर 'फिनिक्स' आश्रम मे आये।
जनता ने जननायक पाकर– गा गा भाव-प्रसून चढाये॥

'वा' वापू की हर पग-ध्वनि पर– विजय ज्योति वन वन चलती थी।
पथ मे सूरज सी खिलती थी, घर मे दीपक सी जलती थी॥
वढे साधना पथ पर गाँधी, जग मे करने लगे तपस्या।
अपने जीवन से सुलझाई– जग की उलझी हुई समस्या॥

जिसकी तुलना हुई न होगी, वे ऐसे इन्सान वन गये।
कठिन कठिन व्रत कर जीवन मे, मानव से भगवान वन गये॥
जो भी वात निकाली मुँह से– उस पर पहले स्वयम् चले है।
हर आँसू उनका आँसू था, हर दीपक के लिए जले है॥

मानवता के दिव्य मुकुट पर– चाँद सूर्य जडने वाला वह।
जितने भी दीपक है जग मे– सव को याद आ रहा रह रह॥
भारत माँ के उस गौरव ने– पेड पेड पर फूल चढाये।
फूल फूल को गीत दिये है, गली गली मे दीप जलाये॥

लगे घायलो की सेवा मे, मानवता का मार्ग न भूले।
डाल डाल पल्लव पल्लव पर– वे दिन रात फूल से भूले॥
एक वार जव रुग्ण हुई 'वा', गाँधी वोले– "नमक न खाना।"
"नमक छोडना अमृत-पान है", "प्राण! नही पर सरल निभाना॥

"नमक आप से छुडवाऊँ यदि– तो न आप भी छोड सकेगे।"
"लो, वा! नमक आज से छोडा, चपल जीभ से होड वदेगे॥"
यह सुन 'वा' वोली– "ना ना प्रिय! मै तो वैसे ही कहती थी।"
रोने लगी, कहा, "प्रण छोडो!" वात न गाँधी की वहती थी॥

टस से मस न हुए तिल भर भी, 'वा' कह कर मन मे पछताई।
'वा' ने छोडा नमक, किन्तु वह– बात नही फिर वापिस आई॥
पत्नी के हित व्यजन त्यागे, दाल नमक का खाना छोडा।
जो भी तप व्रत किया वीर ने– कभी नही वह सयम तोडा॥

अत्याचार वढे जव जग मे– सत्याग्रह की सृष्टि हुई तब।
शक्ति अहिसा बन कर आई– समा स्वयम् मे अस्त्र शस्त्र सब॥
सच्चा सत्याग्रही वही है– जिसने मन मथ सत्य निकाला।
वही उजाला कर सकता है– जिसके मन मे हुआ उजाला॥

जिसने खोज सत्य को पाया– सत्याग्रह वह कर सकता है।
सच्चाई मे व्याप्त अहिसा, पाप अहिसा से डरता है॥
करते रहो घृणा पापो से, कोमल रहो सदा पापी पर।
कहा अहिसा के ईश्वर ने– पथ भूलो पर मनुज! दया कर॥

सत्याग्रह के बादल बरसे, धरती माँ ने ओक लगाई।
बादल पर बिजलियाँ चमकती, आग न पानी मे लग पाई॥
जिनके लिए मिटाया खुद को, जिनके लिए जान पर खेले–
वे ही छोड बन गये दुश्मन, सहते हैं हम तीर अकेले॥

जिनके साथ रहे 'वोअर' मे, सहन करी पग पग पर ज्वाला।
बहा 'जुलू' मे गर्म पसीना, जिनका शिवम् रहा जल काला॥
'अफ्रीकी' सरकार उसी पर– लेकर टूट पडी अगारे।
अपनी लाल लाल आँखे कर– झुके 'एशिया' पर हत्यारे॥

चोट 'एशिया' के मानस पर– करी 'एशिया धारा' धर कर।
गोरो के बरसे अगारे– सोते हुए 'एशिया' भर पर॥
खडे हो गये तृणछाला से, शान्तिदूत शीतल शिव शकर।
गाँधी जी ने शख बजाया, सुप्त एशिया के कानो पर॥

आँखे खुली देख कर ज्वाला, सागर उमड पडा आँखो से।
हवा वदल चल पडा पथिक वह, पत्थर तोड तोड पाँवो से ॥
मचली हवा, क्रान्ति-स्वर गूँजे– "क्यो रस्सी मे वँधे पडे हो ?
काले कानूनो के आगे– क्यो नतमस्तक हुए खडे हो ?"

सुन कर शखनाद गाँधी का– भारतीय महिलाये आई।
विजय-शिखा तामिल वहिनो ने– सत्याग्रह मे होड लगाई ॥
शखनाद सुन कर 'वा' वोली– "मैं भी रण मे साथ चलूँगी।
अपने दीपक की इच्छा पर– दीप-शिखा सी नाथ! जलूँगी ॥"

सूरज दमक उठा मेघो मे, किरणे निकल पडी चावो से।
सागर धीरज धर कर बोला– उमडे हुए वीर भावो से ॥
"जिसे यातनाओ का भय हो, वह न समर मे पैर वढाये।
वही साथ मे वढे अगाडी– जो देवी पर शीश चढाये ॥

रण से पीठ दिखाने वाले– घर मे जा जा कर सो जाये।
पति पत्नी का मोह न जिनको– अग्नि-परीक्षा मे वे आये ॥
वलिवेदी पर तन मन धन सव– तुमको भेट चढाना होगा।
स्वयम् चिता मे जल कर तुमको– जग मे दीप जलाना होगा ॥"

गर्ज सिहनी वोल उठी यह– "मौत नही किसको आती है ?
उसको जिसकी चिता देश के– स्वाभिमान पर जल जाती है ॥
चाहे मास नोच चिमटो से– कोई जिन्दा हमे जलाये।
किन्तु हमारी यादगार पर– रक्त-रँगा झण्डा लहराये ॥

हम भारत माँ की वेटी हैं, मातृ-भूमि का मान न देगी।
जल जल चल चल सत्याग्रह कर– अपनी स्वतन्त्रता ले लेगी ॥"
गूँज उठी हुकार विजय सी, गाँधी का मानस लहराया।
मानो पाकर प्रखर चन्द्रमा– ज्वार हृदय-सागर मे आया ॥

स्वतन्त्रता की उस मजिल पर- दीप-शिखाये जल जल चलदी ।
सरिताओ की कल कल ध्वनि सी- लहरो पर वे उज्ज्वल चलदी ॥
मानो रिमझिम करती वर्षा- अगारो के लिए बढ चली ।
या उन काले कानूनो पर- लपकी कडक कडक कर बिजली ॥

घूँघट पलट दिये बहिनो ने, पहिन लिया केसरिया बाना ।
रुनझुन की मनहर लहरो पर- गूँज उठा वीरो का गाना ॥
आकर्षण था, लेकिन उसमे- आवाहन था अमर लोक का ।
रूप-ज्योति थी, लेकिन उसमे- जलता था दीपक अशोक का ॥

बरस रही थी उन आँखो से- देशभक्ति की मनहर हाला ।
जली हुई थी उन आँखो मे- आग बुझाने वाली ज्वाला ॥
लाली थी अधरो पर, लेकिन- देश-प्रेम के अभिमानो की ।
रोली थी माथो पर, लेकिन- स्वतन्त्रता के बलिदानो की ॥

"सरहद लाँघ बिना परवाने"- सत्याग्रह आरम्भ कर दिया ।
खडी रह गई पुलिस, उन्होने- 'ट्रान्सवाल' मे पैर धर दिया ॥
पहुँच कोयले की खानो पर- किरणो ने झण्डा फहराया ।
बढी 'न्यूकसल' मे महिलाये, दुर्ग विजय कर दीप जलाया ॥

भारतीय मजदूर बिचारे- काम कर रहे थे खानो मे ।
'तीन पौड कर' देने वाले- बिके हुए थे कुछ आनो मे ॥
खनक उठी चूडियाँ सुनहरी, जागी मजदूरो की टोली ।
'काम छोड दो! काम छोड दो!!' गूँज उठी श्रमिको की बोली ॥

ऐसी हवा चली बापू की, सजग हुई चलती दीवारे ।
पैरो से छोटी होती है, महलो की ऊँची मीनारे ॥
बढते पैरो की बढती ध्वनि- मजदूरो पर असर कर गई ।
फिर क्या था! उन मजदूरो से- 'अफ्रीका' की जेल भर गई ॥

भभक उठी मग्कार भयानक, वीर देवियाँ वन्दी कग्नी ।
नीद छोड कर मिह दहाडे, दैत्यो ने मीनाये हग्नी ॥
वहिनो का वलिदान कि जिमने— मोने भारत वीर जगाये ।
मत्याग्रह की वलिवेदी पर— मवमे पहिले दीप जलाये ॥

शेर 'फिरोज शाह' ने भी जव— मुना कैद देवियाँ हो रही ।
कहा गर्ज कर, मौन न वैठो, आँखे काले दाग धो रही ॥
कठिन यन्त्रणाएँ दी उनको, 'मॉग्टिम्वर्ग' जेल मे डाला ।
वे फाँमी से भी कव डरते— जिनके अन्तम्तल मे ज्वाला ॥

ऐमा खाना दिया उन्हो को— जिसे न कुत्ते भी ग्वा पाये ।
इतना अधिक सताया उनको— जिममे आँसू भी जल जाये ॥
जवकि जेल से छुटी देवियाँ— हड्डी के ढाँचे वाकी थे ।
वाकी वूँद न रही रक्त की, वे खाली साँचे वाकी थे ॥

कोई रोगी होकर निकली, कोई मुर्दे से वदतर थी ।
छुटी भयकर ज्वर से पीडित— वीर 'वालियामा' सुन्दर थी ॥
जव मरने के निकट हुई तव— वह वालिका जेल से छूटी ।
उसे देख कर तपालोक के— कमल-नयन मे गगा फूटी ॥

देख रुग्ण-शय्या पर उसको— आँखो ने जल-वन्धन खोले ।
"वहुत दु ख पाये कारा मे"— पाम वैठ कर वापू वोले ॥
"फूलो जैसा वदन सूख कर— काँटे जैमा हुआ जेल मे ।
पर तुम ऐसे हँसती निकली— जैसे वालक जीत ग्वेल मे ॥"

कहा 'वालियामा' ने हँस कर— "पश्चात्ताप दु ग्व क्यो ? कैमा ?
वडे भाग्य से वडे पुण्य से— पाया मैंने अवमर ऐमा ॥
अगर इसी क्षण पुन पकड कर— मुझे जेल मे ले जाये वे ।
मैं तैयार जेल जाने को, मुझे पकडने फिर आये वे ॥

फिर वह मजदूरो से बोला– "धैर्य धार कर चलो काम पर !
सब माँगे पूरी कर देगे– गोरे राजा सोच समझ कर ।।"
चले गये मजदूर विचारे, भीषण हत्याकाण्ड रुक गया।
मानो बालक की उँगली पर– उमड घुमड आकाश झुक गया ।।

उधर जेल मे बन्दी-दल पर– गोरे बहुत जुल्म ढाते थे।
पर अपने हाथो से अपनी– कब्र खोद दबते जाते थे ।।
देख शान्ति से सत्याग्रह को– गोरो की तोपे शरमाई।
टूट गई हिसा की हिम्मत, बन्दूको ने आँख झुकाई ।।

तार 'गोखले' पर यह पहुँचा– सैनिक पडे कैद मे सारे।
भारत से 'अफ्रीका' भेजे– भारत की आँखो के तारे ।।
वीर 'पियर्सन', 'एण्डरूज' भी– 'अफ्रीका' को चले यान से।
आगे की स्थिति सोच रहे थे– मेरे गाँधी बडे ध्यान से ।।

निर्दोषो को बन्दी करके– राज्य नही कर सकता कोई।
बडे बडे सिहासन डोले– जबकि तडप कर पीडा रोई ।।
वीर हजारो थे जेलो मे, शासक डरे, उधार धर दिया।
रख दो-तीन मास कारा मे, निर्दोषो को मुक्त कर दिया ।।

सत्याग्रहियो की ताकत से– गर्वित 'जनरल स्मट्स' झुक गये।
गाँधी मे वे गुण थे जिनसे– बहते हुए समुद्र रुक गये ।।
मिले 'स्मट्स' से गाँधी जी जब– तब उस पर प्रभाव वह छोडा।
इतिहासो मे नही मिला है– जिसका कही अभी तक जोडा ।।

गाँधी जी के सत्याग्रह मे– विश्व-शान्ति के भाव व्याप्त थे।
अन्तर मे घुस बसने वाले– गाँधी को वरदान प्राप्त थे ।।
वीर 'पियर्सन', 'एण्डरूज' भी– 'प्रिटोरिया' मे साथ साथ थे।
शुद्ध हृदय के दोनो सेवक– गाँधी के दाहिने हाथ थे ।।

'जनरल स्मट्स' पिघल कर बोले– "हमने निर्मित किया कमीशन।"
"भारतवासी भी प्रतिनिधि हो"– गाँधी ने कह दिया तभी तन ॥
किन्तु 'स्मट्स' ने कहा उन्हो से– "खबर कमीशन की आने दो।
जो कुछ किया ठीक है वह सब, अब ज्यादा मॉगे जाने दो ॥

सारा न्याय कमीशन पर है, तुम अपनी मॉगे समझाओ!
दॉत लगाओ मत गुत्थी पर, हाथो से गुत्थी सुलझाओ!!"
शान्त प्रकृति से गाँधी बोले– "हमको केवल न्याय चाहिये।
सब को दूध बराबर दे जो– हमको ऐसी गाय चाहिये ॥

'तीन पौंड का कर' सिर पर से– न्याय-उदधि मे डाल डुबादो!
भेद-नीति फैलाने वाले– उलझे उलटे जाल डुबादो!!
रोक-टोक के बिना यहाँ पर– सब भारतवासी रह पाये।
भारतीय विधि से जो शादी, वे कानूनी समझी जाये ॥

'ऑरेञ्जिया' न्याय के वादे– कार्य-रूप मे परिणत कर दो!
जो जिसका अधिकार उसे तुम– उसको शीघ्र हस्तगत कर दो!!
यदि ये सब बाते मानोगे– तो सत्याग्रह रुक जायेगा।
न्याय-नीति के मन-मन्दिर मे– अटल हिमालय झुक जायेगा ॥

अत्याचार मौत से डर कर– सत्याग्रही नही झुक सकता।
ऑधी हो या पानी पथ मे, राही कभी नही रुक सकता ॥
मै तो चलने का अभ्यासी, हार जीत की मुझे क्या पडी।"
फूल डालियो ने बरसाये, मुकुट पहिन कर प्रकृति थी खडी ॥

फूलो के उस सिहासन पर– गाँधी जी की वाणी चमकी।
वाणी पर अर्चना-दीप ले– फूलो की मालाये दमकी ॥
मॉगे सभी न्याय-सगत थी, गाँधी-स्वर मे घुला कमीशन।
चन्दन के वन के सौरभ से– कडुवे पेड बन गये चन्दन ॥

तर्क हुआ 'पार्लियामेट' मे, गाँधी जी की मागे मानी ।
गाँधी को गोदी मे पाकर– भारतभूमि बनी अभिमानी ॥
ससद की शुभ न्याय-नीति पर– गाँधी जी ने शख बजाये ।
गाँधी वह सूरज है जिससे– राहु केतु दोनो शरमाये ॥

सत्य अहिसा के चरणो मे– हिसा की तलवार झुक गई ।
गाँधी जी की गति के आगे– चलती हुई कृपाण रुक गई ॥
स्वतन्त्रता की अमर जीत मे– प्रसन्नता से मनी दिवाली ।
जहाँ चरण पहुँचे गाँधी के– वहाँ तभी खिल गई उजाली ॥

थकते सदा सताने वाले, सहने वाली नही थकेगी ।
दुनिया की अद्भुत पुस्तक को– बिना पढी ही बाँच सकेगी ॥
पराधीनता के पागल पल– बादल बन कर बरस रहे हैं ।
वीणा के टूटे तारो पर– भाव अधूरे तरस रहे हैं ॥

द्वादश सर्ग

दलितोद्धार

मन-मन्दिर मे जय-ज्योति दिखा-
वह दीप-शिखा जलती चलदी। -
चलदी पग-दीप लिए वटिया-
हँसती हँसती जलदी जलदी ।।
जलता हर दीप प्रकाश भरा,
हर जीत पराजय मे लय हो।
जय-दीप जलें, जग जीत चले,
जय भारत की जय हो, जय हो !

देशभक्ति ने अर्घ्य चढाया, सत्याग्रह ने शान्त जल दिया।
व्रत, उपवास और सयम से- सिंचित सत्य स्वरूप चल दिया ।।
हर ध्वनि, हर कम्पन, हर पग से- नये नये इतिहास लिख चला।
हृदय हृदय मे, नयन नयन मे- ईश्वर पर विश्वास लिख चला ।।

रहे जहाँ इक्कीस वर्ष तक, अगणित अनुभव मिले जहाँ से-
स्वतन्त्रता के दीप जला कर- गाँधी जी चल पडे वहाँ से ।।
कड़ुवे मीठे अनुभव मे से- जीवन का उद्देश्य निकाला।
एक तत्त्व है, एक रूप है, गाँधी जीवन और उजाला ।।

जब वे चलने लगे वहाँ से- पिघल प्रेम से आँसू निकले।
रोये वे पत्थर तक जिन पर- बरस बरस कर आँसू फिसले ।।
'अफ्रीका' का कण कण रोया, धरती रोई, रोया अम्बर।
कैसे उसकी विदा सहन हो- धरती अम्बर जिसके ऊपर ।।

'केलनवेक' मित्र गाँधी के– साथ साथ चल पडे वहाँ से।
मैं भी पल पल ढूँढ रहा हूँ– ऐसा साथी मिले कहाँ से ।।
मानस उछला, सात पौंड की– दूरवीन सागर मे डाली।
मानो कोई ज्योति छूट कर, दिव्य-दृष्टि वन गई उजाली ।।

दूरवीन मिल गई दूसरी– गाँधी के मानस-सागर मे।
डुवकी लेकर भर लाया हूँ– वह रस का सागर गागर मे ।।
यात्रा का रस हृदयंगम कर– 'वा' के साथ 'विलायत' आये।
'पैरिस' मे 'गोखले' सुधा पर– चुग चुग श्रद्धा सुमन चढाये ।।

इधर 'विलायत' पहुँचे गाँधी, उधर वहाँ सग्राम छिड गया।
राग द्वेष से रहित वीर वह– सेवा मे अविराम भिड गया ।।
आँखो के गीले घावो पर– मन-मरहम के लेप कराये।
शस्त्र-युद्ध मे सेवा करके– मानवता के दीप जलाये ।।

'पोलक' तथा वहुत से साथी– इन वातो को पाप मानते।
पर पापो से दूपित दुनिया– गाँधी सौ सौ वार छानते ।।
कुछ अँगरेज अफसरो ने मिल– उन मे भेद-नीति फैलाई।
गाँधी-दल मे फूट डाल दी, कच्चे घर मे आग लगाई ।।

जो सच्चे से छल करता है, छल से वही छला जाता है।
मोती वोकर मोती पाता, काँटे वो काँटे पाता है ।।
सत्याग्रह की पगडण्डी पर– गाँधी जी सेवा करते थे।
मरहम पट्टी कर घावो की– घायल की पीडा हरते थे ।।

धन्वन्तरि भगवान वन गये– मोहनदास करमचँद गाँधी।
घायल दुनिया के घावो पर– गाँधी जी ने पट्टी वाँधी ।।
विपदाओ के वादल टूटे, लेकिन तनिक न हिला हिमालय।
दुनिया ने लालच दिखलाये, लेकिन डिगा नही न्यायालय ।।

दर्द हुआ पसली मे लेकिन– नैसर्गिक उपचार न छोड़ा ।
वही अमर है, वही देवता– जिसने कभी नही व्रत तोड़ा ॥
कर्त्तव्यो का पालन करके– चला 'विलायत' मे वह ज्ञानी ।
लक्ष्य-मार्ग पर पथिक चल पडा, धूप शीत मे चादर तानी ॥

गये 'केलनवेक' विदा मे, गाँधी का मानस भर आया ।
पत्थर तक भी रहा न ऐसा– जिसने आँसू नही बहाया ॥
जल मे गाँधी लगे तैरने, 'यान एण्ड्रयो' चला जलधि मे ।
भारत की खोई स्वतन्त्रता– लगे ढूँढने महा उदधि मे ॥

मजिल मजिल चल गाँधी ने– मातृभूमि के दर्शन पाये ।
आ पहुँचे 'बम्बई' शहर मे, गूँथ 'गोखले' माला लाये ॥
सागर-तट पर 'स्वागत स्वागत !' गूँज उठी सडको की बोली ।
ज्वारभाट ने चरण पखारे, अम्बर ने बरसाई रोली ॥

गद्गद् होकर मिले 'गोखले', फूलो मे भर गया किनारा ।
धरती पर सूरज सा चमका– भारत की आँखो का तारा ॥
गाँधी जी के अभिनन्दन मे– बडे चाव से सभा बुलाई ।
स्वागत-गीत पढे इँगलिश मे, गाँधी जी को लज्जा आई ॥

अँगरेजी भाषा मे ही था– 'जिन्ना साहब' का भी भाषण ।
भाषा की यह देख गुलामी– रोया गाँधी का मन-प्रागण ॥
बोले, "भारतीय भाषा मे– मातृभूमि के गुण-गण गाये ।
अपनी भाषा, अपना भारत, मगलमय आचरण दिखाये ॥

वह क्या राष्ट्र जहाँ के वासी– अपनी भाषा बोल न पाये ?
भाषा की दासता पाप है, अपनी ही भाषा मे गाये ॥
वह स्वतन्त्र भी पराधीन है– जिसके पास न अपनी भाषा ।
भाषा ही मे बसी हुई है– भारत माता की अभिलाषा ॥"

भारत मे आये गाँधी जी सव की करने लगे वकालत।
सत्य वोल कर सत्य दिखाना, उस वकील की थी यह आदत॥
विना सत्य के शान्ति नही है, सोने का व्यापार खुला है।
काले रँग से कहो कभी क्या- मुँह का काला दाग धुला है।

गाँधी ने अपने जीवन मे- सच्चाई से करी वकालत।
उलझे हुए मुकदमे जीते, सत्य-पक्ष मे हुई अदालत॥
एक मवक्किल न्यायालय मे- झूठ वोल कर चला जीतने।
दलदल मे सत्पथ दिखलाया- गाँधी जी के मधुर गीत ने॥

बोले, भूल मान लो अपनी, करो अटल विश्वास सत्य पर।
सच सच कहा मवक्किल ने सव, गाँधी जी की बात मान कर॥
न्यायालय यह सत्य देख कर- दबा दाँत मे उँगली बोला-
आज वकीलो के गाँधी ने- सव के लिए सत्य-पथ खोला॥

चालाकी से झूठ वोलना, छोडो अरे मनुष्यो! छोडो।
सच से करो आत्म-वल धारण, पशु-वल की जजीरे तोडो॥
वचे 'पारसी रुस्तम जी' भी- ऐसे ही चुगी-चोरी से।
गाँधी जी ने इसी सत्य से- रस खीचा पोरी पोरी से॥

सच्चाई का शीशा दिखला - 'रुस्तम जी' को छुडा ले गये।
अपने राई से जीवन से- पर्वत तक को उडा ले गये॥
एक नयी धारा वह निकली, गाँधी आगे वढे जहाँ से।
'शान्ति निकेतन' के दर्शन कर- 'राजकोट' चल पडे वहाँ से॥

दर्जी 'मोतीलाल' प्रजा-जन - इनसे आकर मिले राह मे।
स्वतन्त्रता की चाह भरी थी- उस भावुक की करुण आह मे॥
वोला, 'वीरम गाम' हमारा- वन्दी है 'जकात' भारी से।
हमे वचाओ इस विपदा से, भरा हुआ दिल जल खारी से॥

गाँधी जी बोले 'मोती' से– आप जेल भी चल सकते हैं ?
'मोती' बोला, नही जेल ही, हम जिन्दा भी जल सकते है ।।
जो कुछ शब्द कहे 'मोती' ने, वे सच्चे भी कर दिखलाये ।
भरी जवानी जला देश पर, उद्देश्यो के दीप जलाये ।।

गाँधी जी के तनिक यत्न से– 'वीरमगाम जकात' हट गई ।
सत्याग्रह के अमर अस्त्र से– हत्यारी तलवार कट गई ।।
'राजकोट' मे घर पर पहुँचे, मिले कुटुम्ब और मित्रो से ।
कितनी ही घटनाये चित्रित– मर्म भरे उनके चित्रो से ।।

कुछ दिन 'राजकोट' मे रहकर– फिर वे 'शान्ति निकेतन' आये ।
कवि की काव्य कला से सज्जित– कलाकुन्ज के दर्शन पाये ।।
देखी ऐसी कला कि जिसमे– जीवन की अभिव्यक्ति बोलती ।
सुने मधुर सगीत कि जिनमे– वीणा वाली शक्ति बोलती ।।

काव्य कला सगीत न जिसमे– वह जीवन जागृति क्या जाने ?
वह मरघट है, वह मसान है– जहाँ न है जीवन के गाने ।।
कलानिपुण साथी मित्रो से– गाँधी जी ने हृदय मिलाया ।
या कि पूर्ण साकार कला ने– 'शान्ति निकेतन' स्वर्ग बनाया ।।

'काका कालेलकर', 'पियर्सन', आदि स्वयम् पर अवलम्बित थे ।
सारे काम हाथ से करके– वे नन्दन वन से विकसित थे ।।
बाँसो उछल पडे गाँधी जी, स्वावलम्ब के देवलोक मे ।
जो अपने ऊपर अवलम्बित– वे न पडेगे कभी शोक मे ।।

किन्तु शोक से मृत्युलोक मे– किसके मन मे चीस नही है !
ऐसा कोई नही मिलेगा– जिसके मन मे टीस नही है ।।
सहसा तार मिला गाँधी को– वीर 'गोखले' स्वर्ग सिधारे ।
आँखो मे छा गया अँधेरा, मूक खडे रह गये विचारे ।।

जल के विना मीन हो जैसे, ऐसे गाँधी खडे रह गये।
जिन्हे न दुख शोक दुनिया मे, शोक-उदधि मे आज वह गये ॥
'शान्ति निकेतन' से गाँधी जी– 'पूना' को चल पडे उसी क्षण।
वही रेल मे चला वैठकर– जिसके दम से चलता कण कण ॥

'पूना' पहुँचे, हृदय रो पडा, रुके न आँसू धीर पुरुष के।
टूट गई पतवार वीच मे, घुटने टूटे वीर पुरुष के ॥
पर गाँधी जी का तो सव से– आध्यात्मिक सम्वन्ध जुडा था।
लौकिक और पारलौकिक पर– पर के विना प्रकाश उडा था ॥

ज्ञान की गगा वहा कर, वे वने आकाश-गगा।
'गोखले' के गीत लेकर, उड रहा नभ मे तिरगा ॥
क्या कभी आदर्श मरते ? वे अमर निर्माण मे हैं।
सगुण निर्गुण मे गये मिल, प्राण वे निर्वाण मे है ॥

'पूना' से 'रगून' चल दिये, फिर 'कलकत्ता' वापिस आये।
'कलकत्ता' स 'हरिद्वार' को– गाँधी जी ने चरण वढाये ॥
'हिन्दू मुस्लिम पानी' पी पी– गगाजल से प्यास वुझाई।
गाँधी जी के दर्शन करने– दौडे आये लोग लुगाई ॥

निर्मल गगाजल पी पी कर– कुछ तो हर हर हर करते थे।
पाखण्डी मेढक से साधू– कुछ तट पर टर टर करते थे ॥
तरह तरह के रूप रचा कर– भिक्षुक आये ठगने वाले।
वस्त्र जोगिया, पर मन भोगी, तन के श्वेत, हृदय के काले ॥

'हरिद्वार' 'हर की पैडी' पर– गूँज रहा था स्वर 'हर हर हर'।
नीले हीरो की लहरो मे– विछा हुआ था सत सँगमर्मर ॥
कही कमल सी श्वेत देवियाँ– जल मे केलि किलोल कर रही।
लहरो मे सुर घोल रास रच– मीठे मीठे वोल भर रही ॥

कही आरती गगा जी की, कही बज रही थी घडियाले ।
कही वेद-ध्वनि गूँज रही थी, कही बिछ रही थी मृगछाले ॥
गगा की लहरो मे मछली- कभी तैरती, कभी उछलती ।
आटे की गोलियाँ देखकर- जल की जाली चीर निकलती ॥

कोई मछली पकड मारते, कोई आटा माँड खिलाते ।
वधिक जानवर मारा करते, किन्तु जानवर दूध पिलाते ॥
ऋषियो के दर्शन करने फिर- गाँधी जी 'ऋषिकेश' चल दिये ।
'स्वर्गाश्रम' मे शान्ति सलिल से- शेष महेश नरेश चल दिये ॥

लोहे के उस पुल पर पहुँचे- जिसे देखने दुनिया जाती ।
'लक्ष्मण भूले' मे जा पहुँचे, जहाँ प्रकृति फूलो पर गाती ॥
चाँद जहाँ गगा मे खेले, किरणे जहाँ सितार बजाती ।
जहाँ चाँदनी की बौछारे- लहर लहर पर दीप जलाती ॥

फूल स्वयम् ही टूट टूट कर- जहाँ चढ रहे थे ईश्वर पर ।
रजनी जहाँ दीपमाला ले- वीन बजाती नाच नाच कर ॥
डाली डाली झूम झूम कर- सुना रही थी मीठे गाने ।
वायु नर्त्तकी नाच रही थी, गाते थे भौरे मस्ताने ॥

हृदय हृदय मे सिहर सिहर कर- मधुर मधुर झनकार सुनाती ।
जलतरग की तान सुना कर- अन्तस्तल के तार बजाती ॥
गगा-तट पर प्रकृति-प्रिया का- लहरो ने शृगार किया था ।
और तपस्या के गीतो ने- उसे दूर से प्यार किया था ॥

चाँद सूर्य का झूमर टीका- छवि अलबेली पहिन चली थी ।
तारो का सतलडा पहिन कर- दमकाती अलि गली गली थी ॥
इन्द्रधनुष से उन नयनो मे- मधुर घटाओ का था अजन ।
उन आँखो से आँख मिलाता- वन मे घूम रहा था खजन ॥

प्रकृति-प्रिया की उँगली पकडे, नाविक लहरो पर चलता था।
जिधर देखते उसी ओर बस– स्वागत मे दीपक जलता था॥
ऊँची ऊँची पर्वत माला, हरी दूब पर बिछी चादनी।
मोर नाचते, कोयल गाती, पक्षी गाते मधुर रागनी॥

कोलाहल से दूर स्वर्ग मे– प्रकृति नाचती, वर्षा गाती।
वायु विजन का आलिगन कर– प्रथम मिलन के गीत सुनाती॥
रिमझिम रिमझिम, रुनझुन रुनझुन– वर्षा मोती लुटा रही थी।
वर्षा की निर्मल लहरो मे– स्वर्गलोक की साध बही थी॥

हीरे मोती के मन्दिर मे– प्रकृति-सुन्दरी सजी खडी थी।
उपमा किस से दूँ उस छवि की, चरणो मे उर्वशी पडी थी॥
गगा के इस पार शान्ति थी, और उधर सब दुनिया रोती।
मधुर प्रकृति जब पखा झलती, सारी सृष्टि शान्ति से सोती॥

कृत्रिम नश्वर सुन्दरता से– प्रकृति-सुन्दरी की क्या तुलना?
मुक्ति नही, बन्धन है जिसमे, उस दरवाजे का क्या खुलना?
गये 'अहमदाबाद' वहाँ से, ग्राम 'कोचरब' मे हल देखा।
'सत्याग्रह आश्रम' स्थापित कर– पाई अमर सत्य की रेखा॥

शान्ति, प्रेम, आदर्श, मनुजता, आश्रम मे मुखरित थे सब सुख।
छुआछूत का भेद नही था, एक प्राण थे और एक मुख॥
मानवता के उस मन्दिर मे– ऊँच नीच की बात नही थी।
वह थी दीपमालिका आली! जिसमे काली रात नही थी॥

दुनिया मे इन्सान एक से, पर वह भगी, यह चमार है।
वर्ण भेद का खड्ग चल रहा, शोणित की बह रही धार है॥
वही रक्त है, वही मास है, वही रूप है, वही देह है।
किन्तु भेद कितना भारी है, पानी मे बह रहा स्नेह है॥

हम उनको अछूत बतलाते, वे हमको पवित्र करते हैं।
वे सब की सेवा करते हैं, हम उनसे भिडते डरते हैं॥
भगी जितनी सेवा करते— नही सगा बेटा कर सकता।
कौन बालटी मे मैला भर— अपने कन्धे पर धर सकता ?

कौन उठा कूडा सडको से— अपने सिर पर ले जाता है ?
कहो, कौन दुर्गन्ध उठाकर— सब को सौरभ दे जाता है ?
वह देखो, भगी का घर है, चूल्हे पर मिट्टी की हँडिया।
वह सेठानी गाली देती— "कूडा नही उठाया रँडिया !"

चूल्हे पर हँडिया, पर भगन— झाड़ू उठा चली मल ढोने।
अपना आटा मँडा छोडकर— बडे घरो का मैला धोने॥
उठा टोकरा, झाड़ू लेकर, चुपके चुपके चली जा रही।
कूडा लिये खडी कूडे सी, चली जा रही, छली जा रही॥

और उधर भगी का मुन्ना— सडको पर दे रहा बुहारी।
झूठी कूटी रोटी लेती— भगी की बेटी बेचारी॥
बारह बजे धूप वर्षा मे— रोटी लेती डोल रही है।
झूठे बचे हुए टुकडो मे— अपना जीवन तोल रही है॥

वह देखो, भगी की दुलहन— लज्जा से निज मुँह लपेट कर—
अपने यौवन की गगरी मे— ले जाती मैला समेट कर।
भारत माँ के इन लालो को—हम 'दुर! दुर!! दुर!!!' गाली देते।
मानो अपने अग काट कर— फेक कोष की ताली देते॥

हाय! कलेजे के टुकडो को— हम पैरो से कुचल रहे है।
वे अपने हरिजन भाई हैं, जो आँसू से ढले बहे हैं॥
कूडे पर बिखरे फूलो को— लगा हृदय से गाँधी बोले—
"मेरे आश्रम मे सब आओ !" मन्दिर के दरवाजे खोले॥

हरिजन भाई दौड दौड कर, 'सत्याग्रह आश्रम' मे आये।
गाँधी जी ने लगा गले से, हरि हर राम नाम गुण गाये॥
किन्तु हमारे हिन्दू भाई— भभक उठे यह स्वर्ग देखकर।
घर खाली करवा, गाँधी को— खडा कर दिया चौराहे पर॥

गाँधी जी ने किसी मैल से— करी न अपनी चादर मैली।
किन्तु प्रेरणा हुई किसी को, गाँधी को दी धन की थैली॥
गाँधी जी को रुपया देने— 'भामाशाह' दौड कर आये।
एक अपरिचित ने चुपके से— आकर नोट उन्हे पकडाये॥

उसी द्रव्य से गाँधी जी ने— खीची उस आश्रम की गाडी।
आश्रम ही क्या, उन कन्धो पर— बढे बैठकर सभी अगाडी॥
'सत्याग्रह आश्रम' मे गाँधी— सब से मीठी बाते करते।
छुआछूत का भेद छोड कर— एक कुएँ पर पानी भरते॥

बडे बडे तूफान उठे पर— नाविक नौका पार ले गया।
बाहर भीतर उठे जलजले, पर वह जर्जर नाव खे गया॥
टूटे विपत्तियो के बादल, किन्तु न उसने हिम्मत हारी।
आँखो ही मे पिया पथिक ने— अपनी आँखो का जल खारी॥

अगला कदम उठा गाँधी का— 'कुली प्रथा' के जलते पथ पर।
शीतल जल बरसाते निकले— गाँधी 'गिरमिट प्रथा' कुचल कर॥
पाँच वर्ष के लिए श्रमिक का— मीठा खून न बिकने पाया।
कोने कोने मे गाँधी ने— उनका सन्देशा पहुँचाया॥

शासन के बहरे कानो मे— पहुँची गाँधी जी की वाणी।
वाणी की वीणा बजते ही— बरस पडी कविता कल्याणी॥
धैर्य शान्ति से गाँधी जी ने— सब के सुख का तत्त्व निकाला।
जीवन से जीवन बरसाकर— भरा विश्व का खाली प्याला।

गाँधी जी 'गोमती' किनारे— काँगरेस-अधिवेशन मे थे।
मानो तारक-मण्डल मे शशि, या कि राम नन्दन वन मे थे॥
बहते हुए आँसुओ ने आ— 'चम्पारन' की कही कहानी।
पानी देख देख आँखो का— हिला शान्त सागर का पानी॥

पथ के ककड पत्थर चुगते— गाँधी 'जनकपुरी' जा पहुँचे।
मजिल मजिल चलते चलते— यात्री 'चम्पारन' आ पहुँचे॥
जैसे आमो के वन वैसे— वहाँ नील के नीले वन थे।
किन्तु जमीदारो के हाथो— बिके हुए सब के जीवन थे॥

दबे 'तीन कठिया' के कर से— जमीदार की खेती करते।
अपना ताजा खून बहा कर— निलहे धनिको के घर भरते॥
भरते थे धनवानो के घर, पर उनके प्याले रीते थे।
करते कृषक 'नील' की खेती, जल देकर आँसू पीते थे॥

श्रमिको के माथे से गाँधी— चले 'नील का दाग' मिटाने।
पैसा ही सब कुछ न विश्व मे— चले प्यार का दीप दिखाने॥
करुणा से कोमल कृपको ने— गाँधी जी का पल्ला पकडा।
'चम्पारन' मे चरण चल पडे, लिपट गया पैरो से झगडा॥

'ब्रजकिशोर बाबू वकील' ने— बापू को सब दशा दिखाई।
पीडित 'राजकुमार शुक्ल' ने— छाती की ज्वाला दिखलाई॥
सच्चा स्नेह हृदय मे जिसके— उसने गाँधी जी को जीता।
'राम राम' रटती रहती थी, 'रावण' की कारा मे 'सीता'॥

गाँधी जी ने कर्मयोग से— मानवता की नीव थाम ली।
मोहन ने अर्जुन के रथ की— अपने हाथो मे लगाम ली॥
'मजहरुलहक' मिले 'पटना' मे, हँसते हुए मिले 'कृपलानी'।
आ 'राजेन्द्र प्रसाद' मिल गये, मिला प्यास को मानो पानी॥

जन-रत्न मिले, सुख स्वप्न खिले,
जय-दीप जले, कृपि नाच रही।
सरिता निकली हरि के पग पा,
उर केसर से रस धार बही॥
जननायक जीवन-दीप बने,
स्वर जाग उठे, छलकी गगरी॥
तन धार खडी युग की करुणा,
बरसात बनी जल की गगरी।

कृषको पर अत्याचारो की– 'कृपलानी' ने कही कहानी।
गर्ज वकीलो की वाणी से– छल छल करती चली जवानी॥
इस 'वकील मण्डल' के गाँधी– प्रेम-बाँध पर चल कर निकले।
उस नर का इतिहास अमर है– जो न कभी मजिल से फिसले॥

प्रण कर लिया सभी वीरो ने– 'प्रथा तीन कठिया' तोडेगे।
और लोक-सेवा करने मे– हम न कभी भी मुँह मोडेगे॥
गाँधी जी ने कहा सभी से– शायद पडे जेल भी जाना।
वीरो ने कह दिया हर्ष से– मरने से कैसा घबराना!

जिसे मिला उत्साह चाह से– उसने कभी न हिम्मत हारी।
जीवन की गति रोक न पाई– मौत आज तक भी बेचारी॥
मिले 'नील के मालिक' गण से, किन्तु न बातो से वे माने।
और कमिश्नर कोडा लेकर– गाँधी जी को लगा डराने॥

बोला 'तिरहुत' छोड भाग जा, नही जेल मे सडना होगा।
शान्त हृदय से बापू बोले, क्या चिन्ता यदि लडना होगा!
फाँसी, मार और कोडो से– कभी न देशभक्त डरते हैं।
रोज रोज कायर मर जाते, रवि शशि कभी नही मरते हैं॥

हाथो से सुलझी न गुत्थियाँ, सत्याग्रह की ज्योति जल उठी।
'तिरहुत' 'मोतीहारी' एव- 'चम्पारन' मे आग वल उठी ॥
'गोरख वावू' का पावन घर- पवन बन गया सत्याग्रह का।
'व्रजकिशोर वावू' का जीवन- हवन बन गया सत्याग्रह का ॥

काले कानूनो के आगे- छाती खोल वढे जाते थे।
अत्याचारी के मस्तक पर- जादू वने चढे जाते थे ॥
गाँधी उन अनपढ कृपको मे- दमक उठे ऊँचे निसान से।
या कि कृपक का रूप धार कर- ईश्वर आ पहुँचे विहान से ॥

गगा के उस पार तराई- हिमगिरि के पग चूम रही थी।
उसी तराई मे गाँधी की- भरी जवानी झूम रही थी ॥
पहुँच गये दुखियो के सेवक, महासभा की धूम मच गई।
विजय-दीप वह वाल सका है- जिसको कड़ुवी घूँट पच गई ॥

'निलहे के मालिक' झल्लाये, महासभा की विजली दमकी।
जिसकी छाया मे भारत की- कली कली चन्दा सी चमकी ॥
महासभा के आत्मा-वल से- सत्याग्रह चल पडा वहाँ पर।
वही बन गये मन्दिर मस्जिद- वापू के पग गये जहाँ पर ॥

पेट पकड भूखे किसान सव- गाँधी जी के साथ चल पडे।
अँगरेजो की त्यौरी वदली, माथो मे अनगिनत वल पडे ॥
नोटिस भेज दिया गाँधी पर- 'चम्पारन' को अभी छोड दो!
गाँधी जी ने उत्तर भेजा- राहु केतु! रस्सियाँ तोड दो!

इस पर कैद किया गाँधी को, न्यायालय मे पकड बुलाया।
जनता से भर गई अदालत, मानो तनी पेड पर छाया ॥
गाँधी जी पर चला मुकदमा, या कि अदालत के ऊपर था।
जाल बिछाया था गाँधी पर, फँसा शिकारी ही का सर था ॥

भरी अदालत मे गाँधी ने– कहा, "न 'चम्पारन' छोडूँगा।
मानवीय सेवाये करके– निलहो के वन्धन तोडूँगा॥
निलहो के अत्याचारो के– चित्र दिखाने आया हूँ मैं।
जीवन मे भूले भटको को– राह सिखाने आया हूँ मैं॥

दोपी कौन, कौन सत्पथ पर, यही जाँच मुझको करनी है।
जो न भरी खारे सागर से, वह खाली गगरी भरनी है॥"
गाँधी जी पर चला मुकदमा, भारत भर मे मची खलवली।
वडे वडे भूचाल उठे पर– नाव तैरती हुई वढ चली।

गाँधी जी की शक्ति देख कर– वडे वडे अन्यायी हारे।
'चम्पारन' मे खुली जाँच को– छोड दिये आँखो के तारे॥
वोल उठी सरकार हार कर– हम सहयोगी, जाँच करो तुम!
पाँचजन्य कह उठा मुखर हो– अन्यायो से नही डरो तुम!

'चम्पारन' के निलहे मालिक– भभक उठे भोले गाँधी पर।
किन्तु सत्य पर दृढ वापू ने– न्याय टटोला पैर वढा कर॥
'निलहो' की टेढी कमान से– चले विषैले तीर वीर पर।
तीर टूट वेकार हो गये– उनकी छाती से टकरा कर॥

ज्यौ ज्यौ निन्दा की वापू की, त्यौ त्यो वढती गई प्रतिष्ठा।
उसे कौन कव हरा सका है– जिसकी ईश्वर मे हो निष्ठा?
शुद्ध लोक-सेवा मे ईश्वर, राजनीति के अर्थ व्याप्त हैं।
जिन पर धरती टिकी हुई है– वे सारे सिद्धान्त प्राप्त हैं॥

लगे लोक-सेवा मे गाँधी, करने लगे जाँच निलहो की।
चले वुझाने स्वेद-कणो से– घर मे लगी आँच निलहो की॥
और किसानो के जीवन की– दिल पर लिखने लगे कहानी।
उनके मानस की आँखो का– भरने लगे हृदय मे पानी॥

अपनी सज्जनता से गाँधी- चले जीतने 'निलहों' के मन।
सत्य अहिंसा सत्याग्रह में- लगा दिया अपना तन मन धन ॥
'ब्रजकिशोर बाबू,' 'कृपलानी'- और साथ 'राजेन्द्र' वीर थे।
दुनिया थी मँझधार भँवर में, गाँधी उसके साथ तीर थे ॥

'चम्पारन' में गाँधी-मण्डल- सौर-चक्र सा लगा घूमने।
और देवियाँ भी साथी बन- तलवारों पर लगी झूमने ॥
'श्री अवन्तिका दुर्गादेवी'- और चली 'मणि बहिन' पवन सी।
घोर अशिक्षा कुरीतियों पर- ज्वाला जलने लगी हवन सी ॥

'चम्पारन' के ग्राम ग्राम की- उन चरणों ने दशा बदल दी।
अपने साहस की मुट्ठी से- हर काँटे की नोक मसल दी ॥
'पढ़ो पढ़ो सब ! साफ रहो सब !' गूँजी गाँव गाँव में बोली।
घोर गन्दगी के कूड़े की- जलने लगी शान्ति से होली ॥

गाँधी जी के आत्मा-बल से- गाँव गाँव उठ खड़ा हो गया।
धरती माता की चादर का- बादल बरस कलंक धो गया ॥
महात्याग ने 'चम्पारन' में- बोयी बेल फैलने वाली।
निर्धनता से नग्न देह पर- मेंह बनी पत्तों की जाली ॥

करते थे समाज सेवायें, लिखते थे दुखों की गाथा।
गाँधी के बढ़ते चरणों पर- झुका दिया दुनिया ने माथा ॥
काँप उठे 'निलहे' गाँधी से, मुख पर खिंची दुख की रेखा।
वह काँटा भी फूल बन गया- जिसने भी बापू को देखा ॥

हिली 'गवर्नर सर' की कुर्सी 'एडवर्ड गेटे' थर्राया।
बढ़ा मेल का हाथ उन्होंने- गाँधी जी को पास बुलाया ॥
कहा, बनाओ 'जाँच समिति' तुम, लिखो जाँच कर सत्य कहानी।
गाँधी ! सुलह करो आपस में, हमने बात तुम्हारी मानी ॥

oooo0000oooo

द्वादश सर्ग

ooo0000oooo

गये 'अहमदाबाद' जहाँ पर- मिल-मजदूरो की बस्ती है।
जिनके दम पर मिल चलते हैं, ऊँचे महलो की हस्ती है ॥
मिल-मालिक की बहिन साथ सी, 'श्री अनुसूया बहिन' साथ थी।
न्यायप्रिया प्रतिमूर्ति सत्य की श्रमिको का दाहिना हाथ थी ॥

अपने बडे बन्धु से देवी- चली न्याय के लिए झगडने।
निर्बल के बल राम चल पडे- अन्यायी का हाथ पकडने ॥
गाँठ न खुल पाई हाथो से, तब श्रमिको ने दाँत लगाये।
मजदूरो ने हडतालें की, किन्तु न मिल-मालिक शरमाये ॥

सीधे थे मजदूर बिचारे, हिंसा तनिक नही करते थे।
उठी क्रान्ति की आग शान्ति से, शान्ति भग करते डरते थे ॥
'एक टेक' का झण्डा लेकर- रोज जलूस निकाला करते।
श्रमिको की हुकारे सुन सुन- मन मे मिल-मालिक गण डरते ॥

किन्तु न रेंगी कानो पर जूँ, घबराये मजदूर बिचारे।
पर पतवार पकड गाँधी जी, लाये उनकी नाव किनारे ॥
मजदूरो की एक सभा मे- गाँधी जी ने यह प्रण ठाना।
जब तक माँगे नही मिलेगी, तब तक मैंने छोडा खाना ॥

सुन्न हो गई सभा एकदम, हैरत मे मजदूर पड गये।
अनशन शुरू किया बापू ने- प्रण पर फिर मजदूर अड गये ॥
गाँधी जी का प्रेम देख कर- 'अनुसूया' के आँसू आये।
गाँधी जी का व्रत सुनते ही- मन मे मिल-मालिक शरमाये ॥

पिघल गये पत्थर पानी से, काँटे फूल बने श्रमिको पर।
'शकर ध्रुव' को पच बनाया, द्रवित हुए भक्तो पर शकर ॥
प्रेम-सिन्धु मे मिल मिल-मालिक, खूब बाँटने लगे मिठाई।
'साबरमती' किनारे सब ने- छक कर खूब मिठाई खाई ॥

फटे हुए दो हृदय मिल गये, ग्वारी जल बदला मधु जल मे।
ज्वाला वादल वनकर वरसी– मन्न के मूखे ग्रन्तस्तल मे॥
सहसा खवर मिली वापू को– ग्वेती नप्ट हुई 'खेडे' मे।
वेडा पार लगाने तत्क्षण– मॉझी जा पहुँचा वेडे मे॥

श्रमिको को कृग-रूप वदल कर, कृपको की मजिल पर ग्राये।
भावुकना ने चरण पखारे, उद्देश्यो ने फूल चढाये॥
खेती नष्ट, ग्रकाल पड गया, भूखे 'पाटीदार' विचारे।
इम पर भी लगान लेने को– दौडे जमीदार हत्यारे॥

न्याय ग्रौर विधि की हत्या कर, वे जमीन कर मॉग रहे थे।
मरे हुए भूखे कृपको को– वे फासी पर टॉग रहे थे॥
'याज्ञिक', 'ग्रनुसूया', 'पटेल' प्रण, 'महादेव' जय ध्वजा 'इन्दु श्री'।
इन नेताग्रो के हृदयो मे– कृपक रूप थे सत्य विन्दु श्री॥

'खेडे' मे चिनगारी दहकी, गॉधी जी ने डाला डेरा।
जिस मजिल पर गॉधी ठहरे– वही स्वयम् ग्रा गया सवेरा॥
सत्याग्रह का गख वज गया, जमीदार कुडकी ले ग्राये।
ढोर निलाम किये कृपको के, ग्वाली वर्तन कुडक कराये॥

खेत जब्त कर लिया प्याज का, गॉधी ने प्याजे खुदवाई।
भोले कृपक पुलिस ने पकडे, सव को हथकडियॉ पहनाई॥
दमन-चक्र चल पडा पुलिस का, वीरो का उत्साह वढ गया।
खीची जितनी डोर पुलिस ने, उतना ऊपर चग चढ गया॥

सत्याग्रही गये जेलो मे, साथ जलूस चला दीपो का।
दुनिया कव पहिचान सकी है– कितना हृदय जला दीपो का॥
जमीदार कव जान सके है– मूल्य किसानो के कन्धो का।
ग्रॉखे है पर देख न पाते, भला करे ईश्वर ग्रन्धो का॥

'खेडे' के पीडित कृपको पर– अत्याचार हुए सरकारी।
सत्याग्रह के शान्त घोप से– हार गई शूली हत्यारी॥
जमीदार पाटीदारो मे– समझौते की बात चल पडी।
रवि से काली रात ढल गई, सुबह दिखाने लगी हर घडी॥

सुलह हुई, छूटा लगान वह, गाँधी जी ने मुक्ति दिलाई।
कृपको की दुर्गम मजिल पर– गाँधी ने पग-धूलि बिछाई॥
सत्याग्रह का शुद्ध अन्त यह, तेज, शक्ति हो अधिक अन्त मे।
आदि अन्त दोनो व्यापक थे– सत्याग्रह के महासन्त मे॥

सत्याग्रह वह अमर लोक है– जिसकी अपरम्पार कहानी।
सत्याग्रह का पानी पी पी– ज्वाला होती पानी पानी॥
ग्राम 'कोचरव' मे आश्रम था, सेवक प्रेम-सुधा पीते थे।
गाँधी जी दिल के धागो से– फटे हुए मानस सीते थे॥

'टॉलसटॉय' एव 'फिनिक्स' मे– 'साबरमती' सदृश थी धारा।
'साबरमती' किनारे आश्रम, आश्रम मे रहता ध्रुव-तारा॥
गाँधी वह सगम है जिसमे– आकर मिली करोडो धारा।
गाँधी वह धरती है जिस पर– चलता यह पीडित जग सारा॥

गाँधी वह सागर है जिसमे– रत्नो का भण्डार भरा है।
गाँधी वह गगा है जिसमे– हर आँसू ने प्यार भरा है॥
हिन्दू और मुसलमानो के– सगम बनने चले खिलाडी।
एक म्यान मे दो तलवारे– गाँधी धरते बढे अगाडी॥

हिन्दू मुस्लिम भाई भाई, गाँधी जी ने गीत सुनाये।
'कुरेशी', 'ख्वाजा', 'अन्सारी'– जैसे अपने साथ मिलाये॥
बिखरे फूलो को चुग चुग कर– लडी गूँथने चला अमर वह।
बन्द 'अली भाई' जेलो मे, वहाँ छिडा था महासमर वह॥

हिन्दू मुसलमान मिल जाये, गाँधी का यह यत्न अमर है।
इसी राह पर चला पथिक वह, साक्षी इसका डगर डगर है ॥
और 'खिलाफत' की हलचल मे— जल पर लिखी पाण्डुलिपि वाँची।
'मुस्लिम लीग', मुसलमानो की— जहरीली तस्वीरे जाँची ॥

देखी 'मुस्लिम लीग' इन्हो ने, उनके जलसो मे भी वोले।
'अली भाइयों' की हालत के— गाँधी जी ने पन्ने खोले ॥
खुली खिलाफत के प्रश्नो पर— गाँधी उनके साथ हो गये।
जिसको भी दुखो ने घेरा— गाँधी उसके हाथ हो गये ॥

ये उलझी उलझन सुलझाते— 'वायसराय नगर' मे आये।
भारत की रानी 'दिल्ली' ने— स्वागत मे आलोक विछाये ॥
करते हुए प्रयत्न ऐक्य के— तेज जले कर्त्तव्य-मार्ग पर।
'वायसराय' मिले गाँधी से, जव था महासमर का अवसर ॥

वडे वडे आदर्श पेश कर— कहा "युद्ध मे हाथ वटाओ!
रँगरूटो की भरती करवा— सीमा पर सेना भिजवाओ!!
हम हैं सदा तुम्हारे गाँधी! हमे तुम्हारा वडा सहारा।
हम जनता के सच्चे सेवक, हमने पकडा हाथ तुम्हारा ॥"

देख आपदा मे शासन को, गाँधी चले सहायक वन कर।
तन मन धन का मोह छोडकर, कूद पडे वे अगारो पर ॥
राजभक्ति के लिए धीर ने— अन्तर के दरवाजे खोले।
भस्मासुर को वर दे डाला, ऐसे थे मेरे शिव भोले ॥

उसे आग कव जला सकी है— जिसके मन मे जलती ज्वाला।
वही वना है पूज्य कि जिसने— वालू मे से तेल निकाला ॥
राजभक्त चल पडा कमर कस— रँगरूटो की भरती करने।
जल्दी जल्दी पथिक चल पडा— धरती माँ की पीडा हरने ॥

जर्जर तन पर हिमगिरि सा वल– चला जा रहा.वादल-दल सा।
या कि हृदय उमडा पडता था– उमडी ग्राँखो की छल छल सा ॥
ग्रच्छी वुरी सभी कुछ सुन सुन– भरती करने लगे सिपाही।
गाँधी जी के साथ हो लिये– उनकी वाणी के हमराही ॥

गाँव गाँव मे घूम घूम कर– राजभक्त का रूप दिखाया।
हम हतभागे सीख न पाये, उसने हम को बहुत सिखाया ॥
ग्रपने भी नाराज हुए पर– गाँधी ने सव को समझाया।
भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान को– उसने ग्रपना दोस्त वनाया ॥

तीस तीस चालीस मील तक– बिना थके पैदल चलते थे।
मूँगफली, गुड खा, पानी पी, घी के दीपक से जलते थे ॥
किन्तु थक गये श्रम से गाँधी, उलटा पथ्य न पचा सके वे।
घोर रोग ने घेरा उनको, देह न श्रम से बचा सके वे ॥

नर ! न कभी भी कर ग्रपथ्य तू, कभी न दया ग्रपथ्य करेगा।
करता रहा ग्रपथ्य ग्रगर तू, बिना मौत के कभी मरेगा ॥
गाँधी जी 'नडियाद' चल दिये– करते हुए याद ईश्वर को।
पग पग पर तन गिरा, किन्तु मन– तन को उठा चला ऊपर को ॥

एक कदम भी चलना उनको– लगता था दस मील चला हूँ।
रवि वोला उनके दुखो से– मै जीवन मे तडप जला हूँ ॥
वह ग्रसीम पीडा गाँधी की– कवियो की ग्राँखे भर लाई।
चिन्तातुर थे, किन्तु मित्र सब– राम, भरत जैसे थे भाई ॥

सब गाँधी की सेवा करते, गाँधी जी को लज्जा ग्राती।
सच्चा स्नेह देख मित्रो का– गाँधी की छाती भर जाती ॥
जीवन से निराश थे लेकिन– कब पूजा की ग्राशा टूटी।
वह न कभी भी छिन सकता है– जिसकी कभी न माला छूटी ॥

प्रकृति-परी ने सौरभ छिड़का, सुधाधाम ने सुधा पिलाया।
जीवन जाग उठा शय्या से, कली कली मे जीवन आया॥
'फूँका' लगा गाय भैसो के- दूध निकाल पिया करता जग।
उडता रहा अलग हिसा से- अपने जर्जर पख फला खग॥

पीने लगे दूध बकरी का, लेकिन दुख उन्हे होता था।
हिसा की यदि चर्चा भी हो- गाँधी जी का मन रोता था॥
'माथेरन' पहुँचे गाँधी जी, 'वा' ने उनका स्वास्थ्य सुधारा।
किन्तु दासता की चीखो ने- गाँधी जी को पुन पुकारा॥

उठ न सके थे वीमारी से, सर 'रौलेट समिति' चढ आई।
उसकी सस्तुतियाँ पढ पढ कर- गाँधी की खटिया थर्राई॥
गये 'अहमदावाद' खाट तज, 'वल्लभ भाई' मिलने आये।
गाँधी ने 'रौलेट समिनि' के- खूनी स्याह पृष्ठ दिखलाये॥

वोले, "यदि कानून वने ये, तो हम जिन्दा मर जायेगे।
ये सफेद रँग के विपधर ह, जो छल से काले खायेगे॥
इसके लिए करो कुछ जल्दी", "कहो, किया क्या जा सकता है?"
गाँधी और 'पटेल' सोचते- जहर पिया क्या जा सकता है?

भारत माता के भक्तो की- गाँधी जी ने सभा वुलाई।
वात कही 'रौलेट समिति' की, रक्षा की तरकीव सुझाई॥
ये काले कानून हमारी- जिन्दा चिता जलाने आये।
भारत माँ के स्वाभिमान पर- ये कालिमा लगाने आये॥

'अनुसूया', 'सरोजिनी देवी', 'हार्निमेन' 'वल्लभ भाई' वह-
'शकरलाल' आदि ने मिलकर- लिखा प्रतिज्ञा-पत्र तभी यह-
सत्याग्रह की अमर शक्ति से- भारत भाग्य न जाने देगे।
काले कानूनो का वोझा- सर पर कभी न आने देगे॥

गाँधी को अध्यक्ष बनाकर– 'सत्याग्रह कार्यालय' खोला।
प्रमुख केन्द्र 'बम्बई' बनाया, मुक्ति-द्वार पर प्रहरी बोला॥
जगह जगह पर हुई सभाये, अखबारो ने धूम मचादी।
गाँधी ने पतवार थाम कर– तूफानो मे नाव चलादी॥

उसका मार्ग रुका कब किससे– जिसने सत् की करी अर्चना ?
आन्दोलन बढ चला शख से– क्रान्ति-घोष ने करी गर्जना॥
और उधर सरकार तन गई, असि तानी 'रौलेट-समिति' की।
काले अँगरेजी शासन ने– भारत माता के प्रति अति की॥

'बिल रौलेट' गजट मे छापा, हलचल से हिल गया देश यह।
उधर नगाडा, इधर वज उठी– गाँधी जी की तूती रह रह॥
'धारा सभा' मध्य बिल आया, 'शास्त्री जी' बोले विरोध मे।
पर अन्धे की खुली न आँखे– लोभ मोह मद और क्रोध मे॥

जागा हुआ ढोग सोने का– करे अगर तो कौन जगाये ?
जो न हितैषी की भी माने– उसको वटिया कौन वताये ?
उलझ विचारो की लहरो मे– गाँधी जी 'मद्रास' आ गये।
श्री 'कस्तूरीरंग एयगर', पूर्त्ति 'राजगोपाल' पा गये॥

गाँधी जी की प्रथम भेट थी– नीतिनिपुण 'राजा जी' से यह।
उनके अतिथि रहे गाँधी जी, हल सोचा उनके घर पर रह॥
प्रति पल ही 'रौलेट समिति' की– 'राजा जी' से चर्चा करते।
आग भरी 'रौलेट' नीति पर– जल भीगे अगारे धरते॥

'श्री कस्तूरी रग' आदि ने– नेताओ की सभा बुलाई।
वीर विजय 'राघवाचार्य' थे, 'महादेव देसाई' भाई॥
सब ने मिल कर करी प्रतिज्ञा– निश्चय ही सत्याग्रह होगा।
अत्याचार किये जिसने भी– उसने पापो का फल भोगा॥

इसी बीच मे मिली सूचना– लो काला कानून छा गया।
उसी रात मे सोते सोते– गाँधी जी को स्वप्न आ गया॥
बडे सवेरे उठ गाँधी ने– 'राजा जी' को पास बुलाया।
बोले, "एक स्वप्न देखा है, उसी स्वप्न ने मुझे जगाया॥

स्वप्न नही वह, दैव-प्रेरणा, जिसने हमको मार्ग सुझाया।
उसी स्वप्न ने गहरे तम मे– गिरतो को दीपक दिखलाया॥
इन कानूनो के उत्तर मे– भारत भर मे हो हडताले।
आत्मशुद्धि से युद्ध चले यह, चाहे जितने कोडे खा ले॥

शान्तिपूर्ण यह धर्म-युद्ध है, सब मिल कर उपवास करेगे।
सत्य अहिसा पर दृढ रह कर– मर कर भी हम नही मरेगे॥
यह ईश्वर की अमर प्रेरणा, इससे निश्चय जीत हमारी।"
हाथ जोड बोले 'राजा जी'– गाँधी! सच्ची बात तुम्हारी॥

सन् उन्निस सौ उन्निस तिथि थी– छ अप्रैल शख जब बोला।
जिस दिन गाँधी की वाणी सुन– हिसा का सिहासन डोला॥
भारत माता के आँगन मे– उस दिन पहिला फूल खिला था।
उस दिन हतभागे भारत को– खोया हुआ अतीत मिला था॥

गाँधी की वाणी सुनते ही– भारत भर ने की हडताले।
चल कर उसके चरण ढूँढ ले, कही मिले तो उसे मनाले॥
भारत के प्रत्येक प्रान्त ने– उस दिन अपनी वाणी खोली।
'कलकत्ता', 'बम्बई', 'करॉची', 'दिल्ली', 'मेरठ', ने जय बोली॥

जलसे किये, जलूस निकाले, व्रत रक्खे, सच्चाई चाही।
मजिल तय कर ही लेता है– पथ पर चलने वाला राही॥
'सविनय-भग' चला गाँधी का, 'क्रान्ति क्रान्ति' के शोले धधके।
धधक धधक अँगरेज आग से– भारत के लालो पर भभके॥

दमन-नीति का अस्त्र उठा कर– आग ववूला हो कर टूटे।
घोडे दौडे, चली गोलियाँ, शोणित के फव्वारे छूटे॥
हिन्दू मुस्लिम, बूढे वच्चे, चली देवियाँ, नयी लहर थी।
उधर साँप फुकार रहे थे, इधर वीन मे मधुर वहर थी॥

'दिल्ली' का प्रतिविम्व गगन मे– रक्त-रँगा रँगरेज वन गया।
धरती का शोणित पीने को– असि वन कर अँगरेज तन गया॥
देखो ! यह दिल्ली है जिसकी– ईंट ईंट पर लिखी कहानी।
जिसकी सडको पर लाखो की– चढी हुई है चढी जवानी॥

आओ, चले 'अमृतसर' मे अव, 'जलियाँ वाला वाग' जहाँ है।
छाती जहाँ वनी पिचकारी, खिला खून से फाग जहाँ है॥
खूनी अँगरेजी शासन का– जिसमे काला हृदय खुल रहा।
वह खूनी इतिहास कि जिससे– भारत माँ का खून तुल रहा॥

हा ! 'डायर' के बूट जहाँ पर– नन्हे वच्चे कुचल चल रहे।
और तभी की विधवाओ के– जहाँ अभी तक हृदय जल रहे॥
जहाँ गर्भिणी वहिन वेटियाँ– पेटो के वल चलवाई है।
जहाँ फूल सी नन्ही कलियाँ– फेक आग मे जलवाई हैं॥

जहाँ कि पशुता नगी नाची, भोके अङ्ग अङ्ग मे भाले।
जहाँ कि अँगरेजो ने छीले– भालो से छाती के छाले॥
वह इकलौते बेटे का शव– जिसके पास खडी बुढिया माँ।
वेटे की भस्मी के ऊपर– मुर्दा वनी, पडी दुखिया माँ॥

वह विभीषिका रगमच पर– कैसे तुमको दिखलाऊँ मैं ?
अँगरेजो जैसा पत्थर का– कहो कहाँ से दिल लाऊँ मैं ?
मैं भारत माँ का तारा हूँ, सत्य प्रेम का अमर पुजारी।
मेरा हृदय मोम सा कोमल, मेरी नीति नही हत्यारी॥

आओ, अव 'वम्बई' चले हम, देखे गाँधी जी की लीला।
देखो गाँधी पोछ रहा है– भारत माता का मुँह गीला॥
जो सच्ची पुस्तके देश की– अँगरेजो ने जब्त करी वे।
सविनय यह कानून भग कर– झोलो मे पुस्तके भरी वे॥

'हिन्द स्वराज्य' और 'सर्वोदय'– गाँधी ने पुस्तके छपाई।
स्वयसेवको से घर घर मे– जब्त पुस्तिकाएँ विकवाई॥
और स्वयम् भी वैठ कार मे– चले वेचने वाजारो मे।
'श्री सरोजिनी शक्ति नायडू'– उस दिन चाँद वनी तारो मे॥

गाँधी जी के साथ कार मे– पुस्तक देती, हाथ वढाती।
जनता उन पर फूल चढा कर– रुपयो की थैलियाँ चढाती॥
जनता उमड पडी सागर सी, जेलो का भय छोड दिया था।
गाँधी जी के पद-चिह्नो से– सव ने नाता जोड लिया था॥

गाँधी वावा वाँट रहे थे– 'हिन्द स्वराज्य' और 'सर्वोदय'।
हार गई सरकार सत्य से, गूँजी गाँधी जी की जय जय!
धन्य भिखारी का भिक्षुक वह, जन-सेवा से कभी न ऊवा।
वह धरती का ऐसा सूरज– दिवस रात मे कभी न डूवा॥

'दिल्ली आओ!' 'दिल्ली आओ!' तार मिला यह लहर लहर से।
'जल्दी आओ! जल्दी आओ'– तार मिला 'लाहौर' शहर से॥
गाँधी जी चल पडे हवा से, जव 'मथुरा' स्टेशन पर आये–
भनक मिली यह 'गिडवानी' से– शायद पुलिस पकड ले जाये॥

'पलवल' स्टेशन पर आते ही– पकडा हाथ पुलिस-अफसर ने।
मातृभूमि की करी वन्दना– उसी निमिप मेरे हरि हर ने॥
कहा पुलिस-अफसर ने उनसे– "तुम पजाव नही जा सकते।
भय है हमे अशान्ति वढेगी, अत प्रवेश नही पा सकते॥

अव तुम वन्दी, जा न सकोगे— सीमा में पजाव प्रान्त की।"
जैसे वीणा सुधा वहाये, ऐसे वाणी खुली शान्त की—
"मैं न अशान्ति वढाने वाला, मैं तो शान्ति कराने जाता।
मुझे न आज्ञा मान्य तुम्हारी, शान्ति शान्ति मैं प्रतिपल गाता॥"

गाँधी जी को वन्दी करके— वापिस लौटाया गाडी से।
ढकी हुई थी शक्ल पुलिस की— लज्जा की काली साडी से॥
वन्द मालगाडी मे करके, पुलिस उन्हे 'माधोपुर' लाई।
फिर बैठा 'वम्बई मेल' मे, 'बोरिंग' ने गाडी चलवाई॥

गाँधी का कब्जा लेने को— 'इन्स्पेक्टर बोरिंग' आये थे।
अव पहिले दर्जे मे बैठे, वातो का पिँजरा लाये थे॥
गाडी मे 'इन्स्पेक्टर बोरिंग'— गाँधी जी को लगे बनाने।
और 'ओडवायर' के किस्से— नमक लगा कर लगे सुनाने॥

किन्तु वनाने वाला जग को— कब वहकाये से वनता है!
चाहे सौ सौ बार छान लो, छना छनाया कब छनता है!
'सूरत' आया, जहाँ कि गाँधी— बन्दी बने अन्य अफसर के।
वन्दी वन कर ओज बन गये— मानो आँसू दुनिया भर के॥

"गाँधी! तुम बिलकुल स्वतन्त्र हो"—पथ मे कहा पुलिस अफसर ने।
"पर 'बम्वई' 'मरीन द्वार' पर— मुक्त तुम्हे आया हूँ करने॥
तुम्हे देखते ही जनता के— दल के दल उमडे पडते हैं।
आप शान्ति हैं, अमर सत्य हैं, कभी न हिंसा से लडते हैं॥"

आ पहुँचे 'मैरिन ड्राइव' पर, मुक्त-मूर्त्ति वढ चली अगाडी।
वहाँ किसी परिचित की सहसा— मिली उन्हो को घोडा-गाडी॥
जिसमे बैठ चल दिये गाँधी, 'रेवा शकर' के घर आये।
गाँधी जी को देख हर्ष से— 'शकर' हार गूँथ कर लाये॥

वोले 'रेवा गकर भाई'– "जव से तुम्हे पुलिस ने पकडा–
तव से जनता उत्तेजित है, करती है गोरो से झगडा ॥
'पायधुनी' के पास इस समय– भारी हुल्लड का भय भारी ।
इधर खडी जनता उत्तेजित, उधर पुलिस की है तैयारी ॥

मजिस्ट्रेट वह पुलिस वहुत सी– पहुँच गई है 'पायधुनी' पर ।
'उमर मुवानी' वह 'अनुमूया'– आ पहुँची चट मोटर लेकर ॥
वोली, गाँधी ! गीघ्र चलो तुम, जनता वहुत अधीर हो गई ।
विना तुम्हारे गान्त न होगी, हार हमारी वुद्धि खो गई ॥

गाँधी वैठ गये मोटर मे, वायु वेग से वढे अगाडी ।
गाँधी वे थे आगे वढ कर– जो न कभी भी हटे पिछाडी ॥
जन-समुद्र ने देखा गाँधी, मदोन्मत्त हो गया देख कर ।
'क्रान्ति सफल हो ! क्रान्ति सफल हो !' गूँज उठा जयकारो मे स्वर ॥

वोल महात्मा गाँधी को जय– जलधि उमड पग धोने आया ।
या कि राम के चरणो मे फिर– सागर सुधा सिन्धु भर लाया ॥
लम्वा एक जलूस वन गया, मतवाली जनता न रुक सकी ।
झपटी पुलिस वावली होकर, झुका न ध्वज, सत्ता न झुक सकी ॥

घुडसवार दौडे जलूस पर, जनता ने भी फेके पत्थर ।
ईटे पत्थर फेक रही थी– वनी वावली जनता उन पर ॥
गाँधी जी तक के कहने से– रुकी न वह जनता मतवाली ।
उधर जलधि की लहर लहर पर– मनती देखी महा दिवाली ॥

जव 'अब्दुल रहमान गली' पर– पहुँचा वह जलूस मतवाला–
गर्जी पुलिस, तन गये भाले, धधक उठी हिसा की ज्वाला ॥
रोक जलूस, चलाये घोडे, फिर भी जनता नही समाई ।
तितर वितर का हुकुम हो गया, गाँधी की तवियत घवराई ॥

सोचा, अगर चल गई गोली– निर्दोषो का खून वहेगा।
घोडे दौडे, जनता बोली– चल कर आज जलूस रहेगा॥
भाले तान, तान बन्दूके, घोडे दौडाये जनता पर।
"शान्त रहो सब, शान्त रहो सब!" गॉधी कहते चीख चीखकर॥

कोई कुचला, कोई घायल, कोई सीधा स्वर्ग सिधारा।
"शान्त रहो सब, शान्त रहो सब!" रहा चीखता एक बिचारा॥
वडा भयकर दृश्य उस समय, जनता और पुलिस मतवाली।
दुनिया मे वजती देखी है– दोनो ही हाथो से ताली॥

ज्वाला भरी पुलिस जनता पर– घोडे दौडाये जाती थी।
मतवाली जनता भाले खा– गॉधी की जय जय गाती थी॥
इधर उधर हिलने तक को भी– तिल भर जगह नही थी बाकी।
दोनो जीत समझ कर बैठे, निकल गई गॉधी की झॉकी॥

शीघ्र कमिश्नर के दफ्तर जा, मिले कमिश्नर से गॉधी जी।
'बोरिंग' भी जम रहे वहॉ थे, बैठे 'शकर' से गॉधी जी॥
'ग्रिफिथ' कमिश्नर से गॉधी ने– 'पायधुनी' की कही कहानी।
कहा 'ग्रिफिथ' ने, जाने देते– कैसे वह जलूस तूफानी?

यदि जलूस फोर्ट तक जाता– तो निश्चय ही जलती ज्वाला।
जब हमने देखा जलूस यह– वापिस नही लौटने वाला–
तव हमला कर दिया पुलिस ने, कहो, और क्या करते तव हम?
गॉधी वोले, पर हमलो से– कितनो ही के निकल गये दम॥

मुझको तो ऐसा लगता है– वहॉ न घुडसवार दौड़ाते।
स्वतन्त्रता के दीवाने थे, गा लेते जितना भी गाते॥
बोले 'ग्रिफिथ', सभी के ऊपर– ऐसा पडा प्रभाव तुम्हारा।
उनकी आवाजो के आगे– कुछ वश चलता नही हमारा॥

तन का मोह छोड कर जनता– मतवाली हो टूट रही है।
जनता 'क्रान्ति! क्रान्ति!' चिल्लाती, शान्ति-मार्ग से छूट रही है ॥
'अमृतशहर' 'अहमदावाद' मे– वने लोग पागल दीवाने।
तार काटते, आग लगाते, गाते इन्कलाव के गाने ॥

गाँधी वोले, लोग जन्म से– शान्ति चाहते, प्रीति चाहते।
जियो और जीने देने का, राज्य चाहते, नीति चाहते ॥
एक नही मानी 'रावण' ने, 'अगद' ने काफी समझाया।
फिर आगे 'अहमदावाद' को– गाँधी जी ने पैर वढाया ॥

जहाँ खून वहता था ऐसे– जैसे वर्षा मे पतनाले।
जहाँ कि मतवाली जनता ने– जलसे किये, करी हडताले ॥
जहाँ सैकडो मरे निहत्थे, एक सिपाही को भी मारा।
जहाँ कि 'मार्शल लॉ' चलता था, मानो था मसान हत्यारा ॥

मिले 'प्रेट' अफसर से गाँधी, जो गुस्से से लाल लाल थे।
गाँधी सागर, 'प्रैट' अग्नि थे, गाँधी जीवन, जन प्रवाल थे ॥
ऐसे वाणी खुली शान्त की, जैसे चाँद निकल आया हो।
ऐसे गुस्सा बुझा नीर से, जैसे प्यार पडा पाया हो ॥

जो कुछ रक्त वहा पानी वन, वहुत दुख माना गाँधी ने।
कितने पक्के आम गिराये– मधुऋतु मे अन्धी आँधी ने ॥
इस प्रायश्चित मे गाँधी ने– तीन दिवस उपवास किया था।
हर दुख ने ईश्वर के आगे– अपना दोप कवूल लिया था ॥

सव को शान्त किया गाँधी ने, भूलो से भुलवाई भूले।
उनको कौन वचाने वाला– जो खुद ही फाँसी पर झूले!
जव तक शान्ति और मर्यादा– सत्याग्रह मे नही रहेगी।
तव तक हिसा राज्य करेगी, तव तक दुनिया दुख सहेगी ॥

आँख मूंद कर सरपट दौडे, वह गड्ढे मे गिर जाता है।
सच्चे सत्याग्रही वीर को– झूठ नही तिल भर भाता है॥
चोर न कानूनो से डरते, डाकू को विधि बन्धन ही क्या ?
जो आँसू गिर बने न सागर, हिले न पत्थर, क्रन्दन ही क्या ?

वह अन्तर की सुन्दरता से प्यार पालता चलता था।
वह मँझधार पडे मन पशु को पार हाँकता चलता था॥

वह खँडहर के टूटे दीपक–
जोड दिया करता था राम !
स्नेह डाल खाली दीपो मे–
ज्योति लिया करता था राम!

उस प्रकाश मे ढूँढ रहा कवि–
चित्र जले हृदयो के राम !
उस प्रकाश मे ढूँढ रहा रवि–
मित्र छले हृदयो के राम !

तन मिट्टी के दीप बनाकर दीप बालता चलता था।
वह अन्तर की सुन्दरता से प्यार पालता चलता था॥

प्रकृति-प्रिया की चचलता पर– माँझी तैरा रहा तिरगा।
जग की प्यास बुझाने निकली– नग के उर से प्यासी गगा॥
तिल भर भी यदि भूल हुई तो– गाँधी ने पर्वत सी मानी।
रवि ने सब को दिया उजाला, जग ने रवि की पीर न जानी॥

ससृति के मनहर मेले मे– कविता आँसू भरी खडी है।
सीता गई, राम की पीडा– भावुकता मे विखर पडी है॥
निराकार का नृत्य हो रहा, आँखो मे भ्रम का विकार है।
कवि शब्दो का चित्रकार है, रवि वियोग का चमत्कार है॥

अमृत भरा जीवन कव जलता, तट को लहरे हिला रही हैं।
सूरदास से चचल परियाँ– आ आ आँखे मिला रही हैं॥
वैरागी सोता रहता है, छलने वाली खो जाती है।
चचलता मे चाह चाँद सी, स्वप्न देख कर सो जाती है॥

वादलो मे विजलियो की आग है।
मौन रोदन मे भयानक झाग है॥
कह रही मिट्टी दवाता क्या मुझे!
एक दिन मिट्टी वना दूँगी तुझे॥

oooo0000oooo

त्रयोदश सर्ग

oooo0000oooo

चतुर्दश सर्ग

असहयोग

क्यो फाँसी की धमकी देते, मरने वाले कब डरते हैं !
तलवारो की नग्न धार पर, चलने वाले कब मरते हैं !
युति यदि युग्म न कर पाये तुम, पख कटेगे, यान रुकेगा।
आँसू मे पैरो की गति है, जन जन का बलिदान रुकेगा ।।

क्या चिन्ता, यदि आग बरसती, आँसू सागर बन जायेगा।
जिस दिन सत्य मरेगा उस दिन, सूरज आँसू बरसायेगा ।।
बने रहे अनमोल बोल वे, पर पीडा जिन की भाषा मे।
जन जन का मगल अङ्कित है– महापुरुष की अभिलाषा मे ।।

कहाँ कहाँ कीटाणु विषैले, देख रहा था सब अणुवीक्षण।
औषधि ढूँढ ढूँढ कर लाये, गाँधी छान छान कर कण कण ।।
'नवजीवन' वह 'यग इण्डिया'– अखबारो मे अमृत भरा है।
पत्र 'क्रॉनिकल' 'हरिजन' जैसे– दिये कि जिनमे हृदय धरा है ।।

जिनके अक्षर अक्षर मे है– भारतमाता की तसवीरे।
जिनके अङ्क अङ्क मे अङ्कित– दुनिया की अच्छी तकदीरे ।।
जिनकी पक्ति पक्ति मे चित्रित– नगे भूखो की तदबीरे।
जिनके पृष्ठ पृष्ठ पर खीची– अटल सत्य ने अमर लकीरे ।।

सत्याग्रह की अमर कला का– जिनमे लिखा हुआ है लेखा।
जिनके सिद्धान्तो मे रह कर– जग ने सुख का दीपक देखा ।।
गाँधी जी अपने जीवन मे– बैठे नही निमिष भर भी थक।
तब तक चलते रहे बराबर– जब तक पहुँचे नही लक्ष्य तक ।।

अमर पथिक 'पजाब' चल दिये, जहाँ शहीदो की समाधियाँ।
उनके दुख मिटाने पहुँचे, जिनके ऊपर पडी लाठियाँ ।।
पहुँच गये 'लाहौर' रेल से, पीडित फूले नही समाये।
मानो आज 'अयोध्या' मे फिर- वन मे 'राम' लौट कर आये।

पागल से सब हुए हर्ष से, वजी कृष्ण की वशी मानो।
गाँधी की पग-ध्वनि मे घुलमिल- मानो वजने लगा पियानो ।।
अतिथि वने 'सरला देवी' के, वनी धर्मशाला उनका घर।
वैठे जहाँ कही गाँधी जी- जलसे और जलूस वही पर ।।

वन्द किये पजावी नेता, अँगरेजो ने खोदी खाई।
जहाँ खून के दाग वहाँ पर- 'हटर समिति' जाँच को आई ।।
'पडित मोतीलाल नेहरू', 'मालवीय जी' आगे आये।
वे गाँधी के, गाँधी उनके, त्यागो ने उनके गुण गाये ।।

'हटर दल' के वहिष्कार की- करी प्रतिज्ञा इन वीरो ने।
सारी दुनिया को दमकाया- भारत माँ के इन हीरो ने ।।
'तैयव जी', 'जयकर', 'चितरजन', गाँधी गीत वन गये जग के।
नयी हवा चल पडी उसी क्षण, जिस क्षण पर फैले उस खग के ।।

गाँधी जी 'गोराशाही' के- खूनी विवरण लगे खोजने।
जुल्म और हत्याकाण्डो के- गाँधी कण कण लगे खोजने ।।
कैसे भूले उस वच्ची को- जो नगी भालो पर खेली ?
सत्ता के भूखे शासन ने- मानवता तज, पशुता ले ली ।।

नाच रहे 'लाहौर' शहर मे- लाल लाल खूनी हत्यारे।
धधक रहे माँ की छाती पर- 'डायरशाही' के अगारे ।।
वह राजा क्या जो जनता का- पी पी खून लाल मुँह करले ?
वह राजा क्या जो जनता को- लूट लूट अपना घर भरले ?

इतने मे 'हकीम साहव' का– गाँधी जी को मिला निमन्त्रण ।
मुस्लिम-धर्म, 'अरव', 'सरहद' पर– फैलाये जब गोरो ने फण ।।
तव आन्दोलन के वारे मे– हिन्दू-मुस्लिम-सभा बुलाई ।
'श्रद्धानन्द' आदि ने जिसमे– अपनी सारी शक्ति लगाई ।।

'प्रश्न खिलाफत' का जव आया– 'गो-रक्षा' का प्रश्न छिड गया ।
दोनो प्रश्न साथ सुनते ही– महापुरुष का हृदय चिढ गया ।।
बोले, दोनो प्रश्न पृथक् हैं, सुबह अलग है, शाम अलग है ।
राम खुदा मे भेद न कोई, केवल उनका नाम अलग है ।।

कहा किसी ने कभी न जाती– मोटर रेल एक पटरी पर ।
क्या कोई दिखला सकता है– पटरी पर लारियाँ चला कर ?
रेल और मोटर को यदि तुम– साथ चलाओगे पटरी पर–
एक कदम भी चल न सकेगी, मिट्टी बन जायेगी जल कर ।।

उस क्षण हिन्दू मुस्लिम सव मिल– एक नदी बन कर बहते थे ।
'कभी नही गो-वध करने के'– उस क्षण मुसलमान कहते थे ।।
किन्तु हिमालय ही स्थिर देखा, नही स्वार्थपरता स्थिर देखी ।
शान्ति अमरता मे मिलती है, नही चचला रति चिर देखी ।।

वह तप तप कर रवि बनता है, जिसने कवि की बात मान ली ।
किसमे कितना विप, कितना मधु, बापू ने पहचान जान ली ।।
बिरले तार्किक, बडे खिलाडी, यही मिले 'हसरत-मोहानी' ।
बात बात मे सागर जैसी– उनकी उमडी हुई जवानी ।।

गाँधी से मतभेद तक्र सा, किन्तु मित्रता मिसरी जैसी ।
इस आँखो वाली दुनिया मे– युग युग जिये शत्रुता ऐसी ।।
दो दिन की दुनिया है, इसमे– क्या दुश्मनी ? भलाई करलो !
दानवता मन चढी छोडकर– पर्वत से गगा-जल भर लो !

आया यह प्रस्ताव कि सब मिल– दूर हटा दे अंगरेजी तम ।
जितना ब्रिटिश माल है उसका– कर दे फौरन बहिष्कार हम ।।
गाँधी जी विरोध कर बोले– इससे होगी हार हमारी ।
शस्त्र हमारा हमे काट दे, ऐसी नही करो तैयारी ।।

हम मे ऐसा कौन कि जिसके– सिर पर अंगरेजियत नही है ।
कही घडी है, कही टोप है, डीयर, डार्लिंग, आदि कही है ।।
जब तक देशी जुटे न साधन– तब तक बहिष्कार क्या होगा ?
जब तक खद्दर करे न पैदा– तब तक तिरस्कार क्या होगा ?

जो व्रत हम से भी न पूर्ण हो, जनता कैसे कर पायेगी ?
नाविक ही यदि हुआ अधूरा, नाव भँवर मे रह जायेगी ।।
अब यह प्रश्न सामने आया– कैसे नाव चलेगी आगे ?
जो औरो का भला चाहता, उसके सारे सकट भागे ।।

धरती गोल, घूम धरती पर– तरा गाँधी का आवर्त्तन ।
'असहयोग' निकला वाणी से, भारत भर ने किया समर्थन ।।
'असहयोग' के आन्दोलन का– पास हुआ प्रस्ताव सभा मे ।
नयी सृष्टि के सगुन बन गये– बापू के शुभ भाव प्रभा मे ।।

वर्त्तमान के असहयोग मे– हँसता हुआ भविष्य प्राप्त था ।
'असहयोग' के उच्चारण मे– सत्याग्रह का रूप व्याप्त था ।।
चले 'अमृतसर' को गाँधी जी– 'महासभा' के अधिवेशन मे ।
बडे बडे नेतागण आये, ज्वाला जागी प्रतिपेधन मे ।।

बडी शान का अधिवेशन था, बडी शान के नेता आये ।
'भारत-भूषण मालवीय जी', 'लोकमान्य' के दर्शन पाये ।।
'मोतीलाल' और 'चितरजन'– चाँद सूर्य से चमक रहे थे ।
जिन मे सन्त सगुण गाँधी जी– 'ध्रुव तारे' से दमक रहे थे ।।

'मालवीय जी' का कमरा था, या कि धर्मशाला निर्धन की।
जन जन पर सुगन्ध उडती थी– भारत-भूषण के चन्दन की ।।
पूजा मुखर हुई हिमगिरि की, फूलो की सुन्दरता वोली।
'जलियाँवाला वाग' गा उठा, उठो वुझा दो मेरी होली ।।

हत्यारे 'डायर' पिशाच के– चुभे हुए ह दिल मे भाले।
वापू की विचार धारा मे– पर-दुखो के फूटे छाले ।।
कैसे भला भूल सकते हे– 'जलियाँवाला वाग' वताओ ?
जिनके जले सुहाग वहाँ पर– उन विधवाओ को समझाओ ।।

देखो, उन वूढे वच्चो पर– 'डायर' की चल रही गोलियाँ।
'जलियाँवाले हरे वाग' मे– वच्चो की जल रही होलियाँ ।।
घायल एव मरने वाले– इतने जितने गिन न सके हम।
जव तक खत्म न हुई गोलियाँ– तव तक ठोके 'डायर' ने खम ।।

जनता पर गोलियाँ चलाना– किसी राज्य का धर्म नही है।
सोते हुए वीर को डसना– वीर पुरुप का कर्म नही है ।।
पर हिन्दू, मुस्लिम, सिक्खो के– शोणित से सिंचित धरती पर–
स्मृति के चिह्न शेष हें अव तक, जलज और जल मे क्या अन्तर ?

चिन्ता मे चेतन गाँधी जी– पथ टटोलते थे खटिया पर।
वारम्वार प्रणाम उसे है– जिसने पहुँचाया वटिया पर ।।
साहस और परिश्रम वल से– जिसने 'लोकमान्य' को पाया।
'देशवन्धु' वह 'मालवीय' ने– जिनको अपना हृदय वनाया ।।

'मालवीय' जी सार्वजनिक हित– रत्न खोजते फिरे देश मे।
जिनके गौरव गीत अमर हैं– देश विदेश अशेष शेष मे ।।
'काँगरेस' मे 'दादाभाई– नौरोजी' का चित्र मनोहर।
धन्य धन्य 'आनन्द चारलू'– ईश्वर की अनमोल धरोहर ।।

धन्य 'दीनशा एदल जी' जो– कॉगरेस दे गये देश को।
धन्य 'आकटेवियन ह्यूम' जो– बना गये हैं कॉगरेस को॥
जय जय जय 'गोपाल गोखले'– कॉगरेस के अमर पुजारी।
इधर अहिंसक कॉगरेस थी, उधर गैर सत्ता हत्यारी॥

'त्र्यम्बक', 'तेयब' और 'तिलक' जी– लोकमान्य नेताओ की जय!
धन्य 'सुरेन्द्र बनर्जी', 'बसु' जय, 'मालवीय' जी की गूँजी लय॥
धन्य 'लाजपत राय' धन्य हैं, देश-दीप को शलभ दे दिये।
धन्य 'मेहता', 'घोष' आदि हैं– जिनसे जग ने रत्न ले लिये॥

धन्य 'विजय राघवाचार्य' है– 'रामपाल', 'अम्बिका चरण' जय।
'महादेव गोविन्द रानडे'– 'मौलाना मजहरुल' हुए लय॥
वीर 'विशन नारायण' की जय! 'पन्तुल' 'दत्त' फूल घर घर मे।
'मुरलीधर' 'सच्चिदानन्द' ने– दीप जलाये नगर नगर मे॥

कॉगरेस की अमर इमारत– बलिदानो पर खडी हुई है।
इन पुत्रो पर भारत माता– ऊँचा सर कर खडी हुई है॥
महासभा की अतुल जीवनी– डाल डाल पर भूल रही है।
कर्णधार की अमर कहानी– बन गगा की धार बही है॥

ऋषि, मुनि-मण्डल मे गाँधी जी– 'ऋषि शुकदेव' सदृश तब आये।
मानो माँझी मिला नाव को, डूबे हुए किनारे पाये॥
कॉगरेस की भक्ति देखकर– दौड स्वयम् भगवान आ गये।
सत्य अहिंसा और प्रेम के– चारो ओर वितान छा गये॥

जब बच्चे उछाल भालो पर– खूनी नगे नाच रहे थे–
हिंसा के नगे नर्त्तन मे– जब बूढो के खून बहे थे–
तभी अहिंसा मूर्त्त-रूप धर– उतरी रक्त-पुती धरती पर।
तृषित और जलती धरती पर– मानो बरस पडे हो जलधर॥

'महासभा' के अविवेशन मे– हुआ महात्माओ का सगम।
'आवे जमजम' से होता था– गगा यमुनाओ का सगम॥
गाँधी जी ने स्वाभिमान से– स्वतन्त्रता का किया समर्थन।
कितने ही प्रस्ताव हुए वे– जिनमे कटे पडे हैं वन्धन॥

जान हथेली पर रख सवने– 'पार्लमेट' को लिख भेजा यह–
'उत्तरदायी शासन' देकर– न्याय-नीति से न्याय करे वह॥
'दास' और गाँधी ने मिलकर– माँजे सव प्रस्ताव वुद्धि से।
वार वार उन पर विचार कर– शुद्ध कर दिये आत्म शुद्धि से॥

'महासभा' मे वर्त्तमान से– रचना करी भविष्य काल की।
गाँठ गाँठ सुलझाई उसने– जग के उलझे हुए जाल की॥
निर्धनता, भुखमरी, नग्नता– वनी समस्याये भारत की।
किया दुख मे याद राम को, नौका कभी न रुकती सत की॥

वह रोज समस्या सुलझाता।

पर सुलझाने से पहिले ही– उलझाती नयी समस्याये।
गाँधी के पदचिह्नो पर चल– आओ हम उलझन सुलझाये॥
उलझन की सुलझन राम-नाम, आओ सव राम-नाम गाये।
जग उलझन, जग मे मत उलझो, वस राम एक, लाखो राये॥

उलझन मे राम याद आता।
वह रोज समस्या सुलझाता॥

राम ! मैं अपराध भी हूँ, भूल भी हूँ।
माध हूँ, जग के हृदय मे शूल भी हूँ॥

थक रहा हूँ और चलता जा रहा हूँ।
ज्योति जग को बाँट ढलता जा रहा हूँ॥
पिस रहा हूँ किन्तु खिलता जा रहा हूँ।
कैंचियो से रोज सिलता जा रहा हूँ॥

राम ! मैं मँझधार भी हूँ, कूल भी हूँ।
राम ! मैं अपराध भी हूँ, भूल भी हूँ॥

राम ! चलना चाहता पर– मार्ग मे काँटे रँगीले।
बाँध लेते बन्धनो मे– रँग दिखा कर लाल पीले॥

कदम जब आगे बढाता– रोक लेता मोह जग का।
मुक्ति-पथ पर आँच आती, फैल जाता जाल ठग का॥
राम ! जग की चाह मे फँस– राह जग की छूट जाती।
याद जब करता तुझे मैं– खीच कर तृष्णा बुलाती॥

राम ! तुझको देखते हैं– दुख मे ये नयन गीले।
राम ! चलना चाहता पर– मार्ग मे काँटे रँगीले॥

राम ! अँगरेजी हवा से– आज सारे पेड सूखे।
राम ! पथ पथ पर पडे हैं– आज नर ककाल भूखे॥

आज टुकडे के लिए यह– विश्व सारा रो रहा है।
लाज बिकती है कफन पर, आज यह क्या हो रहा है ?
राम ! अपने चरण दे दो, बढ चलूँ आगे अकेला।
मौत से लडने चलूँ अब, बहुत सोया, बहुत खेला॥

पी चुका मधु, जहर पीना– चाहते हैं ओठ रूखे।
राम ! अँगरेजी हवा से– आज सारे पेड सूखे॥

राम ! सबको शान्ति दो तुम ।
भ्रान्ति फूँको, कान्ति दो तुम ।।

सत्य क्या ? क्या है अनश्वर ?
सत्य को पहिचान ले नर ।
भूल को क्यो फूल समझे ?
भँवर को क्यो कूल समझे ?

क्रान्ति मे अब कान्ति दो तुम ।
राम ! सब को शान्ति दो तुम ।।

किया 'राम' को याद जिस समय– सहसा मिले उपाय अभगुर ।
'चर्खे कर्घे मे स्वतन्त्रता', मिले विश्व को विशद शिव गुर ।।
चर्खा नगे का कपडा है, चर्खा भूखो की रोटी है ।
चर्खे मे स्वतन्त्रता देवी, उद्यम उन्नति की चोटी है ।।

अपने आश्रम मे कर्घे पर– भक्तो से कपडा बुनवाया ।
ग्राम ग्राम मे जा गाँधी ने– बहिनो से चर्खा चलवाया ।।
ढूँढ जुलाहे लाये गाँधी, ढूँढ ढूँढ कर चर्खे लाये ।
पैर छिल गये तब गाँधी ने– घर घर मे चर्खे चलवाये ।।

महासाहसी 'गगाबाई'– गाँधी जी की पूर्ति बन गई ।
चर्खे ढूँढ दिये गाँधी को, या चर्खो की मूर्ति बन गई ।।
सब कुरीतियाँ छोड विचारी– गाँधी की वाणी पर चलदी ।
गाँधी जी के पदचिह्नो पर– दीप जलाये जल्दी जल्दी ।।

'गगा बहिन' घूमती डोली, 'बीजापुर' मे चर्खे पाये ।
जो गहरे पानी मे उतरे– खोये रत्न ढूँढ वे लाये ।।
'बीजापुर' मे माँ बहिनो ने– चर्खे रख छोडे टाँडो पर ।
मन मे फूले नही समाये– गाँधी जी चर्खो को पाकर ।।

टॉडो से चर्खे उतार कर– सब मॉ बहिनो से कतवाये।
पूनी देकर सूत कता कर– रोटी दी, कपडे दिलवाये ।।
चर्ख कतवाने के हित मे– 'गगा बहिन' मशीन बन गई।
भारत मॉ ने चर्खा पाया, या रूठी तकदीर मन गई ।।

गॉधी जी ने भीख मॉग कर– रुई मँगाई, सूत कताया।
चले गये वे जिधर उधर ही– नया कातने वाला पाया ।।
आश्रम मे चर्खे मँगवा कर– जन जन से चर्खा चलवाया।
तार तार से खादी बुन कर– भूखो को भोजन करवाया ।।

उस भविष्य-ज्ञाता ने जग मे– खद्दर के टुकडे बिकवाये।
जो मलमल पहिना करते थे– वे खादी मे सज कर आये ।।
चर्खे की ताने सुनते थे– भारत मॉ के ताने बाने।
'भिनन भिनन भिन तिन तिन तिन ती'– सुनते थे चर्खो के गाने ।।

चर मर चर चर्खे चलते थे, बहिने सूत कातती गाती।
लम्बे लम्बे तार खीचती, तारो से मोती बरसाती ।।
देख देख चर्खो का चलना– गॉधी फूले नही समाते।
तार तार मे बापू का स्वर, ग्राम ग्राम मे रघुपति गाते ।।

एक रूप के रूप अनेको, कभी 'कृष्ण' है कभी 'राम' है।
कभी कभी आने वाले ने, अलग अलग धर लिये नाम है।।
लेकिन मर्यादा पुरुषोत्तम, मैने तो गॉधी जी पाये।
सत्य वही है जिसके आगे, पाप प्रकट होकर शरमाये ।।

बोलो मेरे राम! तुम्हे मैं बुला रहा हूँ।

पखा झलने को आकुल है लज्जित पलके।
सावन भादो बन जाये धागो सी अलके ।।
चित्र खीचता रहूँ निरन्तर राम! तुम्हारे,

बोलो मेरे राम! तुम्हे मैं बुला रहा हूँ ।।

राम ! मेरी गल्तियो को दूर कर दो !
राम ! मैं मदचूर, तुम मद चूर कर दो !!

वासना की आग मे मैं जल रहा हूँ।
मैं छला जाकर असत् को छल रहा हूँ॥
गल रहा हूँ, पैर मेरे फँस रहे हैं।
मौत सर पर नाचती, पर हँस रहे हैं॥

राम ! सर पर तुम दया का हाथ धर दो !
राम ! मेरी गल्तियो को दूर कर दो !!

राम ! मेरे पाप सारे माफ कर दो !
राम ! मेरा मन मलिन है, साफ कर दो !!

मैं बडा पापी तुम्हारे पास आया।
तुम शरण में लो, लिये यह आश आया॥
जल रहा जीवन, बुझादो स्नेह-जल से।
राम ! मैं छल, तुम छुडालो मुझे छल से॥

राम ! धो धो दाग दिल के साफ कर दो !
राम ! मेरे पाप सारे माफ कर दो !!

मैने लाखो पाप किये हैं, तुमने लाखो क्षमा किये।
मैं गड्ढे मे गिरा कि सहसा— तुमने अपने चरण दिये !!
जब भी डूबा बीच भँवर मे— तुमने तभी निकाल लिया।
मेरे जैसे पापी को भी— मुँह माँगा वरदान दिया॥
मे कलियुग का पापी जिसको— तुमने किया किनारे पर।
बार बार तुझको प्रणाम है— ओ नर नारायण ईश्वर !

राम ! आज संग्राम छिड़ गया— दैत्य-शक्ति में, राम-भक्ति में।
मैं अपने को घोल चुका हूँ— राम-भक्ति में, सर्व शक्ति में॥

राम ! तुम्हारे ही चरणों में— अपनी नौका छोड़ चुका हूँ।
जग से नाता तोड़ राम ! मैं— तुमसे नाता जोड़ चुका हूँ॥
छोड़ चुका हूँ पाप पुण्य का— सारा भार तुम्हारे ऊपर।
मेरा और दुखी दुनिया का— सारा प्यार तुम्हारे ऊपर॥

तुम अतीत हो, वर्तमान तुम, तुम भविष्य हो सृष्टि व्यक्ति में।
राम ! आज संग्राम छिड़ गया— दैत्य-शक्ति में, राम-भक्ति में॥

राम ! सब सहता रहूँ, वरदान दो यह।
भक्त तेरा हूँ, मुझे अभिमान दो यह॥

अब न गाऊँ गीत इस नश्वर जगत के।
अब न आये याद वे दुर्दिन विगत के॥
ज्ञान का अभिमान लेकर भक्ति-रस दो।
राम-रस पीता रहूँ, यह शक्ति बस दो॥

भक्ति-रस से पूर्ण जग हो, ज्ञान दो यह।
राम ! सब सहता रहूँ, वरदान दो यह॥

राम-नाम का शेष रहा है— मेरे पास सहारा।
देशभक्ति बन बना रहे यह— प्रेम प्रकाश तुम्हारा॥
दुखियारी आँखों से प्रतिपल— तुम पर अर्घ्य चढाता।
राम ! तुम्हारे अभिनन्दन में— जन जन दीप जलाता॥
दीप बाट मे जलते रहते, मैं भी जलता रहता।
प्रात आता, सन्ध्या आती, जीवन ढलता रहता॥

पर पूजा के लिए पास है— ईश्वर ! चरण तुम्हारा।
राम-नाम का शेष रहा है— मेरे पास सहारा॥

वल्कल धारी राम छिप गये, राम आ गये खद्दरधारी।
खादी की धोती बुन लाई– देवी 'गगा' वहिन विचारी॥
वीर विजयिनी 'गगावाई'– धन्य धन्य चर्खे की माता।
यदि न भगीरथ गगा लाते– कैसे पीडित जग जल पाता॥

गाँधी जी के सकल्पो से– चर्खो के आन्दोलन जागे।
चर्खो की ताने सुन सुन कर– रोये मिल-मालिक हतभागे॥
गाँधी जी के पास गये वे, बडे बडे लालच दिखलाये।
या कि कला की हत्या करने– कीडे लिये थैलियाँ आये॥

माया ठगनी नकटी कर दी, फँसे नही निर्द्वन्द जाल मे।
लोक और परलोक उन्ही का– रहते हे जो मस्त खाल मे॥
मिलवालो से कहा त्याग ने– अपने सब लालच ले जाओ!
रोजी मत छीनो मशीन से, मत भारत कगाल बनाओ!!

पूँजी जन जन की थाती है, रकम न गैरो को मोटी दो!
विधवाओ का खून न चूसो, नगे भूखो को रोटी दो!!
बोले मिल-मालिक गाँधी से– चर्खे क्या हे यन्त्रकाल मे?
बापू बोले, श्रम के मोती– कैद मत करो स्वर्ण जाल मे॥

पूँजी मुक्त करो कारा से, दिशा दिशा से चर्खे बोले।
रूई के बढते तारो से– धनिको के सिहासन डोले॥
काँटो की नोको पर चल चल– बापू फूलो से मुसकाये।
सत्यशोध से पृष्ठ पलट कर– 'असहयोग' के पथ पर आये॥

'अली भाइयो' का आन्दोलन– चला 'खिलाफत' के बारे मे।
'उलमाओ' के साथ शान्ति से– गाँधी घूम लिये सारे मे॥
चले मिला कधे से कधा, मानो औषधि बढी रोग की।
अन्त 'खिलाफत सम्मेलन' मे– करी प्रतिज्ञा असहयोग की॥

सारी रात कसौटी पर कस— पास हुआ प्रस्ताव सभा मे ।
चुम्बक जैसी महाशक्ति थी— गाँधी जी की पूर्ण प्रभा मे ॥
फिर 'गुजरात' गये गाँधी जी, 'राजकीय परिषद्' मे बोले ।
सत्य आत्म-बल के गौरव से— 'असहयोग' के पन्ने खोले ॥

'असहयोग' के बडे प्रश्न पर— 'महासभा' ने सभा बुलाई ।
'कलकत्ता' मे काँगरेस की— गाँधी जी ने शान बढाई ॥
बडे बडे नेतागण पहुँचे, 'लाला जी' अध्यक्ष लाजपत ।
मानो मूर्त्त रूप बन बैठे— दर्शक और सदस्यो से मत ॥

'असहयोग' का बना मसविदा— सत्य अहिंसा पूर्ण शान्ति से ।
भारत माँ स्वाधीन करेगे— पूर्ण शान्ति की महाक्रान्ति से ॥
असहयोग हो पर स्वराज्य हित, बोले सत्य शान्ति के तारे ।
हम परतन्त्र स्वतन्त्र न जब तक— तब तक क्रान्ति क्रान्ति के नारे ॥

'कलकत्ता' मे 'असहयोग' का— सब नेताओ ने प्रण ठाना ।
वीर दिवगत 'लोकमान्य' का— बहुत दुख गाँधी ने माना ॥
पलक मूँदते ही पल भर मे— 'लोकमान्य' की याद आ गई ।
मानो महासभा के ऊपर— भावुक की बरसात छा गई ॥

अश्रु बहाते बोले गाँधी— हाय ! छिन गई ढाल देश की ।
मूर्त्तिमान इस असहयोग मे— कौन करेगा पूर्त्ति शेष की ?
बत्ती बिना कही दुनिया मे— दीपक भी जलते देखा है ?
क्या अन्धे को बिना सहारे— बिना गिरे चलते देखा है ?

'लोकमान्य' के महाशोक मे— बहुत दुखी देखे नारायण ।
मानो 'लक्ष्मण' की मूर्च्छा से— बिलख बिलख कर रोया कण कण ॥
'तिलक' भाल के तिलक बन गये, छोड गये वे अमर कहानी ।
चप्पे चप्पे पर अकित है— वीर 'तिलक' की अमर जवानी ॥

मरती जीती इस दुनिया मे– रह जाती है शेप कहानी।
क्या न 'राम' रोये थे बन मे ? क्या न 'कृष्ण' ने पीडा मानी ?
'तिलक', 'गोखले' की स्मृति मे घुल– बरस रहे थे बादल क्षण क्षण।
हृदय थाम कर गाँधी जी ने– शुरू किया फिर निर्मल भाषण ।।

असहयोग वह अमर अस्त्र है– जिससे बडे बडे बम हारे।
असहयोग मे सत्याग्रह है, सत्याग्रह मे है ध्रुव तारे।।
ध्रुव तारे की अमर ज्योति से– दीपित है सब तृषा भरे मृग।
सत्य अहिसा के प्रकाश से– देख रहे है दुनिया को दृग ।।

असहयोग मे दीपशिखा है, विष मे बुझी हुई आरी भी।
असहयोग मे शान्ति व्याप्त है, और क्रान्ति की चिनगारी भी ।।
असहयोग मे शुद्ध अहिसा, सत्याग्रह का शख बोलता।
असहयोग मे आत्मा-बल है, आत्मा-बल से दैत्य डोलता ।।

जला हृदय की दुर्बलताये– असहयोग बल बन जाता है।
असहयोग फूलो की असि है, अर्चन से नर फल पाता है ।।
असहयोग के आन्दोलन को– किया सर्वसम्मति से स्वीकृत।
स्वतन्त्रता के मणिदीपो मे– डाल दिया गाँधी जी ने घृत ।।

मिलता पूर्ण स्वराज्य शान्ति से, राज्य क्रान्ति के बिना न मिलता।
जब जीवन से सिँचता उपवन, फूल तब कही जग मे खिलता ।।
"करो अछूतोद्धार भाइयो!" कहा 'नागपुर' कॉगरेस मे।
"एक रहो सब, एक रहो सब, बनी रहे एकता देश मे ।।

खादी के तारो को जोडो धो दो छुआछूत की स्याही।
कैसा हिन्दू, मुसलमान क्या, हिन्दू मुस्मिल हैं हमराही ।।
कॉगरेस के आदर्शो से– सच्ची स्वतन्त्रता पाओगे।
यदि आदर्शो को कुचला तो– इसी आग मे जल जाओगे ।।"

सार्वजनिक जीवन मे व्यापक– अमर-ज्योति वह जली रात दिन।
कवियो ने भी सार निकाला– गाँधी जी की चापे गिन गिन ॥
वह ऐसा सूरज जो निशि दिन– तिमिर मिटाता ही रहता है।
कभी नही वह सत्य भूलता, प्रतिपल 'राम! राम!' कहता है ॥

ईश्वर! ईश्वर! मेरे ईश्वर! तुम ही मेरी लाज बचाओ!
राम-नाम की नाव खोल दो, भवसागर से पार लगाओ!!
राम! युक्ति दो, राम! मुक्ति दो, तेरा प्रेम माँगने आया।
राम! चरण दो, राम! शरण दो, सारी दुनिया ने ठुकराया ॥

जग के आगे पल्ला फैला– माँगी बहुत प्रेम की भिक्षा।
प्रेम राम के पास मिलेगा– पाई यही प्रेम से शिक्षा ॥
राम! प्रेम दो, राम! भक्ति दो, माँग रहा मैं पैर पकड कर।
पर-दुख दूर करूँ जीवन भर– यह वरदान मुझे दो ईश्वर!

राम! सुना है, राम! पढा है– मिल जाते भगवान भक्ति से।
तुम तो राम! दिया करते हो– मुँह माँगा वरदान भक्ति से ॥
दुनिया से थक कर अन्तर ने– यही कहा, 'तू राम राम रट!
राम नाम रट, राम नाम रट, राम नाम रट, राम नाम रट!!'

राम! दिये थे 'चित्रकूट' मे– तुमने ही 'तुलसी' को दर्शन।
राम! तुम्हारी चरण-धूलि से– पाया जड पत्थर ने जीवन ॥
गाँधी सत्य, सत्य गाँधी हैं, परमेश्वर के ही स्वरूप हैं।
शान्ति अहिंसा शुद्ध सत्य हैं, अक्षर अक्षर मे अनूप हैं ॥

युग युग का आलोक मुखर है– नीरव साधू के दर्शन मे।
उस प्रकाश को माप न सकते– बारह सूर्य ज्योति-नर्तन मे ॥
पूर्ण अहिंसा बिना सत्य के– दर्शन कभी नही हो सकते।
आत्म-शुद्धि के बिना हृदय की– स्याही कभी नही धो सकते ॥

तन मन वचन और कर्मों से– करदे सबको निर्विकार तू।
फूक वासना सत्य सूर्य से, दे दे अपना अमर प्यार तू॥
अपने छिपे विकार देख लूँ, अपनी कमियो को भी तोलूं।
माया ममता मोह छोड कर– राम नाम लूं, सच सच बोलूं॥

राम! फूल से शूल आज मैं सब की आँखो में।
राम! भयानक भूल आज मै सब की आँखो मे॥

तुम वसन्त, मैं पापी पतझड, शिशु सी कविता हूँ।
तुम नौका पतवार और मैं सूखी सरिता हूँ॥
मैं सुहाग के हाथो मे पर फूटी चूडी हूँ।
तुम सुहाग के चिह्न और मे टूटी चूडी हूँ॥

आग लगा दी राम! विश्व ने मेरी पाँखो मे।
राम! फूल से शूल आज मैं सब की आँखो मे॥

अन्धकार का शत्रु सूर्य है, असहयोग सत का असत्य से।
मृत्यु जिन्दगी खाती है पर– जीवन जीता सदा मर्त्य से॥
पहले जलती आग क्रान्ति की, पीछे दीप शान्ति का जलता।
वही लक्ष्य तक पहुँच सका है– जो अगारो पर है चलता॥

पञ्चदश सर्ग

बहिष्कार

शस्य श्यामला मातृभूमि पर– सङ्गम बन कर उडा तिरगा।
हिमगिरि की हर लहर लहर से– बहती चली मुक्ति की गगा॥
गगा, यमुना, सरस्वती का– सगम अम्बर मे लहराया।
नौ रस बरसे, किरणे बिखरी, चारो ओर उजाला छाया॥

हरी-भरी धरती माता की– हरी ज्योति मे कान्ति व्याप्त है।
रग सफेद चाँदनी मानो, या गाँधी की शान्ति व्याप्त है॥
केसरिये रँग मे सूरज की– स्वर्णिल आभा दमक रही है।
लहर लहर से सत्य अहिसा– पगडण्डी पर चमक रही है॥

शख बजाते ही झण्डे मे– बलि की वेला का आवाहन।
झण्डे के नीचे आते ही– बनता जेठ मास भी सावन॥
अम्बर तक उड कर अम्बर से– दीप धरा पर ले आता है।
हिमगिरि के ऊपर लहरा कर– गाँधी जी के गुण गाता है॥

तोपो तलवारो पर बापू– उठा तिरगा बढे पवन से।
शक्ति प्रतिष्ठित हुई हृदय मे, कोटि कोटि चल पडे हवन से॥
कूद पडे सागर मे बापू, 'मोतीलाल' 'जवाहर' पाये।
वीर 'पटेल', 'सुभाष' केसरी– बजते ही रण-भेरी आये॥

'मौलाना आजाद' आदि से– मुसलमान भी बने तिरगे।
सब मिल गुँथे एक माला मे, छोड दिये आपस के दगे॥
महा क्रान्ति के अगारे से– 'जय प्रकाश नारायण' आये।
श्री 'राजेन्द्र प्रसाद' मुखर हो– सत्य शान्ति की प्रतिध्वनि लाये॥

इन ऋपियो ने कॉंगरेस मे– महायज्ञ का कुड बनाया।
स्वतन्त्रता की वलिवेदी पर– तन मन धन बलिदान चढाया॥
सब ने गुरु गॉधी को माना, पीछे चले चरण-चिह्नों पर।
'गॉधी जी की जय हो, जय हो!' गूँजा धरती अम्बर मे स्वर॥

गये एक घर मे गॉधी जी, नगे बालक रोते देखे।
जाडा यम सा घूम रहा था, शिशु धरती मे सोते देखे॥
आँखो मे आँसू भर लाये– गॉधी जी कर्त्तव्य-परायण।
गिरे फूस के कच्चे घर मे– मानो थे दरिद्र-नारायण॥

आग मे आँसुओ की वह विचारा जल रहा पल पल।
प्रेम के प्राण बापू के नयन भर आ रहे छल छल॥
फूस की झोपडी मे सिन्धु का मानस उमडता है।
दुखी को देख दृग-जल मे मेघ का मन घुमडता है॥

तड़पता भूख से बालक, कृषक वह रो रहा नगा।
आँसुओ से शर्म ढक कर बहाती कौन यह गगा॥
देश के दु ख से बह बह बिखरता इत्र यह देखो!
जिसे हम कह रहे भारत कि उसका चित्र यह देखो!

कीच मे पैर, तन नगा, गगन से गिर रहा पानी।
पसीना देख माथे पर श्याम घन से बहा पानी॥
किसी के स्वेद-कण गिर कर धरा पर वन गये मोती।
उसी को देख बापू की मृदुल सी भावना रोती॥

देखकर देश को नगा, लॅगोटी बॉध ली तन पर।
देश का ढॉपने को तन वही तो बुन रहा खद्दर॥
तडपता भूख से देखा कि उसने कर दिया अनशन।
किसी को दु ख मे देखा कि उसने दे दिया तन मन॥

किसी को धूप मे देखा कि तन की तान दी छाया।
धरा को प्यास मे देखा, गगन ने नीर बरसाया॥
नयन का नीर बह बह कर सिन्धु का बन गया पानी।
दया जागी, प्रथम कवि ने धरा की पीर पहचानी॥

बरसे दृग से जल के झरने,
कपडे तज, सन्त बने गाँधी।
जल से पग धो जननायक ने–
कटि से घुटनो तक की बाँधी॥

जननायक ने जन के दुख मे–
बरसात बहा सरिता पाई।
जन दीन जहाँ भगवान वही,
तन धार वहाँ करुणा आई॥

वस्त्र पहिनने छोड उसी क्षण– केवल एक लँगोटी बाँधी।
हर कम्पन से शिवम् सृष्टि की, धन्य धन्य मनमोहन गाँधी!
'स्वर्ण कैसरे हिन्द पदक' को– त्याग दिया उस देशभक्ति ने।
देशभक्ति देवी माता की– पूजा की उस महाशक्ति ने॥

त्याग तपस्या के प्रतीक ने– विस्तृत विद्यापीठ बनाई।
जग को दीपित करने वाली– शिक्षा की श्री-ज्योति जगाई॥
'गाँधी आश्रम' खुले, खिला श्रम, बिकने लगा देश मे खद्दर।
फुकने लगे विदेशी कपडे, जली देश मे होली घर घर॥

भारत के कोने कोने मे– जली विलायत की रगीनी।
हसो से सफेद खद्दर से– उडी सुगन्धे भीनी भीनी॥
ऊपर से चमकीला रेशम, पर अन्तर मे जहर भरा था।
लाखो रुपयो का था लेकिन– उससे भारतवर्ष मरा था॥

यदि सोने के प्यालो मे विष- तुम्हे पिलाये, क्या पीलोगे ?
यदि कैची से पख काट दे- क्या जिन्दा रह कर जीलोगे ?
ये विलायती वस्त्र तुम्हारा- खून विलायत ले जाते हैं।
ये विलायती वस्त्र तुम्हारा- मास तुम्हारे घर खाते है ॥

ये विदेश के व्यापारी गण- हीरे मोती लूटे लेते।
ये विलायती चमकीले ठग- टुकडे खाकर धक्के देते ॥
बहिष्कार 'युवराज' सदृश का- किया आत्मबल से गाँधी ने।
मानवता की लाज बचाली- गहरी दलदल से गाँधी ने ॥

'मुँह मे राम, बगल मे छुरियाँ'- जब कि यहाँ 'युवराज' पधारे।
बहिष्कार का झण्डा लेकर- कूदे मोहनदास हमारे ॥
'ब्रिटिश-पुत्र' के अभिनन्दन मे- बन्द सभी बाजार पडे थे।
मानो मृत्यु-शोक से उस दिन- मरघट और मसान खडे थे ॥

दमन-नीति को आत्मा-बल से- हार माननी ही पडती है।
आँसू दीपक बन जाते है, ज्योति अँधेरे से लडती है ॥
बहिष्कार कर दिया विदेशी, बहिष्कार की दहकी ज्वाला।
बहिने चली पिकेटिंग करने, सर पर तना विदेशी भाला ॥

हर दुकान पर खडी हो गई- वीर देवियाँ खद्दरधारी।
मानो लक्ष्मी की रक्षा को- खडी हो गई लाज हमारी ॥
गली, मुहल्लो, बाजारो मे- निकली गाँधी जी की टोली।
शहर शहर मे, गाँव गाव मे- जली विदेशी विष की होली ॥

विदेशी वस्त्र फुकते है।
धुएँ से मेघ झुकते है ॥
हृदय मे जल रही होली।
उधर से चल रही गोली ॥

गुलामी की चिता है यह।
क्रान्ति सी दहकती ही रह–
कि जब तक पहिन ले खद्दर।
कि जब तक डस रहे विषधर॥

कि जब तक दृगो मे पानी।
कि जब तक वन्दिनी रानी॥
देश ने नीद छोडी है।
सन्त ने दृष्टि मोडी है॥

राख का ढेर कहता है–
महा अन्धेर कहता है–
आह की गूँजती बोली–
विदेशी वस्त्र की होली॥

कही देवियाँ वन्दी करली, कही भाइयो को पिटवाया।
कही गोलियो से छिदवाया, कही वेडियो पर लटकाया॥
कुछ जन की सम्पत्ति जब्त की, कुछ को लालच देकर मारा।
किन्तु हिमालय सा स्थिर देखा– भारत माँ का भाग्य-सितारा॥

राम! मे दृढतर हिमालय हूँ, हिमालय ही रहूँगा।
राम! पृथ्वी की तरह मे मूक रह सब कुछ सहूँगा॥

राम! इस नश्वर जगत मे अमर है यह प्यार मेरा।
अर्चना करता रहेगा प्रेम से तेरा चितेरा॥
रात दिन मस्तक झुका कर चरण-रज चूमा करूँ मैं।
राम! मन्दिर मे तुम्हारे भ्रमर सा झूमा करूँ मैं॥

भारती वीणा वजाती, मैं कथा तेरी कहूँगा।
राम! मैं दृढतर हिमालय हूँ, हिमालय ही रहूँगा॥

सत्याग्रह के शस्त्र चल पडे– सत्यम् शिवम् सुन्दरम् पाने।
गये 'बारडोली' गाँधी जी– सत्याग्रह का केन्द्र बनाने॥
नीव धरी सत ने स्वराज्य की, वह पहली रणभेरी बोली।
फूस बटोर रहे थे नेता– रचने को बन्धन की होली॥

भारत के कोने कोने मे– लगने लगे फूस के चट्टे।
दाँत चलाते थे जो हम पर– उनके दाँत हो गये खट्टे॥
जलती थी वह नग्न गुलामी, या जलते थे भाव विदेशी।
आग बबूला होकर दौडा– भारत पर परदेशी 'केशी'॥

गूँज उठा गाँधी का नारा– हम को दे दो राज्य हमारा।
सुन कर आग हुए गोरे गण, ठहरे बिना चढ गया पारा॥
'दमन दमन! कुचलो कुचलो!' के– अँगरेजी हथियार चल पडे॥
गाँधी जी की जय जय कहते– गाँधी जी के प्यार चल पडे।

चिनगारी लगते ही धधकी– 'चोरीचोरा' मे वह ज्वाला।
पीडित मतवाली जनता ने– जिसमे आँखो का घी डाला॥
ज्वाला मे जल डाल उसी क्षण– गाँधी ने हत्याग्रह रोका।
जनता का आवेश देखकर– शाश्वत ने सत्याग्रह रोका॥

कुछ सस्ते भावुक लोगो को– गोरो ने विरुद्ध भडकाया।
काँगरेस मे गाँधी जी पर– तूफानी सागर लहराया॥
बादल आये और उड गये, लेकिन हिले न तिल भर गाँधी।
गाँधी के सर पर से गुजरी– लाखो काली पीली आँधी॥

'यग इण्डिया' मे गाँधी ने– लिखे लेख चिनगारी वाले।
राजद्रोह के अग्रलेख पढ– अँगरेजो ने तीर निकाले॥
महाशक्ति को अँगरेजो ने– कैद किया कच्चे धागो मे।
'सन् बाईस मार्च तेरह' को– गारुड फैल गया नागो मे॥

'सैगन' को सौंपे गाँधी जी, राजद्रोह का दोष लगाया।
जिसने सब के दोष धो दिये, उस पर भी अभियोग चलाया॥
देश-दीपको के स्वागत मे– जज तक उठ कर खडे हो गये।
जग मे जितने झुके महात्मा, वे उतने ही बडे हो गये॥

सब अभियोग मान गाँधी ने– अपना लिखित बयान सुनाया।
अँगरेजो का कच्चा चिट्ठा– गाँधी ने जग को दिखलाया॥
"सहयोगी से राजद्रोह का– झण्डा लेकर चला किस लिये–
असहयोग का झण्डा लेकर, सुनो! सुनो! मैं चला जिस लिये–

जब भी दुःख पडे गोरो पर– मैंने उनके साथ दिये हैं।
उपकारो के बदले तुमने– हाथ हमारे बाँध लिये हैं॥
'बोअर' रण मे और 'जुलू' मे– सेवाओं का यह फल पाया।
हमदर्दी के बदले तुमने– हम पर 'रौलट एक्ट' लगाया॥

हमने मर मर कर सेवा की, तुमने जी भर हमे सताया।
अपने ही अन्तर से पूछो– तुमने कितना हमे रुलाया॥
कितने घाव किये छाती मे, 'जलियाँवाला बाग' देख लो!
जिससे हमको जला रहे हो– लगी हुई वह आग देख लो!

'इस्लामी' 'तुर्की' तीर्थों की– तुम पवित्रता नष्ट कर रहे।
यह पवित्र ऋषि-भूमि, इसे तुम– कहो कहो क्यो भ्रष्ट कर रहे?
भारतवासी से गोरो का– नैसर्गिक सम्बन्ध नही है।
पश्चिम पूरब मे आ जाये, ऐसा कही प्रबन्ध नही है॥

अपने काले कानूनो से– तुमने हमको मार दिया है।
असहयोग का मार्ग बता कर, दोनो का उपकार किया है॥
क्या तुम काले कानूनो को– सतत समझ बैठे कुरसी पर?
देश-भक्ति हित त्यागपत्र दो, मुक्त बनो जजीर तोड कर!"

सुन कर गाँधी-वाणी जज ने- अपनी आँखे तले झुकाली।
मानो गाँधी के स्वागत मे- स्वयम् दृगो ने आँख बिछाली॥
पर गुलाम थी कलम बिचारी, हत्यारे शासन की दासी।
चाँदी के टुकडो के पीछे, सजा सुनाने की अभ्यासी॥

दे देकर दृष्टान्त 'तिलक' के- गाँधी जी को दण्ड सुनाया।
"सजा वर्ष छ की है तुमको"- कह कर जज मन मे शरमाया॥
विदा जेल के लिए हुए जब- जनता की आँखे भर आई।
मानो 'राम' जा रहे वन को, 'दशरथ' को आ रही रुलाई॥

'द्वापर' मे बन्दीगृह ही मे- रूप धर लिया नारायण ने।
कलियुग मे फिर कारागृह को- तीर्थ कर दिया नारायण ने॥
मन्दिर बना दिया बन्दीगृह, नारायण की मूर्त्ति विराजी।
खुदा वही साकार हो गया, पूजा करते मुल्ला काजी॥

मन्दिर मस्जिद वही बन गये- पहुँचे चरण जहाँ भी डगमग।
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई- पूजे सब ने बापू के पग॥
कारागृह मे अमर पुरुष वे- वाणी की पूजा मे रत हैं।
अपनी 'आत्म-कथा' लिखते हैं, ईश्वर के चरणो मे नत ह॥

'आत्म-कथा' लिख रहे 'महात्मा', अक्षर अक्षर ज्योति दिखाते।
लगोटी वाले नारायण- सत्य प्रेम का मार्ग सिखाते॥
गाँधी जी की 'आत्म-कथा' मे- 'गीता' और 'कुरान' व्याप्त हैं।
गाँधी जी की 'आत्मकथा' मे- जीवन के सब सत्य प्राप्त हैं॥

गाँधी जी की आत्मकथा मे- मानव का इतिहास अमर है।
गाँधी जी की आत्मकथा मे- मनुष्यता की खुली डगर है॥
बन्दीगृह मे थे गाँधी जी, लेकिन जग मे कहाँ नही थे ?
ऐसी कोई जगह नही है- मेरे गाँधी जहाँ नही थे॥

सूरज ही से निकल रश्मियाँ- आँखो को प्रकाश देती है।
आँखो की भाषाएँ मन को- रस्सी बिना बाँध लेती है॥
कारागृह मे गाँधी जी ने- रची रूपरेखा भविष्य की।
स्वतन्त्रता के महामेध हित- रचना रचते थे हविष्य की॥

हिंसा के बल पर अकडी सी- अँगरेजी सरकार खडी थी।
और इधर भारत माता की- आँखो मे झर रही झडी थी॥
काँगरेस के वीर सिपाही- तन मन धन सब त्याग रहे थे।
भारत माँ के वीर लाडले- धीरे धीरे जाग रहे थे॥

असहयोग के आन्दोलन मे- गये 'जवाहर लाल' जेल मे।
ऐसे गये जेल मे जैसे- बालक जाते कही खेल मे॥
सागर पार देश गोरो का, प्रजातन्त्र की जहाँ दुहाई।
भारत मे साम्राज्यवाद क्यो, क्यो जनता पर सेना छाई ?

देश 'विलायत' उनका, लेकिन- भारत पर अधिकार जमाते।
भारत माँ का ताज पहिन कर- काली पीली आँख दिखाते॥
दुनिया वालो देख रहे हो, किसको पचायत कहता जग।
'लोक सभा' भी देख रही है- अपनी सत्ता के उल्टे डग॥

सुख से सत्ता भोग रहे थे- सजे 'जार्ज पचम' गद्दी पर।
'सन् उन्निस सौ तेरह' से वे- दमक रहे थे ताज पहिन कर॥
'मिले जुले मन्त्री मण्डल' के- 'ल्यॉड जार्ज' थे मन्त्री स्वीकृत।
वन्दीगृह पावन करता था- मेरे गाँधी का चरणामृत॥

बाद 'जार्ज' के मन्त्री पद पर- 'बोनर लॉ' थे 'टोरी दल' के।
बडे बोलवाले सुनते थे- जग मे 'कट्टर पथी' बल के॥
गद्दी पर 'सम्राट जार्ज' थे, 'कजरवेटिव दल' मन्त्री दल।
'रैडिंग वायसराय' यहाँ पर- दिखा रहे थे अपने छल बल॥

'मन्त्री-मण्डल' के विधान से- राज्य 'जार्ज पचम' करते थे।
नाम मात्र के राजा रानी, 'मन्त्री-मण्डल' से डरते थे॥
लका मे 'सीता माता' सी- बन्द पडी थी भारत माता।
गडा 'यूनियन जैक' गैर का- भारत के सिर पर लहराता॥

सत्ता थी 'अनुदार' उस समय, वायमराय 'वाल्डविन' आये।
भारत का आमिष खाने को- डायन फूट विषैली लाये॥
सन् उन्निस सौ तेइस था वह- जब कि 'वाल्डविन' की चलती थी।
जिसकी कारा मे भारत माँ- बनी मोमबत्ती जलती थी॥

जो व्यापारी बनकर आये- वे डाकू बन बैठे राजा।
उँगली से पहुँचा आ पकडा, उल्टा करने लगे तकाजा॥
पहली नीति फूट की पकडी, और दूसरी लालच वाली।
हम मे से कुछ टुकडो पर पड- उनके हाथ बन गये ताली॥

बडे बडे पद पा पा कर वे- लहू हमारा लगे चाटने।
माया के ठुमको पर रीझे, भारत माँ को लगे काटने॥
अपने हाथो से अपना घर- वे गैरो को लगे लुटाने।
ऊँची ऊँची कुरसी पाकर- घर दुश्मन को लगे सुलाने॥

बीन बजा अँगरेज मदारी- काले विषधर लगा खिलाने।
उनके दाँतो से उनको खा- जहर उन्ही को लगा पिलाने॥
कभी हिन्दुओ से खेला वह, खेला कभी मुसलमानो से।
झुक जाते थे नयन हमारे- अपनो के कडुवे तानो से॥

फूस छिपा अन्दर आँचल मे- डायन फूट घुस गई घर मे।
'मुस्लिम लीग' मुसलमानो के- पख उडा लाई अम्बर मे॥
हमे याद है भक्त 'विभीषण'- 'रामचन्द्र' से मिलने वाला।
'घर का भेदी लका ढाये', भेदी ने सब घर खा डाला॥

और अन्त मे वही 'विभीषण'– बन बैठा 'लका' का राजा।
आज कहाँ हैं 'राम' जिन्हो के– सिहासन पर भक्त विराजा॥
भारत मे 'जयचन्द' बहुत ह, पग पग पर कुचक्र चलते हैं।
धर्मचक्र मे आलोडित हम, ईर्ष्या-ज्वाला से जलते हैं॥

ईर्ष्या, माया, फूट मे मुक्ति कर रहे बन्द।
काम, क्रोध, मद, लोभ तज गाँधी जी स्वच्छन्द॥
पीते तक्र कुचक्र मे, लूट रही हे फूट।
पूंछ हिलाते भूठ खा, चाट रहे हैं बूट॥

गोरी चमडी के शासन मे– हम गुलाम सब कुछ खो बैठे।
भाषा खोई, भाव खो दिये, सब नगे भूखे हो बैठे॥
उनकी सस्कृति की कारा मे– बन्द हुई सभ्यता हमारी।
या गणिका पर रीझ रही है– प्रगतिशील भारत की नारी॥

पश्चिम के गहरे प्रभाव मे– अपढ कहाये विद्या तज कर।
वे ही पीते रक्त हमारा– जिनके लिये गये हम मर मर॥
ऊपर चमक दमक दिखलाई, अन्दर से कर दिया खोखला।
लेकर के सभ्यता दोगली– भारत मे घुस गया दोगला॥

घर मे घुसी बिमारी की जड, गाँधी ने कीडे पहचाने।
उनकी कल्याणी वाणी के– गूंजे कॉगरेस मे गाने॥
करी स्थापना कॉगरेस ने– 'हिन्दुस्तानी सेवा दल' की।
उलझी हुई समस्या जग की– गाँधी ने सेवा से हल की॥

बन्दीगृह मे बन्दी बापू– दैनदिन थे मुक्ति-मार्ग पर।
वर्षो से प्यासी धरती पर– बरस रहे थे बादल बन कर॥
कारागृह मे मुक्त-मनोहर– पेट दर्द के घिरे रोग से।
'अपेडिसइटिस' की पीडा थी, या कि परीक्षा दैवयोग से॥

अर्ध रात्रि के बाद जेल मे– किया ऑपरेशन डॉक्टर ने।
चिन्ता के बादल घिर आये, अश्रु बहाये भारत भर ने॥
बिजली के भारी प्रकाश मे– चीर फाड करते थे डॉक्टर।
पेट चाक था, बुझी बिजलियाँ, धरती लगी काँपने थर थर॥

कहा किसी ने, अब क्या होगा? डॉक्टर बोला, क्या बतलाऊँ?
इतने मे बिजली यह बोली– आओ, मैं प्रकाश दिखलाऊँ॥
नब्ज छूटती थी भारत की, जाते जाते प्राण आ गये।
या कि तमिस्रा की घडियो मे– गायक दीपक राग गा गये॥

मानो यम से सत्यवान के– प्राण सती 'बा' लेकर आई।
या कि प्रकृति के मुखमण्डल पर– सुख सुहाग की लाली छाई॥
या कि 'राम' ने 'पवनपुत्र' से– सजीवन बूटी मँगवाई।
जय जय जय 'हनुमान' हमारे, प्राण वायु ला जान बचाई॥

बुल्ले से ये श्वास है, टेर टेर श्री राम!
लोभ, मोह सब व्यर्थ हैं, अन्त न आये काम॥
अन्त न आये काम, जिस समय उडे पखेरू।
अन्त राख का ढेर, बनेगा देह सुमेरू॥
यह पूजा की मूर्त्ति, कर रहा जिस पर कुल्ले।
अपना जीवन जान, पलक मे पल के बुल्ले!

थर थर थर थर्राये गोरे, बन्दीगृह से गाँधी छोडे।
उसे कौन कब बाँध सका है– जिसने जग के बन्धन तोडे॥
जिसके घट मे राम विराजे– उसके साथ अजेय भक्ति-बल।
हाथ जोडती मुक्ति युक्तियाँ, प्राप्त आत्म आकीर्ण अमर फल॥

प्रभात का प्रकाश ले किसान गा रहा सखी !
कि चाँद रात मे लिये प्रभात आ रहा सखी !!
खिला सरोज, आरती उतार झूम ले सखी !
चढ़ा दुलार-अर्घ्य फूल पाँव चूम ले सखी !!

हम अपनो से जले पड़े है, क्यो सूरज को और जलाते ?
हम फूलो से मरे पड़े है, क्यो तलवारो से धमकाते ?
जीने वालो जियो खुशी से, हम मरने को निकल पड़े हैं।
ले चल हमे चाहने वाले, चलने को तैयार खड़े हैं॥

षोडश सर्ग

शीतल आग

आँसू पर अगार न डालो, पीडा ज्वाला बन जायेगी।
आँसू बन कर रह जाओगे, आँसू से यदि तन जायेगी॥
तुमने सोने की चिडिया को, पिँजरे मे बन्दी कर डाला।
देश हमारा हमको दे दो, रहने दो कुछ शेष उजाला॥

मानसरोवर की लहरो मे- मुक्त हस ने पर फैलाये।
पिँजरे से छुट उड कोयल ने- खुली डाल पर गीत सुनाये॥
कविता मुखर हुई कण कण से, जड चेतन मे हुई प्रसारित।
जननायक की मनहर भापा- सारे जग में हुई प्रचारित॥

'दरभगा', 'कोहाट' न माने, वही खून की खारी धारा।
हिन्दू मुस्लिम छुरियाँ लपकी, भाई ने भाई को मारा॥
मरे सहस्रो हिन्दू मुस्लिम, छुरे चले माँ की छाती पर।
क्या हिन्दू, क्या मुस्लिम पाते- फोड फोड कर आपस मे सर॥

ऐसी दशा देख गाँधी ने, 'त्राहि! त्राहि!' उपवास कर दिया।
पागलपन के आगे वलि को- अपना पूर्ण स्वरूप धर दिया॥
हत्या के इस महापाप का- सारा दोप स्वयम् ने माना।
वैठ तपस्या के आसन पर- दोष निवारण हित व्रत ठाना॥

नगरी के वाहर मकान मे- अग्नि-परीक्षा को जा वैठे।
चकित हो गई सभी जातियाँ, चरणो मे नेता आ वैठे॥
हिन्दू मुस्लिम अधिकारो हित- मेल हुआ, रच ली पचायत।
वही प्रेम की पावन गगा, आपस की मिट गई खिलाफत॥

पहुँच लक्ष्य पर गाँधी जी ने– व्रत इक्कीस रोज मे छोडा ।
घोर साम्प्रदायिकता का फण– बापू ने विष पी कर तोडा ।।
कर्मठ गाँधी के विरोध मे– उठी राजनीतिक दलबन्दी ।
चौराहे पर काँगरेस थी, टिम टिम दीपशिखा थी मन्दी ।।

खाई पडने लगी बीच मे, भेद-भाव आपस मे आये ।
बिगडे बैल, देश की गाडी– डोली, सब यात्री घबराये ।।
इन विपत्तियो के मेघो मे– गाँधी जी ने राम पुकारे ।
सुन पुकार 'निर्बल के बल' वे– दौडे नगे पैर बिचारे ।।

राम ! मुझे मेरे ये साथी– बीच भँवर मे छोड रहे है ।
राम ! जिन्हो पर मुझे भरोसा– वे ही अब मुँह मोड रहे हैं ।।

जिनके लिये आग से खेला, अपने सब अरमान जलाये ।
जिनके एक एक आँसू पर– मैंने सौ सौ अश्रु बहाये ।।
जिनके लिये अकेला ही मैं– कफन बाँध लेता हूँ सर से ।
वे ही जीवन जला रहे हैं– जलन भरी दुनिया के डर से ।।

राम ! आज रो रहा हिमालय, पत्थर अन्तर तोड रहे है ।
राम ! मुझे मेरे ये साथी– बीच भँवर मे छोड रहे हैं ।।

दुनिया कल्याणी वाणी के क्या क्या अर्थ लिया करती है !
अर्थ अनर्थ किया करती है ।।

सौरभ से विकसित फूलो मे कटु काँटे ढूँढा करती है ।
ऋतु-रानी की सुन्दरता पर पतझड के पत्ते धरती है ।।
शशि के जले हृदय को दुनिया कह देती कालिमा हृदय की ।
दावानल कब समझ सका है कोमलता कोमल किसलय की ।।

जग की जोक दूध को तज कर सच का खून पिया करती है।
दुनिया कल्याणी वाणी के क्या क्या अर्थ लिया करती है ।
अर्थ अनर्थ किया करती है ॥

चौराहे पर देख देश को– राम रमे गाँधी मे आकर ।
चौराहे से काँगरेस को– गाँधी जी ले गये लक्ष्य पर ॥
'बेलगाँव' की काँगरेस के– चुने गये वे अमर सभापति ।
जननायक के अभिभाषण से– गीतो मे आ गई नयी गति ॥

भूत भविष्यत् वर्त्तमान पर– गाँधी जी ने किया उजाला ।
नये पुराने चित्र दिखाये, पल मे नया रग भर डाला ॥
सब दल एक तराजू पर धर– हँसते हुए हस ने तोले ।
न्याय निपुणता से गाँधी ने– जन मन के दरवाजे खोले ॥

'कौसिल' के विधान को जाँचा, अँगरेजो की गति विधि आँकी ।
सत्य अहिसा के प्रतीक मे– भारत की स्वतन्त्रता झाँकी ॥
अँगरेजो ने भारत माँ पर– नये नये कानून लगाये ॥
'क्लास एरिया बिल' रद करवा– भारतीय अधिकार बचाये ।

शासन की शतरज बिछी थी, काले कानूनो की चाले ।
बादशाह मन्त्री मण्डल से– जूझ रही थी बुझी मशाले ॥
सारे भारत मे गोरो ने– पूर दिया मकडी का जाला ।
छिपा विदेशी रगीनी मे– भारत माँ का प्रखर उजाला ।

शासक की सत्ता के मन्त्री– बने 'मैकडॉनल्ड' श्रमिक दल ।
गिने चुने दिन बाद आ गया, वहाँ 'वाल्डविन' ले अपना बल ॥
'टोरीदल' का मन्त्री-मण्डल– राज्य कर रहा था भारत पर ।
कोटि कोटि भारत वीरो को– छल के फन्दो मे बन्दी कर ॥

राज्य वही है, स्वर्ग वही है– जिसमे राजा प्रजा एक हैं ।
सत्ता वही अमर रहती है– जिसके सत्ताधीश नेक हैं ॥
जग मे नेकी करने वाले– बोलो किस किस के गुण गाऊँ ?
काँगरेस के प्राणो की मैं– तुमको कितनी कथा सुनाऊँ ?

'देशबन्धु' ने देशभक्ति हित– तन मन धन अर्पण कर डाला ॥
'बेलगाँव' मे मिली सूचना, सारे जग मे हुआ उजाला ॥
महा त्याग के बाद वीर वे– 'दार्जिलिंग' मे स्वर्ग सिधारे ।
'देशबन्धु' थे, राष्ट्र-प्राण थे, बुझ कर जलते रहे सितारे ॥

जीवन धन्य 'दास' बाबू का, बडा गर्व है राष्ट्र-पिता पर ।
'दास' अमर है! 'दास' अमर है! मिट्टी का तन जला चिता पर ॥
इतिहासो के पृष्ठो पर हैं, कवियो की वाणी मे गाते ।
बापू के जीवन मे व्यापक, स्वतन्त्रता देवी मे पाते ॥

उनके अमर वाक्य कुछ ये हैं, "हृदय बदल कर शुद्ध बनाओ !
सर्जन और सगठन कर लो, मेलजोल की ज्योति जगाओ !!"
राजनीति के महापण्डितो! मेरा नम्र निवेदन सुन लो–
तार तार होकर मन बिखरे, बिखरे हुए फूल सब चुन लो !

'देशबन्धु' जैसी बलियो से– सिंची हुई इस काँगरेस की–
लाज तुम्हारे हाथ आज है, पार लगाना नाव देश की ॥
'देशबन्धु' से गाँधी जी को– बहुत प्रेम था, किन्तु न रोये ।
उनके भावो को फैलाया, उनके मन के मोती बोये ॥

एकत्रित दस लाख द्रव्य कर– 'देशबन्धु-स्मारक' बनवाया ।
'रसा रोड' पर उनके घर मे– अनुपम अस्पताल खुलवाया ॥
उनके सर पर तीन मुकुट थे– रक्खे वे 'जे० एम० सेन' पर ।
'बग प्रान्त' के बने प्रान्तपति, 'कार्पोरेशन' के थे मेयर ॥

नेता बड़े 'स्वराज्य सभा' के, गाँधी जी ने 'सेन' बनाये।
पैर बढ़े तो राह बन गई, नयन उठे तो रवि शर्माये॥
अमरीकन 'मिस्टर होल्मस' के— आगे कोई मुस्लिम बोले—
'गाँधी जी तो अफरीकन हैं', पर उत्तर सुन कर वे डोले॥

बोले 'होल्मस' अट्टहास कर— मुझको जग मे दावा यह है—
"अखिल विश्व के हैं गाँधी जी, सब के सिर की टोपी वह है॥"
ग्राम सगठन, शिक्षा, सेवा, चर्खे, खद्दर बने राष्ट्र-निधि।
जिससे मुक्ति मिले मानव को— खोजी गाँधी जी ने वह विधि॥

पर यह सघर्षो की दुनिया, खडी रेत की दीवारो पर।
बडे बडे योद्धा रच डाले— कुम्भकार ने मिट्टी छू कर॥
जय स्वतन्त्रता! अमर मुक्ति जय! छिडी वायु मे सुख स्वर लहरी।
विना पिये दर्शन से झूमे, चढी हुई थी इतनी गहरी॥

मचल उठा मिट्टी का यौवन, लहरो ने झण्डा लहराया।
बापू की वाणी हिलते ही— सागर क्षमा माँगने आया॥
कौसिल मे, कौसिल के बाहर— स्वतन्त्रता के लिये क्रान्ति थी।
लम्बी चौड़ी गोल धरा पर— बापू ही मे शेष शान्ति थी॥

हिन्दू मुस्लिम पागलपन ने— भारत माता की जड काटी।
तनातनी की आँधी मे ही— पहुँची काँगरेस 'गोहाटी'॥
'गोहाटी' मे मिली सूचना— 'श्रद्धानन्द' कत्ल कर डाले।
बापू के बढते पैरो मे— किये किसी मुस्लिम ने छाले॥

शोक छा गया 'गोहाटी' मे, मानो शोक सभा होती थी।
काँगरेस के अधिवेशन मे— खूनी पर हत्या रोती थी॥
शोकाकुल उस अधिवेशन मे— भाषण हुए, कार्य-क्रम आया।
प्रस्तावो पर नेता बोले, पथ 'स्वराजियो' का दिखलाया॥

नौकरशाही की तलवारे- कानूनो से लगे काटने ।
उनकी तलवारो की धारे- रक्त उन्ही का लगी चाटने ।।
'वायसराय भवन' मे 'ग्रविन'- अपनी गीता सुना रहे थे ।
परख रहे थे नेता गिन गिन, मन मन मे गुनगुना रहे थे ।।

कौसिल मे भारी मोर्चे थे, बाहर जलसे और प्रदर्शन ।
निर्धन के भोजन वस्त्रो हित- सत्याग्रह का होता नर्तन ।।
सामाजिक, सास्कृतिक वृद्धि मे- सबसे बडा राजनीतिक बल ।
सब के सुख मे अपना सुख है, शान्त करो जीवन की कल कल ।।

सरकारी मोर्चो पर गर्जे, मानव के अन्तर मे छाये ।
काँटे चुगते चले मार्ग के, कदम कदम पर फूल बिछाये ।।
जिससे जीती मजिल हारी- लक्ष्य उसी के चरण चूमता ।
प्यार उसी का धन्य धन्य है- जो काँटो के बीच झूमता ।।

स्वतन्त्रता की स्वर्ण चन्द्रिका- कारागृह मे बँधी पडी थी ।
या भारत माँ की छाती पर- दाँत निकाले हँसी खडी थी ।।
कहाँ कैद 'लका' मे 'सीता', गाँधी ने यह पता लगाया ।
स्वतन्त्रता वापिस लाने को- सत्याग्रह का शख बजाया ।।

सागर की गहराई मे घुस, पानी बन अम्बर मे घूमे ।
चाहो ने उन से सुख पाया, राहो ने उनके पग चूमे ।।
सत्य अहिसा से गाँधी जी- आन्दोलन को चला रहे थे ।
वीर निहत्थो को गोरेगण- दमन-नीति से जला रहे थे ।।

सह न सके कुछ नौजवान यह, धधक उठा दुर्द्धर क्रोधानल ।
महामेध मे घी पडते ही- उठा मार फुकार 'गर्म दल' ।।
खून उतर आया आँखो मे, युवक हो गये आग बबूला ।
चिनगारी लग गई फूस मे, धू धू जला फूस का पूला ।।

भारत माँ के कुछ पुत्रो ने- निर्मित किया क्रान्तिकारी दल ।
पिघल गया अन्तर का लावा, भडक उठा भीषण दावानल ॥
जैसे दबा साँप फण फाडे, ऐसे भभके वे अगारे ।
चिपट जोक से खून चूस कर- फूल गये गोरे हत्यारे ॥

ईंट उठाई अँगरेजो ने, पत्थर ले ये बढे अगाडी ।
कवच पहिन कर चली देवियाँ, छोड छोड रेशम की साडी ॥
'बिस्मिल' चले, 'लाहडी' भभके, कूद पडे 'असफाक' समर मे ।
सर से कफन, हृदय मे ज्वाला, बाँध बाँध पिस्तौल कमर मे ॥

रक्त सी रणचण्डी हुकार! उगल विष, नागिन सी फुकार!
निकल लप लप करती तलवार!
खून पी जा गट गट गट गट!!

भभकती है आँखो मे अग्नि, दहकते अन्तर मे अगार ।
आज पीना है ताजा लहू, आज करदे जननी! सहार ॥
क्रोध से फडक रहे भुजदण्ड, रुद्र का बजने दे डमरू ।
देख माँ! खुला तीसरा नेत्र, मिले वरदान मार कर मरूँ-
उसे जो करता अत्याचार ।

रक्त सी रणचण्डी हुकार! उगल विष, नागिन सी फुकार!
निकल लप लप करती तलवार!!
खून पी जा गट गट गट गट!!!

विप्लव के इन अगारो ने- फाँसी के तख्तो को चूमा ।
फाँसी के तख्तो से पूछो- कौन कौन फाँसी पर झूमा ?
'काकोरी' के मुँह से सुनलो- इन वीरो की अमर कहानी ।
स्वतन्त्रता के लिये मिटी है- इनकी उठती हुई जवानी ॥

हलचल की काली आँधी मे– गाँधी जी थे अटल हिमालय ।
'गोवर्द्धन' के लिये 'कृष्ण' थे, मानवता के थे न्यायालय ॥
वही आग को बुझा सका है– जो जन खेल आग से खेला ।
जिसे भरोसा है अपने पर– उसे न समझो कभी अकेला ॥

विप्लव के तूफान उठे थे, ब्रिटिश राज्य भी सावधान था ।
दगो की बाढो के अन्दर– 'वायसराय' शतावधान था ॥
कूटनीति के कदम उठाये, नेताओ को घर बुलवाया ।
'दिल्ली' पहुँच गये गाँधी जी, श्री 'अर्विन' से हाथ मिलाया ॥

ब्रिटिश राज्य की नयी घोपणा– राष्ट्र पुरुप के आगे आई ।
साथ 'साइमन' के कोडो ने– गाँधी जी पर करी चढाई ॥
भेद 'कमीशन' का सब परखा, समझ लिया सब कुछ गाँधी ने ।
दीपक की लौ आग बना दी, एक निमिप की उस आँधी ने ॥

बोले 'अर्विन' से गाँधी जी, "इसीलिये क्या मुझे बुलाया ?"
'अर्विन' बोले, "इसीलिये बस", सुन कर अखिल विश्व शरमाया ॥
गाँधी बोले, "चिट्ठी मे भी– जा सकती थी ये सब बाते ।
व्यर्थ बुलाया मुझे यहाँ तक, दिन न बताओ काली राते ॥

चढा 'साइमन' सिर के ऊपर– छिडक रहे हो नमक जले पर ।"
चित्रखिँचित से चले गये वे, बडी शान्ति से इतना कह कर ॥
बोले बापू, बहिष्कार हो, घुसे 'साइमन' जब इस घर मे ।
भण्डा फूट गया गोरो का– गली गली मे, नगर नगर मे ॥

'विल्सन' ने तो कहा यहाँ तक– गोरो के सिर पर कलक यह ।
'जलियाँवाला' खून न सूखा, पुती हुई मुँह पर कालस वह ॥
गाँधी जी 'मद्रास' आ गये– काँगरेस के अधिवेशन मे ।
बागो मे फूलो से महके, बैठे नेताओ के मन मे ॥

ब्रिटिश राज्य की नीति वृद्धि हित– चढा 'साइमन' भारत के सर।
उत्तरदायी शासन की विधि, लाये अपने साथ जॉचकर ।।
कागज के थोथे फूलो ने– तत्सम्बन्धी रूपक ऑके।
भारत का शोषण कर आये, अस्थिपजरो मे जा झॉके ।।

ब्रिटिश राज्य ने भारत मॉ पर– मीठी मीठी छुरी चलादी।
जिसने वार किया धोखे से, उसने अपनी चिता जलादी ।।
छल से 'अफजल' मिला 'शिवा' से, उसको बाघ नखो ने फाडा।
उससे कोई कब डरता है– जो भी झूठ-मूठ चिघाडा ।।

जब भारत मे घुसा 'कमीशन'– गूँज उठा स्वर 'बहिष्कार हो !'
जहॉ कही भी घुसे 'साइमन'– 'तिरस्कार हो! तिरस्कार हो!!'
जनता से बोले गॉधी जी– स्वागत हो काले झण्डो से।
करो प्रदर्शन, बढो अगाडी, रुके न पग लाठी डण्डो से ।।

प्राप्त पूर्ण स्वातन्त्र्य करो तुम, स्वतन्त्रता के दीप जलाओ!
भारत की क्यारी क्यारी मे– सौरभ सिंचित फूल खिलाओ!
देश राजनीतिक गति मे था, आ पहुँचा 'बम्बई' 'कमीशन'।
पैर गुलामी के दृढ करने– छाती पर छा गया 'साइमन' ।।

जिस दिन घुसा 'कमीशन' उस दिन– भारत भर ने की हडताले।
वाणी वाणी पर यह स्वर था, चलो 'कमीशन' दूर निकाले ।।
जहॉ कही भी गया 'साइमन'– वही दिखाये काले झण्डे।
सत्याग्रहियो की कमरो पर– पडने लगे पुलिस के डण्डे ।।

पर न विरोध रुका डण्डो से, नारे लगते ही जाते थे।
"दूर साइमन! दूर साइमन! वापिस! वापिस!" सब गाते थे ।।
गया 'साइमन' दिल्ली मे जब– काले बोर्ड टॅग गये आगे।
अपना बहिष्कार करवाने– फिर "लाहौर" गये हतभागे ।।

'लाला जी' आगे आगे थे, पीछे जनसमूह जाता था।
आँख उठाता जिधर 'साइमन'– उधर स्याह झण्डा पाता था॥
भारत माता के गौरव की– बचा रहे थे लाज 'लाजपत'।
कच्चा चिकना घड़ा 'कमीशन', लज्जा से भी हुआ नहीं नत॥

'लाला जी' के संचालन में– काले झण्डों का जलूस था।
दियासलाई की ढेरी थी, सारे में बिछ रहा फूस था॥
टूटी पुलिस लाठियाँ ले ले, 'लाला जी' पर डण्डे बरसे।
टूट गईं हड्डियाँ उन्हीं की, खून बहा बहुतों के सर में॥

हाय! अन्ततोगत्वा इससे– 'लाला जी' की मृत्यु हो गई।
मिली वीरगति भारत-सुत को, दूर देश से शक्ति सो गई॥
चोटें चसकीं, किन्तु अन्त तक– स्वतन्त्रता के लिये लड़े वे।
बहिष्कार का झण्डा लेकर– सब से आगे रहे खड़े वे॥

अब 'संयुक्त प्रान्त' में आये, आ पहुँचा 'लखनऊ' 'कमीशन'।
काले झण्डों से करते थे– 'पन्त' 'जवाहर लाल' प्रदर्शन॥
प्रमुख कार्यकर्त्ताओं ने मिल– बोले बहिष्कार के नारे।
लाठी डण्डे ले ले दौड़े– इस पर लाल लाल हत्यारे॥

'पन्त' 'जवाहर लाल' वीर भी– बच न सके उनके डण्डों से।
पिटते पिटते भी करते थे– स्वागत वे काले झण्डों से॥
हिले न तिल भर, झुके न पल को, पड़ती रही लाठियाँ सर पर।
पैदल घुड़सवार, गोरे ने– रौंदा उनको दौड़ दौड़ कर॥

बर्बरता से पुलिस उन्हीं पर– डण्डे बरसाती जाती थी।
किन्तु 'साइमन' के विरोध में– जनता बढ़ बढ़ कर गाती थी।
पुलिस लाठियाँ चला रही थी– घुस घुस कर जनता के घर में।
किन्तु 'साइमन वापिस जाओ!' नारे गूँजे डगर डगर में॥

षोडश सर्ग

धन्य धन्य वह जनता जिसके– सम्मुख केवल वहिष्कार था।
प्राणो से ममता न जिसे थी, स्वतन्त्रता से जिसे प्यार था ॥
बुद्धि, युक्ति, बल और शान्ति से– वे विरोध करते जाते थे।
पर बेशर्म उन्हो के आगे– फिर भी बार बार आते थे ॥

'कैसरबाग' 'कमीशन' पहुँचा, चाय पिट्ठुओ ने पिलवाई।
भीड पुलिस ने दूर रोक दी, भीड वहाँ तक पहुँच न पाई ॥
लेकिन चमत्कार जनता के– देख 'कमीशन' तक घबराया।
जब कि चाय का प्याला उसने– अपने ओठो तक पहुँचाया–

काली चिट, काले गुब्बारे– तव उस पर वरसे अम्बर से।
कागज के काले झण्डो से– उनके टोप गिर गये सर से ॥
'वापिस जाओ !' लिखा जिन्हो पर– सर पर वे काले पतग थे।
चमत्कार यह देख उन्हो का– विकट बुद्धि अँगरेज दग थे ॥

भाग 'कमीशन' 'पटना' पहुँचा, जहाँ भीड थी स्टेशन पर ही।
जिसने औरो का हक छीना, अपने आप गया वह मर ही ॥
वहाँ पुलिस ने गाँव गाँव से– लारी भर भर कृषक बुलाये।
लाये थे स्वागत करने को, पर वे सब विरोध मे आये ॥

जिधर 'साइमन' गया उधर ही– उसको जनता ने धिक्कारा।
भिन्न भिन्न भागो मे जा जा– वापिस 'लन्दन' गया बिचारा ॥
आग फूस से कभी न बुझती, उलटी और धधक उठती है।
दमन-नीति से क्रान्ति न दबती, नागिन सदृश भभक उठती है ॥

चलो 'सर्वदल सम्मेलन' मे, जहाँ विराज रहे नेता गण।
स्वतन्त्रता की गहन समस्या– सब मिल सुलझाते हैं क्षण क्षण।
'पडित मोतीलाल नेहरू'– मुक्ति युक्ति से खोज रहे थे।
रजनी मे सूरज दिखलाकर– गाँधी खिला सरोज रहे थे ॥

चलो, 'वारडोली' मे चलकर– देखें रवि-हनक की झाँकी।
'वँदोवस्त' के कारण जिसने– मनुष्यता से पशुता आँकी ॥
'सामूहिक सविनय सत्याग्रह'– जहाँ प्रयोग किया गाँधी ने।
ठठरी से सूखे कृपको को– जीवन-दान दिया गाँधी ने ॥

'वँदोवस्त' का राक्षस सर पर– मालगुजारी वढा रहा था।
और महामानव कन्धो से– पगु गगन पर चढा रहा था ॥
पट्टी वाँध वाँध पेटो मे– हम ग्रामीण रात दिन पिलते।
फिर भी तो हम ककालो को– हाय! न सूखे टुकडे मिलते ॥

इतने पर भी मालगुजारी– पागल कुत्ते नोच रहे थे।
इन्ही समस्याओ के कुछ हल– पल पल वापू सोच रहे थे ॥
आन्दोलन कर दिया सगठित, वागडोर सौपी 'पटेल' को।
जन्म जन्म मे 'वल्लभ भाई'– खेल चुके थे इसी खेल को ॥

सावधान सरकार हो गई, चट खूँखार पठान वुलाये।
वर्तन कुर्क किये कृपको के, गाय वैल नीलाम कराये ॥
खून चढे खूँखार लोग वे– पीने लगे खून कृपको का।
जिन्दा गाड रहे थे कर से, करते थे वे खून हको का ॥

ऐसे अत्याचार हुए जव– कौसिल के सदस्य तव जागे।
कुछ सदस्यगण सह न सके यह, कौसिल के स्वर्णिम पद त्यागे ॥
सव सदस्य कटिवद्ध हो गये, गीत चले घन वरसाने को।
धन्य! धन्य! जिनके त्यागो से– आकुल जग जीवन पाने को ॥

इतने मे सरकार झुक गई, सवकी जागीरे लौटाई।
सत्याग्रह ने विजय प्राप्त की, भूली हुई मजिले पाई ॥
मजिल एक नही मानव की, काँटे भी अनगिनत राह मे।
मजिल पर मजिले बहुत हैं– स्वतन्त्रता की अमर चाह मे ॥

एक समस्या सुलझाओगे, नयी समस्या आ जायेगी।
जीवन की इस धूप छाँह मे– दिन के बाद रात आयेगी॥
अत महात्मा गाँधी आये– ज्ञान-लोक से भक्ति-लोक मे।
शोक अग्नि से दूर क्षितिज मे– रमे महात्मा जी अशोक मे॥

'कलकत्ता' के अधिवेशन मे– काँगरेस की तूती बोली।
'मोतीलाल' सभापति पद पर, गाँधी जी ने गुत्थी खोली॥
बोले 'मोतीलाल' मञ्च से, "आज गगन मे काले बादल।
आज देश की राजनीति मे– नयी नयी घटनाओ का बल॥

स्वतन्त्रता के लिये देश को– बुद्धि और बलिदान चाहिये।
एक सूत्र मे पिर जाओ सब, भारत को यह शान चाहिये॥"
डाँवाडोल परिस्थितियो मे– कर्णधार आधार आ गये।
जब जग था मँझधार उस समय– निराकार साकार आ गये॥

स्वतन्त्रता का शख बजाकर– नवयुवको को दिया निमन्त्रण।
स्वतन्त्रता के लिये लडेगे– नवयुवको ने किया महा प्रण॥
जय जय जय जय जगत नियन्ता, जय जय जय तन मन धन चन्दन।
कल्याणी वाणी वीणा से– बार बार करती अभिनन्दन॥

नाव पडी मँझधार, घना–
तम, दीपक हैं पथदर्शक गाँधी।
स्नेह भरा यह दीप बुझा–
मत ओ पगली जग की अति आँधी!
जो पतवार बने जग मे–
वह 'राम', वही सबको सुख देता।
'राम' मुझे मिलते यदि तो–
पग-धूलि उठा सर मे मल लेता॥

सप्तदश सर्ग

रणभेरी

उसी महान की प्रभा प्रभात चूमता चला ।
उसी मराल को लिये विकास घूमता चला ॥
उसी प्रकाश को लिये निशान झूमता चला ।
उसी वसन्त-स्नेह से सुदीप देश मे जला ॥

उसी मृदग को वजा कि रुद्र नाचते वहाँ ।
वही महान मेघ देख मोर नाचते यहाँ ॥
उसी सितार को वजा मलार गा रही उषा ।
उसी स्वतन्त्र के लिये सुहाग गा रही उषा ॥

न सो पडी हुई निशा! सुहाग ला रही उषा ।
न रो पडी हुई कला! कि आज आ रही उषा ॥
कि शख बोलने लगे वढो! जगा रही उषा ।
कि ताज सिन्धु पार से उठो! मँगा रही उषा ॥

उठो वढो चलो कि आज रश्मि मेघ मे खडी ।
कि माँ पुकारती तुम्हे निराश रो रही पडी ॥
उठो कि कान खोल लो उदास वीन वोलती ।
उषा शहीद के लिये गुलाल रग घोलती ॥

कलाकार की अमर कला ने– अन्तर वाह्य विकास किया है ।
करा आत्मदर्शन जन जन को– सुधा पिलाया और पिया है ॥
कला न केवल व्यक्ति भोग्य है, सर्व भोग्य ही पूर्ण कला है ।
जग को जीवन देने वाला– कलाकार वन दीप जला है ॥

जिसने तप तप कर किरणो से– मृतको पर जीवन वरसाया।
जिसने काले अन्धकार मे– दुनिया को दीपक दिखलाया॥
वह जननायक लाल उषा मे– आगे लिये खडा रणभेरी।
रण को उत्कण्ठित सेना है, केवल वजने की है देरी॥

व्रिटिश राज्य के काले पीले– वादल भारत पर छाये थे।
महाप्रलय मे हिमगिरि जैसे– गाँधी पर घन मँडराये थे॥
सागर की अथाह गहराई– प्रेम निमिष मे बतलाता था।
वनता प्रेक्षागार वही पर– जहाँ कही वह धन जाता था॥

पल मे प्लुत सीधे हो जाते, वडी हस्तियाँ हाथ जोड़ती।
गाँधी से आँखे मिलते ही– ऋद्धि सिद्धियाँ मुँह न मोडती॥
आओ, अव हम चले विलायत, देखे व्रिटिश राज्य की झाँकी।
जिसके सिहासन पर फैली– लुटी चाँदनी भारत माँ की॥

सत्ता सचालन करता है– जीत चुनावो मे 'उदार दल'।
अब है मैकडॉनल्ड' मन्त्री, राज्य कर रहा मन्त्री-मण्डल॥
भारत-मन्त्री "लॉर्ड वैजवुड"– भारत की सस्कृति से चिढते।
गुड खाते, गुलगुले न खाते, देवी की आकृति से चिढते॥

पश्चिम की कुरीतियो से क्या, आओ हम उस के गुण गाये।
अँगरेजी साहित्य-सूर्य से– पख फाड कर कमल खिलाये॥
वो वो वीज सो गये माली, हाय ! न हमने सीची क्यारी।
कैसे फिर फलती वे वेले, कैसे होती जीत हमारी ?

मूल रूप मे सव है लेकिन– हम विस्तार नही कर पाये।
हाय ! गुलामी मे गोरो के– भारत ने दुतकारे खाये॥
हत्याओ की दुर्गन्धो पर– सौरभ वरसा उस प्रसून से।
कर कर अत्याचार 'कमीशन', रँग कर लौटा हाथ खून से॥

'लाला जी' डस गया 'साइमन', नौजवान फुक उठे ग्राग से ।
गोरो पर फुकार उठे वे, गुस्से मे भर दवे नाग से ।।
'भगतसिह' 'सुखदेव' 'राजगुरु', ग्रौर 'चन्द्रशेखर' झुँझलाये ।
जय जय कहो 'यतीन्द्रनाथ' की, जिसने प्राण-प्रसून चढाये ।।

क्रान्तिकारियो के हृदयो मे– धधक उठी वदले की ज्वाला ।
"वदला लेगे 'लाला जी' का", सव वीरो ने प्रण कर डाला ।।
जिसने 'लाला जी' को मारा– उसे नही जिन्दा छोडेंगे ।
घोर गुलामी की जजीरे– गट्टो के वल से तोडेंगे ।।

हत्यारो की हत्या के हित– वडे वडे षड्यन्त्र वनाये ।
'लाला जी' के हत्यारो पर– क्रान्तिकारियो के दल छाये ।।
जव 'साडर्स' चल पडा घर से– फिटफिटिया गाडी पर चढकर ।
'भगतसिह' 'शेखर' ने उस पर– भर पिस्तौल कर दिये फायर ।।

तडप वही 'साडर्स' मर गया, जैसे को तैसा जवाव था ।
'सभा भवन' मे धधक उठे वम, गली गली मे इन्कलाव था ।।
सावधान सरकार ! सँभल ग्रव, कह कर वीरो ने वम डाले ।
मानो ग्राँखे खोल रहे थे– सम्मुख शख वजाने वाले ।।

पकडे गये वही पर तीनो, पर मुस्काते रहे वरावर ।
स्वतन्त्रता की वेले सीची– क्रान्तिकारियो ने मर मर कर ।।
माँ के लालो ने भारत की– पूजा की है रक्त-ग्रर्घ्य से ।
स्वतन्त्रता देवी ग्राई है– वलिदानो के ग्रमर सत्य से ।।

चौसठ दिन तक ग्रनशन करके– मरने वाला दीप वन गया ।
जय हो वीर 'यतीन्द्रनाथ' की, शलभ वना फिर गीत वन गया ।।
सत्याग्रह के ग्रमर पुजारी ! भारत के 'मैक्स्वनी' कहाँ हो ?
कवि की वाणी टेर रही है, वोलो वोलो वीर जहाँ हो ! !

ये वे जलते दीपक हे जो– बुझ न सके आँधी पानी से।
तूफानो मे जले बराबर, झुके न मस्तक अभिमानी से॥
इनके बलिदानो की गाथा– जलते दीपो मे अंकित है।
अंकित कवियो की वाणी मे, खिलते फूलो मे चित्रित है॥

जैसे रवि-रश्मियाँ बिखर कर– कर देती दीपित भूमण्डल।
ऐसे ही उन बलिदानो ने – उगा दिये पानी पर उत्पल॥
तम का विष पी ज्योति उगलती, जैसे बालारुण की लाली।
ऐसे ही उन नवयुवको ने– भस्मसात की डायन काली॥

सावन भादो से दृग बरसे, क्रुद्ध सूर्य ने आग उंडेली।
सागर गर्जे, धरती लरजी, पर वीरता आग से खेली॥
खुला तीसरा नेत्र प्रलय कर, 'शिवशंकर' ने भौहे तानी।
महाप्रलय सी मचल चल पडी– उनकी उठती हुई जवानी॥

इतिहासो मे अमर रहेगी– उन वीरो की अमर कहानी।
कवि की वाणी, माँ का मस्तक– इन बलिदानो पर अभिमानी॥
आओ, हम इनकी समाधियाँ– हृदय हृदय मे आज बना दे।
आओ, हम इनके चरणो मे– श्रद्धा के दो फूल चढा दे॥

आओ, इनकी चिता किनारे– सुमन चढाये, दीप जलाये।
आओ कवियो! समाधियो पर– गा गा सोते वीर जगाये॥
चन्दन मे सुगन्ध बन रहती– इन वीरो के चरणो की रज।
जागो जागो! वीर! जाग कर– देखो स्वतन्त्रता की सज-धज॥

देख रहे हैं क्षितिज पार से– अपने बलिदानो की जगमग।
तब ये ही पतवार बने थे– जब नौका होती थी डग मग॥
गगनवासियो! एक बार फिर– धरती को दर्शन दे जाओ!
एक बार अपने हाथो से– हर मन्दिर मे दीप जलाओ!!

एक वार स्वाधीन देश मे– चन्दन तुम्हे चढाना होगा ।
एक वार माँ के मन्दिर मे– दीपक तुम्हे जलाना होगा ॥
अपनी चाहे छोड गये हो– गाँधी जी के सग्रामो मे ।
गाँधी जी ही समझ सके हैं– स्वतन्त्रता है किन दामो मे ॥

जो काया को पत्थर करले– दुनिया उससे हिल जाती है ।
मनुज चेतनामय पत्थर है, मानवता यह वतलाती हे ॥
जन्म मरण मे अमर वही जो– कारा के दरवाजे खोले ।
वन्दीगृह की दीवारो मे– स्वतन्त्रता दुलहन से वोले ॥

स्वतन्त्रता चचला मोहिनी, इसका मन्दिर वहुत दूर हे ।
लहू लुहान मजिले तय कर– जो जाये वह वडा सूर हे ॥
मृत्यु क्रान्ति है, जीवन विस्तृत, राष्ट्र इन्ही दोनो से वढता ।
शाखाये झुक झुक फल देती, जो झुकता वह ऊँचा चढता ॥

जव सर्वस्व होम देता नर– तव नर नारायण वन जाता ।
सारे कष्ट सहन कर ले जो– वह दुनिया पानी कर पाता ॥
वुरे विचार मात्र हिसा हैं, झूठी दृष्टि वडी चोरी हे ।
अभय नम्रता सूक्ष्म प्रार्थना– मणियो की अक्षय वोरी है ॥

हम भी कभी गलत होते ह, पहिले अपने खोट देख ले ।
अपनी चोटे देखे लेकिन– औरो की भी चोट देख ले ॥
वापू की पावन वाणी से– दूध धुला था देश हमारा ।
दमन-चक्र मे गूँज रहा था– क्रान्ति क्रान्ति का प्यारा नारा ॥

नवयुवको मे नयी शक्ति थी, अत्याचारी वेत उडाते ।
नौजवान पिटते पिटते भी– भारत माता की जय गाते ॥
स्वतन्त्रता फाँसी पर चढकर– या जेलो मे जाकर मिलती ।
वलिवेदी पर हँसते हँसते– तन मन द्रव्य चढाकर मिलती ।

यह वह दमन काल था जिसमे– उँगली उठते ही सर कटता।
यह वह दमन काल था जिसकी– परछाई से पत्थर फटता॥
जव 'मेरठ पड्यन्त्र' चला था– सडको पर ककाल विछे थे।
यह वह हत्याकाल कि जिसमे– पड्यन्त्रो के जाल विछे थे॥

राजनीति के इन्द्रजाल में– 'अर्विन' भारत वापिस आये।
भूलभुलैया की गाडी मे– स्वतन्त्रता का गुड्डा लाये॥
'अर्विन' की गाडी के नीचे– किसी दिलजले ने वम डाला।
बाल वाल वच गये विचारे, सवसे बडा वचाने वाला॥

जैसा चित्र ब्रिटिश ने खीचा– वह पँचरगा इन्द्रजाल था।
अन्दर उसके आग भरी थी, ऊपर से लगता प्रवाल था॥
राज्य विलायत वालो का हो, भारत समझे राज्य हमारा।
आग उगलते अगारे को– कौन मान लेगा ध्रुव तारा?

ब्रिटिश राज्य का अङ्गभूत रख– भारत को चाहा फुसलाना।
उत्तरदायी राज्य प्राप्ति का– औपनिवेशिक करा बहाना॥
'अर्विन' की यह हुई घोषणा– अङ्गभूत भारत सुख पाये।
देशी राज्य, ब्रिटिश भारत को– धुँधले धुँधले स्वप्न दिखाये॥

'अर्विन' ने शतरज विछाई, नेताओ को लगे खिलाने।
नीतिनिपुण गाँधी वावा को– वात वनाकर लगे वनाने॥
पर गाँधी जी तो आये थे– उत्तरदायी शासन के हित।
'गोलमेज परिषद्' इस हित हो, यही चाहता था उनका चित॥

पर वे ऐसे तिल थे जिसमें– चावल भर भी तेल नही था।
पर गाँधी को बहकाना भी– बच्चो जैसा खेल नही था॥
चारो ओर आग की लपटे, गाँधी जी चलते जाते थे।
हलचल मे चचल न हुए वे, तम मे दीपक दिखलाते थे॥

इसी वर्ष 'लाहौर' शहर मे– काँगरेस होने वाली थी ।
नवयुवको मे वीर 'जवाहर'– सेनानी की उजियाली थी ।।
दस प्रान्तो ने गाँधी जी को– कहा राष्ट्रपति-पद पर आये ।
पाँच प्रान्त बोले 'पटेल' हो, वे इस आसन को महकाये ।।

तीन प्रान्त ने चाहे भेजी– सजे 'जवाहर' इस आसन पर ।
नब्ज देश की देख रहे थे– सत्य महामानव ज्योतिष्कर ।।
गाँधी जी ने आसन छोडा, छोडा 'वल्लभ भाई' ने पद ।
वीर 'जवाहरलाल' राष्ट्रपति, दीपित हुई वीरता की हद ।।

अधिवेशन 'लाहौर' हुआ जब– राजनीति का गूढ जाल था ।
बर्फ कट रहा था उत्तर से, उत्तर मे हेमन्त काल था ।।
गूँगा रस चख क्या बतलाये ? कला वहाँ फीकी पड जाती ।
'रावी-तट' पर डेरे डाले, दुनिया अद्भुत दर्शन पाती ।।

सरिता की चचल लहरो पर– शरद सुन्दरी नाच रही थी ।
नाच रही थी चारु चाँदनी, लहरो मे कामना बही थी ।।
सगम राग सुनाती सरिता, मचल रही थी साधो मे लय ।
वीरो का पानी उमडा था, गूँज रही थी जल मे जय जय ।।

जय जय मे गाँधी का जीवन, जीवन मे मानवता की गति ।
गति मे जग की नाव तैरती, नौका मे पतवार विश्वपति ।।
स्वयम् शारदा अधिवेशन मे– वाणी वाणी पर गाती थी ।
ईश्वर की कामना वहाँ पर– दीपक स्वयम् जला जाती थी ।।

शरद सुन्दरी की वेला मे– लगा हुआ था अद्भुत मेला ।
घोडे पर सवार जाता था– राष्ट्र-मुकुट, गाँधी का चेला ।।
डेरे डेरे मे रौनक थी, देशभक्ति की लहरे गाती ।
प्रतिनिधियो की चहल पहल थी, लाखो दिवालियाँ शरमाती ।।

देखो, ये बाजार कि जिनसे– 'पैरिस' के बाजार लजाते।
ये नेताओ के डेरे हैं– जिनसे किले महल शरमाते ॥
देखो, अब जलूस निकलेगा, घोडे पर चढ गये राष्ट्रपति।
गाँधी जी का छत्र भाल पर, नभ तक गई तिरगे की गति ॥

घोडे पर सवार झण्डा ले– वीर 'जवाहरलाल' चल रहे।
जय जय से ब्रह्माण्ड भर रहा, स्वागत मे नभ-दीप जल रहे ॥
जनता और जनार्दन पथ मे– सागर से उमडे पडते थे।
स्वतन्त्रता के अमर घोष सुन– काँटे धरती मे गडते थे।

सौर-चक्र मे फेरी दे ली, आओ अब पण्डाल देख ले।
नेताओ के दर्शन कर ले, नीर और शैवाल देख लें ॥
देखो, चारो ओर दमकते– नेताओ के चित्र बोलते।
स्वतन्त्रता-दुल्हन का कगन– क्षितिज पार से वीर खोलते ॥

यह प्रदर्शनी! कलाप्रदर्शन! लगे हुए बाजार स्वदेशी।
दूर दूर के रहने वाले– 'रावी-तट' पर थे प्रतिवेशी ॥
अधिवेशन मे जगमग जगमग– नेता बैठे हुए मच पर।
ऊँचे आसन पर बैठे हैं– धन्य! राष्ट्रपति वीर जवाहर ॥

हृदय-आसनो पर विराजते– मुखरित हृदय-ज्योति जननायक।
गौरव गीत अमूल्य अमर निधि, स्रष्टा सत्य स्वरूप सहायक ॥
भव्य 'पटेल', दिव्य गाँधी जी, शक्ति 'सुभाष', भक्ति 'राजा जी'।
हाथ फेरते हैं दाढी पर– बैठे बगल मौलवी हाजी ॥

अधिवेशन आरम्भ हो गया, खडे हो गये अमर राष्ट्रपति।
मानो सोता शेर उठ गया, सिह गर्जना की होती गति ॥
भाषण होने लगा उन्हो का, अतल वितल निस्तब्ध हो गये।
मन्त्रमुग्ध श्रोता बैठे थे, भाषणमय हो स्वयम् खो गये ॥

देशभक्ति के महाउदधि मे– उमड पडी भावो की लहरे ।
चन्दा जैसी जनता पाकर– दौड पडी चावो की लहरे ।।
व्यग मारते हुए उन्होने– 'अर्विन' की घोपणा सुनाई ।
औपनिवेशिक स्वतन्त्रता की– कृत्रिम कठपुतली दिखलाई ।।

बोले, अब तो आ पहुँचा है– प्राणो की बाजी का अवसर ।
बाहे फडक उठी युवको की– वाणी से गीता सुन सुन कर ।।
मुक्त लोकप्रिय पण्डित जी के– शब्द शब्द मे चिनगारी थी ।
नीति निपुण के अभिभापण मे– फूलो की गीली क्यारी थी ।।

कहा राष्ट्रपति ने, 'अर्विन' की– जहर मिली मीठी बाते है ।
समभौते का द्वार खुला है, किन्तु 'वैजवुड' वहकाते है ।।
जाल पडा है जिस पर उनकी– बिछी हुई ह मीठी बाते ।
मुँह मे राम बगल मे छुरियाँ, कहते ह दिन, पर है राते ।।

लेकिन हम तो 'कलकत्ता' के– निश्चय पर दृढ और अचल हैं ।
एक ध्येय है, एक लक्ष्य है, अपने प्रण पर पूर्ण अटल हैं ।।
बादशाह का राज्य न होगा, राज्य यहा जनता का होगा ।
जन जनता से बडा न होगा, जिसने बोया, उसने भोगा ।।

अल्पसख्यको की चर्चा की, देशी राजाओ पर बोले ।
श्रमिको के प्रश्नो को हल कर, हृदयो के दरवाजे खोले ।।
हिंसा के परिणाम न अच्छे, हिसा से हम मर जायेगे ।
सत्य अहिसा का बल पाकर– जो चाहेगे वह पायेगे ।।

हिसा की सगठित शक्ति फिर– आकर हमे प्रणाम करेगी ।
सुख सम्राज्ञी शक्ति अहिसा– जय पाकर विश्राम करेगी ।।
पहरे पर हिसा होगी फिर, उसे अहिंसा आज्ञा देगी ।
दासी होगी शक्ति शौर्य की, हिसा हत्यारी न बनेगी ।।

स्वतन्त्रता के आन्दोलन मे- सारी जनता आगे आये।
आन्दोलन हो पूर्ण शान्ति से, चोटी पर झण्डा लहराये॥
शस्त्र-युद्ध की बात अलग है, वह सगठित क्रान्ति की माया।
'राजसभा' के बहिष्कार पर- फिर उस शशि ने सुधा बहाया॥

कहा राष्ट्रवाणी ने फिर यह- कॉगरेस का करो सगठन।
इसके लिये होम दो वीरो! हँस हँस कर अपना तन मन धन॥
यह कोई क्या कह सकता है- हमे मिलेगा कब कितना फल?
आज सभी देखा करते हैं, बोलो! किसने देखा है कल?

कर्म करो फल मिल जायेगा, कार्य-क्षेत्र मे बढो अगाडी।
वीर खीच कर ले जाते हैं- दूर दूर कन्धो पर गाडी॥
स्वतन्त्रता का अर्थ यही है- ब्रिटिश राज्य से देश मुक्त हो।
बन्धन तोडे, पूर्ण मुक्त हो, मुक्त देश मित्रता युक्त हो॥

जब तक इस साम्राज्यवाद की- खुराफात का अन्त न होगा-
तब तक दुलहन विधवा ही है, जब तक आँसू कन्त न होगा॥
हर सम्भव उपाय से तय है- सत्ता हाथ हमारे आये।
ब्रिटिश राज्य अपने झण्डे को- अब इँग्लैंड साथ ले जाये॥

औपनिवेशिक स्वतन्त्रता से- पूरी सत्ता नही मिलेगी।
ब्रिटिश राज्य भारत से जाये, तब ही जीवन कली खिलेगी॥
सिर से हटे विदेशी सेना, बिल्कुल उठे नियन्त्रण आर्थिक।
स्वतन्त्रता का समर छिडेगा, पर सघर्ष चलेगा सात्विक॥

वीर जवाहर की वाणी ने- जन मन के दरवाजे खोले।
या कि राष्ट्रपति की वाणी से- सुधा-स्रोत गाँधी जी बोले॥
बापू और जवाहर जग मे- दो शरीर पर एक हृदय है।
वीणा बने राष्ट्रपति जग मे, गाँधी जी वीणा की लय है॥

व्याख्या हुई 'स्वराज्य' शब्द की, 'पूर्ण स्वतन्त्र' ध्येय पहचाना ।
'अर्विन' ने झण्डी दिखलाई, गाँधी जी ने झण्डा ताना ॥
जन जन ने यह करी प्रतिज्ञा– स्वतन्त्रता अधिकार हमारा ।
हम स्वतन्त्र हो जिये, अन्यथा– जीना ही धिक्कार हमारा ॥

बोये हम, फल हम सब पाये, जग मे मिले प्रगति का अवसर ।
भारतीय झण्डा लहराये, रहे न कोई बन्धन हम पर ॥
यदि कोई सत्ता अन्धी हो, छीने ये अधिकार पाप वश–
जनता को अधिकार पूर्ण है– उसे बदल दे करदे बेबस ॥

अपने अधिकारो के बल से– जनता ऐसा राज्य मिटादे ।
यदि ऐसी सरकार कही हो– जनता उसको जहर पिलादे ॥
अँगरेजी सरकार कि जिसने– स्वतन्त्रता का किया अपहरण ।
'सीता' को ले गया चुराकर– जैसे छलकर राक्षस 'रावण' ॥

यही नही, इन अँगरेजो ने– बिल्कुल सत्यानाश किया है ।
आर्थिक, नैतिक शोषण करके– भारत बिल्कुल पीस दिया है ॥
सामाजिक आध्यात्मिक शोषण, चलने लायक खून न छोडा ।
छोडी वायु विषैली हम पर, निकला अग अग मे फोडा ॥

अत हमे अधिकार पूर्ण है– अँगरेजो को अलग हटादे ।
प्राप्त पूर्ण आजादी करले, फूक मार कर इन्हे उडादे ॥
नये नये कर कर वसूल ये– निर्धन के घर लूट रहे है ।
नमक और चुगी कर से ही– लाखो के सिर फूट रहे हैं ॥

अँगरेजी शासन से भारत– धरती मे गडता जाता है ।
जिसे बिठाया था आँखो पर– आँख वही अब दिखलाता है ॥
अँगरेजी शिक्षा ने हमको– प्यार गुलामी से सिखलाया ।
नमक हरामी की हद देखो, जिसे खिलाया वह गुर्राया ॥

यात्रा कठिन, नाव जर्जर है, फण फैलाती बाढे आई।
धरती अम्बर मे कम्पन है, चारो ओर घटाये छाई॥
ऊपर मेघाच्छादित अम्बर, सागर रुद्र रूप धारे है।
घोर अँधेरा, पार न मिलता, जन जनता हिम्मत हारे है॥

तम मे किन्तु प्रकाश यही है– गाँधी जी पथ बतलाते हैं।
नौसिखिये केवट नौका को– धीरे धीरे ले जाते हैं॥
मार्ग जानता मार्ग-प्रदर्शक, यात्री उसका कहना माने।
उनकी हार जीत बन जाती, जो गाँधी जी को पहचाने॥

सब से बड़ा पाप है जग मे– बन्धन मे रह पूँछ हिलाना।
सब से बडा धर्म है जग मे– मुक्त दासता से हो जाना॥
सत्य अहिसा से बन्धन की– हथकडियो को तोड गिरादे।
असहयोग से क्रान्ति क्रान्ति के– भीषण अगारे दहकादे॥

गॉव गॉव ने करी प्रतिज्ञा– प्राप्त पूर्ण स्वातन्त्र्य करेगे।
शपथ उठा कर प्रण करते है– माँ के सिर पर मुकुट धरेगे॥
बापू सडक बनाते चलते, जनता उस पर चली झूमती।
जिधर पैर मुडते बापू के, उसी ओर को धरा घूमती॥

ग्यारह शर्त लिखी गाँधी ने, रची रूपरेखा आगामी।
'अर्विन' को दी मधुर चुनौती, सहमे ब्रिटिश राज्य के स्वामी॥
ये ये शर्ते लिखी उन्होने, "भारत मे मदिरा-निषेध हो।
विनिमय की दर घटे, धरा कर– आधा हो, स्वाधीन मेध हो॥

उठे नमक कर, सैनिक व्यय मे– कमी करो कम से कम आधी।
बडी बडी नौकरी घटा कर– शासक ! करो एकदम आधी॥
वस्त्र विदेशी जो आते हैं– उन पर 'कर निषेध' लगवाओ।
भारतीय सागर-तट पर बस– भारत ही के यान लगाओ॥

छोड राजनीतिक वन्दी दो, निर्वासित अपने घर आये।
खुफिया पुलिस हटे, मन वदले, जनता मे विश्वास जमाये॥
रक्षा हित हथियार रख सके, जनता पर ये परवाने हो।
देश-दीप पर मँडराये वे- जो दीपक के दीवाने हो॥"

धन्य धन्य वह दिवस कि जिस दिन- गाँधी जी ने शख वजाया।
निखिल विश्व को स्वतन्त्रता का- महाव्रती ने पाठ पढाया॥
वडे वडे पत्थर पथ मे थे, पर आन्दोलन रुका न रोके।
गगाधारा के प्रवाह से- गाँधी-जीवन मे थे झोके॥

'सावरमती' किनारे आश्रम, जिसमे गाँधी जी की माया।
'कार्यसमिति' ने गाँधी जी को- सव का सचालक ठहराया॥
सत्यव्रती ने विगुल वजाया, चेत उठा ठडा आन्दोलन।
स्वतन्त्रता के लिये अनल मे- कूद पडे भारत के यौवन॥

सव मित्रो से 'नमक विषय' पर- वातचीत की जननायक ने।
'नमक वनाओ! नमक वनाओ!' तान छेड दी उस गायक ने॥
करो इकट्ठा नमक देश मे, उठो! 'नमक कानून' तोड दो!
सामूहिक सत्याग्रह करके- जननी की तकदीर जोड दो!!

चलो! नमक के ढेरो पर चल- करे 'नमक कानून' भग हम।
नमक वनाये, धावा वोले, वढते जाये एक सग हम॥
देखो, आँख खोल कर देखो! खून चूसता यहाँ 'नमक कर'।
लूट करोडो रुपया लेता, भर देता अँगरेजो के घर॥

दूर देश के ये व्यापारी- करते चोर वजार यहाँ पर।
सोने वालो! आँखे खोलो, चोर जा रहे जेव काट कर॥
वापू के सुन्दर ललाट मे- जलता था प्रकाश का दीपक।
सत्याग्रही जिधर चलते थे- मजिल उधर झुकाती मस्तक॥

सवसे कहा प्रकाशमान ने– निर्भय होकर बढो अगाडी।
लक्ष्य चरण चूमेगा आकर, खीचो खीचो खीचो गाडी।।
'नमक क्षेत्र' से नमक उठा कर– उठो, 'नमक कानून' तोड दो।
भारत माता की पूजा है, आओ, अब आलस्य छोड दो।।

पहले नमक बनाऊँगा मैं, पीछे तुम तूफान छोडना।
पहले नमक उठाऊँगा मैं, पीछे तुम कानून तोडना।।
किन्तु शान्ति से आन्दोलन हो, चाहे सर पर वम भी बरसे।
वीर! तुम्हारे रक्त-बिन्दु से– भारत माँ के पौधे सरसे।।

तन मिट्टी है, मिला खाक मे– स्वतन्त्रता के फूल खिलादो!
भारत माता के मस्तक पर– आजादी का मुकुट दिखादो!!
ऐसी अग्नि प्रज्वलित कर दो– जिससे पारतन्त्र्य जल जाये।
दिव्य दिवाली और उपा सी– स्वतन्त्रता भारत मे आये।।

वीरो से इतिहास भरा है, तुम भी उसमे नाम लिखा लो!
घर मे घुसे हुए डाकू हैं, घर से बाहर इन्हे निकालो!!
सत्याग्रह से पूर्व पिता ने– 'अर्विन' को अन्तिम चेताया।
'रेजिनाल्ड रेनाल्ड' युवक से– उनके पास पत्र भिजवाया।।

"मैं हूँ सत्य अहिसावादी– मनसा वाचा और कर्म से।
मेरी नीति समक्ष सत्य है, विमुख नही हूँ मनुज-धर्म से।।
अँगरेजो से प्यार मुझे है, लेकिन हम पर राज्य शाप है।
सत्य निडर होकर कहता हूँ, सत्य न कहना महापाप है।।

ब्रिटिश राज्य ने भारत माँ पर– लाखो अत्याचार किये हैं।
शोषण कर कगाल कर दिये, मूक बिचारे मार दिये है।।
सस्कृति की जड करी खोखली, पौरुष का अपहरण किया है।
छीन लिये हथियार हमारे, दुर्बल कायर बना दिया है।।

ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल ने हमको– जबकि हरी झण्डी दिखलाई–
शिक्षित और अशिक्षित जनता– हक की लडने लगी लडाई ॥
स्वतन्त्रता के लिये देश का– बच्चा बच्चा तडप रहा है।
बन्दी भ्रमर मुक्त करने को– देखो, दिनकर पिघल बहा है ॥

एक बात क्या, बात बात मे– बिल्ली घात लगाये रहती।
मक्खन और मलाई खा खा– अपने जाल बिछाये रहती ॥
पर अब वही तुम्हारी बिल्ली– मार्ग तुम्हारा काट रही है।
वही तुम्हारे पर झपटेगी, देख समय की बाट रही है ॥

भारत के मस्तक पर तुमने– लाखो झूठे ऋण लादे है।
चीते को पहिचान न पाये– हम इतने सीधे सादे है ॥
भारतवासी की औसत से– दैनिक आय सिर्फ दो आने।
और एक अँगरेज सात सौ– आता है भारत मे खाने ॥

अर्विन साहब ! अपना वेतन– अपने ही दर्पण मे देखो !
अपने पेटो की पूजा तुम– आँखो के तर्पण मे देखो ! !
ले इक्कीस हजार मास मे– भारत का विश्वास खो दिया।
भारत का क्या, दु ख हुआ तो– मन ही मन मे आप रो लिया ॥

भारत मे सत्ता रखने को– तुम ये अत्याचार कर रहे।
बहुत दिनो से मन ही मन मे– भारतवासी नयन भर रहे ॥
सत्य अहिसा का बल लेकर– सोया भारत जाग उठा है।
यही अहिसा विनय अवज्ञा, सत्याग्रह का फाग उठा है ॥

सत्य अहिसा के द्वारा मैं– ब्रिटिश राज्य का मन बदलूँगा।
पहले देश स्वतन्त्र करूँगा, पीछे अपना तन बदलूँगा ॥
इसीलिये यह सत्याग्रह है, सावधान कर रहा आपको।
भारत सहन नही कर सकता– पारतन्त्य के महापाप को ॥"

गाँधी ने रोटी माँगी थी, किन्तु दिये 'अर्विन' ने पत्थर।
पत्थर भी गड गये धरा मे– सुन सुन ब्रिटिश राज्य के उत्तर ॥
अन्त लँगोटी वाले बाबा– चले 'नमक कानून' तोडने।
लम्बी लाठी लिये जा रहे– फूलो से पाषाण फोडने ॥

साथ चले उन्नासी साथी, प्रभु ने 'दाण्डी कूच' कर दिया।
युग युग के निर्माण चल पडे, आँखो मे ब्रह्माण्ड भर लिया ॥
गाँधी जी की शिष्यमण्डली– आन्दोलन की हवा बन गई।
'दाण्डी कूच' हुआ गाँधी का, सहम सहम सरकार तन गई ॥

आज्ञा दी, 'दाण्डी यात्रा' के– कोई चित्र नही दिखलाये।
दीपक के प्रकाश के आगे– तूफानों के दिल घबराये ॥
दो सौ मील पहुँच कर पैदल– पूरा सत्याग्रह करना था।
भारत माता के मन्दिर मे– गाँधी को दीपक धरना था ॥

डगमग डगमग पग बापू के– जर्जर नौका खेते जाते।
जिस पथ पर चलते थे उस पर– अगणित अपने नयन बिछाते ॥
वह सन्यासी, वह अविनाशी– लकुटि लिये चलता जाता था।
जाता जिधर उधर वह योगी– पूर्ण प्रकाश बिछा पाता था ॥

मानो 'राम' जा रहे वन मे– ऋषि मुनियो को मुक्ति दिलाने।
'राक्षस रावण' की 'लका' से– 'सीता' को स्वाधीन कराने ॥
माथे पर बल, ज्योति दृगो मे, रोम रोम मे आकर्षण था।
दर्शन को जनता उमडी थी, नारायण का पुण्य वरण था ॥

ऋषियो की वह बन-यात्रा थी, पुष्पो का वह भव्य दृश्य था।
कल्पवृक्ष से मुक्ति-वृष्टि थी, चरणो से गिर रहा वृष्य था ॥
कोटि कोटि सत्याग्रहियो की– 'दाण्डी यात्रा' परिचायक थी।
इँगलिश सत्ता के विरोध की– वह पगडण्डी अधिनायक थी ॥

पगचिह्नो पर गाँव चल पडे, सत्याग्रह की नई लहर थी।
जनता मे उत्साह-उदधि था, गाँव गाँव मे गई लहर थी॥
तम पर ज्योति, अमरता मृत पर, सत्य झूठ पर शाश्वत जय है।
गाँधी जी के आदेशो पर- क्षणभगुर प्राणी अक्षय है॥

यात्रा मे उपदेश दिया यह- सत्य अहिसा को मत छोडो।
सत्याग्रह के आन्दोलन मे- मर्यादा के सूत न तोडो॥
अनुशासन की करो प्रतिज्ञा, चलो सत्य के आदेशो पर।
एक नया इतिहास लिख दिया- गाँधी ने पैदल यात्रा कर॥

लम्बी लाठी लिये हाथ मे- आगे आगे गाँधी चलते।
पीछे पीछे उनकी सेना, कदम कदम पर दीपक जलते॥
पथ मे इधर उधर दर्शन को- उमडा प्रेमाकुल जन-सागर।
धन्य धन्य वह जनता जिसने- पाये नर नारायण नागर॥

जो जलूस 'अहमदाबाद' मे- निकला उसकी शान निराली।
मानो विधि की सारी रचना- मना रही थी वहाँ दिवाली॥
अन्धो पर अपग चढ चढ कर- भव्य जलूस देखने आये।
बडे पुण्य से उन नयनो ने- उन चरणो के दर्शन पाये॥

मीलो लम्बे उस जलूस मे- तिल भर जगह नही थी खाली।
धन्य धन्य यात्रा गाँधी की, सर पर से फिरती थी थाली॥
वृक्ष, झरोखे और छतो पर- दुनिया दर्शन करने आई।
गाँधी की जय के नारो से- नभभेदी गर्जन थर्राई॥

अद्भुत मेला, चहल पहल थी, मूक खडी रह गई भारती।
श्रद्धा सुमन चढा चरणो मे- वाणी करने लगी आरती॥
यात्रा मे गाँधी जी बोले- "या तो स्वतन्त्रता लाऊँगा।
यदि स्वतन्त्रता ला न सका मैं- तो धरती मे गड जाऊँगा॥

यदि न 'नमक कर' उठा देश से– तो न् लौट वापिस आऊँगा।
जब तक लक्ष्य नही आयेगा– तब तक वढता ही जाऊँगा॥"
गाँधी जी की 'दाण्डी यात्रा'– 'हजरत मूसा' की मजिल है।
जब तक मजिल नही मिलेगी– तब तक बढ़ने वाला दिल है॥

इतनी जल्दी चलते गाँधी– नौजवान थकते जाते थे।
लेकिन उनकी चरण-धूलि से– नौजवान आगे आते थे॥
प्रण था, जब तक लक्ष्य न आये– पीछे कभी नही देखेगे।
प्रण करके घर से निकले है, निश्चय स्वतन्त्रता ले लेगे॥

भीख माँगने से स्वतन्त्रता– ये अँगरेज न देने वाले।
दिन के अन्धे इस शासन का– अन्त करेगे सत से काले॥
'जम्बूसर' मे कहा उन्होने– अगर शत्रु के साँप काट ले।
मानव का यह परम धर्म है– दुश्मन का भी जहर चाट ले॥

चौबिस दिन की इस यात्रा मे– तीर्थ चल रहे थे सडको पर।
यह पुजारियो की यात्रा थी, आगे बढते सयम व्रत कर॥
चले पुजारी, व्यजन त्यागे, तन रखने को चने चबाते।
बुद्धि शुद्धि सगठित शक्ति से– देशभक्ति के पाठ पढाते॥

कहा साथियो से गाँधी ने– माया ममता मोह न घेरे।
जब तक मजिल नही मिलेगी– तब तक नही डलेगे डेरे॥
मै पकडा जाऊँगा जब तब– 'तैयब' जी आगे आयेगे।
और प्रान्त के प्रान्त साथ मे– भारत की जय जय गायेगे॥

यात्रा मे फल फूल मिठाई, दही दूध जनता लाती थी।
पर सत्याग्रहियो की टोली– आग्रह करके लौटाती थी॥
ग्रामवासियो के मीठे फल– प्रेम-सुधा मे सराबोर थे।
ग्राम ग्राम मे उत्सव से थे, गाँधी-रस मे सब विभोर थे॥

तोते तरु से आम तोडकर– बढते चरणो मे ढुलकाते।
समय साथ चलता रहता है, चलने वाले ही जय पाते ॥
कोयल मीठे वोल वोलती, मोर नाचते, चिडियें गाती।
फूलो से मुसकाती डालें– उन चरणो मे फूल चढाती ॥

श्वेत हस सी कवि की वाणी– गाँधी जी से शरमाती थी।
तरु तरु की डाली स्वागत मे– फूल चढाकर झुक जाती थी ॥
'दाण्डी यात्रा' के स्वागत मे– कृषक वालिकायें गाती थी।
मानो गाँव गाँव की आँखें– राम-रूप गाँधी पाती थी ॥

गाँधी की वाणी सुनते ही– गउएँ दौड दौड कर आई।
चौका चूल्हा छोड देवियाँ– गाँधी की जय जय चिल्लाई ॥
जगल के खूँखार जानवर– गाँधी के आगे झुक जाते।
पत्थर तक भी पिघल प्रेम से– चरणो मे आँसू वरसाते ॥

गाँधी जी आगे वढ जाते, पीछे जनता प्यासी रहती।
प्रेमाकुल प्यासे नयनो मे– छाई मधुर उदासी रहती ॥
दिव्य देवता गाँधी जी को– आँखे और देखना चाहे।
दर्शन के भूखे प्यासे दृग– देख नही पाते थे राहे ॥

'रामचन्द्र' के वन जाने पर– पागल सी रो रही 'अयोध्या'।
'दशरथ' से रो रहे गाँव सव, वादल-दल सी वही 'अयोध्या' ॥
गाँधीवाद दौडता चलता, गाँधी जी का चमत्कार था।
वापू कूद पडे सागर मे, चरणो से मँझधार पार था ॥

गाँव गाँव को दर्शन देते– 'दाण्डी' पहुँच गये सन्यासी।
सागर-तट ने चरण पखारे, धन्य 'सुदामापुरी' निवासी ॥
गाँधी जी के अभिनन्दन मे– रजनी ने चाँदनी विछाई।
सागरिका ने दीप जलाये, उषा सुनहरी माला लाई ॥

वन देवी की बजी बाँसुरी, लहरे नाची रुन भुन रुन भुन।
सागर की उत्पल सी आँखे– प्रथम मिलन मे गाती गुन गुन॥
सागर ने गा गा चरणो मे– मणि रत्नो के कोप चढाये।
ज्वार भाट ने पचम स्वर से– गूँथ गूँथ कर छन्द सुनाये॥

सागर की गोदी का चन्दा– गाँधी जी पर मुग्ध हो गया।
तट पर गाँधी का पहरा था, सागर सुख की नीद सो गया॥
छेडी तान उषा ने उठकर– जागो ! अब हो गया सवेरा।
जागो जगल की हरियाली, चिडियो ने तज दिया बसेरा॥

अरे मुसाफिर ! तू क्यो सोता ? स्वप्नो का ससार छोड दे !
मुक्त ! मुक्ति-मन्दिर मे आजा, बन्धन की जजीर तोड दे !!
उषा-माधवी की वीणा मे– गूँज गई गाँधी जी की लय।
बढे 'नमक कानून' तोडने– गाँधी जी अक्षय मृत्युन्जय॥

पहले ईश्वर की पूजा की, फिर तट पर से नमक उठाया।
सागर-तट से नमक बीन कर– नभचुम्बी झण्डा फहराया॥
गाँधी जी के कर कमलो से– भग 'नमक कानून' हो गया।
सागर की आँखो का पानी– भारत माँ के दाग धो गया॥

गाँधी जी ने नमक बीन कर– वक्तव्यो से सृष्टि जगादी।
गाँव गाँव मे, शहर शहर मे, सडक सडक पर थी आजादी॥
वह अद्भुत राष्ट्रीय पर्व था, खुली हुई थी बलि की वेला।
विजय उसी के चरण चूमती– जो भी आग मौत से खेला॥

सत्याग्रही आग मे तप तप– चमक चमक दमका करता है।
अगारो पर चलने वाला– अमर पुत्र किससे डरता है ?
भाषण पर भाषण गाँधी के– आग फूकते थे कण कण मे।
जत्थे के जत्थे आते थे– सत्याग्रहियो के क्षण क्षण मे॥

वना नमक सर्वत्र देश मे, क्रान्ति क्रान्ति के शङ्ख बज गये।
गाँधी टोपी पहिन पहिन कर– रण को सत्याग्रही सज गये॥
लगी फूस मे दियासलाई, क्षण मे धधक उठी चिनगारी।
सत्याग्रहियो के पानी पर– आई थी अद्भुत तैयारी॥

लेकिन ब्रिटिश राज्य ने उनके– पानी पर अगार गिराये।
पर सत्याग्रह के पानी ने– अँगरेजी अगार बुझाये॥
पैशाचिक मुँह फाड राज्य ने– अपना खूनी छुरा उठाया।
भारत माता के पुत्रो पर– वधिर वधिक ने छुरा चलाया॥

'तैयव जी' को कैद कर लिया, लाखो वीर सिपाही पकडे।
महाशान्ति के आन्दोलन मे– शुरू किये गोरो ने झगडे॥
हिसा, हत्या, दमन, क्रूरता, खूनी हाथ, दाँत चिघाडे।
अँगरेजो की दमन नीति ने– सत्याग्रहियो के सर फाडे॥

कही निहत्थो की छाती पर– दुनालियो से चली गोलियाँ।
माँ वहिनो के गुप्त अग से– लाखो खेली गई होलियाँ॥
'दत्तात्रेय' वीर पुगव ने– मातृभूमि पर प्राण चढाये।
प्राण-प्रसून चढा लाखो ने– स्वतन्त्रता के दीप जलाये॥

प्रकृति-पटी पर रक्त-धार ने– एक नया इतिहास लिख दिया।
वीर निहत्थो के शोणित ने– ब्रिटिश राज्य का नाश लिख दिया॥
अँगरेजो ने भारत माँ पर– सैनिक शासन शुरू कर दिया।
प्रान्त प्रान्त पर, शहर शहर पर, गाँव गाँव पर पैर धर दिया॥

पीते खून, कुर्क करते धन, लाल लाल वेते उडवाते।
'क्रान्ति सफल हो, क्रान्ति सफल हो!' झूम झूम कर वन्दी गाते॥
कारागृह की दीवारो मे– रुके न क्रान्ति क्रान्ति के नारे।
फाँसी के खूनी तख्तो पर– फूलो से चढ गये विचारे॥

कठिन यन्त्रणाओ मे बोले- भारत माता की जय जय जय।
चली गोलियाँ, बढे निहत्थे, जय जय जय की गूँज गई लय ॥
खिले कमल से उन सीनो मे- गोली भौरे सी खेली थी।
स्वतन्त्रता के प्रिय प्रकाश की- चाह बहुत ही अलबेली थी ॥

'पेशावर' के प्रिय पराग पर- आग लिये हत्यारे बरसे।
'काशमीर' की केसर पर भी- लाल लाल अगारे बरसे ॥
मधुमण्डित 'पजाब' प्रान्त पर- ब्रिटिश राज्य ने दाँत चलाये।
'दिल्ली' के चिकने पथ पर भी- परदेशी ने शूल बिछाये ॥

गाँधी-वाणी ने द्रुत गति से- सत्याग्रह की हवा चलादी।
स्वतन्त्रता के महायुद्ध की- सागर ने दुन्दुभी बजादी ॥
गाँधी जी ने ब्रिटिश राज्य को- पत्र भेज फिर मार्ग दिखाया।
दिखलाया अपना निर्मल मन, आगे का परिणाम सुझाया ॥

"धारासना" और "छरसाडा"- अब सत्याग्रह को जाऊँगा।
नमक-कारखानो पर जाकर- अपना झण्डा लहराऊँगा ॥
बहुत दिया गोरो ने धोखा, अब धोखो के जादू झूठे।
फूटे ब्रिटिश राज्य के भण्डे, अब न दिखाओ हमे अँगूठे ॥

यदि चाहो तो सत्य मार्ग से- रोक सकोगे तुम यह धावा।
उठे नमक कर, परिवर्तन हो, बहुत बार दे-चुके भुलावा ॥
लाठी डण्डो से न डरेगे, चाहे तुम बम भी बरसाओ।
वीर-भूमि मे वीर बहुत हैं, आओ, स्वागत करने आओ!

बम बन्दूके तोप चलाओ! ले ले आओ लाठी डण्डे।
किन्तु हिमालय का यह प्रण है- नही झुकेगे ऊँचे झण्डे ॥
ब्रिटिश राज्य मानवता तज कर- दानवता पर अडा हुआ है।
हिसा की बन्दूके ताने- अँगरेजी बल खडा हुआ है ॥

वीर निहत्थो के पशुता से– तुमने अडकोप दववाये।
चूर चूर हड्डियाँ करी हैं, 'पेशावर' पर वम वरसाये॥
छोटे छोटे वच्चो पर भी– तुमने वरसाये हैं डण्डे।
वडी वीरता दिखलाई यह– गाड दिये शिशुग्रो पर झण्डे॥

तुमने अपने व्रिटिश राज्य का– शोणित से इतिहास लिखा है।
हत्याकाण्डो के पृष्ठो पर– व्रिटिश राज्य का नाश लिखा है॥
रोके से प्रतिशोध रुका है, वर्ना 'सन् सत्तावन' होता।
घन वरसा कर रक्त धरा पर– धरती माँ की कालस धोता॥

स्वयसेवको पर गौरव है, हँसते हँसते प्राण दे दिये।
किन्तु कलक तुम्हारे मुँह पर– निर्दयता से प्राण ले लिये॥
'भगतसिंह' से प्रिय वीरो को– क्यो फाँसी का दण्ड सुनाया ?
फेक दिया कानून ताक मे, मुँह पर ग्रमिट कलक लगाया॥

सत्ता के खूनी पजो से– तुमने मास नोच कर खाया।
सत्याग्रह के शान्त भाल पर– मानवता का खून लगाया॥
शोषण की हिलती ईटो पर– नीव नही टिकने वाली है।
व्रिटिश राज्य की लूटमार से– भारत की झोली खाली है॥

ऊँच नीच की वाते समझो, ठीक मार्ग पर अव ग्राजाग्रो!
चार दिनो की यहाँ जिन्दगी, हँसते जाग्रो ग्रौर हँसाग्रो!!
वहुत 'राम' ने समझाया पर– एक नही 'रावण' ने मानी।
उधर ग्राग थी ग्रौर इधर था– सत्याग्रह का पावन पानी॥

'ग्रगद' जैसा पत्र गया पर– 'रावण' की मति वौराई थी।
होनी है वलवान यहाँ पर, 'रावण' पर होनी छाई थी॥
चिट्ठी पढते ही 'ग्रर्विन' ने– चुपके से गाँधी को पकडा।
काली साडी वाली निशि ने– सोते मे ग्राँधी को पकडा॥

जब कि शान्ति से पर्ण कुटी मे- प्रभु चन्दा से बोल रहे थे।
नीली जड़वा चादर पर जब- बादल आभा घोल रहे थे॥
नीड नीड मे पक्षी सोये, डाल डाल पर फूल शान्त थे।
पीडा भी पड कर सोई थी, सरिताओ के कूल शान्त थे॥

चन्दा मामा के शासन मे- चुपके चुपके चोर आ गये।
श्वेत चन्द्रिका के महलो मे- चोरी चोरी चोर छा गये॥
गाँधी जी को चुरा ले गये, चोरो को तारो ने देखा।
नीलाम्बरा उसी क्षण रोई, विरही अगारो ने देखा॥

डाल डाल ने झूम उसी क्षण- गाँधी जी पर फूल चढाये।
शान्तिदूत की शान्ति देखकर- सुधाधाम ने दीप जलाये॥
चोर पुलिस साहू गाँधी को- गाडी मे 'बम्बई' ले गई।
प्रकृति-पूर्णिमा के प्राणो को- प्रियतम का वैराग्य दे गई॥

स्वतन्त्रता के शुभारम्भ मे- गाँधी जी ने नमक उठाया।
आदि अन्त तक सत्याग्रह का- गाँधी जी ने बीडा खाया॥
'पकडे गये आज गाँधी जी', प्रात खबर गई त्रिभुवन मे।
मानो सौरभ का मतवाला- भ्रमर बन्द हो गया सुमन मे॥

गाँधी जी ने कहा कि मेरा- आन्दोलन ईश्वर पर निर्भर।
जो सत् पर आश्रित रहता है- उसके साथ साथ है ईश्वर॥
समाचार सुनते ही जनता- बनी बावली सी मतवाली।
पल भर मे घिर गई धरा पर- आन्दोलन की घटा निराली॥

हडताले हो गई हर जगह, दिशा दिशा मे लहरे आई।
आन्दोलन मे मर मिटने की- मजदूरो ने कसमे खाईं॥
ताँगे ठेले वालो तक ने- सुनते ही कर दी हडताले।
स्वतन्त्रता के सेनानी पर- आओ हम सब फूल चढाले॥

मिले वन्द हो गई एकदम, जलसे हुए, जलूस निकाले।
कोटि कोटि कठो से निकले- गाँधी जी के शब्द उजाले ॥
व्यापक थी हडताल विश्व मे, धन्य 'पनामा' और 'सुमात्रा'।
कोटि कोटि चल पडे उधर ही- जिधर हुई गाँधी की यात्रा ॥

अपनी कब्र ब्रिटिश ने खोदी- गिरफ्तार करके गाँधी को।
कौन वन्द कर सका आज तक- मुट्ठी मे हलचल आँधी को ?
गाँधी जी को पकडा लेकिन- लगा न सत्याग्रह पर ताला।
दवे साँप फुकार रहे थे, दहक रही थी दुर्द्धर ज्वाला ॥

भारत के कोने कोने से- चले नमक कानून तोडने।
ब्रिटिश राज्य के शस्त्र चल पडे- पावन प्राण-प्रसून तोडने ॥
काँगरेस की कार्यसमिति ने- वढने का आदेश दे दिया।
रणभेरी वजते ही सव ने- अपना अमर निशान ले लिया ॥

'गाँधी जी की जय हो, जय हो!' गाँव गाँव से गूँजा नारा।
हर किसान के दानी कर मे- झण्डा उठा तिरगा प्यारा ॥
रजनी मे रवि से किसान जव- जय जय जय गाते चलते थे।
डाल डाल धरती अम्वर मे- स्नेह पगे दीपक जलते थे ॥

लगोटी सी ऊँची धोती, श्वेत हस सा कुर्ता पहने।
मानो अगणित गाँधी जाते- ईश्वर के चरणो मे रहने ॥
दलित वर्ग की दिव्य देवियाँ- फूलो मे सुगन्ध सी फूटी।
चिथडो मे चन्दा की किरणे- दुश्मन के दुर्गो पर टूटी ॥

शहरी चले, चली महिलाये, झण्डा उठा, डाल ली झोली।
चलो नमक कानून तोड दो, आज गुलामी की है होली ॥
होली आज खून से खेलो, सर पर कफन, चिता हर थल पर।
फूलो सी कोमल कलिकाये- आगे वढी पहिन कर खद्दर ॥

दूध धुली चाँदनी बिछी सी– वालाये बढती जाती थी।
'गाँधी जी की जय हो, जय हो!' लहरे उमड उमड़ गाती थी ॥
महिलाओ ने घूँघट पलटे, सत्याग्रह की मजिल चमकी।
अग्निपुञ्ज सी आँखे दमकी, दहकी हुई दामिनी दमकी ॥

वडी बडी मनहर आँखो मे– सत्याग्रह का आमन्त्रण था।
कौध काँपती थी कम्पन मे– रोम रोम मे आकर्षण था ॥
वीर शहीदो के शोणित का– अलको मे सिन्दूर लगाये–
खोये हुए दीप लाने को– जल्दी जल्दी चरण बढाये ॥

अँधेरी धरा है, उठो दीप धरदो!
पराधीनता का बहिष्कार करदो!!
मचलती जवानी कहानी बनेगी।
तिरगी ध्वजा की निशानी बनेगी ॥

चलो, दीप मन्दिर मे चल कर जलाये।
किले पर तिरगे की आभा दिखाये ॥
पराधीन भारत को स्वाधीन करदे।
कि स्वाधीन भारत मे हम दीप धरदे ॥

गीत गीत मे, चरण-चाप मे– सत्याग्रहियो का प्रलाप था।
प्रकृति-प्रिया की मूक कथा मे– गाँधी-वाणी का अलाप था ॥
सर पर लाठी डण्डे खाते– नौजवान बढते जाते थे।
टोरी बच्चे गोरे राजा– दुनालियो से धमकाते थे ॥

अन्धी पुलिस बिकी टुकडो पर– छात्रो पर डण्डे बरसाये।
जलसे तितर बितर करने मे– बूटो से बच्चे दबवाये ॥
हट्टे कट्टे मुस्टडे पशु– रक्त पान कर मूँछ चढाते।
महिलाओ की काट छातियाँ– गोरे गर्म लहू पी जाते ॥

देवियाँ वढ गई आगे।
उठे बूढे, युवक जागे॥
तिरगा झूमता निकला।
गगन को चूमता निकला॥

जगत मे घूमता निकला।
साँप सा सूँघता निकला॥
हिमालय सा खडा था वह।
शेष-फण पर गडा था वह॥

सिन्धु पर लहरता था वह।
शिखा पर फहरता था वह॥
पद्मिनी ने उठाया था।
सिहनी ने उडाया था॥

शहीदो की चिता पर था।
जवानी की अदा पर था॥
घटाओ सा घुमडता था।
सिन्धु-जल सा उमडता था॥

शख सा वोलता था वह।
सुधारस घोलता था वह॥
कि वापू वोलते जिसमे।
जवाहर डोलते जिसमे॥

तिरगा फहरता निकला।
सरो पर लहरता निकला॥
देवियाँ गीत गाती थी।
जवानो को जगाती थी॥

उषा ने जग जगाया था।
सूर्य ने पथ दिखाया था॥
खुली बलिदान की वेला।
शहीदो का लगा मेला॥

कि भगुर से अभगुर बन–
मलय बन बन गया यौवन॥
शराबो की दुकानो पर–
विदेशी माल पर जाकर–

देवियो ने धरा धरना।
कहो किसको नही मरना ?
बॉसुरी गूँजती निकली।
हवा मे झूमती निकली॥

बुझे अगार दहके थे।
धरा के फूल महके थे॥
श्वेत खद्दर दमकता था।
चॉद सा तन चमकता था॥

देश आदेश-पथ पर था।
निकाला तथ्य मथ कर था॥
नमक कानून को तोडो !
गुलामी ब्रिटिश की छोडो ! !

नाव यह पार जानी है।
कि तुम मे बहुत पानी है॥
शेर क्यो बन गये बिल्ली ?
बुलाती है तुम्हे दिल्ली॥

तिरगे गान मे निकले।
वडे अभिमान से निकले ॥
नमक के ढेर पर लहरे।
कृषक के हाथ मे फहरे ॥

ब्रिटिश सरकार चिघाडी।
किन्तु क्या रुक सकी गाडी!
उठे अँगरेज के हटर।
वरसती लाठियाँ सर पर ॥

दुनाली गोलियॉ वरसी।
खून की होलियॉ वरसी ॥
चढे थे वूट छाती पर।
शहीदो के कटे थे सर!

कटे सर सूर्य से दमके।
रात मे चॉद से चमके ॥
जेल मे वन्द करते थे।
किन्तु क्या वीर डरते थे ॥

जेल मे मस्त गाते थे।
कूद तसले वजाते थे ॥
रेत की रोटियॉ खाईं।
किन्तु क्या सलवटे आईं!

हवा सा दौडता नारा–
दिवारे फोडता नारा–
नमक कानून को तोडो!
विदेशी वस्त्र-मद छोडो!!

'महात्मा जी ! तुम्हारी जय ।'
अखिल ब्रह्माण्ड मे थी लय ॥
जलूसो पर चली गोली ।
शहीदो की बढी टोली ॥

दहकती आग मे कूदे ।
खून के फाग मे कूदे ॥
बुला धावा 'बडाला' पर ।
रक्त-रजित हुआ अम्बर ॥

प्रकृति की श्वेत आभा पर–
प्रभाती फोडती पत्थर ॥
प्रभा पर पूर्णिमा आई ।
धरा पर चॉदनी छाई ॥

चॉद ने गीत गाये थे ।
सुनहरी दीप. छाये थे ॥
खिली थी रात की रानी ।
शान्त था सिन्धु का पानी ॥

गरजता था, उमडता था ।
प्रलय घन सा घुमडता था ॥
हृदय मे क्रुद्ध बडवानल ।
आग पर चल रहा था जल ॥

गॉव गॉव मे यही काण्ड था, कॉटो पर कलियॉ चलती थी ।
वीर शहीदो की सुहागिने– जीवन भर जिन्दा जलती थी ॥
मानवता ने नयन झुकाये, दीपो पर जल का नर्तन था ।
स्वतन्त्रता की बलिवेला थी पात पात मे परिवर्तन था ॥

अष्टादश सर्ग

क्रान्ति की किरणें

स्वर-दीप जले निशि-आँगन मे,
तम फाड चले पग मानव के ।
चलता शशि तारक-दीप लिये,
उर काँप उठे हर दानव के ।
जिसका यह रूप अनूप सखी !
वह दीपशिखा जलती रहती ।।
जिससे मिलता सुख-शान्ति-सुधा,
वह क्रान्ति नई कविता कहती ।।

आँखो का पानी दब दब कर– जलती ज्वाला बन जाता है ।
तभी क्रान्ति की आग दहकती– जब कोई पीडित गाता है ।।
मेघो मे बिजलियाँ छिपी हैं, फूलो मे अर्चन अधीर है ।
किरणो मे आरती सजग है, विप्लव का वाहन समीर है ।।

स्वतन्त्रता के सूरज दमके, फूल फूल मे जीवन आया ।
खादी के उजले चन्दा ने– हर आँसू को दीप बनाया ।।
भक्त 'भगीरथ' की गगा मे– मुक्ति पर्व की फुलवारी थी ।
उधर दमन का रक्तिम दौरा, इधर क्रान्ति की चिनगारी थी ।।

ब्रिटिश राज्य ने काँगरेस को– घोषित किया गैरकानूनी ।
'मोतीलाल' कर लिये बन्दी, प्राणो पर था पजा खूनी ।।
अँगरेजो ने प्रान्त प्रान्त मे– दमन नीति का फण फैलाया ।
काँगरेस का ऊँचा झण्डा– तुग शिखा पर ही लहराया ।।

वढती आग देख गोरो ने– 'गोलमेज परिषद्' बुलवाई।
किन्तु न प्रतिनिधि चुने हुए थे, अपनो ही की छटा दिखाई॥
सोलह प्रतिनिधि रजवाडो के, ब्रिटिश राज्य के लिये छियासी।
तेरह अन्य दलो के मुखिया, सर पर थे कृत्रिम सन्यासी॥

जैसी कूक भरी थी वैसी– बजती रही बाँसुरी खर खर।
लेकिन देश गर्व करता है– निर्भय विजयी 'शास्त्री जी' पर॥
भारत की स्वतन्त्रता के हित– वे वीणा से बोल रहे थे।
राजाओ के मुकुट हिल गये, सम्भाषण सुन डोल रहे थे॥

लेकिन उस नगाडखाने मे– मुख्य प्रश्न थे घूँघट जैसे।
ब्रिटिश राज्य की रहे व्यवस्था, प्रश्न छिडे थे ऐसे वैसे॥
रियायती प्रस्ताव पास कर– भिजवाया फिर काँगरेस मे।
गुड्डा सा प्रस्ताव देखकर– हलचल सी मच गई देश मे॥

'रैम्जे मैक्डोनल्ड' सचिव को– कॉगरेस ने उत्तर भेजा।
ईट उधर की रोक हाथ मे, बना मोम का पत्थर भेजा॥
रावी-तट पर जल छूकर हम– जो दृढ प्रण करके निकले हैं।
उससे इधर उधर कण भर भी– पैर न 'अगद' के फिसले हैं॥

हम पूरी स्वतन्त्रता लेगे, यह प्रस्ताव नही टल सकता।
गाँधी जी के महामन्त्र को– कोई छली नही छल सकता॥
उन्हे वधाई देते हैं हम– जो कि फूल से चढे देश पर।
स्वतन्त्रता के महा समर मे– गोली खाकर जो कि गये मर॥

विटिश राज्य के जुल्म जिन्होने– हँसते हँसते सहन किये हैं।
धन्य धन्य देवियाँ जिन्होने– आँखो मे अगार पिये हैं॥
इधर प्रतिज्ञा पर दृढ भारत, उधर 'गवर्नर जनरल' बोले।
इधर उधर के जोर लगाकर– समझौते के द्वारे खोले॥

सत्ता हिली, घोषणा की यह- नेताओ को छोड रहे है।
कॉगरेस से सुलह नीति का- निर्मल नाता जोड रहे है।।
कॉगरेस पर से कानूनी- सारे बन्धन हटा रहे है।
बढे हुए झगडे टण्टो को- धीरे धीरे घटा रहे है।।

आपस मे नेता विचार ले, फिर हम सब बाते कर लेगे।
नीर-क्षीर के हस ज्ञान से- मानस मे मोती भर लेगे।।
बन्दीगृह मे जननायक ने- बाँची राजनीति की हलचल।
हवा कर रही थी बापू पर- निर्मल पलके पखा झल झल।।

जाल बिछे 'यरवदा जेल' मे, लेकिन फँसा न हस जाल मे।
वही डूबते को तिनका है, जो सँभाल ले कठिन काल मे।।
स्वप्न देखते से जननायक- खीच रहे थे चित्र एकटक।
पूज रही थी पैर प्रेम से, बन्दीगृह की रानी अपलक।।

कारागृह ने बडे चाव से- बापू की आरती उतारी।
बन्दीगृह मे पूजा करते- सत्य प्रेम के परम पुजारी।।
'चौतिस बन्दी ताला कुजी- लालटेन' के गीत सुन रहे।
घण्टे घडियालो के स्वर मे- जननायक जग-जीत सुन रहे।।

घास पात की भूजी खाते, मस्ती मे नाचा करते है।
स्वतन्त्रता के अमर सिपाही- नश्वरता से कब डरते है?
समझौते के लिये राज्य ने- कारागृह से गाँधी छोडे।
छोडे कार्यसमिति के नेता, पत्थर पिघले थोडे थोडे।।

मुक्त महामानव यह बोले- तरस रहा हूँ अमर शान्ति को।
सब से वह पथ पूछ रहा हूँ- जिससे सब तज सके भ्रान्ति को।।
ब्रिटिश राज्य के भाषण पर मैं- कारा से मत बना न लाया।
लन्दन से कुछ तार मिले हैं, पर मैं उनको जोड न पाया।।

जो आन्दोलन स्वतन्त्रता हित- उससे तिल भर नही हिला हूँ।
मिले न 'मोतीलाल नेहरू', नेताओ से नही मिला हूँ ॥
गगा यमुना सरस्वती से- गाँधी चले 'प्रयाग' प्यार भर।
गाँधी जी को टेर रहे थे- 'मोतीलाल' रुग्ण शैया पर ॥

गाँधी गये 'स्वराज्य भवन' मे, 'पडित जी' ने कौली भरली।
छाती से चिपटा बापू को- जलती छाती ठण्डी करली ॥
आँसू बह निकले दोनो के, भक्त और भगवान मिल गये।
'कृष्ण' 'सुदामा' मिलन आज फिर, ध्यान और वरदान मिल गये ॥

बिछडे साथी के मिलने पर- रो पडता है रोगी का दिल।
आँचल मे मोती भर देता- बिछडे साथी से साथी मिल ॥
टूटी की बूटी न जगत मे, रोगी के उपचार थक गये।
चित गोते पर गोते खाता, मोती से उपचार छक गये ॥

भारत माता के 'मोती' को- मृत्यु चाहती थी ले जाना।
अन्तिम शब्द कहे 'मोती' ने- "स्वतन्त्रता पर मुझे चढाना ॥
मातृभूमि की स्वतन्त्रता मे- मै भी तो शामिल होऊँगा।
स्वतन्त्रता की गोदी पाकर- मै सुख की निद्रा सोऊँगा ॥

यदि मुझको मरना निश्चित है- तो मैं मरू ँ स्वतन्त्र देश मे।
पर चलने के क्षण आ पहुँचे, इच्छा छोडी काँगरेस मे ॥
लाल 'जवाहरलाल' ! पिता की- यह इच्छा पूरी कर देना।
भारतमाता के मस्तक पर- मेरे लाल ! मुकुट धर देना ॥

मेरा देह 'स्वराज्य भवन' है, स्वतन्त्रता का पूजन करना।
मेरे लाल ! चिता पर मेरी- उसी रोज तुम दीपक धरना ॥
जिस दिन स्वतन्त्रता देवी की- पूजा हिन्दुस्तान करे यह-"
पण्डित 'मोतीलाल नेहरू'- विदा हो गये बस इतना-कह ॥

भारत माता की मुट्ठी से— 'मोती' काल कराल ले गया।
मोती गया, किन्तु जननी को— ज्योति-जवाहरलाल दे गया॥
सागर मे हीरे मोती हैं, लेकिन ऐसा एक न मोती।
टूट गया माला का मोती, पगली सी भारत मा रोती॥

मोती अब न रहे सागर मे, सागरिका सी जनता रोती।
मोती के बलिदान-दीप पर— बरस पडे आँखो से मोती॥
मर्त्य लोक के उस मोती पर— शब्दो के मोती न्यौछावर।
मेघ मराल लुटाते मोती, मानस के वे मोती पाकर॥

भारत माँ के भव्य भाल पर— स्वाभिमान बन दमका मोती।
तारक दल के स्वच्छ चोक मे— चन्दा बन कर चमका मोती॥
धन्य धन्य 'आनन्द भवन' वह— जिस मे मोती और जवाहर।
शरद चाँदनी की चाँदी से— धरती-मण्डित उगा प्रभाकर॥

स्वतन्त्रता का मोती पाने— गाँधी जी 'दिल्ली' मे आये।
ब्रिटिश राज्य के राजमहल मे— जा 'अर्विन' से नयन मिलाये॥
भेट हुई गाँधी 'अर्विन' की, पश्चिम पूरब का मेला था।
सरिता को दो मिले किनारे, गोलमेज से वह खेला था॥

कार्य-समिति ने गाँधी जी को— अपने सब अधिकार दे दिये।
गाँधी के पवित्र हाथो ने— हँस हँस कर अगार ले लिये॥
जो अगारो पर चलता हे— काँटे उसे फूल बन जाते।
पानी की वर्षा होते ही— अगारे ठडे पड जाते॥

सँभल सँभल चलना पडता है, जीवन की पगडण्डी टेटी।
मिले प्रेम से गाँधी 'अर्विन', समझौते की चर्चा छेडी॥
गाँधी जी ने कहा शान्ति से— पहले छोडो वन्दी सारे।
सब विशेष कानून हटाओ, मुक्त करो आँखो के तारे॥

अति पर उतरी हुई पुलिस है, सच्ची सच्ची जाँच कराओ।
जिनका जो भी जब्त किया है– वह उनको वापिस पहुँचाओ!।
जितने जितने दण्ड लिये हैं– कर प्रायश्चित वापिस कर दो।
जो जिसका, वह उसको दे दो, न्याय नीति का दीपक धर दो।।

इसके बाद सन्धि चर्चा पर– छिडे तार भारत लन्दन के।
खण्डन से खण्डित होता जग, तार जुडे रहते मण्डन के।।
समझौते की बडी कहानी, चलती रही बराबर बाते।
बनी जागरण की रणभेरी– गाँधी के जीवन की राते।।

'वायसराय भवन' मे गाँधी– 'अर्विन' से बाते करते थे।
और अतिथि थे 'अन्सारी' के, प्रेम-सुधा से घर भरते थे।।
गाँधी जी का सारा दल बल– 'अन्सारी' के घर पर ही था।
भारत माँ का सारा गौरव– गाँधी जी के सर पर ही था।।

कार्य-समिति 'अन्सारी' के घर– गाँधी जी की राह देखती।
मेरे अविनाशी गाँधी को– उत्सुकता से चाह देखती।।
जब कि प्रतीक्षा करते करते– आँखे पथराया करती हैं–
तब ही भूखी प्यासी आँखे– मिलन गीत गाया करती हैं।।

'गाँधी-अर्विन' समझौते की– एक निराली घटा घिरी थी।
बहुत प्रतीक्षा बाद देश मे– एक सुनहरी किरण गिरी थी।।
सायकाल छ बजे थे जब– गाँधी 'अर्विन' पुन मिले तब।
दोनो समय मिले थे हँस हँस, रजनी मे दिनमान खिले तब।।

गाँधी जी की मधुर भेट मे– आशा की किरणे लहराई।
कार्य-समिति के मुखमण्डल पर– धुँधली सी आशाये छाई।।
समझौते की बातचीत मे– कभी दिखाई दिया सबेरा।
कभी निराशा के घन छाये, कभी दिखाई दिया अँधेरा।।

कभी कभी काली रजनी मे- चाँद दिखाई दे जाता था।
कभी उजाले की चाँदी पर- काला अन्धकार छाता था॥
एक समस्या सुलझाते थे, तभी और उलझन आ जाती।
राजनीति के दाँवपेच मे- सुलझी उलझन सुलझ न पाती॥

लेकिन गाँधी अर्विन मिलकर- कोई मार्ग टटोल रहे थे।
आदि अनन्त गुणो से दोनो- कटुता मे रस घोल रहे थे॥
पन्द्रह दिन तक जाग रात दिन- दोनो ने ही लगा दिया बल।
राजनीति से अन्तर मथ कर- अन्त समस्या कर ही ली हल॥

मुक्त कण्ठ से गाँधी जी के- 'अर्विन' ने जग मे गुण गाये।
गुण तो वह है जिस के आगे- प्रतिपक्षी भी शीश झुकाये॥
सन् उन्निस सौ इकत्तीस की- पाँच मार्च के अरुणोदय मे-
सरकारी विज्ञप्ति बटी थी- गाँधी 'अर्विन' की मधु लय मे॥

इस अस्थायी समझौते की- इक्किस बाते करी प्रकाशित।
सब विशेष कानून हटे थे, गाँधी ने की शान्ति प्रसारित॥
दण्ड न लेगे, जब्त की हुई- वापिस सब सम्पत्ति करेंगे।
लेकिन जो बिक चुकी सम्पदा- उसका बदला नही भरेंगे॥

और वैध शासन सम्बन्धी- प्रश्न विचाराधीन रहेंगे।
'गोलमेज परिषद्' की बाते- पुन सुनेंगे, पुन कहेंगे॥
कानूनो की मर्यादा को- भग नही कोई कर पाये।
ओ३म् शान्ति प्रभु! ओ३म् शान्ति प्रभु! मानव से मानव मिल जाये॥

'भगतसिंह' को फाँसी पर से- बापू ने चाहा छुडवाना।
पूरी शक्ति लगाई लेकिन- मृत्यु-सुधा को मिला बहाना॥
'भगतसिंह' के नश्वर तन को- हत्यारो से बचा न पाये।
लेकिन अमर शहीद हो गये, मातृभूमि पर फूल चढाये॥

वह युगपरिवर्तित भाषण जो– गाँधी जी ने दिया बाद मे।
शान्ति सुधा बरसी पडती थी– सत्य प्रेम के मधुर स्वाद मे ।।
अमर उजाले ने 'अर्विन' की– मुक्त कण्ठ से करी प्रशसा।
मानव मे मानवता पाये– गाँधी जी की थी यह मशा ।।

हार जीत की होड लगाना– अप्रमेय का ध्येय नही था।
गाँधी-वाणी का रस पीकर– किस प्राणी मे श्रेय नही था ।।
गाँधी सुख की सीमा पाकर– कभी न हुए फूल गुब्बारे।
कभी दुःख मे धैर्य न छोडा, धन्य धन्य वे चरण हमारे ।।

मृगतृष्णा से दूर दूर वे– जग के हित चिन्तन मे रत थे।
जग की गति विधि से परिचित थे, ईश्वर के चरणो मे नत थे ।।
सत्य अहिसा आत्मा बल से– जिसने दानवता को जीता–
वह 'रामायण' बन जाता है, और वही बन जाता 'गीता' ।।

'गाँधी-अर्विन समझौते' से– नई हवा मे आई हलचल।
चहल पहल सी हुई देश मे, क्रीडा करता था कोलाहल ।।
समाचार-पत्रो के प्रतिनिधि– बैठे वहाँ लगा कर मेला।
गाँधी जी के दाँये बाँये– घिरा पत्रकारो का रेला ।।

देश-विदेशी प्रतिनिधियो ने– नारायण के दर्शन पाये।
पूछे प्रश्न पत्रकारो ने, गाँधी ने उत्तर समझाये ।।
'पूर्ण स्वराज्य' शब्द की व्याख्या– क्या है? महा! महा! बतलाओ।
"आत्म नियन्त्रित पूर्ण राज्य है", मुक्त देश के दुःख छुडाओ!!

'पूर्ण स्वराज्य हेतु परिषद् मे– लेंगे भाग? और बल देंगे?'
"क्या अस्तित्व अगर न दिया बल, बल न दिया तो क्या ले लेंगे?"
'जो सरक्षण प्रतिबन्धन हैं– मानेंगे या नही उन्हे अब?'
"नीति साफ, उद्देश्य साफ हैं, अमृत-पुत्र अस्पष्ट रहे कब?

ब्रिटिश राज्य का मार्ग साफ है, काँगरेस का मार्ग खुला है।"
'प्रश्न कराँची काँगरेस मे- क्या होगे, क्या रग घुला है ?'
"काँगरेस की कार्यसमिति मे- सारे प्रश्न करेगे निश्चय।"
'वार वार उलझन जो आई- कैसे उस पर पाई है जय ?'

'अर्विन की भलमनसाहत से, राम नाम ने पथ दिखलाया।"
'क्या यह सवसे वडी सफलता, क्या यह जीवन मे मधु पाया ?'
"मैंने जीवन मे क्या पाया, क्या खोया यह दुनिया जाने।
पूर्ण स्वराज्य सफलता मेरी, स्वतन्त्रता जीवन के माने॥"

'क्या भावी शासन विधान मे- सरक्षण स्वीकार करेगे ?'
"युक्ति युक्त एव विवेक से- हाँ, उसका सत्कार करेगे॥
अल्पसख्यको के सारे हक- जव कि धरोहर मानेगे हम-
तव ही वडे राष्ट्र हम होगे, तभी हटा पायेंगे हम तम॥

सैनिक एव आर्थिक वल भी- सच्चाई से वढ पायेगा।"
'क्या सरकारी ऋण भारत का- उनको भुगताया जायेगा ?'
"जिसका भारत पर ऋण होगा- उसको कोडी कौडी देंगे।
लेकिन हमे चाहियेगा जो- भारत की धरती से लेंगे॥

इस धरती मे हीरे, मोती, इस धरती मे भरी वीरता।
इस धरती मे मुक्ति, विजय है, इस धरती मे धरी धीरता।"
"राष्ट्र-सघ उपयुक्त पच क्या ?' "नही, पच वह जो दो माने।
पच रूप परमेश्वर का है, हम परमेश्वर को पहिचाने॥"

'क्या यह अस्थायी समझौता- असली भापण पर्वतीय है ?'
"यह आलोचक वतलायेगे- कौन कहाँ तक माननीय है।"
'क्या विलायती वस्त्रो का अव- वहिष्कार ढीला कर देंगे ?'
"नही, कदापि नही ! भारत को- वस्त्र स्वदेशी मे भर देंगे॥"

०००००००००००००

अष्टादश सर्ग

०००००००००००००

'और जातियो से ऊपर उठ– क्या अँगरेजी राज्य पालता ?'
"मैं अपने को छोड किसी की– सत्ता सर पर नही चाहता ॥"
'इसी ब्रिटिश झण्डे के नीचे– क्या अधिकार पसन्द करेगे?'
"एक आम झण्डे के नीचे– हम न किसी से कभी डरेगे ॥

भारत के झण्डे के नीचे– भारत राष्ट्र स्वतन्त्र रहेगा।
ऊपर उडता रहे तिरगा, तले सिन्धु का नीर वहेगा ॥
तीन रँगो की छाया लेकर– छाया लोक रचा ईश्वर ने।
वही तिरगा झण्डा देकर– मार्ग दिखाया है हरि हर ने ॥

इस तूफानी जल-प्लावन मे– हमको तैर पार जाना है।
दिल्ली के उत्तुग शिखर पर– हमे तिरगा लहराना है।"
'क्या हिन्दू मुस्लिम प्रश्नो के– हल सुलझा एकता करोगे ?
क्या धरती आकाश मिलेगे, क्या आँसू मे प्यार भरोगे ?'

"आज क्षितिज से अलग एक दिन– हिन्दू मुस्लिम मिल जायेगे।"
'क्या स्वराज्य के मिल जाने पर– सैन्य शक्तियाँ हटवायेगे ?'
"कभी समय वह भी आयेगा– जब हम यह गौरव पायेगे।
मानवता की तुग शिखा पर– जब कि तिरगा लहरायेगे ॥"

'बोल्शेविज्म पसन्द कहो क्या ? क्या हमले की है आशका ?'
"जिसमे अच्छाई हो उसका– बजता है दुनिया मे डका ॥"
'शासन का प्रधान मन्त्री पद– क्या वापू स्वीकार करेंगे ?'
"यह पद नौजवान की गद्दी, हम उसका सत्कार करेंगे ॥"

'पर यदि जनता चाहे तुमको, और उसी पर अड जाये तो ?'
"शरण पत्रकारो की लूँगा, कोई अडने को आये तो ॥"
'क्या स्वराज्य के वाद देश से– आप मशीने उडवा देगे ?'
"नही, मुक्ति के बाद देश मे– और मशीने मँगवा लेगे ॥"

'क्या स्वराज्य से पूर्व शीघ्र ही– जननायक आश्रम जायेंगे ?'
"जब तक पूर्ण स्वराज्य न होगा– तब तक शान्ति नही पायेंगे ॥"
'क्या अन्तर्राष्ट्रीय गुत्थियाँ– आप अहिंसा से खोलेंगे ?'
"सेनाये दर्शन को होगी, सत्य प्रेम का रस घोलेंगे ॥

सेना खेल खिलौना होगी, बहती होगी निर्मल गगा ।
गगा की गति सा हिमगिरि पर– फहरायेगा शान्त तिरगा ॥"
हिमगिरि की ऊँची चोटी से– कॉगरेस मे जीवन आया ।
बहती चली त्रिवेणी धारा, लहरो ने चन्दा तैराया ॥

चलो 'कराँची काँगरेस' मे, चले अरब सागर के तट पर ।
जहाँ शान्त उत्ताल तरगे– मचली प्रलय भैरवी गा कर ॥
अन्तस्तल मे आग छिपाये– आँखो मे भर कर खारी जल–
किस की विरह-वेदना भर कर– तट से टकराता हे पागल !

किस से मिलने को उत्कण्ठित, किस पर मचल रहे हो सागर !
दोनो हाथो लुटा रहे हो– जग मे हीरे मोती भर भर ॥
गा गा गीत चढा कर मोती– क्या भारत को प्यार कर रहे ?
क्या चन्दा को लोरी दे दे– सुन्दर का सत्कार कर रहे ?

धवल चाँदनी के आँगन मे– जब ये लहरे लहराती हैं–
शरद पूर्णिमा का शशि पाकर– जब ये मधुर मधुर गाती हे–
तब पीडित से पीडित नर भी– मस्ती मे बाँसुरी बजाता ।
तब समाधि से जाग काव्य ले– कवि सागर से होड लगाता ॥

तुम मे केवल शख, और मैं– शखनाद लेकर आया हूँ ।
तुम मे नश्वर हीरे मोती, मे अनन्त मोती लाया हूँ ॥
तुम मे आग, किन्तु मुझ मे भी– भीषण विरहानल जलता है ।
तुम से चॉद खेलता निशि मे, मुझ मे शशि प्रतिपल चलता है ॥

तुम मे ज्वारभाट की कल कल, मुझ में भावुकता की छल छल।
तुम मे महाप्रलय का बल है, मुझ मे सब का चिर सचित बल ॥
तुमको मर्यादा ने रोका, रोक रहा है मुझे किनारा।
तुम पहरे पर खडे हुए हो, मैंने पहरा दिया तुम्हारा ॥

तुम बडवानल से जलते हो, मुझको दुनिया जला रही है।
तुम तूफान छिपाये वैठे, कविता नौका चला रही है ॥
आओ सागर! हम दोनो मिल– हृदय हृदय की चिता बुझाये।
सीता-स्वतन्त्रता लाने को– प्रभु को लहरो पर तैराये ॥

आओ! हम अपनी ज्वाला से– परिवर्त्तन की आग लगाये।
'क्रान्ति क्रान्ति जय! महाक्रान्ति जय!' हम तुम पचम स्वर मे गाये ॥
उदधि उमड कर बोला कवि से– जननायक के स्वर मे बोलो!
जिनके चरण पखार रहा मै– उनके पीछे पीछे हो लो!!

बडे भाग्य इस तट के जिस पर– लगा देवताओ का मेला।
कॉगरेस के अधिवेशन मे– लहरायेगी भावी वेला ॥
उडे भाव सौरभ जलसे मे, शरद चॉदनी मे मॅडराये।
नेताओ के श्री चरणो मे– जड चेतन ने फूल चढाये ॥

'भगतसिह' की यादगार पर– दीप जलाये कॉगरेस ने।
फॉसी पर चढने वालो पर– फूल चढाये देश देश ने ॥
'भगतसिह' की फॉसी सुन कर– शोकाकुल बादल घिर आये।
भावुक युवको ने गॉधी पर– काले पीले फूल चढाये ॥

पर बापू ने उन फूलो का– मूल्य प्रेम-पीडा से आँका।
श्रद्धा से झुक गये फूल वे, बापू मे सब का उर झॉका ॥
शीतल शान्त सुधा-रस गॉधी– बोले, "सत्य नही डर सकता।
गॉधी मरे भले ही चाहे, गॉधीवाद नही मर सकता ॥

फाँसी पर चढने वालो की– अमर भावनाये जिन्दा है।
काँगरेस मे क्रीडा करती– करुण कामनाये जिन्दा है।।
वीरो के वलिदान अमर हैं, वलिदानो की जय हो, जय हो !
यही गर्जना हो सागर की, यही गगन-चुम्वी की लय हो।।

हिन्दू मुसलमान के दीपक ! मानवता के धन मृत्युञ्जय !
'श्री गणेश शकर विद्यार्थी'– अमर! तुम्हारी वार वार जय।।"
पास शोक प्रस्ताव हुए जो– वे ही अव स्मृति-चिह्न शेप हैं।
पूजा मे सव से पहले ही– वैठाये जाते गणेश हैं।।

गति विधियाँ चित्रित करता था– भावी चित्र वनाने वाला।
मञ्जिल पर वढता जाता था– लेकर राम नाम की माला।।
राम नाम रटने वाले की– नाव पहाडो पर चढती है।
स्वतन्त्रता की चाह राह के– पत्थर फोड फोड वढती हे।।

वता समीर वावले ! कहाँ मिली स्वतन्त्रता ?
चली अधीर चाँदनी जहाँ खिली स्वतन्त्रता।।
उसी सुहाग को कला सितार सी पुकारती।
उसी प्रभात की सुरश्मि आरती उतारती।।

ऊनविंश सर्ग
रेत के अक्षर

चाँदी की शैया पर चन्दा– देख रहा स्वर्णिल संसृति को।
फूलो के आभरण गूँथ कर– पहिनाता बलिदान प्रकृति को॥
शरद पूर्णिमा के चरणो मे– शशि का पूर्ण पराग वहा है।
जड चेतन निद्रा निमग्न हैं, पर वह प्रहरी जाग रहा है॥

'क्रान्ति सफल हो! क्रान्ति सफल हो!' रश्मि-वालिकाये गाती है।
वन्दी छूट छूट आते है, ये मालाये पहिनाती हैं॥
मुक्त वन्दियों के जलूस पर– दृग-हीरो की वर्षा होती।
विजय-नाद ललकार रहे हैं, विखर रहे है मन के मोती॥

'अर्विन' चले गये भारत से, 'लॉर्ड विलिंगडन' भारत आये।
दिन ढल गया, कमल मुरझाये, निशि ने अपने नयन नचाये॥
वायसराय नये आये थे, समझौते से बने अपरिचित।
गाँधी की मित्रता न जानी, सीमा समझ न सकी अपरिमित॥

चला निरकुश शासन फिर से, समझौते पर स्याही फेरी।
सूरज डूब गया पश्चिम का, घिरती आई घोर अँधेरी॥
पुलिस और सेना का शासन– चला कुचलने कॉगरेस को।
गौरव पथ पर ले जाता था– गाँधी का सन्देश देश को॥

✓ वह नर अमर, नही मर सकता– जिसने सच्चाई पहिचानी।
दुनिया वाले विष लाये पर– अमृत घूँट 'मीरा' ने मानी॥
जो हँसते हँसते विष पीते– वे ही 'शकर' कहलाते है।
डरने वाले डर जाते हैं, वढने वाले वढ जाते हैं॥

'लॉर्ड विलिंगडन' पल मे पन्खे, ईंटे गिरने लगी रेत की।
गाँधी जी को दीख रही थी– परछाईं अँगरेज प्रेत की॥
सन्धि भग की अँगरेजो ने, शोषण की तलवार चलाई।
भारत माता के मन्दिर मे– दीपो की ज्वाला मुसकाई॥

नियम तोड अँगरेज सिपाही– मार माँगते मालगुजारी।
प्राण-प्रसून तोडने वाले– कहलाते प्रजा अधिकारी॥
प्रान्तो की सरकारे सत तज– अपनी मनमानी करती थी।
प्रान्त प्रान्त मे सन्धि भग थी, भावो की कृपियाँ मरती थी॥

मदिरालय पर सत्याग्रह के– शान्तिपूर्ण धरने को रोका।
झण्डे छीने, डण्डे मारे, वात वात मे अड कर टोका॥
यह विश्वासघात गोरो का, अपने उनके चाटुकार थे।
काम क्रोध मद लोभ मोह मे– पराधीनता के शिकार थे॥

सभी शत्रुओ को गाँधी ने– सयम से पछाड जय पाई।
उसकी आँखो की वर्षा ने– ऊसर मे खेती उपजाई॥
गाँधी जी ने कलक्टरो वह– गवर्नरो से उत्तर माँगा।
वही ढाक के तीन पात थे, चाँदी पर छाया था राँगा॥

अन्त 'इमर्सन' साहव से फिर– करी महामानव ने वाते।
यह कैसा समझौता जिसमे– दिन ही मे घिर आई राते॥
दो दिन बीते नही कि तुमने– समझौते का पालन छोडा।
पचो से निर्णय करवाओ, सत्ता ने समझौता तोडा॥

उत्तर मिला 'इमर्सन' से जो, शब्दो का वह तर्क-जाल था।
या यो कह दो, अँगरेजो का– उत्तर ओढे हुए खाल था॥
तर्क वुद्धि से सत्य न मिलता, उलझन से उलझन आती है।
श्रद्धा शान्ति भक्ति सयम से– उलझन शीघ्र सुलझ जाती है॥

बुद्धि जहाँ तक पहुँच न पाती- श्रद्धा वहाँ राज्य करती है।
शक्ति भक्ति श्रद्धा के आगे- बुद्धि सदा पानी भरती है॥
बुद्धिवाद चिन्ता का चीता, श्रद्धा मे अनहद मलयानिल।
तर्क बुद्धि से फूल सुगन्धित, खील खील होते हैं खिल खिल॥

बुलबुल फूल नोच देती है, मधुकर रस मे लीन बीन से।
श्रद्धा से श्रद्धा मिलती है, तार्किक देखे गये दीन से॥
लेकिन इसका अर्थ नही यह- करे अन्ध विश्वास किसी पर।
करते रहो प्रकाश सभी पर- श्रद्धा का उजियाला लेकर॥

दीपक की उज्ज्वल सुन्दरता, दीपक का शहीद ही जाने।
जो फूलो से खेले बोले- फूलो को वह कवि पहिचाने॥
हम सुलझाते वे उलझाते, सुलझन का कुछ पा न सके हल।
दाँत लगाये जाते हैं जब- स्वाभाविक है होनी हलचल॥

अत्याचार दमन निर्वासन, घर खेती पर गोरे राजा।
सभी ओर से 'त्राहि! त्राहि!' थी, खून पिया जाता था ताजा॥
'लार्ड विलिंगडन' को गाँधी ने- भेजा तार, सार समझाया।
'गोलमेज परिषद्' मे जाना- अब अपना अपमान बताया॥

लिखा 'विलिँगडन' ने गाँधी को- "खेद कि आप नही जायेगे।
समझ नही पाया फिर कैसे- अपनी बाते समझायेगे॥
काँगरेस का हित इसमे है, 'गोलमेज परिषद्' मे जाये।
जो जो कारण लिखे आपने- उनके हल 'परिषद्' से पाये॥

खैर, आपकी जैसी इच्छा, मैं यह खबर भेजता 'लन्दन'।
'लन्दन' मे प्रधान मन्त्री को- भेज रहा हूँ सारी अनबन॥
यही आपका अन्तिम निश्चय, 'लन्दन' आप नही जायेंगे?
बूर बट रही है लन्दन मे- क्या वह बूर नही पायेंगे?"

उत्तर यह तत्काल मिल गया– "निश्चित मुझे नही जाना है।
मुझे चाहिये राष्ट्र दिवाली, ग्रहण हटा सूरज लाना ह।।"
स्वाभिमान सम्मान शान्ति ने– भारत माँ का भाल उठाया।
कॉगरेस की कार्य-समिति ने– गड्ढे से बच पैर बढाया।।

अपने ऊँचे सिद्धान्तो पर– निर्मित किये 'स्वयसेवक दल'।
सैनिक चले स्वराज्य प्राप्ति को, लेकर गाँधी जी का सम्बल।।
'सेवादल' का चला सगठन, गूँजी गाँधी जी की जय जय।
गाँव गाँव मे ऊँचे स्वर से– देशभक्ति की गूँज गई लय।।

'बादशाह सरहद के गाँधी– जय अब्दुल गफ्फार' समन्वय।
धर कन्धो पर जुवा देश का– आन्दोलन मे वीर हुए लय।।
निकले 'ख़िदमतगार खुदाई', हुए अग्रसर सेवा पथ पर।
'जिरगा' साथ चला 'सरहद' के– भेद भाव के शूल भूल कर।।

इस प्रकार से प्रान्त प्रान्त मे– कॉगरेस का बढा सगठन।
मलयानिल गाँधी जी लाये– भारत के माथे का चन्दन।।
देख आज, कल और भविष्यत्– गाँधी जी बढते थे आगे।
अग्नि-परीक्षाओ से निकले, तूफानो से कभी न भागे।।

कॉगरेस के प्रस्तावो पर– मुहर महामानव की लगती।
राजनीति की कूटनीतियाँ– गाँधी के आगे थी मँगती।।
प्रश्न साम्प्रदायिक जाले से– सुलझाये राष्ट्रीय ढग से।
सभी जातियाँ रँगी हुई थी– महापुरुष के स्वच्छ रग से।।

गरल साम्प्रदायिकता का सब– गारुड गाँधी जला बढे थे।
जीवन-पथ की चट्टानो पर– गाँधी हँसते हुए चढे थे।।
भेद भाव का गरल पान कर– कॉगरेस को मुक्त कर दिया।
पथ भूली दुनिया के आगे– सर्वग्राह्य उद्देश्य धर दिया।।

ब्रिटिश राज्य के आगे उसने– बडी चतुरता से रक्खे हल।
राष्ट्रीयता बढी भारत मे, हलचल से बच ला दी हलचल॥
रखी योजनाये बापू ने, 'कार्य समिति' ने मुहर लगाई।
अपने धुले हुए मानस की– दुनिया को तसवीर दिखाई॥

शासन सब को आश्वासन दे– उनकी रक्षा की जायेगी।
सस्कृति, भाषा, धर्म, कर्म पर– बिल्कुल आँच नही आयेगी॥
मर्यादा व्यवहार नागरिक– अधिकारो मे समता पाये।
बालिग मत-अधिकार यहाँ हो, अल्प जातियाँ सुख से गाये॥

भारत भारतीयता मे हो, नही चाहिये इँग्लिश चोला।
पर्स उन्हो का रहे दूर ही, बना रहे खद्दर का झोला॥
भारत का यह झण्डा जिसमे– साहस का केसरिया रँग है।
श्वेत सत्य, उजियाली आभा, श्रद्धा की हरियाली सँग है॥

बरसा रही वीरता वाणी– फर फर उडती ध्वजा तिरगी।
हम सब का भगवान एक है, भेद-भाव का भागे भगी॥
जैसे बालक खेल खेल कर– तोड खिलौना किल्ली मारे।
ऐसे ही समझौता टूटा, डूबे जब आ गये किनारे॥

बापू 'गोलमेज परिषद्' मे– तब फिर कैसे जा सकते थे?
जिस मधु मे विष मिला दिया हो– वह मधु कैसे खा सकते थे?
काली पीली घिरी घटाये, सत्याग्रहियो ने जय बोली।
बाट देखती थी इगित की– माँ के अरमानो की टोली॥

पर गाँधी जी समझौते का– कभी न द्वार बन्द करते थे।
कभी नही नरवस होते थे, कभी न दैत्यो से डरते थे॥
सत्य शान्ति के लिये प्रेम से– दोनो हाथ उठा कहते थे।
मानवता के सिद्धान्तो को– सब को समझाते रहते थे॥

सन्धि भग थी, पर गाँधी की– सत्ता से वाते चलती थीं।
वायसराय और गाँधी की– तारो से फलियाँ फलती थीं॥
वहुत वहुत वाधाये थी पर– अन्त ढूँढने से पाया हल।
भूले को पथ मिल जाता है– वापू के चरणो पर चल चल॥

वायसराय राह पर आये, गाँधी ने सत्कार कर लिया।
'गोलमेज परिपद्' मे जाना– सुलझन ने स्वीकार कर लिया॥
'लन्दन' को चल पडे चरण वे, जिनको दृग-मृग चूम रहे हैं।
जिनके सौरभ से भावो पर– जग के भौरे झूम रहे हैं॥

गाडी मे 'वम्वई', वहाँ से– वैठ यान मे यान चल पडा।
स्वतन्त्रता देवी लाने को– भारत का अभिमान चल पडा॥
'देवदास', देवी 'सरोजिनी', 'महादेव देसाई', 'मीरा'।
'प्यारेलाल' प्रवाल साथ थे, दमक रहा था उज्ज्वल हीरा॥

जैसे ऊपर कमल कीच से, वैसे वह ऊपर जाता था।
शुद्ध वनस्पतियो से निर्मित– भारतीय भोजन पाता था॥
सागर प्रहरी वना उन्हो का, भाव-रूप से साथ साथ था।
विजय उसी के चरणो मे थी– जिस पर उसका वरद हाथ था॥

पहुँचे 'अदन' महात्मा जी जव– हार्दिक स्वागत मे जन मन थे।
पलक पावडे विछे हुए थे, दर्शन कर कर तृपित नयन थे॥
'अरवो' और भारतीयो ने– उन पर श्रद्धा-सुमन चढाये।
गाँधी-वाणी के प्रताप से– मानो वोल मौन मे आये॥

मानपत्र पाया वापू ने, वरस पडा उत्तर मे भापण।
वापू की रसना से वरसा– लाखो काव्यो का आकर्पण॥
धन्यवाद देते वे वोले– "काँगरेस का प्रतिनिधि हूँ मैं।
मुझ मे मेरा नही लेश भी, जनता के मन की निधि हूँ मैं॥"

स्वतन्त्रता सुख का दीपक है, पराधीन मुर्दे से वदतर।
झण्डा जीवन का प्रतीक है, उठ मानव ! झण्डा ऊँचा कर॥
यह निशान तेरे गौरव का, यह वीरो की अमर निशानी।
यह निशान नभ तक पहुँचाये– तब है तेरी बात जवानी॥

झण्डे का सम्मान अगर है– तब ही हम पूजे जायेगे।
यदि झुक गया निशान हमारा– तो हम ठोकर ही खायेगे॥
जाग उठा वीरत्व मनुज मे, जननायक से जन जन जागे।
धन्यवाद दे, हृदय साथ ले, चले यान मे वापू आगे॥

बापू का जहाज चलता था, और यान मे चर्खा चलता।
चर्खे की चरमर चरमर से– उद्योगो का दीपक जलता॥
जहाँ बैठते थे गाँधी जी– बन जाता ऋषि-लोक वही पर।
सागर की लहरो पर चलता– शान्तिपूर्ण मर्यादित सागर॥

वीर 'नहसपाशा' ने उनको– साहस की चिट्ठी भिजवाई।
मानस के मोती भर भर कर– भिजवाये सन्देश बधाई॥
गाँधी जी को लिखा उन्होने– स्वागत भारत के सेनानी !
हृदय 'मिश्र' का साथ उसी के– जिसके साथ शक्ति इन्सानी॥

यात्रा कुशल सफल हो, जय हो, मेरी यह विनती ईश्वर से।
स्थायी व्यापक विजय प्राप्त हो, कीर्ति प्राप्त हो दुनिया भर से॥
राम ! चिरायु करे गाँधी को, मैं गाँधी की करूँ आरती।
गाँधी की वाणी पर बैठी– वीणा लेकर स्वयम् भारती॥

मार्ग मार्ग मे दर्शन करने– देश देश के नेता आये।
गाँधी के पावन चरणो पर– सब ने श्रद्धा-सुमन चढाये॥
जो आगे बढता है उसके– मजिल पास चली आती है।
अमर वटोही के चरणो से– धरती छोटी रह जाती है॥

वढते गये कदम राही के, वनता गया मार्ग युग युग का।
कलियुग मे सत्युग ग्रा पहुँचा, ऐसा नायक है कतियुग का ॥
काँटो पर चल फूलो से खिल, ग्राई वह सुगन्ध लन्दन मे।
विप पीकर सौरभ फैलाता, यह शिव है सुरभित चन्दन मे ॥

जो निर्धन का धन वन जाये, उसका मोल नही हो सकता।
व्यर्थ जन्म उस वेटे का जो– माँ का दाग नही धो सकता ॥
दाग गुलामी का धोने को– वापू पहुँचे ज्योति जहाँ थी।
मैली निर्धन भूखी वस्ती– दीपित 'मिस म्यूरियल' वहाँ थी ॥

उसके यहाँ 'हॉल किँग्स्ले' मे– वडे प्रेम से वापू ठहरे।
महलो के भी मिले निमन्त्रण, किन्तु न सागर उनमे लहरे ॥
'लन्दन' के हर गाँव शहर मे– गाँधी ही गाँधी छाये थे।
मिली भेट पर भेट उन्हो को, सव के घर उत्सव ग्राये थे ॥

'मित्र सभा घर' मे गाँधी का– एक मित्र ने सुनकर भापण–
चैक पचास पौड का भेजा, धन्य धन्य उसका ग्राकर्पण ॥
पूज्य महात्मा ने 'लन्दन' मे– 'वेस्ट एण्ड' से 'ईस्ट' सराहा।
राजा का ग्रातिथ्य न भाया, 'मिस लिस्टर' का मानस चाहा ॥

धनिको की सगति को भूले, स्वाद 'सुदामा' के चावल थे।
भारत के वोलते चित्र थे, भारत के प्रश्नो के हल थे ॥
वच्चो से क्रीडा करते थे, वालक उनको घेरे रहते।
प्रकृति-प्रिया से वाते करते, प्रेम भरी गगा मे वहते ॥

माता 'पुतली' की शिक्षा वे– भूले नही एक भी क्षण को।
कण कण मे ग्रकित करते थे– मानव-जीवन के लक्षण को ॥
मिले 'जार्ज पचम' से गाँधी– वाँधे खद्दर की लगोटी।
वह उस भारत का प्रतिनिधि था– जिसकी छिनी हुई थी रोटी ॥

मानो नगा भूखा भारत– ब्रिटिश राज्य से मिलने आया।
खडा ब्रिटिश सम्राट हो गया, उन चरणो मे हृदय झुकाया॥
मानो लज्जा से उसके दृग– चरणो मे झुकते जाते थे।
मानो गाँधी जी के आगे– ऊपर उठते शरमाते थे॥

ब्रिटिश राज्य के शहशाह ने– गाँधी जी से हाथ मिलाया।
इधर हृदय-सम्राट खडा था, उधर 'किग' ने सुमन चढाया॥
जागे भाग्य 'जार्ज पचम' के, गाँधी जी के दर्शन पाये।
जागे कब के पुण्य न जाने, जो भगवान द्वार पर आये॥

सिहासन से ऊपर उठकर, साधु-वेश मे सुमन खिले थे।
या कि 'किग' को किसी पुण्य से– बनवासी भगवान मिले थे॥
उसी लँगोटी चादर मे तन, तन मे पूर्ण त्रिलोक बिन्दु थी।
छिपा बिन्दु मे सिन्धु सत्य शिव, तन धारे आलोक बिन्दु थी॥

गये कही भी गाँधी जी पर– भारतीयता कभी न त्यागी।
लालच की नागिन सी माया– गाँधी जी से कोसो भागी॥
गाँधी जी के बोल बोल मे– मुक्ति व्याप्त थी, आकर्षण था।
'फैड्रल स्ट्रक्चर' आदि समिति मे– सार भरा सुन्दर भाषण था॥

काँगरेस के पालक पोषक– 'ह्यूम' जलज को श्रद्धाजलि दी।
सत्य अहिसा साहस बल से– सब दुर्बलताओ की बलि दी॥
फिर 'परिषद्' मे गाँधी जी ने– स्वतन्त्रता हित हृदय उडेला।
नौकरशाही की सत्ता से– एकाकी रसनो से खेला॥

राष्ट्र-समूह और सत्ता के– आदर्शो का भेद बताया।
ब्रिटिश राज्य के चित्र दिखाये, अपना सच्चा ध्येय दिखाया॥
थोडी सख्यक जाति भावना, अस्पृश्यता घाव बतलाया।
यह कलक है, यह विनाश है, यह जिन्दो को डसने आया॥

अस्पृश्यों की पृथक जाति कर– हमें न वर्गीकरण चाहिये।
छुआछूत क्या ? क्या अछूत है ? हमें न ऐसा मरण चाहिये ॥
अस्पृश्यता मिटा न सके तो– हिन्दू धर्म डूब जायेगा।
अस्पृश्यता अगर मिट जाये– भारतवर्ष विजय पायेगा ॥

जो जन आज अछूत नीति से– हिन्दुस्तान डुबाने आये।
उसको कौन डुबा सकता है– जो जल पर पत्थर तैराये ॥
उसे पता क्या हिन्दू संस्कृति– किन आदर्शों पर दृढ़तर है ?
मेरी शख घोषणा है यह– भारतवर्ष एक अन्तर है ॥

अस्पृश्यता निवारण के हित– मेरे प्राणों की बाजी है।
बँधी बुहारी नहीं खुलेगी, सत्य प्रेम पर हर राजी है ॥
फिर शिव अमृत सरोवर गाँधी– सेना, राजनीति पर बोले।
शब्द शब्द में सुधा भरा था, बात बात में जीवन घोले ॥

कहा जोर से गाँधी जी ने– वसुन्धरा यह वीर भोग्य है।
उत्तरदायी शासन के हित– काँगरेस सब तरह योग्य है ॥
वैदेशिक विभाग, रक्षा तक– हम ले सकते हैं कन्धों पर।
भारत में अँगरेजी सेना– भारत को दिखलाती है डर ॥

हम हैं योग्य सँभाल सकेंगे– सब उत्तरदायित्व देश का।
हर विभाग पर लहरायेगा– ऊँचा झण्डा काँगरेस का ॥
सेना में हिन्दुस्तानी पर– अँगरेजी दीवार बीच में।
शोषण के पंजे फैला कर– डाल दिया है हमें कीच में ॥

किन्तु कीच में कमल बन गये, कीचड़ से ऊपर आये हम।
सत्य प्रेम का सम्बल पाकर– सत्य असत्य समझ पाये हम ॥
सेना में हिन्दुस्तानी हैं, किन्तु विदेशी उन्हें बनाया।
लूट मार करने को तुमने– उनको अत्याचार सिखाया ॥

भाई को भाई न समझते, गैरो को अपना कहते हैं।
अँगरेज़ो की स्वार्थपूर्ति है, हम उनके बन्दी रहते हैं॥
विदेशियो के हमले तुम पर, इसीलिये है भारत-सेना।
और आन्तरिक द्रोह दमन कर– लूट रही है अस्मत सेना॥

भारत की सारी सेना पर– भारत का अधिकार छोड दो।
सेना मत बाँधो स्वार्थो मे, बन्धन की रस्सियाँ तोड दो॥
भारत अपनी रक्षा करनी– गुरुओ से भी अधिक जानता।
अब तुम हमको बाँध सकोगे– मैं यह हरगिज नही मानता॥

गुरखे, सिक्ख, राजपूतो से– भारत की रक्षा हो सकती।
लगी हुई कालिमा भाल पर– क्या न प्राण-धारा धो सकती ?
राजपूत वह जिसने लाखो– 'थार्मपोलियाँ' पैदा कर दी।
एक 'ग्रीस' की 'थार्मपोलि' है, रजपूतो ने नदियाँ भर दी॥

हम अँगरेजो के मानस मे– प्रेम भाव भरने वाले हैं।
और स्वयम् अपने पैरो पर– राज्य यहाँ करने वाले हैं॥
जब तक हम यह कर न सकेगे– वियावान मे ही भटकेंगे।
उठे ववण्डर, गिरे विजलियाँ, अग्नि-परीक्षाये भी देगे॥

चले गोलियाँ या बम बरसे, कदम हमारे नही रुकेंगे।
स्वतन्त्रता का भोर न जब तक– तब तक तारे नही लुकेंगे॥
'अर्विन' से कह चुका, पुन अब– दोनो ही का हो सरक्षण।
सुखी रहे इँग्लैड और हम, बढती रहे मित्रता क्षण क्षण॥

एक दूसरे के साथी हो– हम दोनो साझीदारी से।
मानवता के दीप जलाये– हम दोनो बारी बारी से॥
भीख माँगने से स्वतन्त्रता– कहो आज तक किसने पाई ?
हम सतर्क हैं, दूर हटी है– हम पर से भ्रम की परछाई॥

काँगरेस भारत की प्रतिनिधि, जो निश्चय स्वतन्त्रता लेगी।
जमीदार, राजा, शिक्षित सब– सेवा मे सगम कर देगी॥
भेद-भाव के विष से बच कर– काँगरेस मे है सबका हित।
ऊँचे ध्येय, शान्ति की धारा– गाँव गाँव मे हुई प्रवाहित॥

छुरे, जहर के प्याले, गोली– काँगरेस के पास नही हैं।
हिन्दुस्तान हमारा घर है, भारतवासी दास नही हैं॥
राजा वह है, जो हृदयो पर– राज्य करे जनता का होकर।
राजा रहे प्रजा से शासित, सूरज हो धरती अम्बर पर॥

हृदय वही है, जिसके अन्दर– हर प्राणी का भला भरा हो।
सोना वह है, जो तप तप कर– अग्नि-परीक्षा बाद खरा हो॥
काँगरेस के लिये हृदय मे– पहिले थोडा स्थान बनाओ!
मुझ दुबले पतले बूढे की– बातो पर विश्वास जमाओ!!

काँगरेस सागर है, जिसमे– मैं भी जल की एक बूंद हूँ।
काँगरेस का लघु कण हूँ मैं, पडा नही पर आँख मूँद हूँ॥
करो अर्चना स्वतन्त्रता की, भूलो अब आतकवाद को।
पढो वास्तविकता भारत की, याद करो 'ध्रुव' व 'प्रहलाद' को॥

तलवारो से नही मिटेगे, लिखे हुए अक्षर शोणित से।
ईश्वर से मत रहो अपरिचित, भला बुरा पहिचानो चित से॥
ईश्वर का इगित पाकर ही– महाक्रान्ति का शख बज रहा।
प्राणो की आहुति देने को– भारत का हर वीर सज रहा॥

अटल प्रतिज्ञा-बद्ध देश है, हम भूखो को रोटी देगे।
जाग पडे हम, जाग पडे हम! स्वतन्त्रता की रोटी लेगे॥
सार भरा बापू का भाषण, ब्रिटिश राज्य का थोथा उत्तर।
गाँधी डिगे नही तिल भर भी, टकराये तूफान भयकर॥

मानव-जीवन की मजिल पर– पग पग पर आँधी आती हैं।
हिलता नही हिमालय तिल भर, लाखो आँधी टकराती हैं।।
ब्रिटिश राज्य ने जाल डाल कर– गाँधी को चाहा फुसलाना।
रहे ढाक के तीन पात फिर, रोज याद कर, रोज भुलाना।।

बहा प्रेम की निर्मल गगा, गाँधी विदा हुए 'लन्दन' से।
मनमोहन की करी अर्चना– मलयानिल ने चित-चन्दन से।।
मिले 'रोम' मे 'मुसोलिनी' से, कर्णधार मिलते चलते थे।
स्वागत मे मणियो के दीपक– जग मग जग झिलमिल जलते थे।।

भारत माँ की पारस पथरी– अँगरेजो की मुट्ठी मे थी।
सारी ऋद्धि सिद्धियो की श्री– गाँधी जी की घुट्टी मे थी।।
भूलभुलैया से गाँधी जी– भारत की गोदी मे आये।
उन्हे देख चाँदनी आ गई, शशि को देख जलज शरमाये।।

कोमल किसलय पर आँखो के– मोती बरस बरस पडते थे।
भारत के प्रहरी वापू पर– हँसते हुए फूल झडते थे।।
भारत के हर गाँव शहर मे– गोरे रक्त पान करते थे।
नई नई आशाये आई, किन्तु न कमल कभी डरते थे।।

ब्रिटिश राज्य से शासित भारत– अत्याचार सहन करता था।
अँगरेजो की सगीनों से– खेती का मालिक मरता था।।
'युक्त प्रान्त' 'बगाल प्रान्त' मे– पुलिस कर रही थी मनमानी।
निर्मम अँगरेजी गुण्डो की– डायन वन कर उठी जवानी।।

वह काला शासन था जिसका– पृष्ठ पृष्ठ लिख रहा खून से।
पृष्ठ वदलने चले सिपाही– प्राणो के पावन प्रसून से।।
ज्वाला मे घी पडा दमन से, धधक उठी ज्वाला की लपटे।
चलती जलती आग वही से– जहाँ जहाँ भी तारे झपटे।।

भारत के कोने कोने मे- क्रान्ति क्रान्ति की चिनगारी थी।
बलिवेदी के लिये देश मे- बलिदानो की तैयारी थी॥
'सीमाप्रान्त' सज गया रण हित, जाग उठा 'सरहद का गाँधी'।
लेकर बढा 'लालकुर्ती दल', छाई लाल लाल सी आंधी॥

एक लाख से ऊपर सैनिक- 'सरहद' के शेरो से आये।
उठ 'अब्दुल गफ्फार' शेर से- स्वतन्त्रता लाने को धाये॥
मानवता की धरती मे था- 'सरहद' का वह सागर प्यारा।
धन्य धन्य 'सरहद के गाँधी !' सचमुच ही है तू 'ध्रुवतारा'॥

भारत का यह देख सगठन- अँगरेजो को मूर्च्छा आई।
ब्रिटिश राज्य के लाल भाल पर- चिन्ता की अँधियारी छाई॥
नौकरशाही ने नेता गण- शुरू कर दिये बन्दी करने।
वे कब कारा से डरते हैं- जो आये है जग से तरने?

'वीर जवाहरलाल जेल मे'- समाचार पत्रो के शीर्षक।
'खाँ अब्दुल गफ्फार जेल मे'- पत्रो मे देखा यह दीपक॥
'सरहद के गाँधी' के भाई, और पुत्र भी बन्द कर दिये।
चहल पहल पत्रो मे आई, जागृति के सन्देश भर दिये॥

अखबारो मे नेताओ के- रोज नये फोटो आते थे।
वे ही चित्र मूक भाषा मे- नूतन क्रान्ति जगा जाते थे॥
घी बन कर बरसा ज्वाला पर- पिघला आँखो का जल खारी।
धरती पर आँसू गिरता था, आँसू से उठती चिनगारी॥

दृगो के पथ से पिघल कर, आग अन्तर की निकलती।
हृदय का अगार आँसू, प्रेम की ज्वाला पिघलती॥
क्रान्ति का तूफान बनता, शान्त बडवानल उबल कर।
आग से उडते धुएँ से- मेघ क्या है? आग जल पर॥

विंश सर्ग

बहती धारा

सीप ! तभी दृग-विन्दु लिये हर,
सागरिका छिप के जब रोती।
सागर मे जल की लहरो पर-
पीर भरे दृग के मन-मोती ।।
नाच रही लहरे पलको पर,
टूट रहे हृद-हार हमारे।
देख दुखी कृषि के मन मोहन,
सावन मे बरसे कण खारे ।।

तन पर ताले लग सकते हैं, पर आवाज नही दब सकती।
मास पच गया, खून पी लिया, लेकिन अस्थि नही चब सकती ।।
मिट्टी मे भूचाल छिपे हैं, आँसू मे सागर की ज्वाला।
सुलग रहे ककाल धरा पर, धुआँ उठ रहा काला काला ।।

आँखो की सीपी मे तप तप, आँसू मोती बन जाता है।
वन्धन तडक टूट जाते हैं, जब कोई बन्दी गाता है।
यह पानी की बहती धारा, तलवारो से नही कटेगी ।।
जब लाखो 'सीता' रोयेगी, क्या तब धरती नही फटेगी ?

स्नेह भरे दीपक जलते हैं, जग मे खिलती स्वर्ण उजाली।
काली रजनी मे आती है- झिलमिल दीपक लिये दिवाली ।।
काले तम मे आँसू चुगने- महापुरुष दीपक ले आये।
सागर-तट पर स्वागत के हित- भारतीय मोती भर लाये ।।

आँसू तभी निकलता है जब– हृदय उमड आँखो मे आता।
गरल उसे पीना पडता है– जो अन्तर का अमृत पिलाता॥
आँखो का गगाजल दुनिया– हँसती हँसती पी जाती है।
जल पीकर ज्वाला देती है, मन के मोती ठुकराती है॥

मानवता के प्रहरी को जग– खारी आसव पिला रहा है।
आँखो का आसव ढल ढल कर– फूल धरा पर खिला रहा है॥
गुण-ग्राहक जनता ने उनकी– आँखो से आरती उतारी।
उमड उमड घिर घिर आती थी– बदली सी 'बम्बई' बिचारी॥

जननायक ने वाणी खोली– अस्पृश्यता गरल बतलाया।
अलग अछूत नही हिन्दू से, हिन्दू को दीपक दिखलाया॥
छुआछूत का भेद मिटेगा, वर्ना मेरी लाश चलेगी।
या तो यहाँ एकता होगी, वर्ना मेरी चिता जलेगी॥

राष्ट्र-धर्म ही श्रेष्ठ धर्म है, भारत से खिलवाड मत करो।
जो नौका मँझधार पडी है– उसमे पत्थर और मत भरो॥
फिर बापू ने ब्रिटिश राज्य से– राजनीति के तार हिलाये।
अपनी निर्मलता दिखलाई, उनके अत्याचार दिखाये॥

लिखा, कि तुमने पकड लिये है– भारत के अनमोल सितारे।
भारत माता की छाती पर– गुर्राते आदेश तुम्हारे॥
आपस की मित्रता आपने– पल मे खेल समझ कर तोडी।
फूस इकट्ठा था भारत मे, तुमने आ चिनगारी छोडी॥

इससे जो ज्वाला धधकेगी– उसे बुझा भी पाओगे क्या?
लगा फूस मे चिनगारी तुम– जलने से बच जाओगे क्या?
उत्तर दिया 'विलिंगडन' ने यह– जो कुछ मैंने किया ठीक है।
कण कण बोला, किन्तु मार्ग मे– तेली आया, हुई छीक है॥

वे सब है विष भरे भेडिये– जो विशेष आदेश निकाले।
ब्रिटिश राज्य के कानूनो ने– डाले है छाती मे छाले ।।
मानस के अनमोल रत्न सब– ब्रिटिश राज्य मे बन्द पडे हैं।
जिनको फूल बताते हो तुम– वे छाती पर शूल खडे हैं ।।

जुडे न टूटे तार प्यार से, बातचीत से सार न निकला।
सूख गये आँखो के आँसू, लेकिन पत्थर हृदय न पिघला ।।
गाँधी जी ने खुले मच से– निन्दा की आतकवाद की।
भग हुआ 'दिल्ली समझौता', गर्जन गूँजी शखनाद की ।।

अँगरेजो ने कूटनीति से– अपने खूनी फण फैलाये।
नीति् विभाजन को फैलाते– गोरो के खूनी रँग आये ।।
कभी मुसलमानो के मामा, कभी हिन्दुओ को फुसलाया।
श्वेत साम्प्रदायिक साँपिन ने– कभी विषैला फण दिखलाया ।।

छुआछूत की डायन छोडी, लगे खोलने बँधी बुहारी।
सीक सीक को तोड तोड कर– लगे सताने बारी बारी ।।
कूटनीति से तार तोड़ कर– उसने भारत को ललकारा।
गाँधी जी के आन्दोलन का– गूँजा गली गली मे नारा ।।

'मानसिह' से 'आगा खाँ' ने– वह वीभत्स रूप दिखलाया।
चाँदी के टुकडो पर बिक कर– मुँह पर काला दाग लगाया ।।
'लॉर्ड विलिंगडन' ब्रिटिश राज्य ने– काँगरेस पर तोपे तानी।
छाती खोल अड गई आगे– धीर वीर की उठी जवानी ।।

गाँधी जी, 'वल्लभ भाई' को– तत्क्षण किया राजसी बन्दी।
वह चिनगारी दहक उठी अब– जलती थी जो मन्दी मन्दी ।।
सत्याग्रहियो के दल निकले, चली देवियाँ ले ले झण्डे।
बूढे बालक महिलाओ पर– चली गोलियाँ, बरसे डण्डे ।।

कितने अत्याचार गिनाऊँ ? रोम रोम को नोच उखाडा ।
भारत की छाती पर कितनी– माँ वहिनो को चीरा फाडा ॥
नये नये आदेश शहर मे– सर पर राजा वन जाते थे ।
वडे वडे नेता जेलो मे– गोरो के कोडे खाते थे ॥

थानेदार राज्य करते थे, वन्दी काँगरेस के साधन ।
लेकिन रुका नही आन्दोलन, तृपित धरा पर वरसे सावन ॥
हाथ-प्रेस पर परचे छापे, नगर नगर मे कार्य समिति थी ।
वलि की वेला खुली हुई थी, पुण्य पर्व की पावन तिथि थी ॥

वहिष्कार के आन्दोलन मे– ब्रिटिश माल की जली होलियाँ ।
और निहत्थो की छाती पर– अँगरेजो की चली गोलियाँ ॥
किन्तु गोलियाँ उन सीनो से– टकरा कर टूटा करती थी ।
गगा की धारायें उनके– हृदयो से छूटा करती थी ॥

इस तूफानी हलचल मे ही– होना था "दिल्ली अधिवेशन" ।
ब्रिटिश फौज तैयार खडी थी, धमकाती थी वन्दूकें तन ॥
चारो ओर पुलिस का पहरा, कैसे 'दिल्ली काँगरेस' हो ?
नेतागण थे वन्दीगृह मे, कैसे सागर पार देश हो ?

नये रूप मे, नई चाल से– गाँव गाँव से प्रतिनिधि आये ।
पुलिस हो गई अन्धी, समझी– घी ग्रामीण वेचने लाये ॥
कुछ खद्दरधारी आ पहुँचे– घी का धरे कनस्तर सर पर ।
कुछ वानो की गड्डी ले ले– आ आ वैठे घण्टाघर पर ॥

टन टन टन घण्टाघर वोला, लहरा काँगरेस का झण्डा ।
घण्टे भर तक अधिवेशन मे– ऊँचा रहा देश का झण्डा ॥
पागल पुलिस घिरी वदली मे, शासन पर छा गया अँधेरा ।
राष्ट्र-वीर 'रण छोड' न भागे, 'अमृत लाल' ने किया सवेरा ॥

गोरो के खूँखार राज्य मे– खून। खून। था, या थी हा। हा !
दलित जातियो का निर्वाचन– उसने पृथक कराना चाहा ॥
अग्नि-परीक्षा का अवसर फिर– गाँधी जी के लिये आ गया।
भारत के स्वर्णिम विहान पर– फिर श्यामल आवरण छा गया ॥

किन्तु सूर्य तम चीर ज्योति ले– रथ पर पूर्व दिशा से आया।
पश्चिम की काली आँधी पर– गाँधी का उजियाला छाया ॥
पाप स्वरूप पृथक निर्वाचन– सब नेताओ ने धिक्कारा।
प्राणो से सौदा कर बैठा– भारत माता का 'ध्रुव तारा' ॥

पृथक चुनावो के विरोध मे– सत ने किया आमरण अनशन।
इस विष के उतारने के हित– लगा दिया पावन तन मन धन ॥
किया आमरण व्रत गाँधी ने, चारो ओर मच गई हलचल।
अनशन-शक्ति उठी दीपक ले, सोती नीद हो गई चञ्चल ॥

आँखे खोल बदल कर करवट– भारत ने देखा चोरो को।
पृथक चुनावो की छुरियाँ ले– देखा छाती पर गोरो को ॥
'पूना' की कारा मे देखे– अनशन किये हुए जननायक।
उर मे राम नाम अकित था, जीवन-रक्षक थे जगपालक ॥

करी प्रार्थनाये भारत ने– ईश्वर। गाँधी की रक्षा कर।
गारुड गाँधी जी चढ बैठे– पृथक चुनावो के विषधर पर ॥
व्रत साधे, पूजा मे बैठे, 'त्राहि। त्राहि।' मानवता ने की।
'शान्ति निकेतन' मे कवियो ने– विनती नर नारायण से की ॥

सच्चे मन से जब ईश्वर को– कोई दुखी शून्य मे टेरे।
नगे पैरो तत्क्षण आते– नारायण उस नर के नेरे ॥
नभ के दीपक 'राजा जी' ने– सोच सोच विधि खोज निकाली।
गाँधी बोले "खूब। खूब। यह– खूब निकाली खोज उजाली ॥"

फिर से गये सन्धि-वार्त्ता मे, प्रश्न हो गये 'पूना मे हल ।
राजनीति के निपुण दीप ने– जग मे ज्योति दिखाई उज्ज्वल ॥
भौतिक तन की भेट चढाकर– वापू रक्षा हित तत्पर थे ।
जिस पर वरद हाथ था उनका– उसके साथ साथ हरि हर थे ॥

वापू ने 'यरवदा जेल' मे– लक्ष्य देखकर अनशन छोडा ।
अन्तर्नाद सुना दुनिया ने, छुआछूत का खम्भा तोडा ॥
हिन्दू अन्त करण शुद्ध हो, इसीलिये था उनका अनशन ।
हिन्दू हिन्दुस्तान बचाया, धन्य धन्य हरिजन-आन्दोलन ।

जननायक के उपवासो ने– जन जन का उपकार किया है ।
मनमोहन के पूज्य व्रतो ने– सस्कृति का सत्कार किया है ॥
'अप्पा साहव पटवर्धन' ने– अनशन शुरु किया कारा मे ।
भगी सेवा करनी चाही– वह मानवता की धारा मे ॥

किन्तु न मानी वात उन्हो की, अत यती ने अनशन ठाना ।
साथ किया गाँधी जी ने व्रत, 'अप्पा' का अन्तर पहिचाना ॥
उपवासो मे अमर शक्ति है, जिससे पत्थर भी हिल जाते ।
व्रत मे ईश्वर की महिमा है, व्रत से मुँह माँगा वर पाते ॥

व्रत से आत्मशुद्धि होती है, व्रत से शक्ति भक्ति दृढ होती ।
व्रत से मन मे सयम आता, सयम से पाता नर मोती ॥
उपवासो मे शक्ति, शक्ति से– मन की विजय ध्वजा लहराती ।
विना शक्ति के थोथा मानव, शक्ति शत्रु को दूर भुलाती ॥

जैसा समय, शक्ति वैसी ही, शक्ति अनेक रूप धरती है ।
कभी खग का, कभी शान्ति का, कोटि रूप धारण करती है ॥
सर्व शक्तियो ने ही मिलकर– महाशक्ति अवतीर्ण करी है ।
वही अहिसा के वाने मे– मनमोहन की शान्ति-तरी है ॥

आत्मा-बल से काँपे गोरे, डर कर गाँधी जी को छोडा।
नमस्कार नारायण को कर– गाँधी जी ने तथ्य निचोडा॥
कारागृह मे गाँधी जी ने– कष्ट सहे पर हिले न तिल भर।
सीता सी 'बा' साथ उन्हो के– प्यार चढाती थी चरणो पर॥

सत्याग्रह के अमर पुजारी– एक बिन्दु से सिन्धु बनाते।
सत्याग्रह की सूक्ष्म शक्ति से– बडे बडे पत्थर पिस जाते॥
गिरफ्तारियाँ हुईं देश मे, किन्तु न माथे पर बल आये।
सत्याग्रहियो की दृढता से– धरती के पत्थर थर्राये॥

इसी बीच मे 'कलकत्ता' की– काँगरेस का अवसर आया।
अँगरेजो ने प्रतिनिधियो को– रेलो ही से पकड मँगाया॥
'मालवीय जी' चुने राष्ट्रपति, पथ मे बन्दी उन्हे बनाया।
पर सत्याग्रहियो के मन मे– बिजली का बादल मँडराया॥

पूरा हुआ मनोरथ उनका, हुआ शान से वह अधिवेशन।
उनके लिये असम्भव सम्भव, जिनका लगा तपस्या मे मन॥
स्वागत है उस अभ्यागत का– जिसने स्वर्ण प्रभात दिखाया।
भारत माता के मस्तक पर– जिसने रक्त-सिँदूर लगाया॥

जिसकी रसना से झरती है– गगाजल की निर्मल धारा।
जिसके जीवन से जन जन मे– झण्डा उडा तिरगा प्यारा॥
'हरिजन' जीवन किया प्रकाशित, बिखरी कलित कौमुदी जग मे।
मानवता के लिये बिछ गया– बापू का उजियाला मग में॥

मुक्त हुए वे पार्थिव जग से, 'मोर तोर' के झगडे छोडे।
काम क्रोध मद लोभ मोह के– गाँधी जी ने रस्से तोडे॥
करी प्रतिज्ञा मनमोहन ने– राज्य अहिसा से पाऊँगा।
स्वतन्त्रता के बिना लिये मैं– 'साबरमती' नही जाऊँगा॥

हमारे प्राण हरिजन है।
मोम से मेघ से मन है॥
इन्हो के खून मे विजली।
इन्हो से शृखला पिघली॥

प्राण ये दीप से जलते।
गीत ये दृगो से ढलते॥
चित्र ये वादलो के है।
घाव ये पागलो के है॥

धरा पर सूखते सावन।
लाज का थाम लो दामन॥
आग यह जल रही जल मे।
प्रलय इनके प्रवल पल मे॥

तुम्हारे प्यार के भूखे।
ठोकरो मे पडे सूखे॥
छोड दो मार्ग शूलो का।
पहिन लो हार फूलो का॥

हरिजन-आन्दोलन हित वापू- गाँव गाँव मे फिरे घूमते।
लम्वी लकुटी लिये वटोही- नन्दन वन मे रहे भूमते॥
गाँधी जी पर वम भी फेका- हरिजन-आन्दोलन से चिढ कर।
पर हत्यारे का खूनी वम- गिरा दूसरे की मोटर पर॥

जिसको राम वचाने वाला- उसको कौन मार सकता है?
जो हरिजन का हृदय नही है- उससे कौन हार सकता है?
वार वार अनशन कर गाँधी- तपा तपा तन शक्ति वढाते।
जीवन की जर्जर तरणी से- वडे वडे पत्थर तैराते॥

राष्ट्र-पताका लिये पुजारी- बार बार बनते थे बन्दी।
इससे और आग जलती थी, हवा नही होती थी मन्दी ॥
'महावीर हनुमान'-'जवाहर'- मार छलॉग पार जाते थे।
सागर, पर्वत और रसातल- महावीर से थर्राते थे ॥

इसी समय दैविक प्रकोप ने- आँख बदल घूरा 'विहार' को।
धरा हिली, भूकम्प आ गया, क्रोध आ गया धरा धार को ॥
निकल रसातल से जल आया- जिसमे नगर गॉव घर डूबे
निकल धरा से रेता आया, जल छल छल मे थलचर डूबे ॥

पलक मारते ही लाखो घर- गिर कर समा गये धरती मे।
लाखो हुए अनाथ निमिष मे, लाखो जन मिल गये सती मे ॥
जहॉ खेतियॉ हरी भरी थी- वहॉ रेत या जल ही जल था।
भूकम्पो से धरती कॉपी, निकल रहा जल उबल उबल था ॥

उठा फावडा और टोकरी- वीर 'जवाहर लाल' चल पडे।
मिट्टी के ढेरो से घायल- वे निकालते चला फावडे ॥
नीचे दबे हुए पीडित नर- मिट्टी ढो ढो स्वयम् निकाले।
जय हो वीर 'जवाहर' ! तेरी, स्वतन्त्रता हित लडने वाले ॥

सत्य अहिसा के सम्बल से- वैधानिक रणभेरी बोली।
बना कार्य-क्रम 'राजसभा' का, नई नीति निष्ठा से खोली ॥
पच चुने जाकर जनमत से- पहिले पचायत मे जाये।
इनके ही कानूनो से हम- इनको सागर पार भगाये ॥

जागृति की वीणा वजते ही- अद्भुत हलचल हुई देश मे।
पाचजन्य सुन जननायक का- ऑधी आई कॉगरेस मे ॥
जीवन जागा, लहरे उमडी, एक नया परिवर्त्तन आया।
पुन सगठन हुआ देश मे, वीणा छोडी, शख उठाया ॥

बापू की विचार धारा से– कुछ मन ही मन मे शंकित थे।
सब के भिन्न भाव भावुक बन– गाँधी के मन मे अंकित थे॥
समय समझ कर गाँधी जी ने– परिवर्त्तन की गति पहिचानी।
जिसने समय नही पहिचाना– दलदल मे है वह अज्ञानी॥

सात दिवस उपवास मौन धर– जननायक ने वाणी खोली।
भारत माता के मस्तक पर– रसना चली लगाने रोली॥
बोले, काँगरेस से मेरा– अब सम्बन्ध न स्थूल रहेगा।
सूक्ष्म साथ है काँगरेस के, जीवन उसका कूल रहेगा॥

तन से दूर रहूँगा लेकिन– मन मेरा है काँगरेस मे।
मेरा चेतन यही चाहता– फूल खिले भारत अशेष मे॥
अब वह समय आ गया है जब– काँगरेस से अलग रहूँ मैं।
काँगरेस के शुद्ध हृदय से– अपने मन की बात कहूँ मैं॥

मैंने जो यह मार्ग चुना है– भीष्म पितामह का निश्चय है।
इसी मार्ग पर चलने से अब– काँगरेस की निश्चित जय है॥
बहुतो के विचार ये भी है– मैं हूँ काँगरेस मे बाधक।
मेरे भाव नही भाते है, अत मुझे बनना आराधक॥

काँगरेस के प्रगति-मार्ग मे– मै रोडा बन अडा हुआ हूँ।
भावुक लहरो के धक्को मे– मै पर्वत सा खडा हुआ हूँ॥
शरद पूर्णिमा की चाँदी मे– मेरी रेखाये काली हैं।
वे बादल से ऊब रहे है– जो इस उपवन के माली हैं॥

कुछ ने काँगरेस को समझा– मेरे हाथो की कठपुतली।
मैं अब अलग हो रहा हूँ, तुम– लेकर चलो तर्क की सुतली॥
मुझ मे परम भक्ति के कारण– कुछ की वाणी पर ताले हैं।
यह तो मुझसे हिंसा होगी, ये मधु-घट विष के प्याले है॥

जव तक मेरे भावो को जग- मन से सत्य नही मानेगा-
तव तक उसे सुझाऊँगा मैं- जव तक मुझे नही जानेगा ॥
लेकिन प्रेम अहिसा सत से- अपना मार्ग वनाऊँगा मैं।
फूक मारता समय खडा हो, लेकिन दीप जलाऊँगा मैं ॥

एक बूँद पानी सागर मे- मिल कर सागर-जल बन जाता।
बूँद बूँद से सागर वनता, सागर-जल वादल वन गाता ॥
लोक और परलोक हेतु मे- सत्य साधना कैसे छोडूँ ?
क्षणभगुर सुख के लालच मे- भरा सुधा-घट कैसे फोडूँ ?

मूर्तिमान तसवीर देश की- सात लाख ग्रामो मे देखो !
ठिठरे हुए खडे खेतो पर- कृषको के चामो मे देखो !!
मेरी इच्छा यही गाँव मे- जाकर अपना डेरा डालूँ।
सागर की गहराई में घुस- हीरे मोती ढूँढ निकालूँ ॥

काँगरेस की सदस्यता से- मेरा भौतिक त्यागपत्र है।
लोकेषणा हार मानव की, यत्र तत्र ससार चक्र है ॥
व्यक्ति नही है बडा राष्ट्र से, राष्ट्र बडा तो व्यक्ति बडा है।
राष्ट्र-सृजन के हित ही गाँधी- एकाकी खम ठोक खडा है ॥

जहाँ न शेष कला कौशल है- वहाँ नही व्यक्तित्व देश का।
पद-लोलुपता जिसे नही है- भला उसी से काँगरेस का ॥
सारी राजनीति है गाँधी, जिसमे सब के सुख की क्रीडा।
सत्याग्रह मे अमर विजय है, दूर दूर है दुख की व्रीडा ॥

सत्याग्रह का रूप विजय है, विजय स्वरूप सन्त जननायक।
रोम रोम मे राम रमे हैं, गाँधी के श्रीराम सहायक ॥
काँगरेस 'बम्बई' हुई फिर, सागर-तट पर झण्डा फहरा।
राष्ट्र-रूप 'राजेन्द्र' वीर की- वाणी पर युगस्रष्टा लहरा ॥

आदर्शों के शान्त नाविको! नौका की पतवार सँभालो!
कही नीर मे उजियाली है, कही घटा है, नाव बढालो!!
काली पीली असि-लहरो पर- बडी शान्ति मे नाव चलाओ!
पीडा तुम्हे पुकार रही है, मानस की हिमशिला गलाओ!!

सत्य टँगे शूली पर चाहे- लेकिन पूजा ही जायेगा।
सत के आगे अन्यायो का- मस्तक कभी न उठ पायेगा॥
मजिल पर चलने वाले के- चरणो मे दीपक जलते है।
सत्यवान के साथ तिमिर मे- ईश्वर दीपक से चलते है॥

फिर प्रस्ताव सामने आये, भावी रेखाये स्वीकृत की।
गाँधी के अन्तर-तारो ने- लाखो वीणाये झकृत की॥
चाहे जितनी करो भलाई, दुनिया सदा बुराई देती।
मधु का मूल्य-यहाँ विप ही है, अन्तर चीर चिराई लेती॥

अधिवेशन मे प्रभापुञ्ज थे, जन जन मे उत्साह नया था।
ज्वाला मे जल डाल रहे थे, आज यज्ञ मे स्वाह नया था॥
स्वतन्त्रता के शान्त समर मे- अद्भुत दीपशिखा जलती थी।
स्नेह न घटता था दीपक का, बत्ती तनिक नही गलती थी॥

एकविंश सर्ग

अन्तर्द्वन्द्व

ले पतवार बढे जननायक–
नाव चले उस पार लगाने ।
त्याग चले अनुराग चले तट–
पार चले मँझधार लगाने ।।
शूल चुगे पथ के पल मे मग–
मे हरि ने हर फूल खिलाये ।
दीप जले, शशि-ज्योति खिली अलि!
चीर घटा जय से रवि आये ।।

स्वर्ग शान्ति एव बसन्त से– जननायक 'सेगॉव' जा रहे ।
मानो मानव के मन्दिर मे– ग्रामो के भगवान आ रहे ।।
साथ साथ चलती 'बा माता', मानो मृदु तरुओ की छाया ।
जिधर पॉव बढते बापू के– उधर प्यार पलको का पाया ।।

ग्रामो की धरती मे धन है, ग्रामो मे ईश्वर के दर्शन ।
कही नाचते मोर मनोहर, कही मेघ माला के नर्तन ।।
वासन्ती फूलो के अन्दर– श्यामल सरसो कही खडी है ।
रिझा रही बदली कृपियो को, रिमझिम रिमझिम झरी झडी है ।।

हरे भरे भावुक खेतो मे– गाता हुआ किसान राम है ।
शाम हो गई कृषक जा रहा, या जीवन की यही शाम है ।।
चरण किसानो के धोने को– प्यास लिये पावस आता है ।
इसका बहता हुआ पसीना– दुनिया का धन बन जाता है ।।

देखो इसके कच्चे घर मे– दही विलोती वह सुकुमारी।
चिपटी हुई पडी छाती से– उसकी कोमल विटिया प्यारी ॥
इन झोपडियो से जाता है– शहरो के महलो मे मक्खन।
चार आँसुओ पर अंकित है– इन ग्रामीणो का तन मन धन ॥

चलो! ग्राम की ओर चले हम, ग्रामो के भगवान वुलाते।
इसी वाट मे पतझड आता, हरे हरे पत्ते झड जाते ॥
पतझड मे वसन्त सा वापू, प्रिय ग्रामो की ओर जा रहा।
'वा' पीछे पग-ध्वनि सी चलती, साथ साथ मधुमास आ रहा ॥

चरण चूम कृषि हरी हो गई, कृपको ने कल्पना प्राप्त की।
शिशु को मिला अमृत का झरना, उजियाली आ गई रात की ॥
गा गा गीत ग्राम वालाये– मनमोहन पर अर्घ्य चढाती।
ग्रामो की माताये रो रो– 'वा' को अपनी व्यथा सुनाती ॥

एक किसान छाछ का लोटा, और नमक की रोटी लाया।
लोनी लाई वुढिया ग्वालिन, मूली लेकर 'वुधवा' आया ॥
वैठ गये वे पुण्य पगो मे, वोले, वापू! रोटी पाओ।
लोनी घी मे ग्रास लगाकर– वुढिया वोली, वेटा! खाओ ॥

आँसू छलक पडे वापू के, ग्रामीणो का प्रेम देखकर।
प्रेम वरसने लगा दृगो से, 'वा माता' के पुण्य पुज पर ॥
प्रेम-सिन्धु के अमृत पान मे– भूल गये वे रोटी खाना।
शिशु से मचल उठे जननायक, हाथ मधुर मक्खन मे साना ॥

फिर किसान ने खाट विछाई, वापू देवलोक मे सोया।
उषा आरती लेकर आई, धरती ने शिशु का मुँह धोया ॥
'सेवाग्राम' नाम का वालक, जग ने वहाँ खेलता पाया।
भारत माता ने गोदी मे– वडे चाव से उसे उठाया ॥

'सेवाग्राम' जहाँ वापू ने– शूल खोद कर, फूल खिलाये।
अन्धकार मे उस दीपक ने– दीपक गा गा दीप जलाये॥
राजनीति के इन्द्रजाल मे– कभी मच पर थे सन्यासी।
कभी ग्राम-सेवा मे दौडे– जनसेवक सेवा-अभ्यासी॥

मेरे जननायक का मानस– जन जन के मन मे व्यापक था।
भारत का भावुक सन्यासी– सारे जग का सचालक था॥
राजनीति के तार तरी थे, तार तरनि से जुडे हुए थे।
डोर हाथ मे थी बापू के, चग गगन मे उडे हुए थे॥

रवि की ज्योति तेज फैलाती– सारी दुनिया मे फिरती है।
'सेवाग्राम' सन्त का आश्रम, छाया जन जन मे थिरती है॥
सुनते आये हैं युग युग से– चर्चा ऋषियो के आश्रम की।
जननायक ने इस कलियुग मे– चर्चा सत्य करी उस क्रम की॥

सेवा आश्रम मे सव सेवक– जन जन की सेवा मे रत हैं।
राम नाम की माला जपते, ईश्वर के चरणो मे नत हैं॥
वापू सूक्ष्म और विस्तृत हैं, सीमा उनसे वढी न आगे।
सूर्य चन्द्रमा से प्रहरी वे, पहरे पर 'लक्ष्मण' से जागे॥

जीवन का पथ वतलाने को– तीन वन्दरो को गुरु माना।
'वुरा न कहते' 'बुरा न सुनते', 'बुरा न देखा' सच पहिचाना॥
वापू सरस्वती-मन्दिर मे– वन कर आये एक पुजारी।
हिन्दी ने दीपिका जलाकर– सगम की आरती उतारी॥

सम्मेलन 'इन्दौर' हुआ जव– गाँधी जी प्रधान पद पर थे।
हिन्दी पूजा वनी खडी थी, आसन पर वापू दुखहर थे॥
हिन्दी भारत की विन्दी हो– जननायक ने यह अपील की।
कभी कही भी हार न होगी– हिन्दी भाषा के वकील की॥

सम्मेलन के श्रेष्ठ मच पर- वापू फूलो मे प्रकाश थे।
कवियो की दीपित माला मे- हसो के हो रहे हास थे॥
सूरज की स्वर्णिम किरणो से- हिन्दी के कवि-कमल खिले थे।
गाँधी जी के गुरु गौरव से- हस हृदय से गले मिले थे॥

वापू ने प्रत्येक क्षेत्र मे- जग को नई ज्योति दिखलाई।
जन जन के काँटे निकाल कर- फूलो की माला पहिनाई॥
गोरो ने 'सम्राट जार्ज' की- रजत जयन्ती करनी चाही।
स्वतन्त्रता की स्वर्ण जयन्ती- चाह रहे थे वापू राही॥

रक्त-स्नान सभ्यता कर रही, राज्य-जयन्ती किसको भाती ?
जहाँ प्लेग के कीडे फैले- वहाँ ढोलकी नही सुहाती॥
युग युग जिये 'जार्ज पचम' पर- रहे नही सम्राट हमारा।
ऊँचा उडता रहे शिखा पर- झण्डा त्रिपथ तिरगा प्यारा॥

वादशाह की रजत जयन्ती- हम परतन्त्र मनाये कैसे ?
दाने तक को तरस रहे जो- घी के दीप जलाये कैसे ?
यह वह समय भयानक था जव- भारत मे भारी हलचल थी।
'जिन्ना' 'मुस्लिम लीग'-डीग की- रग विरगी चहल पहल थी॥

'मिस्टर जिन्ना' खडे हो गये- अपना वाजा अलग वजाने।
नौ सौ चूहे खाकर विल्ली- लोमडियो को चली खिजाने॥
लेकिन गाँधी जी सतर्क थे, भला बुरा पहिचान रहे थे।
अपनी कुटिया से दुनिया की- सारी गति विधि जान रहे थे॥

सावधान थी उनकी सेना, पहरे पर थे 'वीर जवाहर'।
और 'सुभाष' शक्तिशाली थे, आशाये उमडी 'पटेल' पर॥
'राजा जी' 'आजाद' आदि ने- पथ निर्माण किया आगे का।
गाँधी जी ने चक्र वनाया- खादी के निर्मल धागे का॥

प्रतिपल यही यत्न करते थे– नौका कैसे लगे किनारे।
कुछ दिन वाद 'जार्ज पचम' भी– इस दुनिया से स्वर्ग सिधारे ।।
कोई नही मौत से वचता, खाली हाथ चला जाता है।
जो न सताता यहाँ किसी को– वह पुण्यो का फल पाता है ।।

यहाँ भलाई और वुराई– शेप रहा करती मरने पर।
चार दिनो की यहाँ चाँदनी, ओ पथ भूले ! ईश्वर से डर ।।
उनके वाद व्रिटिश गद्दी का– 'एडवर्ड अप्टम' अधिकारी।
प्रेम 'सिम्पसन' से था उसको, वह छवि थी मन की फुलवारी ।।

किन्तु प्रेम के पथ मे पत्थर– टकराने आया करते हैं।
पर दो जलने वाले दीपक– तूफानो से कव डरते हैं !
राजा 'एडवर्ड अप्टम' का– प्यार राज्य भी छीन न पाया।
धन्य धन्य वह प्रेम-पथिक है– जिसने अपना प्रेम निभाया ।।

छलियो ने मन के राजा को– सिहासन से तले उतारा।
छोड दिया सिहासन उसने, पर न प्रेम की वाजी हारा ।।
जिसने चखा प्रेम-रस उसको– कोई स्वाद नही भाता है।
रूप राशि को पाने वाला– जग की दौलत ठुकराता है ।।

तपा तपा देखी ज्वाला मे– चन्दा की चाँदी चोरो ने।
मुकुट उतारा, 'जार्ज पष्ठ' के– सर पर ताज धरा गोरो ने ।।
शाही मन्त्री सजे 'वॉल्डविन', भारत मे थे 'लॉर्ड विलिंगडन'।
प्रतिपल व्रिटिश राज्य ढलता था, मानो साठी मे था यौवन ।।

जग को चैन नही कैसे भी, दुनिया किसको नही रुलाती ?
जग मे ऐसा कौन हुआ है– पीडा जिसको नहीं सताती ?
सुख से दुख, दुख से सुख है, धरा द्वैत की एक वेल है।
पीडा ही पहिचान पगो की, खिला हुआ उद्यान खेल है ।।

इस भगुर दुनिया मे प्रतिपल, सुख की प्यास पिवल ढलती है।
दीपित दीपशिखा को देखो, स्नेह भरी रिस रिस जलती है॥
दीपशिखा यह कौन विचारी, जलती है आँखो के जल मे।
यह 'कमला' वर्तिका जल रही, ज्योति-जवाहर भूमण्डल मे॥

वीर 'जवाहर लाल नेहरु', जिनकी निर्मल पत्नी 'कमला'।
देशभक्ति की गौरव गीता, 'सीता' 'सावित्री' सी अमला॥
जिसने अपने प्यारे पति को- स्वतन्त्रता के लिये सजाया।
रुग्ण तडपती रही विचारी, किन्तु न उनको रोक बिठाया॥

करुण कल्पना सी कोमल ध्वनि, करवट पर श्वासे चलती थी।
धीरे धीरे गर्वित गति से- प्राणो की किरणे ढलती थी॥
दीपशिखा का उजियाला सा- शलभ 'जवाहरलाल' आ गया।
टिम टिम करती उस वत्ती के- चारो ओर प्रकाश छा गया॥

दीपशिखा बोली मुसका कर, शलभ! न मेरी लौ पर आओ!
दीपशिखाओ के प्रकाश मे- अपना प्रिय प्रकाश बरसाओ!
जिस दीपक ने स्नेह दिया है, वत्ती कैसे उसे जलाये?
पाकर स्नेह फलो दुनिया मे, दीपशिखा जल तिमिर मिटाये॥

शलभ! न मेरी ओर बढो तुम, देश-दीप के बनो दिवाने।
मैं प्रिय के प्रकाश मे मिलती, प्राणो के प्रियतम परवाने!
स्वामी! मेरी कसम तुम्हे है, मुझे याद करके मत रोना।
मैं स्वतन्त्रता बन आऊँगी, तुम स्वतन्त्र आँगन मे सोना॥

भगुर नाता टूट रहा है, टूटा नही अभगुर नाता।
सर पर राष्ट्रपिता बापू है, गोदी देगी भारत माता॥
मन मे मान अभाव कभी भी, चुपके चुपके कभी न रोना।
मेरे मन मे बसे रहोगे, मै तुम मे, उदास मत होना॥

लपका लौ की ओर शलभ वह, दीपशिखा बुझ गई उसी पल।
जल बन बरस पडी वह बदली, प्राण पुष्प के दीपक पर जल॥
दीपशिखा की यही कहानी, हँसते हँसते जल जाती है।
शलभ नही जलता दीपक पर, मन मे सुला शिखा गाती है॥

अन्त प्राण प्रियतम मे भर कर– सती राम के धाम सिधारी।
पल मे देव-लोक मे पहुँची– सुर-सरिता सी वह सुकुमारी॥
यह वह शोक सूचना जिससे– भारत भर के दृग भर आये।
जाने वाले ! याद न जाती, तेरी याद दीप बन जाये॥

उनका मन रोता है अब तक, पर दृढ हैं कर्त्तव्य मार्ग पर।
जग से जाना ही पडता है– हर प्राणी को हाथ झाड कर॥
सुन्न शून्य मे खडे रह गये, मानो मूक खडी थी भाषा।
चुप चुप रोते ही रहते हैं, क्या है मेघो की अभिलाषा ?

मूक रुदन कैसा होता है, बादल यही बताने आते।
प्यासा पारावार व्यथित है, बादल प्यासे ही रह जाते॥
भावो मे वह चले 'जवाहर', पथ रोका भगुर अभाव ने।
मोह मृत्यु का भय बन जाता, कहा उन्हो से वुद्ध-भाव ने॥

भावो से कर्त्तव्य बडा है, राही ! चल कर्त्तव्य-मार्ग पर।
बढता चल वह लक्ष्य सामने, प्राणी ! पथ मे रो न बैठ कर॥
जलता हुआ सूर्य कहता है– चल कर्त्तव्य-मार्ग पर राही !
ढलती हुई रात कहती है– सूरज बन कर दिन कर राही !

छोड भावना की दुनिया को, पथिक चला कर्त्तव्य-मार्ग पर।
राष्ट्र-मुकुट पर छाया तानी– कवियो की करुणा ने झुक कर॥
नाता तो आत्मा से होता, नश्वर तन से क्या नाता है ?
यही खोजता हूँ मे रह रह– इस दुनिया से क्या जाता है ?

चरण मरण की छाती पर धर– आगे बढे वीर जननायक।
जो अपने पैरो पर चलते, ईश्वर उनके परम सहायक॥
अपने कन्धो पर गाडी ले– ध्वजा उडाते चले 'जवाहर'।
धरती दहलाते चलते थे– भारत माता के नर नाहर॥

वडी वडी चट्टान पार कर– मजिल पर मजिल तय करते।
वडे वडे अँगरेज हार कर– उनके आगे पानी भरते॥
सागर मे से तैर निकलते, शैल पार कर समतल पाते।
पानी की लहरो पर चलते, पानी पर पत्थर तैराते॥

जो वापू के अन्तर मे था, वही 'जवाहर' की वाणी पर।
वही 'पटेल' गर्ज कर कहते, नेताओ का वना वही स्वर॥
नौका पर तूफान भयानक– आते और चले जाते थे।
काँटे नीचे रह जाते थे, फूलो पर भौरे गाते थे॥

धीरे धीरे नौका तैरी, कॉगरेस ले गई 'फैजपुर'।
देहाती मीठी वोली मे– गूँज रहा था ग्रामो का सुर॥
यूरोपीय युद्ध के वादल– उसी समय जग मे मँडराये।
हिसा के हत्यारे पशु ने– अपने खूनी दाँत दिखाये॥

किया वहाँ प्रस्ताव पास यह– धन जन के शोषण को रोको।
हिसा की जलती भट्टी मे– अपना तन मन धन मत झोको॥
आपस मे मित्रता वढाओ, काया पलटो इस विधान की।
निर्वाचन की नीति विचारी, रेखा खीची स्वाभिमान की॥

वाद 'फैजपुर अधिवेशन' के– निर्वाचन की वेला आई।
निर्वाचन मे कॉगरेस की– ध्वजा हवा वनकर लहराई॥
राजनीति मे वुद्धिवाद से– चौपड की गोटे चलती थी।
यह वह जल था जिसके अन्दर– लाल मशाले भी जलती थी॥

पकड समय की गति पलको से, समय वदलना राजनीति है।
नीति वही जिसमे नैतिकता, मानवता की कीर्ति रीति है॥
उलझी हुई समस्याये सब- शान्तिदूत के आगे आई।
सच्चे ने कच्चे धागो की- गाँठे पलको से सुलझाई॥

कहा, मन्त्रिमण्डल मे जाओ, अवसर देख निमन्त्रण मानो।
मार्ग सन्धि का बन्द मत करो, अच्छा बुरा समय पहिचानो॥
अँगरेजी विधान, पर उसका- अर्थ करो अनुकूल पडे जो।
उसकी लाठी उसका सर हो, बुद्धि वही इस तरह लडे जो॥

बने मन्त्रिमण्डल प्रान्तो मे, झडे फहरे कॉगरेस के।
प्रान्तो मे मन्त्रीपद पर थे- नीति-निपुण भारत प्रदेश के॥
युक्त प्रान्त, बम्बई, उडीसा, सीमा, मध्य, विहार प्रान्त मे-
कॉगरेस मन्त्रीमण्डल थे, वसे हुए थे सुमन शान्त मे॥

किये पद ग्रहण कॉगरेस ने, यह भी था रण स्वतन्त्रता का।
पराधीनता की जजीरे- ढूँढ रही क्षण स्वतन्त्रता का॥
जब तक पूर्ण स्वराज्य न पाये- तब तक शान्ति नही मिल सकती।
दीप जलाये बिना गगन मे- शशि की ज्योति नही खिल सकती॥

स्वतन्त्रता के अमर पुजारी- जेलो मे बेडियाँ बजाते।
काले पानी 'अण्डमान' मे- भारत माँ का मुकुट सजाते॥
बन्दीगृह की दीवारो मे- नौजवान करते थे अनशन।
मानो बन्दीगृह मन्दिर था, व्रत कर चढा रहे थे चन्दन॥

साम्यवाद की लहरे आई- भारत देश बनाने शंकित।
लाल रग का झण्डा जिसमे- हँसिया और हथौडा अंकित॥
वह झण्डा ले ग्राम ग्राम मे- साम्यवादियो ने बहकाया।
पूज्य महात्मा जी का जीवन- पथ भूलो को पथ पर लाया॥

रंग विरंगे इन खेलों में– काँगरेस 'हरिपुरा' आ गई।
इक्यावनवें अधिवेशन की– 'विट्ठलनगर' सुगन्ध छा गई॥
अधिवेशन 'हरिपुरा' दीप्त था, श्री 'सुभाष' अध्यक्ष वहाँ थे।
आसन पर आगये राष्ट्रपति– इन्द्रासन से मञ्च जहाँ थे॥

बोले 'बोस' वीर वाणी में, दिया मञ्च से उज्ज्वल भाषण।
मानो जीत हुई मोर्चे पर, मानो गूँज उठा रण प्रांगण॥
'अराष्ट्रीय' वह 'सब योजना'– त्याग, देश में प्रजातन्त्र हो।
शान्तिपूर्ण वह उचित रीति से– असहयोग का महामन्त्र हो॥

चेतावनी ब्रिटिश सत्ता को– खुले मञ्च से दी 'सुभाष' ने।
भ्रम को भूलो, दिन को देखो! पथ दिखलाया उस प्रकाश ने॥
साँप साम्प्रदायिक के विष को– वह शिव बोला, पी जाऊँगा।
हिन्दू मुसलमान की गुत्थी– जैसे तैसे सुलझाऊँगा॥

उधर मुसलमानों में 'जिन्ना'– बीन अलग ही बजा रहे थे।
घर के टुकड़े करने को वे– 'लीगी' सेना सजा रहे थे॥
हिन्दुस्तान कटे आरे से, कट कर दो टुकड़े हो जायें।
'पाकिस्तान' मुसलमानों का– निश्चय यहाँ बना दिखलायें॥

इधर राजनीतिक बन्दी जो– मूँज कूटते, बान बट रहे–
'अण्डमान' में पड़े हुए जो– स्वतन्त्रता का पाठ रट रहे–
काँगरेस मन्त्रीमण्डल ने– करी घोषणा उन्हें छोड़ दो!
हाथों की हथकड़ियाँ तोड़ो, पैरों की बेड़ियाँ तोड़ दो!!

इसी प्रश्न पर गवर्नरों की– बिगड़ गई मन्त्रीमण्डल से।
राज्य चलाते थे गोरेगण– हम को दास बना कर छल से॥
अधिवेशन 'हरिपुरा' हुआ जब– चारों ओर घिरे थे बादल।
काँगरेस के कदम कदम पर– कोसों तक थी गहरी दलदल॥

प्रश्न रियासत के उलझे थे, फूट लिये डायन छाई थी।
भारत माता की छाती पर- काली साँपिन लहराई थी ॥
तभी 'जवाहरलाल' निपुण की- माँ 'स्वरूप रानी' कल्याणी-
शेर छोड कर स्वर्ग सिधारी- 'मोती' के मन की इन्द्राणी ॥

गाँधी की गोदी मे सुत दे- पहुँची पति के पास पूर्णिमा।
अमर ज्योति मे लीन हो गई- देकर पूर्ण प्रकाश पूर्णिमा ॥
'मोती' के मन की प्रतिमा हित- द्वार खुला था स्वर्ग लोक का।
उस देवी को श्रद्धाजलि दे, पास हुआ प्रस्ताव शोक का ॥

पास हुए प्रस्ताव बहुत से, 'चर्खा सघ' कर दिया स्थापित।
रचनात्मक आन्दोलन के हित- किये वहाँ प्रस्ताव प्रसारित ॥
फिर अन्तर्राष्ट्रीय नीति पर- कर विचार निर्णय पर आये।
महायुद्ध साम्राज्यवाद मे- भारत उँगली नही फँसाये ॥

घिरी मेघमालाये नभ मे, पतझड फण फैलाता आया।
धरती पर छा गया अँधेरा, छाई महायुद्ध की छाया ॥
गर्ज रहे थे मेघ गगन मे, बावनवाँ अधिवेशन आया।
पूज्य राष्ट्रपति-पद का आसन- जहाँ बहुत गहरा रँग लाया ॥

आशा थी इस आसन पर अब- 'मौलाना आजाद' बसेगे।
पर 'आजाद' हो गये वापिस, हार गये तो लोग हँसेगे ॥
क्योकि सामने सिह खडा था- सेनानी 'सुभाष' सर्वोदय।
भारत माता के मन्दिर मे- गूँज रही थी जिसकी जय जय ॥

फिर उस पद के लिये सामने- नीति निपुण 'पट्टाभि' पधारे।
लेकिन सेनानी 'सुभाष' से- लड 'सीतारामैया' हारे ॥
पुन राष्ट्रपति के आसन पर- जीत हुई मेरे 'सुभाष' की।
महायती की जय जय गूँजी, हवा चली जग मे सुवास की ॥

'त्रिपुरी अधिवेशन' आसन पर- काँगरेस-अध्यक्ष पधारे।
बापू बोले, मैं हारा हूँ, निर्वाचन 'पट्टाभि' न हारे॥
हार नहीं 'पट्टाभि' तुम्हारी, यह मेरी ही हार हुई है।
क्या कहते हो बापू तुम यह, नाव आज मँझधार हुई है ?

किन्तु कहा जो कुछ बापू ने- कहा बाद में निर्वाचन के।
औषधि व्यर्थ हुआ करती है- मत दो दवा बाद पाचन के॥
"मत देना 'पट्टाभि' निपुण को", जो जननायक पहिले कहते-
तो 'पट्टाभि' विजय-घोड़े पर- निश्चय सबसे आगे रहते॥

पर बापू तो कभी कहीं भी- तिल भर पक्ष नहीं लेते थे।
जो भी होता सत्य, उसी हित- निर्भय अपना मत देते थे॥
पकड़ राष्ट्र की नब्ज बताते- कौन वैद्य उपयोगी होगा।
जहाँ न जननायक की मानी- वहीं गिरे, गिर कर दुख भोगा॥

नेता बना दिये बापू ने- अपना वरद हाथ धर धर कर।
दीपक जला दिये बापू ने- मन के स्नेह दीप में भर भर॥
'त्रिपुरी काँगरेस अधिवेशन'- गोदी में था प्रिया प्रकृति की।
'विष्णुदत्त' छवि भरा नगर था, ज्योति जल रही थी जागृति की॥

पर 'सुभाष' को ज्वर ने घेरा, चढ़ा चार नम्बर बुख़ार था।
आत्मिक बल था किन्तु देह पर- रोग-शत्रु का बल-प्रहार था॥
चार पाँच नम्बर बुख़ार था, किन्तु राष्ट्रपति गये मंच पर।
कोटि कोटि की आशायें थीं- प्रीति पगे इस नये मंच पर॥

श्रद्धांजलि उन वीरों को दी- बलिवेदी पर जिनके सर हैं।
झण्डा ऊँचा किया जिन्होंने, अमर लोक में जिनके घर हैं॥
खुले मंच से राष्ट्र-ज्योति ने- दिया बहुत छोटा सा भाषण।
लेकिन नीति वाक्य ही बोले, बोले 'बोस' वहाँ जितने क्षण॥

आया यह प्रस्ताव वहाँ पर– "क्योकि घिरा आ रहा महातम–
गाँधी जी के परामर्श से– कार्यसमिति निर्माण करे हम ॥"
पर अध्यक्ष महोदय ने यह– अद्भुत निर्णय दिया नीति से–
"यह प्रस्ताव नही आ सकता– अधिवेशन में किसी रीति से।"

'त्रिपुरी' के अधिवेशन मे भी– स्वतन्त्रता ही अमर ध्येय था।
किन्तु कल्पना को यथार्थ का– गाँधी जी से मिला श्रेय था ॥
जाने तव रोगी 'सुभाष' मे– इतना वल आगया कहाँ से।
अम्बुलेस की गाडी मे पड– विदा हुए अध्यक्ष वहाँ से ॥

पखा झलते चले मित्र कुछ, चले वैद्य ऋपि नव्ज पकड कर।
'स्वस्थ करो धन्वन्तरि ! इनको, दया करो हम कोटि कोटि पर ॥'
किन्तु रोग से वडा भयानक– रोग और आगया सामने।
आपस मे मतभेद हो गया, निर्मित की दो राह राम ने ॥

काँगरेस मे भिन्न मतो से– उलझन पर उलझने आ गई।
श्वेत गगन मे काली पीली– घटा घिरी, नीतियाँ छा गई ॥
त्यागपत्र दे दिया 'वोस' ने, तभी राष्ट्रपति-पद को छोडा।
वाम पक्ष निर्माण हो गया, अपनी मजिल पर मुँह मोडा ॥

पूज्य राष्ट्रपति के आसन पर– तव 'राजेन्द्र प्रसाद' पधारे।
दीपक लेकर चले तिमिर मे– भारत माँ के भाग्य-सितारे ॥
किन्तु हवाये तरह तरह की– जलते दीप वुझाने आई।
गाँधी जी की कुशल वुद्धि ने– विना दाँत गाँठे सुलझाई ॥

इधर 'सुभाष' विरोधी दल ले– अपनापन लेकर चलते थे।
कितने उसे देखकर खुश थे, कितने ही उससे जलते थे ॥
पर वह राही अपने पथ पर– निर्भय चलता ही रहता था।
उसमे अपनेपन का वल था, जो जी मे आता, कहता था ॥

भारतीय कॉंग्रेस-समिति ने– कुछ प्रस्ताव पास कर डाले।
इधर उधर जिनके विरोध मे– बोले थे 'सुभाष-दल' वाले॥
पर उस पर अब अनुशासन का– कॉंगरेस मे बना वितण्डा।
दोषी वही, उठाया जिसने– अब तक कॉंगरेस का झण्डा॥

कार्यसमिति ने अनुशासन से– 'श्री सुभाष' से उत्तर माँगा।
लम्बी चिट्ठी लिख 'सुभाष' ने– अपना हृदय फूल पर टॉंगा॥
"जो प्रस्ताव हानिकर समझे– हम उनका विरोध करते हैं।
प्रजातन्त्र यह, वैध यही है, हम न सत्य कहते डरते हैं॥

अनुशासन का अर्थ नही यह– व्यक्ति वैध अधिकार छोड दे।
हक न लोकतन्त्रीय उसे हो– मन को चाहे जहाँ मोड दे॥
गाँधी जी तो यह कहते हैं– कर सकता विद्रोह अल्पमत।
फिर विरोध पर भी बन्धन क्यो? इच्छा के विरुद्ध क्यो हो नत?"

सेनानी 'सुभाष बाबू' का– कार्यसमिति मे पत्र सुनाया।
तब 'राजेन्द्र प्रसाद' राष्ट्रपति– शान्त शक्ति ने समय सुझाया॥
कॉंगरेस ने करी घोषणा– 'श्री सुभाष' हैं पृथक आज से।
उनका तर्क देश मे रोडा, टक्कर लेनी हमे ताज से॥

तीन वर्ष तक कॉंगरेस मे– 'श्री सुभाष' अब रह न सकेंगे।
हम पुल पर से पार चलेंगे, गहरे जल मे बह न सकेंगे॥
सडक सडक चलना सीखा है, गड्ढो के पथ से न चले हम।
हम ठण्डा करके खाते हैं, हम न कूद पडते हैं गम गम॥

कॉंगरेस छोडी 'सुभाष' ने, निर्मित किया 'अग्रगामी दल'।
मजिल तय करता चलता था– आग और पानी पर चल चल॥
उसी लक्ष्य पर अपने पथ से– चले 'जवाहर लाल' वेग से।
'कोलम्बो' 'लका' मे गूँजा– वात-चक्र उत्ताल-वेग से॥

एक स्वर निकला, अनेकों गीत फूटे।
नमन धनु का था, करोड़ों तीर छूटे ॥
एक सूरज से कमल खिलते रहे हैं।
जब धरा हिलती, सभी हिलते रहे हैं ॥

द्वाविंश सर्ग

युद्धाग्नि

घुमड घुमड कर घन घिरते हैं, रिमझिम रिमझिम वर्षा होती ।
मानस उमड उमड आता है, झरते हें आँखो से मोती ॥
आँधी आने से पहिले नभ– लाल वादलो से छा जाना ।
कभी धूप निकला करती है, कभी गगन मे घन मँडराता ॥

जननायक की चरण-धूलि का– पूजा चली चढाने चन्दन ।
अति की अग्नि जली जव जव भी, शुरू किया वापू ने अनशन ॥
'राजकोट' की जनता पर अति– हिला गई वापू का मानस ।
वारहवाँ उपवास उन्हो का– अगारे मे लाया पावस ॥

चार रोज मे धरती काँपी, सत्ता ने जल्लादी छोडी ।
वायसराय हिले आसन से, साँपिन जैसी रस्सी मोडी ॥
वोला, वापू ! अनशन छोडो, राजकोट की पलटी काया ।
मानो किसी पेड के ऊपर– धूप छा गई वन कर छाया ॥

अभी आमरण अनशन से जय– पा जननायक मुक्त हुए थे ।
जितने रवि उतने व्रत करके– जन जन मे सयुक्त हुए थे ॥
पच्छिम की छाती पर रण के– लाल लाल वादल आ टूटे ।
मानो आग कही जलती थी, गोले और कही पर फूटे ॥

गिद्ध दृष्टि से लिनलिथगो ने– शुरू किया भारत पर शासन ।
किन्तु किसी को प्राप्त नही था– गाँधी जैसा ऊँचा आसन ॥
जग मे ज्वालाये सुलगी थी, लपटे लपक रही थी लप लप ।
महायुद्ध के महानाश मे– वडे वडे साम्राज्य गये खप ॥

महायुद्ध की याद हमे है, हम न महाभारत को भूले।
भौतिक वल मे शक्ति नही वह– जो अनन्त जय की रज छू ले ॥
नैतिक वल मे ही वह वल है– जो कि हार को जीत बनाता।
उधर शस्त्र-वल, इधर कौन यह– शान्ति शान्ति का शोर मचाता ॥

कृष्ण-काव्य का नैतिक बल पा– 'अर्जुन' जीते कौरव-दल से।
अव निज जन को चले जिताने– जननायक निज नैतिक वल से ॥
जो सच्चाई पर दृढतर है– उसके सदा सहायक ईश्वर।
जो हक डसने चला अन्य का– ईश्वर का है कोप उसी पर ॥

मद मे मतवाला हो 'जर्मन'– विश्व-विजय के लिये वढ चला।
'नाजीवाद' उठा मुँह फाडे, दवा दवाया फूस फिर जला ॥
यह वैज्ञानिक महाकाल था– जिसमे नाशक अस्त्र शस्त्र थे।
मानव दानव बन कर निकला, ऊपर से गेरुवे वस्त्र थे ॥

भूत चढ गया 'हिटलर' के सर, नशा चढा, चिघाड उठा वह।
'नाजी दल' उस पर सवार था, सोता सिह दहाड उठा वह ॥
मानो 'रावण' ने कलियुग मे– एक बार फिर ली अँगडाई।
न्यौलौ के भट मे घुस घुस कर– साँपो ने ली मोल लडाई ॥

'जर्मन' ने 'पोलैड' देश पर– वर्बरता से बम वरसाये।
शिशु से सुन्दर स्वर्ण शहर पर– छाते वाले दानव छाये ॥
श्री गणेश हो गया युद्ध का, कई कई टन के बम वरसे।
धरती काँप काँप जाती थी– भीषण वम-वर्षा के डर से ॥

विध्वसक तोपो की ज्वाला– इन्द्रपुरी से नगर जलाती।
नये नये हथियार चला कर– कौन डकिनी आग लगाती ॥
वडो वडो ने खोल खोल मुँह– जनता मे झूठा भ्रम डाला।
जल थल नभ मे लपक रही थी– पश्चिम की हत्यारी ज्वाला ॥

लेकिन पराधीन भारत तव– तूनी था नगाडखाने मे।
मणिधर वन्द पिटारी मे थे, रोदन था उनके गाने मे॥
किन्तु सूक्ष्म जग मे व्यापक है, नही देखती मोटी आँखे।
कहो कभी क्या उड सकता है– हाथी बाँध हस की पाँखे॥

डूव रहा हो जो तैराकी– तिनके का है उसे सहारा।
नीति निपुण के नैतिक वल से– कौरव का भारी दल हारा॥
बोला वायसराय तिमिर मे, वापू आओ ज्योति दिखाओ!
अन्धकार घिरता आता है, लाओ गाँधी जी को लाओ!!

वायसराय भवन मे वापू– गये कि जीत ब्रिटिश की आई।
वायसराय उठा कुरसी से, कुरसी उनके लिये वढाई॥
बोला, वापू! देख रहे हो, काले घन घिरते आते हैं।
आज आग की इन लपटो मे– हाथ मदद का फैलाते हैं॥

वापू वोले– "पराधीन हम, कहो, आपकी मदद करे क्या?
ब्रिटिश राज्य के मुँह मे हैं हम, अँगरेजो के दुख हरे क्या?
और विना पूछे ही हम से, हम को आप घसीट चुके हैं।
हिन्दुस्तान युद्ध मे शामिल, आप ढिंढोरा पीट चुके हैं॥

क्या आधार ढिंढोरे का है, कव पूछा था कॉंगरेस से?
भीख माँगने आये हो तुम– भूखे नगे दुखी देश से॥
पर मेरा भी हृदय दुखी है, महायुद्ध की इस गर्जन से।
कितने आँसू पिये हुए हूँ, शासक! पूछो मेरे मन से॥

महायुद्ध यह! महानाश यह! हृदय कल्पना से फटता है।
दिन मे स्वप्न देखता हूँ मैं– पश्चिम लाशो से पटता है॥
'सेंट पॉल के गिर्जाघर' को– क्या ये लपटे राख करेगी?
'वेस्टमिन्सटर ऐवे' जैसी– दर्शनीय तस्वीर जलेगी?

इन सब की कल्पना मात्र से– मैं तो काँप काँप रह जाता।
उसको कौन मनुष्य कहेगा– जो ये अगारे दहकाता?
इसीलिये केवल मैं प्रस्तुत– देने को अपना नैतिक बल।
मैं तो सत्य अहिसावादी, मुझे नही आता कोई छल॥"

यह कह कर लौटे गाँधी जी, फिर अपना वक्तव्य निकाला–
"खाली हाथो लौटा हूँ मैं, लेकर राम नाम की माला॥
क्योकि अगर समझौता होता– तो वह होता काँगरेस से।
देश बडा है, मैं न बडा हूँ– अपने भारतवर्ष देश से॥

पर उनके विनाश के डर से– उनके साथ सहानुभूति है।
आग लगी 'इँग्लैड' 'फ्रास' मे, धू धू धू जलती प्रसूति है॥
विध्वसक हत्यारी हिसा– दाँत निकाल खून पीती है।
पर मुझ से ईश्वर कहता है– अन्त अहिसा ही जीती है॥

ईश्वर और अहिसा मे से– नही एक भी शक्तिहीन है।
जो औरो को नही सताता– सुख-सागर मे वही लीन है॥
'आग लगाओ! लूटो मारो!' यह विज्ञान विकास नही है।
जो औरो के दीप बुझादे– उसका नाम प्रकाश नही है॥"

जननायक ने ज्योति निमज्जित– सुन्दर पत्र लिखा 'हिटलर' को।
धन्वन्तरि ने औषधि दी थी– मानो नौ नम्बर के ज्वर को॥
चुन चुन शब्द लिखे हिटलर को, लिखा कि मानवता न मिटाओ!
रोको महानाश यह रोको! यह विनाश की आग बुझाओ!!

पृथ्वी पर से महायुद्ध यह– केवल आप रोक सकते हैं।
क्या मानवता की छाती मे– छुरियाँ आप भोक सकते हैं?
क्या बर्बरता की सीमा को– मानवता अब लाँघ चलेगी?
जिससे जग मरघट बन जाये– क्या अब ऐसी आग जलेगी?

तुमसे मानवता कहती है– अपना हिंसक ध्येय छोड दो।
जीतो विश्व प्रेम के वल से, वर्वरता की टॉग तोड दो।।
आशा है मेरी वाणी को– अपने हित से पहिचानोगे।
जीत इसी मे है जर्मन की, आशा है मेरी मानोगे।।

किसकी हार, कौन जीतेगा, इसका पता आज किसको है?
पर परसो इतिहास कहेगा– आँसू का कलक इसको है।।
'राम' वहुत समझा कर हारे, पर 'रावण' ने एक न मानी।
शास्त्र-विज्ञ पण्डित 'रावण' की– उल्टी मति से मिटी निशानी।।

ऐसी चढी हुई थी उसको– कहता था निर्माण नाश को।
जान नही मुर्दे मे आती, चाहे डालो चीर लाश को।।
वजती थी शका की घण्टी, दहके महायुद्ध के शोले।
महाभयकर इन लपटो मे– कॉगरेस के नेता वोले।।

वर्ष डेढ सौ वीत चुके है, भारत लोकतन्त्र से वचित।
दे दुहाइयाँ लोकतन्त्र की– आज कर रहे सेना सचित।।
नाजीवाद नाश का शोला, हत्यारे साम्राज्यवाद हैं।
लोकतन्त्र हित फॉसी झूले, वे दिन भूले नही, याद हैं।।

अभी हमारे घाव हरे हैं, अभी न दाग मिटे कोडो के।
अभी निशान वहुत वाकी हैं– वच्चो पर दोडे घोडो के।।
ये जो सरकारे प्रान्तो मे, चले तुम्हारे ही इगित पर?
अपने ही हाथो से काटे– हम निज देशवासियो के सर?

वचन भविष्यत् के भरते हो, लेकिन सव होते हं झूठे।
तन के उजले, मन के काले, आज मन गये, कल फिर रूठे।।
जव तक [illegible] रहेगा– तव तक आशा व्यर्थ देश से।
वुरा तुम्हारा नही चाहते, आशा रक्खो कॉगरेस से।।

यदि भारत की भोली जनता– तुम लालच से वहकाग्रोगे।
तन लूटोगे, धन लूटोगे, लेकिन हृदय नही पाग्रोगे ।।
काँगरेस की कार्य समिति ने– निर्मित अपनी 'युद्ध समिति' की।
जिसके थे अध्यक्ष 'जवाहर', जिसने धूर्त नीति की इति की ।।

'मौलाना ग्राजाद' समिति मे, और 'पटेल' ग्रटल पण्डित थे।
जिनकी नीति वुद्धि कौशल से– 'रावण' से पण्डित शकित थे ।।
पर अँगरेज विधान विज्ञ है, कानूनो का है कठपुतला।
गोरा निपुण सफेद साँप है– जिसने मधुर जहर है उगला ।।

भारत रक्षा कानूनो के– अन्तर्गत डस लिया देश को।
जाल डाल उलझाना चाहा– व्रिटिश राज्य ने काँगरेस को ।।
उधर विश्व मे प्रति पल प्रति क्षण– नई नई होती घटनाये।
'चेम्वरलेन' व्यथित शकित थे– नौका कैसे पार लगाये ?

जव कि 'आक्रमण रूसी जर्मन– सन्धि' हुई वस वादल टूटे।
हिसा से 'यूरोप' जल उठा, धरती पर नाशक वम फूटे ।।
वोले 'चेम्वरलेन' शान्ति से– व्रिटिश-जर्मनी युद्ध छिड गया।
एकतन्त्र साम्राज्यवाद से– प्रजातन्त्र कस कमर भिड गया ।।

क्योकि तीतरो के नीडो पर– वाज झपटता ही आता है।
क्योकि आज निर्माणो पर वम– जय का इच्छुक वरसाता है ।।
क्योकि आज जग की सुन्दरता– निर्मम निकला खँडहर करने।
उस अजेय ज्वाला के आगे– हम भी चले मारने मरने ।।

जव तक योरुप मुक्त न होगा, जब तक तन मे श्वास रहेगा–
नाश करो हिटलरशाही का– तव तक 'चेम्वरलेन' कहेगा ।।
ले पाऊँगा भाग युद्ध मे– मैं कितना यह किसे पता है।
वही जान सकता है यह तो– जन्म मरण का जिसे पता है ।।

इस दुनिया मे बडो बडो के– सब सकल्प न पूरे होते।
कुछ बोकर काटा करते हैं, कुछ सो जाते बोते बोते ॥
'चेम्बरलेन' वर्ष भर मे ही– इस दुनिया से स्वर्ग सिधारे।
मरने से पहिले ही 'चर्चिल'– पीते हुए सिगार पधारे ॥

पहिले कुरसी पर चढ बैठे, फिर खोया कुरसीवाले को।
राजनीति के चोर भयकर– तोड लिया करते ताले को।
चहक उठी पश्चिम मे चोचे, 'चर्चिल' से चोचे लडती थी ॥
चर्चिल की चटपटी चोच मे– बडी बडी चोचे गडती थी।

मोटी नाक टिमाटर जैसी, दूर दूर की गन्ध पकडती।
कान बडे, ओठो मे रस है, बात बात मे त्योरी चढती ॥
फूली हुई कचौरी जैसे– गोल गोल अद्भुत कपोल थे।
उनके बल खाते माथे मे– राजनीति के पडे झोल थे ॥

दूर दूर तक देख सके जो– आँखे बडी बेटरी जैसी।
मुँडी हुई मूँछे चाकू थी, सिगरट कही न देखी वैसी ॥
चलते थे टमटम जैसे जब– खडखड करते रबड टैर वे–
चलते थे लुड्ढक पुड्ढक जब– रुई जैसे नरम पैर वे–

वायुयान नीचे गिरते थे, सब घोडे पीछे रह जाते।
डरते रहना ! इस सिगार से, बडे बडे दिग्गज थर्राते ॥
जरा चोच तो देखो इनकी, कैंची सी चलती रहती है।
नही रात मे ही दिन मे भी– यह बत्ती जलती रहती है ॥

ब्रह्मा ! तुमने बडी कृपा की, नमस्कार है ! नमस्कार है !
फिसलन जैसी चिकनी चमडी– रबडी जैसी मजेदार है !
घबरा कर यह कहा रूप ने– शक्ल मुझे दे दो भैसे सी।
चमडी कही उतार न ले ये– मेरे चाँदी के पैसे सी ॥

ओ गॉड ! दया कर जल्दी से– मेरी सूरत काली कर दे।
मेरी यह गर्दन काट और– धड पर वेमुँह वाला धर दे॥
या मुझे वना दे निराकार, जल्दी कर 'हिटलर' आता है।
मैं 'रावण' के सर पर, मुझको– वन्दर घुडकी दिखलाता है॥

हे 'चेम्वरलेन' ! कहाँ हो तुम, क्या करूँ सलाह वताओ तुम !
तुम स्वर्ग लोक मे चले गये, मुझको भी राह वताओ तुम !।
अच्छा, मैं ही आ जाऊँगा– तुमसे करने को परामर्श।
ज्वर तेज, कहाँ थर्मामीटर, भेजो जल्दी से चतुर नर्स॥

ओ जर्मन वाले ! ठहर जरा, पी लेने दे अगूरासव।
दस वीस डण्ड लूँ और पेल, हलका कर लूँ कुछ भारी भव॥
मालतीवसन्त वैद्य जी ने– मेरे ही लिये वनाया है।
मैं पीने लगा वदाम घोट, गाजर का हलवा खाया है॥

मेरे भुजदण्डो मे भी अव– मछलियाँ दिखाई देती है।
मुर्गियाँ मदद करने आईं, फौजी हैं अण्डे सेती हैं॥
मुर्गी के अण्डे खा खा कर– मैं देह फुलाता जाऊँगा।
अव उतर अखाड़े मे आया, सव से लड़ कर दिखलाऊँगा॥

क्या हिटलर है ? क्या इटली है ? जापान एक भुनगा होगा।
भगवान ! चार दिन जीने दे, मैंने न अभी कुछ सुख भोगा॥
गाँधी वावा ! भोले वावा ! मैं काली गाय तुम्हारी हूँ।
मैंने लाखो चिड़िये मारी, अव आकर फँसा शिकारी हूँ॥

इस वार वचालो 'जर्मन' से, देखो ! वे गोले आते हैं।
मेरे शरीर मे वहुत मास, ये चूहे कुट कुट खाते हैं॥
पी पी वकरी का दूध, और– पी पी टिमाटरो का रेशा।
वापू ! तुम वढ़ते जाते हो, रुकता जाता मेरा पेशा॥

वस मैं भी कल से तज शराव– वकरी का दूध चटाऊँगा ।
खा खा कर उवले हुए साग– मैं अपना वजन वढाऊँगा ।।
खद्दर की लगोटी वाले ! मैं भी व्रत किया करूँगा अव ।
मैं पूर्ण अहिंसावादी हूँ– चिल्ला कर कहा करूँगा अव ।।

उस लगोटी वाले से तो– वम के गोले घवराते हैं ।
उस दो छटाँक के हिमगिरि से– लाखो सागर पट जाते हैं ।।
उस के कितने ही चेले हैं, जो वडे वडे हैं पहलवान ।
चौडे माथे वाला 'पटेल', 'नहरु' रखता है अलग शान ।।

पर मैं भी नही किसी से कम, लाखो साले वहनोई हैं ।
'अमरीका' वडा वहादुर है, अव उससे आँख पिरोई है ।।
फिर मेरी कूटनीति से वच– भारत किस पथ से जायेगा ?
'जिन्ना' से मेरी सटर पटर, वह नौका पार लगायेगा ।।

वह 'जिन्ना' जिसकी उँगली मे– मेरी अगूठी पडी हुई ।
वह 'जिन्ना' जिसे विठाने को– यह मेरी टमटम खडी हुई ।।
वह गर्म चाय, वह विस्कुट है, वह मक्खन लगी डवलरोटी ।
मैं काँटे छुरी चलाता हूँ, वह खाता है वोटी वोटी ।।

मेरा पतला दुवला मणिधर– अच्छे अच्छे डस जाता है ।
मेरा नमूँछिया यार अरे, मूँछो से होड लगाता है ।।
देखूँगा कैसे काँगरेस– भारत स्वाधीन करायेगी ?
देखूँगा कैसे गाँधी की– रामायण हमे हरायेगी ?

ओ गाँधी के चेलो ! सुन लो– पहिले आपस मे मिल जाओ !
अँगरेजी कोट उतारो तव– जव पहिले कुर्ता सिलवाओ !
तुम कहते हो पहिले भारत– स्वाधीन राष्ट्र घोषित कर दो !
युद्धोद्देश्यो मे शामिल है– पहिले पाई पाई धर दो !

हम जीवन और मरण मे हैं, इस समय माँगते अपना धन।
हालत हो रही दिवाले की, कुछ और रुको मेरे यौवन !
बापू बोले, तुम चचल हो, किसको विश्वास तुम्हारा है ?
भिक्षा मे नही माँगते हैं, यह भारतवर्ष हमारा है ॥

महायुद्ध के उद्देश्यो मे– क्या भारत परतन्त्र रहेगा ?
ब्रिटिश राज्य के लिये हमारा– आँसू मिश्रित खून बहेगा ?
और 'जवाहर लाल नेहरू'– बापू से दो कदम बढ गये।
छोडो, कल की भाषा छोडो ! बहुत तुम्हारे मगज सड गये ॥

वह भाषा मर चुकी जिसे तुम– अब तक हमे सुनाते आये।
दुनिया की पीडित जनता ने– मेरे से ये शब्द कहाये ॥
सौदा नही कर रहे तुम से, माँग रहे अपनी स्वतन्त्रता।
तभी अर्थ कुछ सार्थक होगा, चल न सकेगी एकतन्त्रता ॥

अब न अधिक दिन चल पायेगी– प्रभु सत्ता साम्राज्यवाद की।
हिन्दुस्तान होश मे है अब, नीद छोड दी है प्रमाद की ॥
भारत एक अखण्ड देश है, वह न बनेगा लँगडा लूला।
सब रजवाड़े साथ रहेगे, भूला भटका अब भ्रम भूला ॥

भारत के कुछ नेताओ से– वायसराय मिले 'दिल्ली' में।
चूहो को धर पकड दबाऊँ– चाह यही थी उस बिल्ली मे ॥
कहा चीख कर अँगरेजो ने– पहिले अपनी फूट निकालो।
अल्प जातियो की रक्षा का– तब तुम हम से भार उठालो ॥

शब्दजाल 'लिनलिथगो' का सुन– गाँधी जी ने कहा शान्ति से–
बालक नही रहे हैं अब हम, बहुत दूर हो गये भ्रान्ति से ॥
शत शत वर्षो से छल बल से– हम पर शासन करते आये।
व्यापारी बनकर आये थे, हम तुमको पहिचान न पाये ॥

ऊपर से गोरे, अन्दर से– काले वडे कम्पनी वाले।
हमने दूध पिला कर अव तक– अपने घर मे विपधर पाले ।।
जव तक हृदय न शुद्ध करोगे– कर न सकेंगे कुछ सहायता।
वात तुम्हारे हित की है यह, इसी वात मे है महानता ।।

लेकिन चढी हुई थी उनको, अपने हित की वात न मानी।
चेत रही थी रण की चण्डी, घूम रही थी वहाँ भवानी ।।
प्रान्तो के प्रधान मन्त्रीगण– कुरसी छोड, गर्ज कर वोले–
"जनता की इच्छा विरुद्ध क्यो– महायुद्ध मे झोके भोले?"

'पार्लमेन्ट' मे अँगरेजो ने– अपनी फूटी वीन वजाई।
कहा, कि गाँधी वावा हमसे– व्यर्थ मोल ले रहे लडाई ।।
कैसे उत्तरदायी शासन– हम भारत मे स्थापित कर दे?
भारत मे मतभेद वहुत है, कैसे रोटी आगे धर दे?

रोटी के ऊपर लड लड कर– भारतवासी मर जायेंगे।
टुकडो पर लड राड जिन्दो को– हिन्दुस्तानी ही खायेंगे ।।
हम रक्षा करने वाले हैं, आदत नही मास खाने की।
वापू वोले, वहुत कह चुके, आदत छोडो धमकाने की ।।

जाने किनके अभिशापो से– लगी फूस मे दियासलाई।
जाने कव की दवी आग थी, किसके आँसू ने दहकाई ।।
महायुद्ध की भीपण लपटे– लपकी 'योरुप' की छाती पर।
रक्तस्नान सभ्यता का था, पशुता नाची नगी होकर ।।

जल उठे महल, जल उठे दुर्ग, वरसा शोणित, रँग गये डगर।
धू धू दावानल धधक उठा, घन घुमड उठे, गर्जा अम्वर ।।
'जर्मन' से 'नाजीवाद' चला, मुँह फाड चली 'हिटलरशाही'।
क्षण मे धरती मे समा गये– जग के चलते फिरते राही ।।

चढ गया 'रूस' को लाल खून, 'स्टालिन' की गनमशीन गरजी।
चिघाड रही थी राज्यचाह, अम्बर कॉपा, धरती लरजी ।।
'जनरल तोजो' की तेजी से– 'जापान' आग मे कूद पडा।
'इटली' से 'मुसोलिनी' लपका, क्षण मे रण मे हो गया खड़ा ।।

चर्चिल की चोच चली चहकी, हिल उठी चीन की दीवारे।
हिल गई युद्ध के बाजो से– 'लन्दन' की ऊँची मीनारे ।।
इस ओर अड गये मित्रराष्ट्र, उस ओर जर्मनी की ज्वाला।
रणचण्डी की वह भूख प्यास– जिसने ज्वाला मे घी डाला ।।

दृग बरस उठे, बरसी ज्वाला, जल उठे नगर, जल उठे शहर।
पश्चिम की छाती पर गर्जी– उस महानाश की महा लहर ।।
खप्पर लेकर चण्डिका चली, मोर्चो पर थे तूफान महा।
ला खून पिला! ला खून पिला! किस महाशक्ति ने वहॉ कहा ।।

पी खून आज! पी खून आज! ले प्यास बुझा! 'हिटलर' बोला।
अम्बर से धरती पर आया! बम बम करता बम का गोला ।।
तोपो ने अगारे उगले, टैको से ज्वाला बरस पडी।
ला पिला खून! लो पियो खून! रण ज्वाला कहती खडी खडी ।।

नभ मे उडते थे वायुयान, गोले गिरते थे धरती पर।
खेलने मौत से खडे हुए, मोर्चो पर 'रशिया' के दृढतर ।।
अम्बर से उतर उतर आये– छाते ले ले कर भूत प्रेत।
वीरो के पैर बढे आगे, धरती से नभ मे उडा रेत ।।

सर सर सर सरके महा टैक, दन दन दुनालियॉ चलती थी।
बन जाता था श्मशान वही, तोपो से लाशे जलती थी ।।
वह महाभयानक मोर्चा था, अन्धा सा था विज्ञान जहाँ।
मानव मानव की छाती पर, चढ चढ पीता था खून वहॉ ।।

हर ओर यही स्वर सुनते थे– हिटलर आया, हिटलर आया।
हर ओर दिखाई देती थी– हिटलर की लाल लाल छाया॥
सागर मे रण, अम्बर मे रण, धरती पर दहके अगारे।
गोलो से धरती फटती थी, जलते थे धरती के तारे॥

छिछडे उडते थे बच्चो के, कटती थी धरती की छाती।
उडता था जलता लाल धुआँ, फू फू करती आँधी आती॥
भूकम्प भयानक चेत उठे, श्वासो से साँप निकलते थे।
फुकार मार, फण फैलाकर– जग के दिनमान निगलते थे॥

आँधी काली डायन बनकर– काले कोयले जलाती थी।
किलकार मार, चिघाड मार, सोता श्मशान जगाती थी॥
शव फाड फाड, हड्डियाँ नोच– शोणित उछाल खेली होली।
गोली लगती थी इधर, उधर– माँ बहिनो की पुछती रोली॥

मानो 'सन् सत्तावन' अपना– प्रतिशोध चुकाने आया था।
मानो 'दिल्ली का लाल किला'– अरमान बुझाने आया था॥
धड गिरते थे, सर उडते थे, फौजे आगे बढ जाती थी।
लोथो के ऊपर चढ चढ कर– अगारो पर चढ जाती थी॥

लोथडे मास के बिखरे थे, शोणित मे होती थी छप छप।
सगीने मास नोचती थी, तलवारे करती थी लप लप॥
फूटती किसी की आँख और– कोई लँगडा हो जाता था।
कोई गोली के लगते ही– लम्बा लम्बा सो जाता था॥

कट हाथ हवा मे उडते थे, कट कट माथे बनते रजकण।
कट कट गिरते चौडे सीने, होते देखे रुण्डो के रण॥
मुण्डो की माला पहिन पहिन– रुण्डो ने जिन्दो को पीसा।
लाशो के नीचे पडा पडा– कोई तडपा, कोई चीसा॥

सर कटा पड़ा लेकिन धड़ पर– वन्दूक दिखाई देती थी।
सडती थी लाशे खँडहर मे, धरती ही सॉपा लेती थी॥
खाकी वर्दी वाले फौजी– शमशान साथ लेकर आये।
जो राख वनादे रगस्थल– वे विध्वसक गोले लाये॥

यह लो, उस सोने के गढ पर– उस सैनिक ने गोला मारा।
दॉये से उस पर वम आया, गिर गया राख हो हत्यारा॥
यह लो, अम्वर मे चीलो से– ये वायुयान मॅडराते हैं।
विध्वसक गोले गिरा रहे, धरती के महल जलाते है॥

घर घरर घरर घर घरर घरर– उड़ते जहाज, गिरते तारे।
अड अडड़ अड़ड वम वम वम वम– नभ से गिरते वम हत्यारे॥
ठूँ ठूँ ठूँ ठूँ! ठॉ ठॉ ठॉ ठॉ! दन दन दुनालियॉ गरज रही।
गिर रहे गर्भ, जलते सुहाग, अनगिनत विन्दियॉ लरज रही॥

वह वायुयान उस फौजी ने– पल मे धरती मे गिरा लिया।
वह देखो, किसने क्षण भर मे– धड से उसका सर उडा दिया॥
उसने उसके गोली मारी, उसने उसका सर काट दिया।
उसने उस पर वम बरसाये, उसने उसका घर पाट दिया॥

उसने नाखूनो से नोचा, उसने दॉतो से चवा लिया।
उसने ठोकर से ठुकराया, उसने वूटो से दवा दिया॥
कोई टट्टे की आड लिये– गोलियॉ चलाये जाता था।
कोई वुर्के की आड़ लिये– शमशान वनाये जाता था॥

वह महाविषैला युद्ध हुआ, मानव चीते भेडिये वने।
किलकार रहे थे श्वान गिद्ध, खा मास खून मे नहा सने॥
ये लाश पड़ी, ये घायल हैं, वह पडी टॉग, ये पडे कान।
वन्दूक कही, सगीन कही, पिस्तौल कही, कुछ है न ध्यान॥

वह टोप पड़ा, यह कोट पड़ा, पतलून कहीं, कुछ होश न है।
कौए खा रहे गोश्त लेकिन— अब इस फौजी मे जोश न है॥
छीकते बैठती थी मक्खी— कल जिनकी लम्बी नाकों पर—
मिल गये धूलि मे पल भर मे, वे हिंसक पशु अब कहाँ किधर?

उन बर्बादी के गोलो से— मानवता धू धू जलती थी।
उस प्रकृति पूर्णिमा के ऊपर— पशुता अंगार उगलती थी॥
जलचर थलचर नभचर जल जल— उड़ गये हवा मे बेशुमार।
यह महाप्रलय थी या कोई— दुखिया रोती चीत्कार मार॥

धरती पर सागर दौड़ रहा,
परिवर्त्तन ले करुणा लपकी।
किसकी स्मृति पश्चिम मे जिससे—
प्रलयकर अग्नि-शिखा भभकी॥
शशि! बोल कि क्यो यह आग लगी?
किसने किसको अभिशाप दिया?
इस बालक बुद्धि भयानक को—
प्रभु! क्यो तुमने अणु चाप दिया?

त्रयोविंश सर्ग

आज़ादी की आवाज़

जय हो उसकी जिसके स्वर से—
सुख की रचना वसुधा पर है।
जय हो उस दिव्य दिवाकर की—
हर मन्दिर मे जिसका घर है॥
जय हो उस मूर्त्ति मनोहर की—
जिसके पग दीप जले जग मे।
चुग फूल चढा, पग धूलि उठा—
जय है जननायक के डग मे॥

तम के जग मे जब ज्योति लिये—
जननायक के जयघोप चले।
जन मे मन मे पथ मे तब ही—
गति गीत लिये जय दीप जले॥
जग की जलती ग्रति बोल उठी—
गशि से सुख के दिन दूर नही।
जननायक के पगपकज पा—
मजबूर रहे मजबूर नही॥

जीवन के फल फूल गला कर—
जीव यहाँ तरसा करते हैं।
प्राण यहाँ झुलसा करते जब—
मेघ तभी बरसा करते हैं॥

दीपक लेकर रात सुहागिन,
ज्योति लुटा रवि क्यो ढलते है ?
फूल चढा करते प्रतिमा पर,
दीप वहाँ नभ मे जलते है ॥

आजादी की आवाज लिये– सोने की चिडिया चहक उठी ।
हरियाली मे लाली आई, पानी मे क्रीडा दहक उठी ॥
हर महक फूट कर कहती थी, शूलो ! फूलो को मुक्त करो ।
हर हवा वहक कर कहती थी, अब पीडा मे तूफान भरो ॥

वन्दी भारत हुकार उठा, अब खुली डाल पर गाने दो !
रोको तूफानो को रोको, मत आँसू बाहर आने दो !!
हर फूल कुचल डाला तुमने, हर कली नोच ली डाली से ।
यह वाग हमारा हमको दो, मत खेल करो उजियाली से ॥

हमने यह वाग लगाया था, तुमने यह वाग उजाड दिया ।
इस परम पुरातन भारत का, तुमने हर पेड उखाड दिया ॥
भापा छीनी, सभ्यता छिनी, अधिकार हमारे छीन लिये ।
हर खेत फूक डाला तुमने, आँखो के मोती वीन लिये ॥

कल कल करती सरिताओ की, धाराओ मे छल छल होती ।
मातम छा रहा वहारो मे, हर हँसी आज छिप छिप रोती ॥
तन मे हड्डियाँ नही छोडी, दुर्गो को खँडहर कर डाला ।
आँखो मे सावन उमड रहे, पानी मे दहक रही ज्वाला ॥

आग आग से कभी न वुझती, आग वुझाती है जल-धारा ।
अमर न कभी मौत से मरता, अमर दीखता है ध्रुव तारा ॥
हिंसा से हिसा न जीतती, विजय अहिसा से ही होती ।
मोती हस चुगा करते हैं, काग नही चुगते हैं मोती ॥

धरती काँप उठी हिसा से, सोने सी यह दुनिया डोली।
ले पतवार अहिसा-बल की– जननायक ने नौका खोली॥
फूल लगाये थे माली ने, काँटो ने फूलो को घेरा।
सूरज की ज्वाला से बरसा– अन्धकार मे स्वर्ण-सवेरा॥

काँगरेस मे कुछ लोगो को– गाँधी के सिद्धान्त न भाये।
स्वतन्त्रता के सुन्दर पथ पर– कितनो ही ने शूल बिछाये॥
जब कि तरेपनवाँ अधिवेशन– काँगरेस का हुआ 'रामगढ'।
महायुद्ध चिघाड रहा था, झगडे बहुत गये जग मे बढ॥

चारो ओर जहर फैला था, 'जिन्ना' अलग पकाते खिचडी।
जितनी ढील छोडते बापू– उतनी ही वह घोडी बिगडी॥
ले तलवार कहा 'जिन्ना' ने– "आधा हिन्दुस्तान काट दो।
हिन्दू राष्ट्र बनाओ अपना, मेरा पाकिस्तान बाट दो॥"

भारत मे 'जयचन्द' बहुत थे, भारत मे थे बहुत 'विभीषण'।
जहाँ विषैली फूट वहाँ पर– प्रतिपल जलते है सुन्दर क्षण॥
तरह तरह की चली आँधियां, दीपक बुझने लगे देश के।
'मौलाना आजाद' राष्ट्रपति– बने 'रामगढ काँगरेस' के॥

अधिवेशन के लिये शान से– सुन्दर 'मजहर नगर' बनाया।
'सिह द्वार' के महा चौक मे– भारतीय झण्डा लहराया॥
अधिवेशन प्रारम्भ हुआ जब– किया प्रकृति ने नृत्य मनोहर।
उमड घुमड बादल घिर आये, नृत्य देखने आया अम्बर॥

घुमड घुमड कर बादल बरसे, चारो ओर भर गया पानी।
या कि परीक्षा नेताओ की– करते थे बादल तूफानी॥
या कि युद्ध के अगारो पर– अम्बर बरसाता था पानी।
या बादल धोने आये थे– भारत की दुखभरी कहानी॥

पर प्रलयकर वर्षा मे भी– बापू ने पतवार न छोडी।
नाश नाचता रहा धरा पर, निर्मिति ने उम्मीद न तोडी॥
चट चटाइयो को निकाल कर– प्रतिनिधि बैठे ओढ ओढ कर।
झोपडियो के गॉव बन गये– मेरे नेताओ के सर पर॥

बादल बरसे पर अधिवेशन– उसी शान से हुआ बराबर।
निर्भय भाषण सुना रहे थे– महारथी 'आजाद' जहॉ पर॥
कहा राष्ट्रपति ने भाषण मे– अब किश्ती मँझधार आ गई।
ये नाजुक घडियाँ है, इनमे– सर पर काली घटा छा गई॥

जर्जर नाव, अँधेरा छाया, लेकिन ज्योतिर्मय माँझी है।
पाल नही, पतवार नही पर– साथ साथ निर्भय माँझी है॥
ब्रिटिश राज्य से ऊब गये हम, नाजीवाद नही सह सकते।
हम घातक 'फासिस्टवाद' को– अच्छा कभी नही कह सकते॥

अँगरेजो के छल कपटो को– हरगिज हम न पनपने देगे।
सीधी या टेढी उँगली से– स्वतन्त्रता उन से ले लेगे॥
ईंट हिला साम्राज्यवाद की– जग मे दीप जलायेगे हम।
शीघ्र 'एशिया' के प्रागण मे– स्वर्ण सवेरा लायेगे हम॥

जब तक पहुँचे नही लक्ष्य पर– कदम हमारा नही रुकेगा।
ऊँचा ही उठता जायेगा, झण्डा नीचे नही झुकेगा॥
घूमा घटनाचक्र, और हम– शासित, वे शासक इस घर मे।
ढोल पीटते प्रजातन्त्र का, राज्य चाहते दुनिया भर मे।

पर क्या बिना दबाये गन्ना– रस देकर दानी कहलाता?
सीधी उँगली घी न निकलता, भला बुरा जग मे रह जाता॥
और इधर 'जिन्ना' की खुट खुट– कुट कुट हमे काट कर खाती।
दो राष्ट्रो की पाकिस्तानी– खीचातानी शूल बिछाती॥

इतना कह 'आजाद' पधारे, खडे हुए भोले जननायक।
दर्शन कर सुन्दरता झेपी, जडवत् बैठ गये आराधक॥
खुला सुधा-घट सा उनका मुँह, कविता वरसाती थी वाणी।
थिरक थिरक झनकार सुनाती- बापू की वीणा कल्याणी॥

बहिनो और भाइयो! अब हम- तम से आ जाये प्रकाश मे।
उसकी ज्योति हृदय मे देखे- बोल रहा जो श्वास श्वास मे॥
पहिले अपना हृदय टटोलो, तब औरो के दोष निकालो।
पहिले स्वयम् कीच से निकलो, मत औरो पर कीच उछालो॥

निर्मल गगाजल से धो धो- अपना मानस शुद्ध बनाओ!
शुद्ध हृदय से सच्चाई से- सब की नौका पार लगाओ!!
निर्मल आत्मिक बल के आगे- पशु-बल कभी नही आ पाता।
सच को आँच नही आती है, झूठ नरक का पथ बतलाता॥

आपस मे सगठन करो तुम, बिखरे हुए एक हो जाओ!
आन्दोलन तब शुरू करूँगा- पहिले सब सगठन बनाओ!!
बिना शुद्ध तैयारी के मैं- बतलाओ कैसे बढ जाऊँ?
पहिली सीढी चढा नही फिर- अम्बर मे कैसे चढ जाऊँ?

कभी कही भी, किसी तरह भी- सत्याग्रह की हार न होती।
बिना सगठन के कब मिलते- स्वतन्त्रता के हीरे मोती?
चर्खा यह 'यरवदा चक्र' है, इसमे हैं जीवन के धागे।
मूर्ख नही मैं कात रहा जो, जो न कातते वे हतभागे॥

गाडी मे, घर मे, यात्रा मे- मैं जो चर्खा चला रहा हूँ-
पराधीनता की जजीरे- इन धागो से जला रहा हूँ॥
स्वावलम्ब ही तो ईश्वर है, अन्तर की आँखो से देखो!
उडना चाहो उड़ न सकोगे, जीवन अपने पाँखो से खो॥

मैं मूको के लिये जी रहा, उनके लिये मुझे मरना है।
तैर सिन्धु के मध्य आ गये, अब तो सिन्धु पार करना है॥
देखो! डूब न जाना अब तुम, तूफानो से हार न जाना!
चाहे जितने पर्वत आये, फूंक मार कर उन्हे उडाना!!

देख रहे हो, अपनो ही ने- काले झण्डे मुझे दिखाये।
देख रहे हो, कोई कहता- गाँधीवाद राख हो जाये॥
अभी तृपित तलवार न बदली, अभी ढाक के तीन पात हैं।
अभी न इँग्लिश भाषा बदली, उल्टी ही कर रहे बात हैं॥

अत हमे भी सत्याग्रह का- जल्दी शख बजाना होगा।
मृत्यु नही होती आशा की, आगे कदम बढाना होगा॥
लक्ष्य उसी के चरण चूमता- जिसने निद्रा पर जय पाई।
शान्ति उसी के लिये सुरक्षित- आँसू जिसकी करे बडाई॥

वह प्रकाश मे तेजपुज है- जिसने जीत लिया अपना मन।
वही दीप बनता दुनिया मे, वही बना करता है चन्दन॥
नरक भोगता, सडता रहता- तन का उजला, मन का काला।
सत्य अहिसा पर जो दृढ है- उसके चारो ओर उजाला॥

सत्याग्रह की परिभाषा यह- सच्चे पथ पर खडे रहो तुम।
भालो की नोको के आगे- महावज्र से अडे रहो तुम॥
भाले टूटेगे ढालो से, सत्याग्रह पूजा जायेगा।
विश्व-शान्ति की ज्योति यही है, सूरज कभी न बुझ पायेगा॥

गाँव गाँव मे, नगर नगर मे- प्रान्त प्रान्त मे करो सगठन।
भारत माता की पूजा है- बन बन कर आजाओ चन्दन॥
बार बार ये यज्ञ न होते, कब कब आते हैं ये अवसर।
अपने दोनो लोक बनालो- भारत माता की पूजा कर॥

खिले फूल से झूम झूम कर– माँ के मन्दिर मे चढ जाओ !
या तो माला वनो जीत की, या डाली पर गीत सुनाओ !!
डाल डाल पर झूम झूम कर– देखो फूल सुगन्ध उडाते।
और पुजारिन के हाथो से– हँस हँस मन्दिर मे चढ़ जाते ॥

या तो फूल मुकुट माथे का, या यौवन हँसती डाली का।
जो कण कण मे फूल खिलाये– स्वागत! स्वागत!! उस माली का ॥
स्वतन्त्रता के लिये देश को– वीरो का वलिदान चाहिये।
आओ वीरो! मातृभूमि को– आज निराली शान चाहिये ॥

झूम झूम गा रहा तिरगा– आओ आओ वीरो! आओ!
घूम घूम गा रहा तिरगा– मातृभूमि पर शीश चढाओ!
दोनो हाथो मे लड्डू हैं, यहाँ मुकुट है, वहाँ मुक्ति है।
स्वतन्त्रता के लिये होड है, दौडो दौडो! अमर उक्ति है ॥

वापू की वाणी सुनते ही– देशभक्त तैयार होगये।
कोटि कोटि कण्ठो के नारे– करुणा के शृगार होगये ॥
एक वार फिर व्रिटिश राज्य को– गाँधी जी ने मार्ग सुझाया।
वहरो के आगे गा हारे, अन्धे को दीपक दिखलाया ॥

वापू ने चेताया उनको– सत्य अहिसा पर आजाओ!
युद्ध वन्द करदो तत्क्षण तुम, महानाश से विश्व वचाओ!!
'हिटलर' 'मुसोलिनी' से कहदो– लो हम घर खाली करते हैं।
लो यह सुन्दर महाद्वीप लो, महानाश से हम डरते हैं ॥

जितना तुझको खून चाहिये– आ तू उतना खून वहा ले।
ओ हिसावादी हत्यारे! जितना चाहे हमे सता ले ॥
किन्तु हमारे आत्मा को तू– वन्दी नही वना पायेगा।
तन को खा सकता है लेकिन– मन को क्या खा कर खायेगा ?

राज्य-वृद्धि के लिये वमो से- जला न सुन्दर राजमहल तू ।
वता फूकने क्यो आया है- दुनिया भर की चहल पहल तू ?
लेकिन सावन के अन्वे को- हरा हरा ही दिया दिखाई ।
पतझड चढ आया वसन्त पर- ले होली की दियासलाई ॥

सत्याग्रह का झण्डा लेकर- पहले चले 'विनोवा भावे' ।
काँटो की नोको के ऊपर- वोल दिये फूलो ने धावे ॥
गॉव गाँव मे पैदल चल चल- देते युद्ध-विरोधी भापण ।
इतना यग फैला यात्री का, उपमा हारी, थके विगेपण ॥

शव्द शव्द मे सत्याग्रह का- सार निचोड दिया भावो ने ।
सत्याग्रह का अमृत चाव से- ले ले स्वाद पिया भावो ने ॥
'वर्धा' से चल आये जव वे- अपने प्रिय 'पवनार' ग्राम मे-
वन्दी वने 'विनोवा भावे', सूरज वन्दी हुए शाम मे ॥

खाली धरती पर अगारे- किलस किलस कर वुझ जाते हैं ।
जो लोहे के चने चवाते- वज्र उन्ही से थर्राते हैं ॥
सत्याग्रह के लिये दूसरे- देशमुकुट थे वीर 'जवाहर' ।
पर न 'प्रयाग' तीर्थ तक पहुँचे, 'छिडकी' ही मे पकडा आकर ॥

अँगरेजो ने सजा सुनाई- उनको चार वर्प कारा की ।
पर न वेग रुकता सागर का, गति न कभी रुकती धारा की ॥
निर्मल गगाजल चलता था, सुरभि उडाता पवन वह चला ।
भारत की सोई जनता मे- सत्याग्रह से जीवन उछला ॥

नेताओ को पकड पकड कर- लोहे के पिँजरो मे डाला ।
कारागृह ने नेताओ को- पहिनाई फूलो की माला ॥
ज्वाला मे जितना घी डालो- उतनी ही प्रचण्ड होती है ।
मानवता की चरण-चाप सुन- पशुता खण्ड खण्ड होती है ॥

कुशल नीति से मधुर प्रीति से- बापू करते थे सचालन ।
भारत का जन जन करता था- बापू की आज्ञा का पालन ॥
गाँधी जी जिसको कहते थे- वही वीर सत्याग्रह करता ।
कायरता डरती मरती है, वीर नही शस्त्रो से मरता ॥

हौले हौले सत्याग्रह हो, क्रोध न आये, आग न दहके ।
होश रहे, आवेश न उमडे, गिरे न कोई और न वहके ॥
अपनी इच्छा से कोई भी- कही न कोई पैर बढाये ।
मै ही जिसका नाम पुकारूँ- झण्डा केवल वही उठाये ॥

काम न सत्यवादियो का है- हिसा, हत्या, आग लगाना ।
आग लगाना बहुत सरल है, बहुत कठिन है आग बुझाना ॥
शुद्ध अहिसावादी वह है- जो पीडा मे सुख वन जाये ।
गोता मार कूल पर निकले, काँटो मे भी फूल खिलाये ॥

सँभल सँभल कर नही चले यदि- तो यह नाव डूब जायेगी ।
मार काट झझट झगडो से- मजिल हाथ नही आयेगी ॥
यदि तुमने हुल्लडबाजी की- मैं सत्याग्रह बन्द करूँगा ।
अनुचित करूँ न होने दूँगा, दुष्कर्मो से सदा डरूँगा ॥

'चौरी चौरा' का आन्दोलन- भूला नही, याद है मुझको ।
भूल मान लेता हूँ अपनी, भूलो का विषाद है मुझको ॥
सूई से काँटा निकाल लो, पैर फावडे से कट जाता ।
हुल्लड से होली जलती है, अनुशासन से जीवन आता ॥

आग जली साम्राज्यवाद की, बरस रहे हैं हम पर शोले ।
और 'एमरी' भारत-मन्त्री- इतने पर भी कडुवे बोले ॥
दुःख हुआ उनकी बातो से, मुँह से मीठा जहर उडेला ।
'कॉमन सभा' 'एमरी' की है- जहाँ श्वेत साँपो का मेला ॥

हाल न देख रहे भारत का, बन्दी हिन्दुस्तान हमारा।
सुनो 'एमरी'! कान खोल कर- इससे होगा पतन तुम्हारा ॥
हिन्दू मुस्लिम झगडे होते, कैसा यह भारत पर शासन ?
राष्ट्र हमारा हमको दे दो, दूर हटाओ अपना आसन ॥

राज्य कर रहे इतने दिन से, फिर भी 'ढाके' मे गुण्डापन।
उत्तर दो किस लिये रात है, कहाँ गया भारत का सावन ?
क्यो गठकटे चोर के साथी, गुड देकर शोषण करते हैं।
भूखे नगे ग्रामीणो को- फौजो मे भरती भरते हैं ॥

'बीस' रुपय मे सिर कटवाने- वे न स्वयम् इच्छा से जाते।
धधक रही पेटो की ज्वाला, महायुद्ध मे सिर कटवाते ॥
और 'एमरी' जो कहते हैं- भारत मे हैं अलग अलग दल।
यही फूट की नीति तुम्हारी- ये दल अँगरेजो के छल बल ॥

फूट डाल कर शासन करना- यही रहा आदर्श तुम्हारा।
जब तक तुम हो मिट न सकेगा- हिन्दू मुस्लिम भेद हमारा ॥
यदि अँगरेज चले जाये तो- हम आपस मे मिल जायेगे।
कांटे अगर न बीधे हमको- फूल यहाँ पर खिल जायेगे ॥

यदि यह व्याध छोड दे भारत, मुक्त गगन मे यदि खग डोले-
मैं दावे से कह सकता हूँ- फिर न यहाँ बरसेगे शोले ॥
यह घर का झगडा है, इसमे- ब्रिटिश राजनीतिज्ञ पडे क्यो ?
फूल सुगन्ध उडाने निकले, मार्ग रोक कर शूल खडे क्यो ?

पर अँगरेज डोलते भ्रम मे, सच्चाई का गला घोटते।
हिन्दुस्तान गुलाम बनाकर- हाड चबाते, मास नोचते ॥
दुनिया देख रही है तुमने- भारत का क्या हाल बनाया।
भाषा खोई, विद्या छीनी, दाने दाने को तरसाया ॥

भारत के भूखे ग्रामो मे- अस्थि पजरो के ढाँचे हैं।
दमडी तक भी पास नही है, खाली चमडी के साँचे हैं ॥
कैसी शिक्षा ? कहाँ सभ्यता ? पूर्ण चाँद वन्दी पावस का ?
कहाँ हमारे हीरे मोती ? यहाँ अँधेरा है मावस का ॥

कागज रहे न, स्याही सूखी, इतने घाव किये छाती पर।
कहाँ हमारी पारस पथरी ? चारो ओर पडे हैं पत्थर ॥
यहाँ शेष छोडा ही क्या है ? लूट लूट 'इँग्लैड' ले गये।
सीधेपन के वदले हमको- कडुवा मीठा जहर दे गये ॥

किन्तु यहाँ की मिट्टी सोना, रत्न उगलती धरती माता।
सरस्वती की कृपा यहाँ है, घाटे से 'दुगना वढ जाता ॥
तोप तानते हुए 'एमरी'- मुँह से धुआँ छोडते वोले-
चारो खाने चित आओगे- देखे नही वमो के गोले ॥

इन दुनालियो की गोली से- हम सत्याग्रह चित कर देगे।
'अगर इशारे पर नाचोगे- तो आगे टुकडे धर देगे ॥
वापू वोले, और अधिक दिन- तुमको यहाँ नही रहना है।
भारत एक स्वतन्त्र राष्ट्र है, कल या परसो मे कहना है ॥

चोर न कोतवाल को डाँटे, हिन्दुस्तान सचेत आज है।
तुमको तनिक न लज्जा आती, लज्जा को आ रही लाज है ॥
कहा 'एमरी' ने उत्तर मे- नाच न आये आँगन टेढा।
आता तुम्हे न विष उतारना, साँप विच्छुओ को आ छेडा ॥

वापू वोले, धन्य धन्य है, खूव कर रहे लीपा पोती।
नौ सौ चूहे खाय विलैया- हज को चली रुमाल भिगोती ॥
जमना गये दास तुम जमना, गगा गये दास तुम गगा।
वह निर्लज्ज नही शरमाता- खडा चौपले पर जो नगा ॥

नमक जलो पर छिडक रहे तुम, कुछ तो रहम करो दुखियो पर ।
शाप दे दिया अगर तडप कर– ठुकराये जाओगे दर दर ॥
परिवर्तन की इस वेला मे– बापू खेल बहुत से खेले ।
नई सृष्टि करते चलते थे, व्यष्टि समष्टि स्वरूप अकेले ॥

सेनानी 'सुभाष बाबू' ने– कहा कि सेवा मुझे बताओ!
बापू बोले, कॉगरेस के– दिये दण्ड को वीर निभाओ!!
लेकिन कर्मवीर को कोई– रोक नही सकता करने से ।
उसको कौन मार सकता है– जो न कभी डरता मरने से ?

स्वतन्त्रता के आन्दोलन मे– अपनी रीति नीति से आया ।
वह सपूत सूरज सा निकला, शूर न शेरो से घबराया ॥
नगर नगर मे, ग्राम ग्राम मे– शहर शहर मे जीवन फूका ।
लक्ष्य एक, पथ अलग अलग था, शेर नही जीवन मे चूका ॥

जाते जहाँ 'सुभाष' वही पर– जनता उमड उमड कर आती ।
कविता सेनानी 'सुभाष' पर– श्रद्धा के दो फूल चढाती ॥
भाषण मे की सिह गर्जना– हमे तोडनी हैं हथकडियाँ ।
भारत माता के मन्दिर मे– सुलग रही भीषण फुलझडियाँ ॥

अँगरेजो का खूनी पजा– आओ करदे अलग शक्ति से ।
देश देश मे दीप जलाये– अपनी प्यारी देशभक्ति से ॥
हिन्दुस्तान छोड दे गोरे, अब न एक क्षण को भी ठहरे ।
प्यारा हिन्दुस्तान हमारा, 'लाल किले' पर झण्डे फहरे ॥

छोडो, हटो दूर अँगरेजो! घर है सागर पार तुम्हारा ।
धधक रहे अगार तुम्हारे, खौल रहा है खून हमारा ॥
व्यापारी बन कर आये थे, हमने दिया अतिथि को आदर ।
वे अँगरेज तुले बैठे हैं– भारत के टुकडे खा खा कर ॥

सावधान ओ राज्य! सँभल तू, मैं भी भीम ब्रह्मचारी हूँ।
मैं काली का अमर उपासक, एक, करोडो को भारी हूँ॥
दाँये हैं हनुमान हमारे, सर पर रामचन्द्र की माया।
मेरे जननायक गाँधी की- चारो ओर छा रही छाया॥

चक्रव्यूह चाहे जितने रच- हम न फँसेगे किसी फाँस मे।
जिनकी पद-रज अमर ज्योति वे- त्रिगुण दीप उड रहे बाँस मे॥
यही तिरगा झण्डा लेकर- मैं तुझ से लडने आता हूँ।
सँभल लुटेरे! सावधान हो! सीमा पर भिडने आता हूँ॥

अरे, ईट के उत्तर मे मैं- पत्थर फेक फेक मारूँगा।
तूने ज्वाला सुलगाई है, मै ज्वाला मे घी डालूँगा॥
दुखियो की आहो से दहकी- चारो ओर भयानक ज्वाला।
उन लपटो में चमक रहा है- भारत माँ का अमर उजाला॥

बुझा बुझा! मैं आग आ रहा, रोक रोक! तूफान आ रहा।
आँख खोल ओ दिन के अन्धे! पकड मुझे, मैं छूट जा रहा॥
मैंने तोड फोड डाली हैं- तेरे बन्धन की हथकडियाँ।
वायु वेग सा आज चला मैं, याद मुझे भी हैं अकटियाँ॥

अरे शिकारी! जाल हटा ले, छोड छोड सोने की चिडिया।
दिखा न अपने और चरित्तर, मिट्टी की चमकीली तिरिया!
पख फडफडा रहा कबूतर, चटख रही पिँजरे की तिलियाँ।
देख! सीकचे गले जा रहे, टूट टूट गिरती हथकडियाँ॥

तूने बन्द किया पिंजरे मे, मैं यह पिँजरा तोड उड रहा।
जिन हाथो ने पकडा मुझको- मैं वे हाथ मरोड उड रहा॥
सारी दुनिया रही देखती, एक दिवस वह हस उड गया।
ताले बन्द रहे कारा के, भारत का अवतस उड गया॥

सुरस्वती ने पख लगाये, वायु वेग से चला निपाही।
धरती से अम्बर मे पहुँचा– पलक मारते ही वह राही॥
जो युगपरिवर्त्तक होते हैं– उन को कौन रोक सकता है ?
जो बढने वाले राही हैं– उन को कौन टोक सकता है ?

कुछ दिन घर के अन्दर रह कर– उसने दाढी मूँछ बढाई।
'कलकत्ते' से बैठ कार मे– एक दिवस निकली परछाई॥
भर 'पठान' का वेश चले वे, चले रेल मे 'वर्द्धवान' से।
साथी एक अगरक्षक था, तीर छूट निकला कमान से॥

पथ मे सेनानी 'सुभाप' को– पुलिस गुप्तचर ने आ घेरा।
फाउण्टेनपेन दे उस को– दूर किया वह घोर अँधेरा॥
एक नोट मे मान गुप्तचर– छोड गया लाखो का हीरा।
बँधे हुए पत्थर पखो से, उडता था पाँखो का हीरा॥

'कृष्ण' पार पहुँचे यमुना के, वन्दी हुए 'कम' के पहरे।
जननायक के सेनानी के– देश देश मे झण्डे लहरे॥
'सुरसा' डायन रही देखती, सिन्धु-पार 'हनुमान' हो गये।
मेरे मृत्युजय की जय हो, पल मे अन्तर्द्धान हो गये॥

खबर छप गई अखबारो मे– उधर गया वह, इधर गया वह।
पुलिस पागलो सी कहती थी– किधर गया वह ? किधर गया वह ?
जिससे पूछो वह कहता था– कहाँ गया वह ? कहाँ गया वह ?
उडा हवा मे, तिरा सिन्धु मे, यहाँ गया वह, वहाँ गया वह॥

दल बादल से गोरे छाये, पर उनको छल गया छलावा।
चला 'जियाउद्दीन' जा रहा, धूलि झोक दे चला भुलावा॥
आँखो के आगे जाता वह, देखो दीपक तले अँधेरा।
गोरे बोले, "पकडो ! पकडो ! ढूँढो ! ढूँढो ! किधर सवेरा ?"

कण कण से यह प्रतिध्वनि निकली– जननायक के सिद्धान्तो मे।
सेनानी 'सुभाष' की जय मे, भारत के सुन्दर प्रान्तो मे॥
जिस भारत को वन्दी करके– तुमने कारागृह मे डाला।
जिसकी स्वतन्त्रता हर तुमने– अपना हृदय दिखाया काला॥

लो स्वतन्त्रता देवी लेने– सेनानी 'सुभाप' निकला है।
मुट्ठी बँधी रही हाथो की, वह मुट्ठी मे से फिसला है॥
जिसको सच्ची लगन लगी वह– तोड तोड लाता है तारे।
जिसे भरोसा उस केवट पर– लगती उसकी नाव किनारे॥

महा सिन्धु मे कूद पडा वह, तैर तैर कर चला नाव सा।
लहर लहर मे गूँज उठा वह– 'रामचरित' के शिवम् भाव सा॥
सीमा पर ललकार रही है– सेनानी की शक्ति भवानी।
मचल रही है, उछल रही है– उसकी उठती हुई जवानी॥

इतिहासो मे अमर रहेगी– सेनानी की अमर कहानी।
ज्योतिर्मय जीवन 'सुभाष' का, गर्ज रहा सागर का पानी॥
दुष्ट दुष्टता से दवता है, जहर जहर से उतरा करता।
कायरता मरती है जग मे, वीर अनाचारो से डरता॥

जव न पिशाच प्रेम से माने– उसे मनाओ खड्ग-धार से।
पर तलवार चले पापो पर– सत्य अहिसा के विचार से॥
'नेता जी' वन गये वहाँ वे, सेना का सगठन कर लिया।
फूस इकट्ठा था दुनिया मे, उसने आ अगार धर दिया॥

खाई फाँदी, पर्वत लाँघे, सागर पार सुभाप आ गया।
चट्टानो पर चढता वढता– महा सिन्धु का पुलिन पा गया॥
उधर राजनीतिज्ञ, इधर थे– गुरु गाँधी के सच्चे चेले।
चौड़े मे शतरज विछी थी, 'चर्चिल' से गाँधी जी खेले॥

'कृपलानी' 'पटेल' 'राजा जी'- देते थे बाजी पर बाज़ी।
बार बार 'लिनलिथगो' खेले- हम से हार हार कर बाज़ी॥
और 'जवाहर लाल' अकेला- सब से जीत रहा था पाला।
स्वर्ग-सुन्दरी 'कमला देवी'- पहिनाने आई जय माला॥

आशीर्वाद स्वर्ग से भेजा- जगमाता 'स्वरूप रानी' ने।
मूक प्रेम से चरण पखारे- कवि की आँखों के पानी ने॥
गंगा की निर्मल धारा सा- मानो सत्याग्रह चलता था।
बापू के डग से हर पग पर- युग युग का दीपक जलता था॥

सत्याग्रह के आन्दोलन में- जब कि 'बड़े दिन' की तिथि आई-
नौ दिन तक सत्याग्रह रोका, सद्भावों की बेल खिलाई॥
अँगरेज़ों के प्रति बापू के- सदा रहे सद्भाव सत्यमय।
वह न किसी का बुरा चाहता- जो हो गया 'राम धुन' में लय॥

वैयक्तिक सत्याग्रह उनका- मृदुल शान्त गति से चलता था।
चहल पहल से झण्डा निकला, जनता पर पखा झलता था॥
सत्याग्रह फैला भारत में, गाँधी जी ने जेलें भर दीं।
अँगरेज़ी तोपों के आगे- हँसते हुए छातियाँ कर दीं॥

सुनते थे जयघोष यही बस- गाँधी जी की जय हो! जय हो!
अमर वीर बढ़ते जाते थे, बढ़ते चरणों में तन्मय हो॥
भावुक देशभक्त दीवाने- नहीं गोलियों से डरते थे।
गाँधी जी की आज्ञा से वे- गा गा कर जेलें भरते थे॥

जेलों में डण्ठल की भूजी- बड़े चाव से खाते थे वे।
कच्ची पक्की सात रोटियाँ- बड़े प्रेम से पाते थे वे॥
बटते बान, चलाते कोल्हू, पीते थे आँखों का आसव।
बड़े भाव से भजते थे वे- बन्दीगृह में 'रघुपति राघव'॥

चक्की पीस पीस कहते थे- महाक्रान्ति हो ! महाक्रान्ति हो !
और क्रान्ति के बाद विश्व मे-अमर शान्ति हो ! अमर शान्ति हो ! !
ऊँचा उडता रहे शान से- विजयी विश्व तिरगा प्यारा ।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा ।।

कितनो ही ने तडप तडप कर- बन्दीगृह में प्राण दे दिये ।
और उसी क्षण उन वीरो ने- जन जन मे अवतार ले लिये ।।
तार किसी को मिला जेल मे- माँ मर गई, मर गया बेटा ।
और किसी को मिली सूचना- दुनिया ने सब प्यार समेटा ।।

पत्र किसी को मिला जेल मे- तेरी निधि हो गई पराई ।
कवि यह मूक रुदन सुनता था- भगिनी भूल न जाना भाई !
श्वासो मे उड चली वेदना, उड समीर मे मँडराती थी ।
दु खो से धरती हिलती थी, ठण्डी छाती थर्राती थी ।।

फूलो सा तन किन्तु देवियाँ- कम्बल ओढ ओढ सोती थी ।
कितनी ही पति के वियोग मे- घर पर पडी पडी रोती थी ।।
काँप गये अँगरेज पाप से, धीरे धीरे लगे छोडने ।
कुछ कुछ मीठी भाषा बोले, फिर से गाड़ी लगे जोडने ।।

भारत छोडा नही उन्होंने, कारागृह से बन्दी छोडे ।
छोडे देशभक्त कारा से, मृदु मानस के फूल निचोडे ।।
कोई पिंजरे से छुटते ही- पास प्रेयसी के जब आया-
चिता जल चुकी थी किस्मत की, रोता ढेर राख का पाया ।।

मिट्टी खिसक गई तलवो की, धरती हिली हिली दीवारे ।
जहाँ नीड था भावुक खग का- गिरी पडी थी वे मीनारे ।।
जिन नयनो मे मन बन्दी था- उनमे जलती देखी ज्वाला ।
जिसके दानो मे पूजा थी- टूट चुकी थी अब वह माला ।।

जहाँ प्यार से फूल चढाये– वहाँ भयानक शूल गडे थे।
जहाँ सुधा बरसा करता था– वहाँ जले अगार पडे थे ॥
जहाँ पुजारिन कहती थी यह– मैं उपासिका, तुम कवि मेरे।
मेरे श्वासो मे तुम ही हो, तुम ही मेरे स्वर्ण-सवेरे ॥

मैं हूँ भक्ति और तुम ईश्वर, मैं पकज, तुम दिव्य दिवाकर।
मैं कविता, तुम कवि हो मेरे, मैं लहरी, तुम सिन्धु सुधाकर ॥
किन्तु लहर का नाता ही क्या ! आती और चली जाती है।
सिन्धु-शक्ति से वही लहर फिर– प्रतिपल तट से टकराती है ॥

गाती सागर के जीवन मे, किन्तु न ज्वाला बुझ पाती है।
जल मे भी ज्वाला होती है, आँसू मे ज्वाला गाती है ॥
वह वियोग की ज्वाला जिसको– दुनिया कहती हे वडवानल।
सिन्धु-लहरियो ! मत लहराओ, गिरते हैं ये आँसू गल गल ॥

छूट 'जवाहर लाल' जेल से– भाव भरे जलसे मे वोले।
अभी वहुत मजिल वाकी है, अभी न माँ के वन्धन खोले ॥
अभी न ये तूफान हटे हें, अभी पार करना है सागर।
हमे नई रचना करनी हे– स्वतन्त्रता देवी को पाकर ॥

छोटे पिँजरे से छुट कर मैं– आज वडे पिँजरे मे आया।
अभी उन्हो के पजे मे हूँ, अभी न मैं स्वाधीन कहाया ॥
भारत वडा जेलखाना है, वँधे हुए हैं पैर यहाँ भी।
अभी गुलाम कहाते हैं हम– जाते हैं जिस ओर जहाँ भी ॥

हिंसा दुख विनाश घृणा की– इस दुनिया मे चहल पहल है।
जकडे पडे वेडियो मे हम, सर पर उनका राजमहल है ॥
काँगरेस के प्रस्तावो पर– हम दृढता से चलते जाये।
गाँधी जी के पदचिह्नो पर– मजिल मजिल वढते जाये ॥

गाँधी जी बोले कि 'एमरी'- घाव हमारे हरे कर रहे।
जो पहिले ही जले पड़े हैं- वे उस विष से और मर रहे॥
राज्य बोलता भोपू मे से- भारत अँगरेजो का साथी।
भारत की जवान पर ताले, छाती पर बैठा है हाथी॥

काँगरेस को कहते हैं वे- जनता की आवाज नही है।
झूठ कह रहे हैं दुनिया मे- बेजवान नाराज नही है॥
भर्ती खूब ठाठ से होती, चन्दा हमें खूब मिलता है।
कहनेवाले! बोल सँभल कर, तेरा राजमहल हिलता है॥

दमनचक्र से अन्न लूट कर- भूखों को भर्ती करते हो।
चन्दा दमनचक्र से लेते, पाप कर्म से कव डरते हो?
बाँध बाँध पेटो से पट्टी- तुमको 'वारफण्ड' देते हैं।
शोषित, सज्ञाहीन बिचारे- गिर गिर ठोकर खा लेते हैं॥

जनता तुम्हे एक कौडी भी- चन्दा नही हृदय से देती।
दिखा दिखा बन्दूक डरा कर- पुलिस विचारो से ले लेती॥
लूट चुके तुम वहुत आज तक, भारत मे छोडा ही क्या है।
तोड दिया भारत माँ का मन, कहते हो तोडा ही क्या है?

जहाँ दूध घी की नदियाँ थी- वहाँ आज आँसू बहते हैं।
जहाँ कि मानवता रहती थी- वहाँ चोर डाकू रहते हैं॥
वह भी युग था जव भारत मे- धडियो के घी विकते देखे।
अब गउओ के मास यहाँ पर- सीक सीक पर सिकते देखे॥

वह भी युग था जव गउओ को- बन बन 'कृष्ण' चराया करते।
बच्चे रोटी पर मक्खन रख- जव घर घर मे खाया करते॥
अव वह भी युग देख रहे हैं- घृत जब नही देखने तक को।
दर्शन तक को दूध नही अव, फोड रहे खाली वर्तन को॥

असन्तोष का अन्त नही है, दीपक अन्धकार देने है।
काँटो मे खिलने वाले ही– विंध विंध विजय-हार देते है॥
धरती ही मे शक्ति शेष है, सूरज ही मे शेष उजाला।
जननायक! ठहरो, तुम मे भी– देख रहा है देश उजाला॥

ज्योतिर्मय! जीवन बन जाओ।
अन्धकार को ज्योति बनाओ॥
आओ, तुम तन मन मे आओ!
गाओ, तुम जन जन मे गाओ!!

चतुर्विंश सर्ग

आन्दोलन

बीन जहॉ बजती रस-रजित,
प्रेम भरी झनकार जहॉ है।
आग वही पर तोल रही जल,
सचित भावुक प्यार जहाँ है ॥
चातक मोर मराल जहॉ पर,
मेघ मयकित पॉख जहाँ हैं।
रास जहॉ, मधुमास जहाँ अलि!
वे रस पूरित आँख वहॉ हैं ॥

'शान्ति निकेतन' मे जननायक–
या कि स्वय भगवान पधारे।
स्वागत मे रत हैं धरती पर–
नीद लुटा कर चॉद सितारे ॥
पख लगा कविता उडती मृदु,
कोयल बोल सितार बजाती।
केसर की मधु गन्ध बिछा कर–
कौन तृषाकुल प्यास जगाती ॥

कवि रवीन्द्र की मधुर कल्पना– जननायक की जय जय बोली।
'शान्ति निकेतन' मे सुषमा ने– मली भाल पर निर्मल रोली ॥
फूलो पर मधुकर गाते थे, गूँज रही थी गीतो मे लय।
अर्घ्य चढा कविता कहती थी– मेरे जननायक की जय जय ॥

कुछ पल मुक्त कार्य से रह कर– 'वर्धा' चले गये जननायक।
स्वागत मे हरियाली बोली– पतझड मे वसन्त जगपालक।।
हरी भरी खेतियाँ गाँव मे– झूम झूम कर हृदय झुलाती।
बीजो पर बदलियॉ बरस कर– जग की जलती आग बुझाती।।

हरियाली का स्वागत करता– गा गा गीत चरस पर माली।
सरसो के पीले फूलो मे– बिखर रही थी मधुर उजाली।।
मानो धरती ने स्वागत मे– फूलो के पावडे बिछाये।
तरुओ ने श्रद्धा से झुक झुक– जननायक पर पत्र चढाये।।

कभी गाँव मे चर्खा काता, कभी कातते थे वे तकली।
कृपको की प्यासी खेती पर– छाई थी मदमाती बदली।।
बदली ने घावो को धोया, बदली आई, दुनिया बदली।
उस युगस्रष्टा के दर्शन को– जय श्री मचली जनता मचली।।

जाते जहाँ चरण बापू के– जनता उमड उमड कर आती।
जहाँ कही पल भर को बैठे– बदली घुमड घुमड कर गाती।।
बाँये 'बा' माता चलती थी, झकृत वीणा के तारो सी।
झरते झरनो सी रुनझुन सी, रिमझिम रिमझिम झनकारो सी।।

वे थे त्याग, तपस्या थी वह, युगाधार वे, वह थी रचना।
वे थे चाँद, चाँदनी थी वह, वे थे राम, और वह रटना।।
बापू भाव और वह भाषा, वे साहित्य और वह शैली।
अपने जीवन के झरनो से– धोते थे वे दुनिया मैली।।

मेरे विश्व-वन्द्य बापू की– गॉव गॉव मे लहरे लहरी।
राष्ट्रपिता के पद-चिह्नो से– चारो ओर ध्वजाये फहरी।।
रचनात्मक पथ पर चलती थी– जननायक की मधुर मण्डली।
यह वह घोर विनाश काल था– मची हुई थी जबकि खलबली।।

पग-पकज सूरज चूम रहा,
परिवर्त्तन के घन घूम रहे।
बटिया पर दीप धरा किसने ?
चरणामृत पा दृग झूम रहे ॥
किस केसर का यह रग सखी !
जिससे वसुधा पल मे बदली।
अलि ! अजन खजन से दृग पा—
छलकी पुतली जल मे बदली ॥

महायुद्ध के जलते बादल— गर्ज रहे थे, बरस रहे थे।
धधक रही थी आग, और हम— स्वतन्त्रता को तरस रहे थे ॥
मुँह फाडे 'जापान' खडा था, दाँत निकाले 'इटली' वाला।
चेत रही थी रण की चण्डी, धधक रही थी दुर्द्धर ज्वाला ॥

यौवन में मदमस्त 'रूस' पर— जर्मन ने कर दिया आक्रमण।
मदमाते साम्राज्यवाद मे— लपटे दहक रही थी क्षण क्षण ॥
धन्य धन्य वीरता 'रूस' की, बज्र बन गया जो मोर्चे पर।
लडता रहा 'जर्मनो' से जो— सीनो की दीवार बना कर ॥

भौगोलिक अध्ययन बडा था, साहस उनको जिता रहा था।
'नीपर पैटरोस' बिजली का— बाँध युद्ध मे टूट बहा था ॥
सब से बडा बाँध बिजली का— 'रूस' तोड़ पीछे हट जाता।
अपनी चोट लगा देता था, चोट नही 'जर्मन' की खाता ॥

'फ्रास' 'मिस्र' 'पैरिस' 'रशिया' मे— लिखी खून से नई कहानी।
बडे बडे भारी मोर्चे थे, 'जर्मन' केसर से था पानी ॥
यह है 'लेनिनग्राड' जहाँ पर— घर घर मे घमसान हुआ था।
यह है 'स्टालिनग्राड' जहाँ पर— वीरो का बलिदान हुआ था ॥

उस दृढतर मोर्चे पर आई– याद मुझे 'हल्दीघाटी' की।
वहाँ वीरता लडती देखी– उसी शान, उस परिपाटी की॥
इच इच पर, ईंट ईंट पर– लडते देखे वीर सिपाही।
ईंट वचा लेते थे अपनी– छाती पर कर सहन तवाही॥

एक नया 'चित्तौड दुर्ग' था, 'लेनिन' का कोडा लडता था।
'हिटलर' के भारी हाथी से– 'स्टालिन' का घोडा लडता था॥
छिते कारतूसो से सीने, खडे रहे पर सीना ताने।
वह अद्भुत वीरता वहाँ की– जहाँ खून मे चले नहाने॥

विजली चमक चमक गिरती थी, क्षात्र-धर्म हुकार रहा था।
विद्युत मे वीरत्व गर्ज कर– मोर्चे पर ललकार रहा था॥
रक्तिम चादर तनी हुई थी, मानो भूखी खडी भवानी।
खून वरसता था धरती पर, धरती माँग रही थी पानी॥

'लेनिन' के निर्माण भवन पर– 'हिटलर' के वम वरस रहे थे।
धरती के सुन्दर महलो पर– गोले धम धम वरस रहे थे॥
यह लो उस रशियन सेना पर– फौजे जर्मन वाली झपटी।
वायुयान छाये अम्वर मे, पडुव्वियाँ निराली झपटी॥

अँधाधुन्ध गोले वरसाते, खचपच खचपच काँय काँय थी।
दाँये वाँये, आगे पीछे, ऊपर नीचे धाँय धाँय थी॥
तूफानो के प्रवल थपेडे– चट्टानो से टकराते थे।
पर्वत हिलते नही हवा से, ईंटे रोडे उड जाते थे॥

किन्तु आज भी वही पुराना– राग अलाप रहे थे गोरे।
भारत ने स्वतन्त्रता माँगी, दिये उन्होने उत्तर कोरे॥
कुछ दिन वाद 'क्रिप्स' लन्दन से– गुड्डा एक वनाकर लाये।
वोले, लो यह है स्वतन्त्रता, हम स्वतन्त्रता देने आये॥

अँगरेजों की राजसभा ने– भेजी है सौगात तुम्हे यह।
बापू बोले, दया करो तुम, हम आँसू मे बहुत चुके बह॥
बालक नही रहा अब भारत, उसे न कोई बहका सकता।
आँखो के पानी के आगे– आग न कोई दहका सकता॥

यहाँ चैक वह लाये जिसका, कब होगा भुगतान न जाने।
पत्थर पर पत्तर मढकर तुम, आये हो सोना भुगताने॥
आज सगाई की है तुमने, दुलहन वर्षो बाद मिलेगी।
यह कागज की कली तुम्हारी– आगे जाकर नही खिलेगी॥

कल का किसे पता क्या होगा, कर्ज हमारा अब भुगताओ!
चैक आज की तिथि का ही दो, आगे की तारीख हटाओ!!
समय आज है, कल के ऊपर– मुझे नही विश्वास तुम्हारा।
उषा मुक्त होगी ही अब तो, देखो डूब रहा है तारा॥

उद्यान सूखे, तरु रो रहे थे।
तडाग सूखे, घन सो रहे थे॥
बाँधे हुए आग किसी व्यथा की।
किसान गाता, रवि रो रहे थे॥

आँसू जले से बहते दृगो से।
प्रभात मे थी रजनी-उदासी॥
रोता रहा मैं, हँसते रहे वे।
देखो! उषा मे ढलता सितारा॥

निशान बोला, पथ टेरता है।
आओ! कही से ध्वनि आ रही है॥
बापू सभी के पथ-दीप से हैं।
पीडा सभी की सुनते विधाता॥

पीडा धरा की जलती चिता सी।
मसान जैसे भय छा रहे क्यो ?
रोता नही चाँद, कभी न रोओ।
मनुष्य मे है मन का उजाला ॥

राम-रूप पा राम-भक्त को— कवि के बहते आँसू बोले—
बापू ! सुनो और तुम देखो— मेरे अन्तस्तल के शोले ॥
शान्ति नही मेरे जीवन मे, दहक रहे नभ मे अगारे।
मानस का प्रतिविम्ब देख तू, काव्य-गगन के ओ ध्रुव तारे !

मुसकाते ही तोड ले गये, फूल विचारा बोल न पाया।
जड चेतन का हँसना रोना— अपनी आँखो मे भर लाया ॥

मुझे डाह ने रोका पर मैं— सीधा चलता रहा राह पर।
चाह बना फिर तृप्ति बन गया— मन से निकली हुई आह पर ॥
राजमहल से झोपडियो तक— आँसू चुगे, जलाये दीपक।
मैंने रोज जलाये लेकिन— जग ने रोज बुझाये दीपक ॥

मन मे मन की व्यथा छिपाये— जग को सुधा पिलाने आया।
मुसकाते ही तोड ले गये, फूल विचारा बोल न पाया ॥

राम ! भिखारी भीख माँग कर— भर लेता है पेट ग्राम को।
पर जब जन को भूख सताती— कर लेता है याद राम को ॥

नत मस्तक हो, हाथ जोड कर— सब का सुख माँगा करता है।
डरता नही किसी से भी कवि, कोप तुम्हारे से डरता है ॥
राम ! कहो, यह क्रोध तुम्हारा— क्यो कवि की दुनिया पर छाया ?
पर तुम सब अच्छा करते हो, अपरम्पार तुम्हारी माया ॥

राम ! तुम्हारी करी नौकरी, कैसे जाऊँ और काम को ?
राम ! भिखारी भीख माँग कर— भर लेता है पेट ग्राम को ॥

राम ! जलता और ढलता सूर्य हूँ मैं ।
राम ! बिजली सी तड़प हूँ, मेघ हूँ मैं ॥

प्रेम से पिघला हुआ पाषाण हूँ मैं ।
भूल से भटका हुआ कंकाल हूँ मैं ॥
दृगो से बहती हुई जलधार हूँ मैं ।
बीच मे टूटी हुई पतवार हूँ मैं ॥

राम ! जलता और ढलता सूर्य हूँ मैं ।
राम ! बिजली सी तडप हूँ, मेघ हूँ मैं ॥

बाल विधवा के हृदय की आग हूँ मैं ।
मूक अन्तर की सतत पहिचान हूँ मैं ॥
पैर से कुचला हुआ अभिमान हूँ मैं ।
क्रान्ति के पथ पर खड़ा षड्यन्त्र हूँ मैं ॥

राम ! जलता और ढलता सूर्य हूँ मैं ।
राम ! बिजली सी तडप हूँ, मेघ हूँ मैं ॥

राम ! मैं अन्धे भिखारी का हृदय हूँ ।
राम ! मैं काली घटाओ का निलय हूँ ॥
राम ! उठती अर्थियो का रुदन हूँ मैं ।
राम ! जलती हड्डियो का चित्र हूँ मैं ॥

राम ! जलता और ढलता सूर्य हूँ मैं ।
राम ! बिजली सी तडप हूँ, मेघ हूँ मैं ॥

फूल था, शृङ्गार था, पर शूल हूँ अब ।
अर्चना था, पर घिनौना कीट हूँ अब ॥
प्यार था, सम्मान था, अपमान हूँ अब ।
लक्ष्य से फिरती हुई तकदीर हूँ मैं ॥

राम! जलता और ढलता सूर्य हूँ मैं।
राम! बिजली सी तडप हूँ, मेघ हूँ मैं॥

राम! आशा से निराशा गर्त मे हूँ।
राम! सब निर्दोष, दोषी आज मै हूँ॥
राम! श्रद्धा से दया का मैं भिखारी।
राम! मैं मँझधार हूँ, पतवार भी हूँ॥

राम! जलता और ढलता सूर्य हूँ मैं।
राम! बिजली सी तडप हूँ, मेघ हूँ मैं॥

राम! जलता और बुझता दीप हूँ मैं।
राम! मिट्टी का सुनहरी रूप हूँ मैं॥

एक दिन जिसमे भरा था स्नेह जग ने।
एक दिन जी भर जलाया जिसे जग ने॥
एक दिन जो ज्योति था जग के हृदय की।
फूक से करा वह बुझाया दीप जग ने॥

राम! जलता और बुझता दीप हूँ मैं।
राम! मिट्टी का सुनहरी रूप हूँ मैं॥

राम! मैं खँडहर जहाँ दीपक नही जलता।
राम! मै ऊसर जहाँ आँसू नही फलता॥

एक दिन सुख ज्योति से मै जगमगाता था।
एक दिन मधु बाँसुरी से स्वर मिलाता था॥
एक दिन शृङ्गार पर अधिकार था मेरा।
एक दिन हर दृष्टि मे सत्कार था मेरा॥

आज मेरी हड्डियाँ जग रौंदता चलता।
राम! मैं खँडहर जहाँ दीपक नही जलता॥

राम! आज मैं बीच भँवर मे चक्कर काट रहा हूँ।
दुखिया आँखो की सीपी से सागर पाट रहा हूँ॥

लहरो मे धक्का दे नौका चली गई उस तट पर।
मैं तूफानी जल प्रवाह मे बहता नीचे ऊपर॥
पानी के बुल्ले सा हूँ मैं अभी डूब जाऊँगा।
लेकिन मरता मरता भी मैं गीत यही गाऊँगा—

अक्षर अक्षर मे दुनिया को आँसू बाट रहा हूँ।
दुखिया आँखो की सीपी से सागर पाट रहा हूँ॥

राम ! बताओ !
कविता का वरदान दिया है, जलने का अभिशाप दिया क्यो ?
धनिको की दुनिया मे कवि को दुखियो का सत्कार दिया क्यो ?
प्रेम नही देना था प्रभु! यदि प्यासा हृदय दिया ही क्यो था ?
किसी वियोगी की मिट्टी से क्या मेरा निर्माण किया है ?
पूर्व जन्म मे क्या मैंने भी मिले हुए दो मन तोडे हैं ?
या कवियो की विरह-व्यथा यह बोल रही मेरे अन्तर से ?
आशावादी दुनिया मे क्यो कवि के लिये निराशा छोडी ?
आशा के प्रकाश मे लाकर क्यो नैराश्य गर्त में डाला ?
जो आँखो से बुझे न रो रो क्यो इतने अगार भर दिये ?
राम ! बताओ !

जलता जलता ढलता ढलता—
आँखो से पानी बरसाता—
पग पग पर दुलराया जाकर—
पग पग पर ठुकराया जाकर—
एक दिवस जा पहुँचा था मैं—
उस मजिल पर, जिस मजिल पर—

सोचा था आराम मिलेगा,
जीवन मे कुछ शान्ति मिलेगी।

किन्तु वहाँ भी दुख उठाये।
क्लेश और सघर्ष विश्व के–
एक साथ मुझ पर चढ आये।
अपने भी हो गये पराये।
कही नही सुख मिलता जग मे,
सुख तो केवल राम नाम मे।

अम्बर मे उड, सागर मे घुस–
ऊँचे नीचे शैलो पर चल–
मैने वह पथ ढूँढ निकाला–
जिस पर चल दो मन मिल जाते,
जिस पर पत्थर दिल हिल जाते,
जिस पर भाग्य खिला करता है,
जिस पर प्रेम मिला करता है।
पर फुकार मारता देखा–
उस पथ पर भी विषधर काला।

जग के गीले अरमानो पर– मै प्यार चढा कर हार गया।
पर पार न जा पाई दुनिया, मँझधार तैर उस पार गया॥

मैने तन मन से पूजा की, पर विश्व न हो पाया प्रसन्न।
धनवानो को बोरियाँ मिले, भूखो को मिलता नही अन्न॥
मिल जाते मोती बिन माँगे, माँगे से मिलती भीख नही।
क्यो राम! तुम्हारे कानो तक– जाती दुखियो की चीख नही?

क्यो रोना जीवन बना दिया, क्यो हँसने का अधिकार गया?
जग के गीले अरमानो पर– मै प्यार चढा कर हार गया॥

राम ! हिमालय बनी प्रेम से– चचल हरिणी हवा हँसी सी ।
पर रो रही प्रेम पिँजरे मे– भावुक कवि की कलम फँसी सी ॥

वहुत हिलाया लहरो ने पर– हिला नही कवि किसी लहर से ।
तोड गया हिमगिरि का अन्तर– आ परदेशी किसी शहर से ॥
निर्मम दुनिया समय पडे पर– आँख दिखाती है रह रह कर ।
कैसे फिर तसवीर न खीचे– आँखो के आँसू बह बह कर ॥

मृदुल बन्धनो मे बन्दी मन, तडप रही है हँसी फँसी सी ।
राम ! हिमालय बनी प्रेम से– चचल हरिणी हवा हँसी सी ॥

प्रिय को पश्चात्ताप हुआ है– इस निर्धन से प्यार किया क्यो ?
मे रह रह कर सोच रहा हूँ– अस्थिर का अधिकार लिया क्यो ?

निर्जनता मे नीड बना कर– एकाकी गाता रहता मैं ।
सूखी दुखी तृपित धरती पर– निर्मल निर्झर सा बहता मैं ॥
किन्तु प्यार की बीती बाते– जीवन मे विष-वृक्ष वो गई ।
प्रथम मिलन की मनहर घडियाँ– अब जल जल कर राख हो गई ॥

मै प्रतिपल यह सोच रहा हूँ– खिले फूल सा हृदय दिया क्यो ?
प्रिय को पश्चात्ताप हुआ है– इस निर्धन से प्यार किया क्यो ?

नयन मिलेगे, पर उन निष्ठुर– नयनो से तुम प्यार न करना !
उलझ रूप के आकर्षण मे– जीवन भर आँखे मत भरना !!

मिल जाते हे नयन, किन्तु मन– पत्थर हो जाया करते हे ।
ये वे तरु, लग सुमन जहाँ पर– पल पल मुरझाया करते है ॥
ये मदिरा के प्याले, इन मे– मानव खो जाया करते हैं ।
इनमे वह रस जिसको पी कर– प्राणी सो जाया करते हे ॥

मुसकाती आँखो मे वँध कर– आँखो पर अगार न धरना !
नयन मिलेगे, पर उन निष्ठुर– नयनो से तुम प्यार न करना !!

मधुऋतु सी मधु मृदुल सुन्दरी– नागिन सी अठखेली भी है।
जीवन की सुलझन है लेकिन– उलझी हुई पहेली भी है॥
श्रद्धा शक्ति भक्ति है लेकिन– रग बिरगी जाली भी है।
फूलो सी कोमल सुकुमारी– काँटो वाली डाली भी है॥

मुझे आँसुओ मे बहने दो!
अपने मन की बात मुझे तुम– अपने ही मन से कहने दो!!
पीडा देख हँसेगी दुनिया, मुझे कहेगी यह पागल है।
मेरे घावो से खेलेगी, कौन कहेगा यह घायल है?
यह दुखो का जीवन, इसको– घुलते घुलते घुल जाने दो!
जल जाने दो दीप शलभ पर, साथ सूर्य के ढल जाने दो!!
सीकर ओठ और विष पीकर– आज मुझे सब कुछ सहने दो!
अपने मन की बात मुझे तुम– अपने ही मन से कहने दो!!
मुझे आँसुओ मे बहने दो!!

राम! पत्थर से अगर मैं प्यार करता–
देखता प्रतिबिम्ब अपने ही हृदय का,
ठोकरो तक मे जमा रहता सदा वह,
राम! प्रतिपल चूमता वह चरण तेरे,
राम! पत्थर से अगर मै प्यार करता।

बादल को दोषी कहते हो!
लेकर शशि से सुधा, उसे दुतकार रहे हो।
पीकर प्रेमामृत कवि को फटकार रहे हो॥
लूट फूल का सौरभ अब तुम कुचल रहे हो।
चाँद चूम कर चाँद! चाँद को मचल रहे हो॥
मन मे मूर्त्त बसे रहते हो!
बादल को दोषी कहते हो!

प्रेम-जलद वहता सागर है।

दुनिया तट तक पहुँची लेकिन— घुस कर गोता मार न पाई।
साथ नाव को भी ले डूबी, तैर तरणि सी पार न आई॥
खडी रह गई सहमी सी वह— सुनते ही सागर की गर्जन।
थर थर काँप गई लहरो से, सुन्न हो गई मन की धडकन॥

सुख की सीमा सगम पर है।
प्रेम-जलद वहता सागर है॥

'रघुपति राघव !' खोलो सकल !
आया निर्वल, आया दुर्वल !
खोलो सकल ! खोलो सकल !
मन चचल, आँखो मे छल छल।
आया हूँ काँटो पर चल चल,
खोलो सकल ! खोलो सकल !
नोच रहे पीडाओ के वल !
'रघुपति राघव !' खोलो सकल !

लगा ली तुमने भी सकल।
आज मैं विपदाओ से घिरा,
आज मैं चोटी पर से गिरा।
हिलाये जाता फिर भी पूँछ,
राम ! किस दर पर मेरी पूछ ?
प्रेम मे लुटा दिया सम्मान,
करो अव तुम ही मेरा ध्यान।
कौन है तुम से निर्मल राम !
कौन है मुझसे निर्वल राम !
प्रीति ने वना दिया पागल।
खोल दो जल्दी से सकल, द्वार पर खडा हुआ दुर्वल॥

तब मिले राम जब लाग चली।
तब याद किया जब चिता जली ॥
तब याद किया जब हृदय जला।
तब याद किया जब सूर्य ढला ॥

तब याद किया जब शूल मिले।
तब याद किया जब पैर छिले ॥
तब याद किया जब राख रही।
तब याद किया जब राख बही ॥

तब याद किया जब याद रही।
तब याद किया जब आग बही ॥
तब याद किया जब प्यास जली।
या तब जब यह दुनिया हँस ली ॥

राम ! पी गया गरल घूँट, विष दूर करो जल्दी !
सुधा से विश्व भरो जल्दी !!

कुडली सीधी कर जाओ !
चाँद से जीवन वरसाओ !
रोग तन मन का करदो ठीक।
यही है राम नाम की लीक ॥

राम ! लेखनी अश्रु बहाती, गोद भरो जल्दी !
राम ! पी गया गरल घूँट, विष दूर करो जल्दी !
सुधा से विश्व भरो जल्दी !!

कवि के दग्ध बुझे मानस पर– अमृत सन्त-वाणी से बरसा।
काव्य-सृष्टि के प्राण प्रजापति ! तू क्यो मृगतृष्णा मे तरसा ?
नश्वर की उपासना तज कवि ! अमर अनश्वर की पूजा कर !
समय बदल दे, गीता गादे, शख बजादे बलिवेदी पर ॥

तेरी अमर साधना पर कवि ! फूल खिलेंगे, दीप जलेंगे।
तेरी कविता के इगित पर– कफन बाँध कर वीर चलेंगे ॥
नूपुर की झनकार छोड दे, अब हाथो मे शख उठाले।
नख शिख वर्णन छोड आज कवि ! क्रान्ति क्रान्ति की गीता गाले ॥

विरह-अग्नि से फूँक गुलामी, बन्धन तोड, स्वतन्त्र देश कर।
तज सूरज ! रातो की कारा, आग उगल दे हथकडियो पर ॥
अगारो मे दया नही है, आँखो का पानी न दिखाओ।
फूलो के बन्दी न बनो तुम, दुखो के काँटे न बिछाओ ॥

सागर मे आँसू को डालो, आँसू सागर बन जायेगा।
जिस दिन पीडा सूर्य बनेगी, उस दिन पकज मुसकायेगा ॥
ओ पिँजरे के पक्षी गायक ! गाओ गीत जोर से गाओ !
बन्धन टूट टूट गिर जाये, कोई ऐसा राग सुनाओ !!

जब तक देश गुलाम तुम्हारा, तब तक अपनी पीडा भूलो।
फूलो के झूले से उतरो, फाँसी के तख्तो पर झूलो ॥
उठो देश के वीर सपूतो ! यही समय है देशभक्ति का।
आज तुम्हे अमरत्व प्राप्त है– देशभक्ति की अमर शक्ति का ॥

स्वतन्त्रता के लिये देश को– आज नया बलिदान चाहिये !
रोज रोज यह समय न आता, दान चाहिये ! दान चाहिये !
बन्द करो वह आग हृदय की– जो घर ही मे आग लगाती।
उस ज्वाला को अभी बुझादो– जो तिल तिल कर हमे जलाती ॥

देखो उधर 'चीन' ज्वाला है, हर पौधा जलता जाता है।
और विदेशी फूल कुचलता– छाती पर चढता आता है ॥
बापू से प्रसाद पाने को– 'मार्शल च्याग' 'चीन' से आये।
दम्पति ने अपने अन्तर के– जननायक को घाव दिखाये ॥

चर्खा भेंट किया बापू ने, बोले, बादल बरस चुके हैं।
ईश्वर रक्षा करे 'चीन' की, बहुत बिचारे तरस चुके हैं॥
दम्पति अतिथि 'च्याग काई' का– प्रभु ने किया प्रेम से आदर।
ज्योति 'जवाहर' ने दम्पति को– भेंट करी खद्दर की चादर॥

जहाँ देखते वही व्याप्त था– गाँधी जी का तेजस्वी मन।
काँगरेस मे कभी अभगुर, और कभी वन वन मे चन्दन॥
महातेज था, महाशक्ति थी, उन चरणो मे चमत्कार थे।
सब मे व्याप्त, अलग थे सब से, कभी वार तो कभी पार थे॥

तूफानो मे नाव खोल दी, बैठा वह मल्लाह सँभल कर।
चोटी दीपक दिखा रही थी, जीवन तैर रहा था जल पर॥
बापू बोले, इस यात्रा मे– डूबेगे या पार लगेंगे।
महासिन्धु मे कूद पडे हम, साथी बन मँझधार चलेंगे॥

ये तूफान और ये लहरे– रोक सकेगी अब न तिरगा।
सागर के सर पर लहरेगी– निश्चित आज त्रिवेणी गगा॥
छलने आया उसे 'क्रिप्स' जो– छल को कभी न छलता छल से।
राज्य उसे धमकाने आया– धरा टिकी जिसके सत बल से॥

गाँव गाँव मे सिहनाद था– बस इस बार पार जाना है।
भीम 'पटेल' गर्ज कहते थे– अपना देश हमे पाना है॥
'कृपलानी' की देशभक्ति ने– करी अर्चना महाशक्ति की।
भारत की भूखी जनता ने– कसमे खाई देशभक्ति की॥

कहा 'जवाहर' ने 'मेरठ' मे– यह अन्तिम गोता सागर मे।
या स्वतन्त्रता या मरना है, आज अमृत या विष गागर मे॥
या तो सागर मे घुस कर हम– मोती लेकर ही आयेंगे।
या अब तूफानो लहरो से– लडते लडते मर जायेंगे॥

आज वीरता जाग रही है, चढी हुई है मुझे जवानी।
मेरे पानी से उलझा है– सागर का तूफानी पानी ॥
मरना तो सबको ही है पर– कुछ मर कर भी अमर सदा हैं।
कुछ मर कर मर ही जाते हैं, कुछ दुनिया मे अमर अदा हैं ॥

इसी समय 'जापान' गर्जता– भारत के सर पर चढ आया।
'विजगापट्टम' और 'कोकनद'– काले लाल धुएँ से छाया ॥
पदाघात से पिसे देश पर– 'जापानी' बम लगे बरसने।
भारत की सीमा पर भी अब– गोले धम धम लगे बरसने ॥

'कलकत्ता' के श्वेत गगन मे– 'जापानी' जहाज उडते थे।
घन के तले 'बग-खाडी' पर– झपटामार बाज उडते थे ॥
देख मेघमालाये नभ मे– भय की रेखा खिँची देश मे।
सारे भारत मे हलचल थी, आशाये थी कॉगरेस मे ॥

नगर निवासी घबरा घबरा– लगे भागने छोड छोड घर।
'जापानी' गोलो से डर डर– शहरी चले शहर खाली कर ॥
चाहे कही चले जाओ पर– मौत न पीछा कही छोडती।
मौत वीरता से डरती है, आगे आगे हाथ जोडती ॥

रोज रोज बत्तियाँ बुझाते, 'ब्लेकाउट' से था पथ काला।
रोज बिजलियाँ बुझा बुझा कर– अन्धकार से घर भर डाला ॥
भारत की तसवीर देख कर– आँसू रोये, पत्थर पिघले।
ठिठरा सा ककाल खडा था, मुँह धोने को आँसू निकले ॥

बिँधा हुआ था तन तकुओ से, पग शूलो से छिले हुए थे।
लहू चू रहा था घावो से, लाल सरोरुह खिले हुए थे ॥
फटे हुए थे वस्त्र कि मानो– खाल नोच दी जल्लादो ने।
बैठ, जमीन कुरेद रहा था, भीड लगा दी अवसादो ने ॥

चोट चमकती थी बिजली सी, चोटो पर हंटर पड़ते थे ।
बन्दी के रिसते घावो मे– जल्लादी तकुए गड़ते थे ॥
खा खा मास, चूस कर शोणित, दो हड्डी का ढाँचा छोड़ा ।
फूका लगा दूध सब खीचा, भारत का सौन्दर्य निचोड़ा ॥

दोनो घुटने दिये पेट मे– बैठा था बन्दीगृह मे वह ।
कभी सीखचे पकड खडा हो– बाट देखता था वह रह रह ॥
कब स्वतन्त्रता देवी आकर– काटेगी मेरी हथकड़ियाँ ।
पैर चूम कह उठी बेडियाँ– आती हैं फूलो की लड़ियाँ ॥

तेरे स्वागत को स्वतन्त्रता– गूँथ रही फूलो की माला ।
तडक टूटने ही वाला है– बन्दीगृह का भारी ताला ॥
"क्रिप्स" ले गया अपना गुड्डा, बापू को प्रेरणा हुई यह–
उनके मन ने कहा तडप कर– "भारत छोडो!" अब तू यह कह ॥

मन ने कहा, और बापू ने– अपनी माँग उपस्थित कर दी ।
"अँगरेजो, भारत छोडो अब !" भू पर वाणी अंकित कर दी ॥
अँगरेजी साम्राज्यवाद की– भारत क्रीडा-भूमि आज है ।
अरे ! मूल ही दे दो वापिस, अधिक मूल से चढा व्याज है ॥

जल्दी से जल्दी भारत से– अब बिस्तर अँगरेज उठाये ।
युद्ध बन्द हो, प्रजातन्त्र पर– जिस से चार चाँद लग जाये ॥
जिस से 'नाजीवाद' न पनपे, राख उडे 'फासिस्टवाद' की ।
नष्ट भ्रष्ट साम्राज्यवाद हो, पुछ जाये रेखा विषाद की ॥

साग्रह अँगरेजो से कहते– शीघ्र हटालो अपना शासन ।
आसन सागर पार तुम्हारा, यह स्वतन्त्र भारत का आसन ।
भारतवर्ष 'एशिया' भर मे– ध्रुव तारा बन कर दमकेगा ॥
कमलो को वह सूर्य, कुमुद को– चन्दा बन बन कर चमकेगा ॥

'विश्व संघ' में शामिल होकर– जग की गुत्थी सुलझायेगा।
सिन्धु-लहरियों से लड़ लड़ कर– नाव किनारे पर लायेगा॥
भारतवर्ष सचेत खड़ा है, आधिपत्य अब शीघ्र उठालो!
लहरा रहा तिरंगा झण्डा, जल्दी जल्दी टोप सँभालो!!

जननायक ने प्रण ठाना है, सावधान हैवान आज हो!
मनुष्यता से खोने वाले! जल्दी से इन्सान आज हो!!
हम अपने दीपक खुद ही हैं, अपनी रक्षा आप करेंगे।
हम न रुकेंगे, हम न झुकेंगे, हम न मरेंगे, हम न डरेंगे॥

दिन बदले, इतिहास बदलने– आई "आठ अगस्त" आ गई।
चमक उठी बिजलियाँ शान्ति में, काली पीली घटा छा गई॥
अधिवेशन बम्बई हुआ था, सागर-तट पर झण्डे फहरे।
गगन चूमते उड़े तिरंगे, सागर की लहरों पर लहरे॥

'जिन्ना' से भी काँगरेस ने– कहा कि समय न यह लड़ने का।
आओ मिलकर कदम बढ़ायें, समय नहीं है यह अड़ने का॥
क्या हिन्दू, क्या मुसलमान सब– एक ध्वजा के नीचे गाओ।
मिट्टी में मिलने से पहले, मिट्टी के पुतलो! मिल जाओ॥

काँगरेस सब की संस्था है, सब आओ, सब हाथ बटाओ!
लेकर बढ़ो तिरंगा झण्डा, ऊँची चोटी पर लहराओ!!
हमें न रत्ती भर ननुनच है, सत्ता 'मुस्लिम लीग' सँभाले।
अपने ही कब्जे में ले ले, अँगरेजों से देश छुड़ाले॥

किन्तु 'कायदे आजम' अपनी– नाक फुलाये ही जाते थे।
पानी की लहरों पर अपने– जाल बिछाये ही जाते थे॥
स्वतन्त्रता के आन्दोलन में– अपने को स्वतन्त्र समझे सब।
अखबारो! निर्भीक रहो तुम, यह अवसर आयेगा कब कब॥

विद्यार्थियो ! समय आ पहुँचा, राजाओ ! दागो को धो लो !
एक साथ मिलकर सब के सब– भारत माता की जय बोलो !!
'भारत छोडो, भारत छोडो !' एक साथ बोले भारत भर।
भारत के जय जयकारो से– हिले हिमालय, काँपे सागर ॥

धीरे धीरे कदम बढाओ, तैर तैर तट तक चलना है।
ज्वालामुखी फूटने वाला, मानस का लावा गलना है ॥
एक बार फिर 'ब्रिटिश राज्य' से– अन्तिम बार बात कर ले हम।
शान्त भाव से उनके बिस्तर– उनके कन्धो पर धर दे हम ॥

अगर न छोडेगे भारत वे– तो हम बिस्तर उठवा देगे।
सामूहिक आन्दोलन होगा, अपनी आजादी ले लेगे ॥
पर पौ फटने से पहिले ही– हमला बोल दिया गोरो ने।
काँगरेस ने दूध पिलाया, पर विष घोल दिया गोरो ने ॥

जब रजनी दुलहन से हिलमिल– चाव भरा चन्दा हँसता था–
जब कि चाँदनी की अलको मे– प्यास भरा चन्दा फँसता था–
भौंरे की मदमस्त जवानी– जब पकज को चूम रही थी–
चन्द्रमुखी प्रिय की गोदी मे– जब कि प्यार मे झूम रही थी–

शब्द शून्य मे उडते थे जब, वायु विजन मे घूम रही थी–
जब कि तैरती हुई चाँदनी– फूलो का मुँह चूम रही थी–
तभी चोर पहरेदारो पर– झपटे 'चोर! चोर !' चिल्ला कर।
पुलिस फौज गुर्रा कर आई– मेरे पूज्य महामानव पर ॥

'कार्य समिति' के सब सदस्यगण– पकडे गये समुद्र किनारे।
झपट अहिसा पर हिंसा ने– बन्द कर दिये भाग्य-सितारे ॥
पकड लिया गाँधी जी का दल, आत्मा कब बन्दी होती है !
तब तारे छिप ही जाते हैं, जब नभ मे बदली रोती है ॥

चुपके चुपके पकडा था पर– जाग हो गई, गूँजी जय जय ।
'भारत छोड़ो! भारत छोड़ो!!' शीश चढा कर बोले निर्भय ॥
बलि के लिये निहत्थे निकले, एक नया उत्साह आ गया ।
आँधी बन बन श्वास उड़ चले, बादल बन कर धुआँ छा गया ॥

पीडित प्रजा मचल कर बोली– जननायक! क्या करे, बताओ ?
उठो 'करो या मरो!' बढो अब, स्वतन्त्रता पर बलि बलि जाओ!
भड़क उठी उत्तेजित जनता, गुँजा दिया नभ जयकारो से ।
दीपक आग बने जाते थे, दमन और अत्याचारो से ॥

दमन शुरू हो गया देश मे, तनी निहत्थो पर दुनालियाँ ।
इसे पकडना, उसे मारना, इसको फाँसी, उसे गालियाँ ॥
इधर निहत्थो की छाती थी, उधर राज्य की रक्त पिपासा ।
उधर तोप बन्दूके गर्जी, इधर शहीदो की अभिलाषा ॥

जब सुना 'करो या मरो!' नाद– ताण्डव मे था भैरवी राग ।
आजादी के दीवानो ने– शोणित से खेला खुला फाग ॥
चल पडी चण्डिका खप्पर ले, बढ चली देवियाँ दुर्गो पर ।
हँसते हँसते चढ जाते थे– बलिवेदी पर वीरो के सर ॥

सत्याग्रहियो के नारो से– अगार दहकते जाते थे ।
'जय इन्कलाब! जय महाक्रान्ति!' तरु गाते, तारे गाते थे ॥
ले राम नाम 'हनुमान' चले– 'लका' मे आग लगाने को ।
'अगद' 'नलनील' वीर दौड़े– सीता स्वतन्त्रता लाने को ॥

कुछ नौजवान पिस्तौले ले- पटरियाँ तोडने निकल पड़े ।
खूनी चीतो की छाती पर– ले दुनालियाँ हो गये खडे ॥
यह 'लकादहन' काण्ड था या– 'लाक्षागृह' धू धू जलता था ।
या 'प्रलयकर शकर' जागे, या सागर थल पर चलता था ॥

आजादी के नारे गूँजे– अब उठो ! चलो ! वन्धन छोडो !
हाथो की हथकडियाँ तोडो, पैरो की जजीरे तोडो !!
बापू की वाणी से निकला– पिंजरा खोलो ! भारत छोडो !
झनझना वेडियाँ बोल उठी– वन्धन तोडो ! वन्धन तोडो !!

बोला दिल्ली का 'लाल किला'– भारत छोडो ! भारत छोडो !
नारा निकला, ससार हिला– भारत छोडो ! भारत छोडो !!
जेलो की दीवारे बोली– भारत छोडो ! भारत छोडो !
ग्रामो की मीनारे बोली– भारत छोडो ! भारत छोडो !!

दिल मे जलती होली बोली– भारत छोडो ! भारत छोडो !
छाती मे घुम गोली बोली– भारत छोडो ! भारत छोडो !!
बोली माँ वहिनो की रोली– भारत छोडो ! भारत छोडो !
कह उठी शहीदो की टोली–भारत छोडो ! भारत छोडो !!

कह उठी शक्ल भोली भोली–भारत छोडो ! भारत छोडो !
सत्याग्रहियो की जय बोली– भारत छोडो ! भारत छोडो !!
सोता 'सन् सत्तावन' बोला– भारत छोडो ! भारत छोडो !
कह उठा फूस पर गिर शोला–भारत छोडो ! भारत छोडो !!

फाँसी के तख्ते बोल उठे– भारत छोडो ! भारत छोडो !
भूकम्प भयानक डोल उठे– भारत छोडो ! भारत छोडो !!
ललकार तिरगा कहता था– भारत छोडो ! भारत छोडो !
फटकार तिरगा कहता था– भारत छोडो ! भारत छोडो !!

इतिहास पुराना कहता था– भारत छोडो ! भारत छोडो !
यह देश विराना कहता था– भारत छोडो ! भारत छोडो !!
कवियो के शखनाद बोले– भारत छोडो ! भारत छोडो !
सगीतो से वरसे शोले– भारत छोडो ! भारत छोडो !!

वोली 'मैना' की गर्म चिता– भारत छोडो ! भारत छोडो !
वोले जननायक परम पिता– भारत छोडो ! भारत छोडो !!
'आजाद चन्द्रशेखर' बोले– भारत छोडो ! भारत छोडो !
नवयुवको के तेवर बोले– भारत छोडो ! भारत छोडो !!

'अश्फाक' और 'बिस्मिल' वोले– भारत छोडो ! भारत छोडो !
वोले 'सतलज-तट' के शोले– भारत छोडो ! भारत छोडो !!
यह 'भगतसिह' का नारा है– भारत छोडो ! भारत छोडो !
यह हिन्दुस्तान हमारा है– भारत छोडो ! भारत छोडो !!

यह 'वीर जवाहर' का नारा– भारत छोडो ! भारत छोडो !
हुकार रहा झण्डा प्यारा– भारत छोडो ! भारत छोडो !!
साम्राज्यवाद का हुआ अन्त, भारत छोडो ! भारत छोडो !
जाओ जाओ ! कह रहा सन्त– भारत छोडो ! भारत छोडो !!

'दिल्ली' की दीवारे बोली– भारत छोडो ! भारत छोडो !
महलो की मीनारे बोली– भारत छोडो ! भारत छोड़ो !!
युग बोल उठा, बोला 'सुभाष'– भारत छोडो ! भारत छोडो !
वोला प्रभात, बोला प्रकाश– भारत छोडो ! भारत छोडो !!

'आजाद हिन्द सेना' वोली– भारत छोडो ! भारत छोडो !
वोली गा गा खाली झोली– भारत छोडो ! भारत छोडो !!
गूँजा 'जय हिन्द' अमर नारा– भारत छोडो ! भारत छोडो !
बोली निर्मल गगा धारा– भारत छोडो ! भारत छोडो !!

पक्षी बोले, पत्ते बोले– भारत छोडो ! भारत छोडो !
छाती पर गिर वोले ओले– भारत छोडो ! भारत छोडो !!
सावन बोला, वोला बसन्त– भारत छोडो ! भारत छोडो !
सगम पर वोले आदि अन्त– भारत छोडो ! भारत छोडो !!

हिन्दुस्तानी सेना बोली– 'दिल्ली' पर झण्डा लहराओ!
'मोर्चा इम्फाल' पुकार उठा– अँगरेजो! भारत से जाओ!!
'गाँधी सेना' के सेनानी! अपनी सेना ले बढ़े चलो!
सैनिक! 'सरोजिनी सेना' के– दुर्गो के ऊपर चढ़े चलो!!

सेनानी! 'फौज जवाहर' के– अब कदम उठे जल्दी जल्दी।
'जय हिन्द!' 'चलो दिल्ली!' कहती– सेनानी की सेना चलदी॥
'वर्मा' से सेनानी 'सुभाष'– गोरो की फौजो पर लपका।
अँगरेजो ने गोली मारी, उसने बदले मे बम पटका॥

वह चला जिधर, तूफान चले, वह रुका जहाँ, भूचाल रुके।
नेता सुभाष के चरणो मे– तलवार झुकी, अगार फुके।
पिस्तौल तान कर कहते थे– भारत छोडो! भारत छोडो!
भीषण मोर्चो पर कहते थे– भारत छोडो! भारत छोडो!!

कहते थे 'टैंक' 'तारपीडो'– दिल्ली छोडो! भारत छोडो!
कहते थे ज्वालामुखी फूट– भारत माँ के बन्धन तोडो!!
गोरी चमडी! जल्दी से अब– मेरे घर का पीछा छोडो!
इन सुभग सुनहरी अलको के– भारतवासी! बन्धन तोडो!!

कह उठा दूसरा महायुद्ध– भारत छोडो! भारत छोडो!!
कह रही भयानक क्रान्ति क्रुद्ध– भारत छोडो! भारत छोडो!!
वीरो की आत्मा का नारा– भारत छोडो! भारत छोडो!
सब के परमात्मा का नारा– भारत छोडो! भारत छोडो!!

देशभक्त चल पडे पवन से, उडने लगे तिरगे झण्डे।
बढते चले शहीद सिह से, पडने लगे पुलिस के डण्डे॥
महिलाओ ने घूंघट पलटे, आँखो से निकली चिनगारी।
चली गोलियाँ, कोडे बरसे, छूटी शोणित की पिचकारी॥

उखड़ी खाल, किन्तु वीरों ने- झण्डा छोड़ा नहीं तिरंगा ।
झण्डे की लहरें कहती थीं- यही नहाने की है गंगा ।।
जल उमड़ा 'आष्टी' 'चिमूर' में, 'बलिया' में निकले दीवाने ।
स्वतन्त्रता दीपक के ऊपर- बढ़ते चले वीर परवाने ।।

मानो महाप्रलय की लहरें- धरती आज डुबाने निकलीं ।
प्रलयंकर प्यासे मेघों ने- आँसू और बिजलियाँ उगलीं ।।
हिंसा और अहिंसा का वह- घोर युद्ध चिंघाड़ रहा था ।
भारत ने करवट बदली थी, सोता सिंह दहाड़ रहा था ।।

कहीं भुजायें कटी पड़ी थीं, लेकिन मुट्ठी में था झण्डा ।
रक्त भरे सर लुढ़क रहे थे, लेकिन खून नहीं था ठण्डा ।।
बलिवेदी पर छोटे छोटे- बच्चों के सर दीपक से थे ।
कटे हुए जो पैर पड़े थे, पूज्य चरण वे मस्तक से थे ।।

कटी हुईं छातियाँ पड़ी थीं, जिनका अब तक दूध न सूखा ।
खाल खींच बोटियाँ खा रहा, खून निचोड़ भेड़िया भूखा ।।
लाली गरज रही अम्बर में, मानो जलती आग भयंकर ।
आँसू सागर बन कर उमड़े, बादल घुमड़ रहे प्रलयंकर ।।

जिधर देखते उधर तिरंगे- फर फर फर उड़ते चलते थे ।
अंगारों से आँसू निकले, धरती पर गोले जलते थे ।।
परिवर्तन की महाक्रान्ति में- तारे टूटे, खून बह चला ।
भारत माता के पुत्रों ने- स्वतन्त्रता का चोला बदला ।।

बढ़े बलिदान के पथ पर ।
चढ़ी पग-धूलि मस्तक पर ।।
हवा में आ गई मस्ती ।
जिन्दगी हो गई सस्ती ।।

पगो से खून चूता है।
दृगो से खून चूता है।।
गोलियाँ चल रही दन दन।
छातियाँ वढ रही तन तन।।

फाँसियो पर चढा डाला।
कही जिन्दा जला डाला।।
कही पर जुल्म नारी पर।
मास मे गड रहे हटर।।

किसी की खोपडी फूँकी।
किसी की झोपडी फूँकी।।
किसी की हड्डियाँ पीसी।
किसी की हड्डियाँ चीसी।।

किसी को जेल मे डाला।
खौलते तेल मे डाला।।
किसी की फोड दी आँखे।
किसी की काट दी पाँखे।।

गिराये गर्ज कर गोले।
आँसुओ के वने ओले।।
धरा पर गिर रहे सर कट।
शहीदो का वना मरघट।।

चिताये सामने फुकती।
उठी आँखे नही झुकती।।
कदम वढते नही रुकते।
शूल जव तक नही झुकते।।

ग्राम ग्राम मे, शहर शहर मे, गली गली मे था आन्दोलन ।
लहरे लपकी, ज्वाला बरसी, अड़ड अडड़ कर आया हल्लन ॥
काटे तार, पटरियॉ तोडी, कुछ थानो मे आग लगाई ।
धधक उठा प्रतिशोध हृदय मे, वीरो ने तलवार उठाई ॥

कुछ तो चॉटा खा कर अपना– गाल दूसरा आगे करते ।
कुछ मरते या उन्हे मारते, वे ईँटा, ये पत्थर धरते ॥
थानेदार गवर्नर बन कर– वह आन्दोलन लगे दबाने ।
सत्याग्रह पर, झोपडियो पर– बम दुनालियॉ लगे चलाने ॥

बच्चो को बूटो से रौदा, बूढो को कीलो से भेदा ।
मॉ बहिनो के अङ्ग अङ्ग को– दुष्टो ने भालो से छेदा ॥
कितनी ही जवान बहिनो पर– गोरो की पशुता गुर्राई ।
याद हमे वे मॉ बहिने हैं, जिनकी बोटी बोटी खाई ॥

'सन् सत्तावन' की बर्बरता– फिर से नगी नाच रही थी ।
शोणित का सागर उमडा था, जिसमे इसानियत बही थी ॥
'चर्चिल' अपनी चोच चलाते, कहते रहे 'एमरी' अपनी ।
'अमरीका' अपने सुर मे था, 'लीग' अलग ही थी लपझगनी ॥

इधर चल रहा था आन्दोलन, उधर 'लीग' का घातक नारा ।
हिन्दुस्तान काट दो धड़ से, दे दो 'पाकिस्तान' हमारा ॥
बात बात मे 'जिन्ना' कहते– खतरे मे 'इस्लाम' आ गया ।
'पाकिस्तान' मुसलमानो ! लो, आजादी का धुआँ छा गया ॥

लडने मरने को गॉधी है, खून बहाये कॉगरेस ही ।
परदेशी से मिला हुआ मे, जान बचा देगा विदेश ही ॥
स्वतन्त्रता जब आ जायेगी– तब हम देवर बन जायेगे ।
अब बिल्ली हैं, तब खाने को– शेर भयकर बन जायेगे ॥

करने या मरने निकले हम, या आज़ादी या मरना है।
तलवारो ! गर्दनें बहुत हैं, अब तो किला फतह करना है॥
सागर मे घुस तट पर पहुँचे, लहरो पर जो रत्न नचाये।
धन्य धन्य वह दियासलाई, जो घर घर मे दीप जलाये॥

चतुर्विंश सर्ग

पञ्चविंश सर्ग

आहुति

वाग वाग मे, गली गली मे- कली कली पर किरणे गाती।
धूप और चाँदनी न वँधती, आजादी से आती जाती॥
पक्षी उडते मुक्त गगन मे, तू क्यो सोया अरे मुसाफिर!
छोड सीखचे, मुक्त विचर तू, स्वच्छ गगन मे हारिल सा तिर॥

हरियाली मे मोर नाचते, तू क्यो वन्द पडा कारा मे?
उठकर गोता मार सवेरे- मेघो की निर्मल धारा मे॥
घर की कारा छोड देख वह- जाता है मजदूर काम पर।
रटता 'राम राम' वह तोता, कोयल गाती पके आम पर॥

पत्ती पत्ती जाग रही है, फूल फूल ने ली अँगडाई।
काल कोठरी मे वन्दी वन- तूने क्यो जिन्दगी सडाई?
वन्दीगृह मे 'वा' वापू के- प्यारे चरण पखार रही थीं।
अपनी आँखो के दीपक से- 'वा' आरती उतार रही थीं॥

वह कुसुम धरा का हाय! वन्दी पडा था।
हरि हृदय हमारा सीखचो मे खडा था॥
उन पग कमलो मे चाँदनी गा रही थी।
उन पग कमलो मे वन्दिनी 'वा' वही थी॥

पतझर पर सोये फूल प्यारे गुलावी।
जल जल जल देते मौन तारे गुलावी॥
प्रियतम पर 'वा माँ' फूल मोती चढाती।
चुग चुग कर मोती रात रानी लुटाती॥

किसलय पर प्यारी वायु मा को सुलाती।
जय जय ध्वनि सी 'वा' भाव सोते म्लानी॥
गिन गिन कर तारे स्वप्न मे देखती थी।
कुछ कह शशि को क्या दान देनी मनी थी ?

आँखो का जल अर्घ्य ही चरण धो गाता वहाँ आरती।
पूजा ही पग पूजती हृदय से वन्दी महा देव के॥
बोले पत्थर जेल के चरण छू फूले हुए फूल मे-
मैं हूँ मन्दिर आज क्यो कि जनता के हैं यहाँ देवता॥

बापू के पग दाबती हृदय से वन्दीगृहा वन्दिनी।
आती है छन चाँदनी, सुमन ले मानो वसन्ती दिवा॥
चन्दा आकर चूमता पग, उन्हे छू है दिवानी हवा।
वन्दी क्यो हम मुक्त मानव ? धरा के देवता ! बोल दे!!

सितार सी 'वा' छवि देखती थी।
वसुन्धरा को कविता सुनाती॥
कभी प्रभा की शशि गोद मे आ-
पुकार लेता सुकुमार माँ को॥

वसन्त बापू हर फूल पूजा।
विकास सी 'वा' रस मजरी थी॥
स्वतन्त्र बापू किस ध्यान मे हैं ?
विहाग सी 'वा' किस कल्पना मे ?

किसान गाता, मधु मेघ गाते,
उदास वन्दीगृह क्यो खडे हो ?
स्वतन्त्रता पा जब ये उडेगे-
वियोग कैसे वह मैं सहूँगा !

निशान देखो उडता तिरगा।
पवित्र गगा नभ मे वही है ॥
प्रभात प्यारा लहरा रहा है।
स्वतन्त्र जल्दी अब देश होगा ॥

जय हो मेरे राष्ट्रपिता की, जय जय जय मेरी जगमाता!
कारा की दीवारे बोली- जय भारत के भाग्य-विधाता!!
'बा' थी कार्य, क्रिया थे बापू, वे रूई, वह भावुक तकली।
बापू सूत, और 'बा' खड्डी, बापू वर्षा, 'बा' थी बदली ॥

'बा' चर्खा, वे तार सूत के, वह बाँसुरी, और वे थे सुर।
त्याग तपस्या के गीतो से- पीडित वन्दीगृह था सुरपुर ॥
वह रचना, वे रचनात्मक थे, वह भावुकता, वे थे कविता।
वह थी धार, और वे लहरे, वह थी रश्मि, और वे सविता ॥

एक दिवस 'बा' जननायक के- चरण दबाती थी कारा मे।
पतिव्रत धर्म पालती थी वह, तपी तपस्या की धारा मे ॥
बापू बोले, कारा में ही- देवी! यदि तुम मर जाओगी-
तो मेरी पावन पूजा के- फूल स्वर्ग मे भी पाओगी ॥

तेरी मूर्ति बना मन्दिर मे- तब मैं पूजा किया करूँगा।
तेरी ही समाधि के तट पर- जिया गया तो जिया करूँगा ॥
भारत की स्वतन्त्रता के हित- तपने वाले प्राण धन्य हैं।
जो पूजा को सफल बनाते, उन फूलो के दान धन्य हैं ॥

भारत माता के मन्दिर मे- तुम दीपक बनकर जल जाना।
बना मोमबत्ती इस तन की, ज्योति लुटाना, प्राण गलाना ॥
मैं समझूँगा सफल तपस्या, तब ही मुझको दीप मिलेगे।
तभी एक डाली पर दोनों- वन गुलाब के फूल खिलेगे ॥

महापुरुष के निर्मल मन मे- कम्पित थी भविष्य की रेखा ।
वन्दीगृह के टूले पर से- उसने सारे जग को देखा ॥
सुख से दुख, दुख से सुख है, मृत्युलोक की यही कहानी ।
'राम' 'कृष्ण' की आँखो मे भी- देखा है दुनिया मे पानी ॥

वन्दीगृह मे मृत्यु एक दिन- विधि की थाती लेने आई ।
मृत्युलोक से स्वर्ग सिधारे- सहचर 'महादेव देसाई' ॥
उस दिन मेरे जननायक के- भावुकता से दृग भर आये ।
दोनो हाथो से बापू ने- 'देसाई' पर फूल चढाये ॥

जिन्हे न माया मोह राम वे- शव के पास बैठ कर रोये ।
आँखो के जल से बापू ने- शव के हाथ पैर मुँह धोये ॥
'देसाई' की पत्नी ने जब- रो रो वहाँ चूडियाँ फोडी-
जब छाती पर पत्थर रख कर- उसने हाय ! छातियाँ तोडी-

जब विधवा की गोदी का शिशु- रोना देख देख रोता था-
माँ की गोदी मे रो रो शिशु- जब कि कफन अर्थी धोता था-
तब कारा की दीवारे भी- मूक रुदन से जडवत् थी हा !
'आगा खाँ' के वन्दीगृह की- भीते मातम मे नत थी हा ! !

और शोक सागर मे बापू- खा खा कर पछाड गिरते थे ।
मित्र बिछडने पर पीडा से- धरती पर पहाड गिरते थे ॥
बना चिता अपने हाथो से- दाह क्रिया कर फूल चढाये ।
जननायक ने रोते रोते- चिता किनारे दीप जलाये ॥

बडे भाग्यशाली 'देसाई', प्रभु रोते जिनके वियोग मे ।
उनके शव कुत्ते खाते है- सडते है जो विषय भोग मे ॥
'देसाई' की चिर समाधि पर- बापू प्रतिदिन फूल चढाते ।
उस शहीद की स्मृति मे बापू- पूजा करते, दीप जलाते ॥

आज मिले कल विछडा करते, दुनिया का सम्बन्ध यही है।
किस का मित्र, कौन अपना है, जग झूठा है, स्वार्थ सही है॥
आँसू समा गये सागर मे, बापू ने मन मथा शान्ति से।
स्वतन्त्रता को टेर रहे थे– बापू अपनी शान्त क्रान्ति से॥

'नौ अगस्त' के आन्दोलन ने– भारत भर की जेले भर दी।
भीषण वन्दूको के आगे– हँसते हुए छातियाँ कर दी॥
पर 'व्रिटेन' ने जननायक पर– झूठे झूठे दोष लगाये।
तोड फोड का आन्दोलन कह– उन पर अपने पाप चढाये॥

कहा व्रिटिश ने कॉगरेस अब– हिसा से हत्या करती है।
सत्य अहिसा वाली सस्था– आज न हिसा से डरती है॥
"इसे सफेद झूठ कहते हैं, तनिक न है अपराध हमारा।
'नौ अगस्त' को हुआ दमन से– पहले हम पर वार तुम्हारा॥

ईश्वर का कानून भग कर– तुमने सारे नेता पकड़े।
दोष तुम्हारे ऊपर हैं सब, जो भी हुए देश मे झगडे॥
पकड लिया जब हमको तब फिर– हम पर कैसी जिम्मेवारी ?
हम तो सत्य अहिसावादी, यह काली करतूत तुम्हारी॥

फूस इकट्ठा था वर्षो से, तुमने दियासलाई डाली।
बरस पडी फिर उस ज्वाला पर– दहकी हुई घटाये काली॥"
उन के मिथ्या आक्षेपो पर– जननायक ने उन्हे जगाया।
चोर न कोतवाल को डाँडे– उनको वार बार समझाया॥

किन्तु दूध से धुले हुए पर– दोष लगाये ही जाते थे।
व्रिटिश राजनीतिज्ञ उन्हो पर– शस्त्र चलाये ही जाते थे॥
इन आरोपो के विरोध मे– जागे मनमोहन के साधन।
'आगा खाँ' के वन्दीगृह मे– शुरू हुआ बापू का अनशन॥

उठ विरोध मे ब्रिटिश नीति के, किया कठिन व्रत इक्कीस दिन का ।
भीषण ज्वाला बन जाता है– दियासलाई जैसा तिनका ॥
उपवासो से जय मिलती है, सुप्त शक्तियाँ होती जाग्रत ।
शिव को खोकर फिर से पाया, माँ ने करके कठिन कठिन व्रत ॥

'लिनलिथगो' को मिली चुनौती– फेंकी तुमने धूलि चाँद पर ।
जग के आगे देना होगा– तुम्हे एक दिन इस का उत्तर ॥
उत्तर आया 'लिनलिथगो' का– तुम अपना अस्तित्व बचाओ !
अपने अनशन के आँचल मे– मत अपने अपराध छिपाओ !!

हमको दबा न धमका सकती– गाँधी जी ! हड़ताल तुम्हारी ।
चन्दन की लकडियाँ मँगाली, यही चिता की है तैयारी ॥
मर जाओगे तो चन्दन की– चिता तुम्हे तैयार मिलेगी ।
अनशन करो, मरो चाहे तुम, अब न ब्रिटिश सरकार हिलेगी ॥

'आगा खाँ' के इसी महल मे– सिसक सिसक कर मर जाओगे ।
अपनी जान बचाओ गाँधी ! स्वतन्त्रता पीछे पाओगे ॥
मुसका कर बोले बापू यह– रवि को कौन जला सकता है ?
जो जग को प्रकाश देता है– उस को कौन गला सकता है ?

स्वतन्त्रता के भव्य भाल पर– वाणी का प्रकाश दमकेगा ।
हमे न काली रातो से डर, हँसता हुआ चाँद चमकेगा ॥
उन का जर्जर तन अनशन से– प्रतिपल गिरने लगा, उठा मन ।
'मीराबेन' और 'बा' माता– मलती तेल, चढाती चन्दन ॥

'डॉक्टर गिल्डर' और 'सुशीला– नैयर' बैठे नब्ज पकड कर ।
'बी० सी० राय' और 'भण्डारी', तथा 'माण्डलिक' भी थे तत्पर ॥
'देवदास गाँधी' बापू के– तलवे सहलाते मधु पीते ।
'रामदास गाँधी' बापू का– सेवामृत पी पी कर जीते ॥

'जनरल कैण्डी' ने बापू की- कारागृह मे करी परीक्षा।
मानो सेवाओ ने पग छू- मूक हृदय से दी थी दीक्षा ॥
पर बापू की प्रतिदिन प्रतिपल- हालत गिरती ही जाती थी।
जी मिचलाता, मूर्च्छा आती, बार बार 'बा' घबराती थी ॥

घेरा घटा ने प्रिय चॉद 'बा' का।
'बा' का कलेजा निकला पडा था ॥
न धूप घेरे शशि को कभी भी।
सुधाशु का हो उपवास पूरा ॥

हे राम ! कैसी यह ली परीक्षा ?
काली घटा के दिन ये घटा दो ॥
देखो कडी धूप, वितान तानो।
कैसे सहूँ हा ! पल एक भी मैं ॥

ये शूल लम्बे फल ही बना दो !
मेरे लिये ये पल कल्प से हैं ॥
जो आयु मेरी, वह भी उन्हे दो !
मै हूँ उसी मे, वह प्राण मेरा ॥

जो पुण्य मेरे फल फूल वे दो !
सतीत्व ! मेरे प्रण प्राण मे जा !!
देखूँ उन्हो का यम क्या करेगा !
वे जीत होगे यदि मै सती हूँ ॥

फल गई अनशन की चर्चा, भारत भर मे चिन्ता छाई।
अनशन बादल बन कर छाया, धुआँ देख दुनिया घबराई ॥
मोह-रज्जु मे बँधा हुआ जग- जननायक की ज्योति न जाना।
जलता गलता नही कभी जो- उसे नही जग ने पहचाना ॥

मिट्टी के पिंजरे मे वन्दी– परम पिता परमात्मा थे वे।
या कि प्रेम मे वँधे पुजारी– शुद्ध 'वुद्ध' की आत्मा थे वे।।
स्वास्थ्य गिर रहा था वापू का, चिन्ता मे थे सारे डॉक्टर।
त्यागपत्र दे दिया 'अणे' ने– देख व्रिटिश का धुँधला उत्तर।।

छोड व्रिटिश की कार्यकारिणी– भारत माता के पग चूमे।
स्वतन्त्रता के आन्दोलन मे– नगी तलवारो पर झूमे।।
सुनी सूचना वापू ने जव– अधरो पर कुछ हँसी आ गई।
उनके पल भर के हँसने से– रात गई चाँदनी छा गई।।

चिन्ताजनक दशा थी उनकी, ग्यारह रात और दिन वीते।
वारहवे दिन जी मिचलाया, छूटी नव्ज, मौत से जीते।।
वेचैनी मे मूर्च्छा आई, घण्टो तक वेहोश रहे वे।
भारत भर ने एक एक पल– कोटि कल्प की भाँति सहे वे।।

कोटि कोटि मे जीवन आया, घूँट भरी नीवू के रस की।
जी मे जी आया फिर सवके, जय हो जननायक के यश की।।
अनशन से कुम्हलाये वापू, वन्द कमल जैसा वह तन था।
स्वतन्त्रता के सूर्य विना वह– निशि मे मुरझाया सा मन था।।

साढे चव्वन सेर वजन था, घट कर चालिस सेर रह गया।
वापू के व्रत का प्रभात था– 'गीता' 'वेद' 'कुरान' कह गया।।
जननायक की चिता हेतु जो– चन्दन की लकडियाँ वहाँ थी–
वापू से सुगन्ध लेने को– चन्दन-वन से आज यहाँ थी।।

वोल उठी वे हम आई है– वापू के चरणो मे चढने।
हम न चिता के लिये यहाँ है, आई है हिसा से लडने।।
पराधीनता की यह कारा– इस चन्दन मे जल जायेगी।
चन्दन का सिहासन होगा– जिस पर स्वतन्त्रता गायेगी।।

लेकिन कुछ बलिदान देश को- हँसते हुए चढाना होगा।
जिसने जितना दुख सहा है- उसने उतना ही सुख भोगा॥
बापू का व्रत नई पहेली, चमक रहा है चमत्कार से।
तलवारे कट गई प्यार से, फूल खिल उठे मधुर प्यार से॥

'बर्नार्ड शा' विश्व-कवि बोले- गाँधी बन्द किये कारा मे।
भारी भूल, मूर्खता की यह, मुँह धो रहे रक्त-धारा मे॥
उन्हे चाहिये गाँधी जी को- बिना शर्त के शीघ्र छोड दे।
बालू के इस बन्दीगृह की- हथकडियो को अभी तोड दे॥

ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल बापू से- क्षमा माँग कर कालस धो ले।
दुनिया का कल्याण इसी मे- उन चरणो के पीछे होले॥
जगतपिता का व्रत करना था, देश विदेशो मे थी हलचल।
ब्रिटिश फेकता धूलि चाँद पर, चाँद और होता था उज्ज्वल॥

बापू के प्रकाश की किरणे- सब को देती थी उजियाला।
पर गोरो को दीख रहा था- वह उजियाला काला काला॥
बापू के प्राणो पर सकट, अँगरेजो की वही नीति थी।
पैर कब्र मे लटक रहे थे, पर बगुले की वही रीति थी॥

घातक हथियारो के बल का- नशा छा रहा था ब्रिटेन पर।
तलवारो की धार मोड दी- वीरो ने छाती आगे कर॥
पत्र पत्रिकाये लन्दन की- विष उडेलती थी बापू पर।
कहा कि अनशन किये हुए हैं- गाँधी जी कारागृह से डर॥

सोलह अनशन बाद उन्हो का- यह था सत्रहवाँ अनशन प्रण।
उल्टे तूफानी सागर मे- जननायक थे अमर सन्तरण॥
'जिन्ना' ने यह कहा कि गाँधी- हिन्दू नेता, हिन्दू जाने।
हम तो जमजम का जल पीते, वे गगा मे चले नहाने॥

अनशन से 'एशिया' हिल गया, हिलता था 'यूरोप' पात सा।
कलियुग की काली रजनी मे– वही तपस्वी था प्रभात सा॥
गये तार पर तार ब्रिटिश को– छोडो गाँधी जी को छोडो।
उनके प्राणो पर सकट हैं, तोडो उनके बन्धन तोडो॥

'आर्थर मूर' यही कहते थे, देश विदेशो मे था यह स्वर।
गला फाड कर ऊँचे स्वर से– कहते थे यह धरती अम्बर॥
'दई देवता' मना रही थी– भारत की सभ्यता पुरानी।
जेल तोडने को प्रस्तुत थी– कुछ युवको की नई जवानी॥

लाल लाल बादल कहते थे– यह परिवर्तन की बदली है।
सहते सहते शम्पाओ को– पीडा हो जाती पगली है॥
चहक रही है मधुर प्रभाती– जाग रहे उपवन के माली।
छोडो बापू, छोडो भारत, राजी से कर दो घर खाली॥

महाप्रलय के काले बादल– रुके हुए बापू के बल से।
धरती टिकी हुई कलियुग मे– गाँधी के तप के सम्बल से॥
उनकी ही पग-धूलि धरा पर– भूचालो को रोक रही है।
उनके उपवासो की महिमा– सारा विश्व विलोक रही है॥

यदि इन उपवासो मे बापू– छोड गये यह मिट्टी का तन–
धरा धसेगी, गगन गिरेगा, सिन्धु डुबा देगा हिमगिरि वन॥
फण फैलाती सिन्धु-लहरियाँ– इन महलो पर लहरायेगी।
डूबा होगा पाप तुम्हारा, ध्वजा हमारी फहरायेगी॥

क्रुद्ध सिन्धु मे घोर दनुजता– भस्मसात हो बुझ जायेगी।
किन्तु तैरती मानवता पर– नई सृष्टि सस्वर गायेगी॥
नाश या कि निर्माण देश का, जो चाहो वह करो समय है।
परिवर्तन हुङ्कार रहा है, यह जीवन का क्रय विक्रय है॥

अब भी यदि वह राग अलापा– तो उसका परिणाम सोच लो।
अभी समय है, डूबो चाहे– तट पर कही विराम सोच लो !।
जग के ऊँचे न्यायालय मे– न्याय अभी होना बाकी है।
गोरे मुँह पर दाग लगा जो– वह तुमको धोना बाकी है ॥

खून बहुत से क्षमा कर चुके, अब न और स्याही पुतवाओ।
रँगो न बापू के शोणित से, ब्रिटिश राज्य का मुँह धुलवाओ।
दाग न कभी खून से धुलता, इसको गगाजल से धोलो।
अन्त समय है, 'राम' कहो तुम, बोलो गाँधी की जय बोलो।।

ईश्वर जिसे बचाना चाहे– निराहार भी वह जीता है।
ज्योतिपुज नर बना अमृत रस– मधुर फलो का रस पीता है ॥
ईश्वर की महिमा अपार है, रचना मे रस के घट ही घट।
जहाँ न कोई प्यासा रहता– नारायण का ऐसा पनघट ॥

एक गिलास सन्तरे का रस– पीकर बापू ने व्रत खोला।
चम्मच भर ग्लूकोस घोलकर– अमृत रसासव पी प्रण बोला ॥
बापू की इस महाविजय से– कोटि कोटि मे प्राण आगये।
बरसे फूल, बजी वीणाये, बादल आये, मोर छा गये ॥

उपवास समाप्त हुआ उनका,
तप मे जननायक जीत गये।
व्रत से सत से गति से यति से–
सब सकट के क्षण बीत गये ॥
सब ने प्रभु से विनती करके–
जग की वह ज्योति प्रभा रख ली।
जय भारत की, जननायक की,
जिसने तप से दुनिया बदली ॥

रचनात्मक की रचनाओ पर- काव्य-कला पखा झलती है।
अमृत भरे फल फूल दिये वे, जिन पर सुरभि थिरक चलती है॥
विधि ने धरती की गोदी मे- रत्नो के भण्डार भरे हैं।
जिनसे कवि-कल्पना हारती, सजा सजा वे फूल धरे हैं॥

नीवू, सेव, अनार, सन्तरे, लीची, आडू, आम अमर फल।
रस के घट अंगूर, मौसमी, और दिया निर्मल गगाजल॥
जल पर धरा, धरा पर जल है, दीपक है अद्भुत रहस्यमय।
जैसा भी आदर्श चाहिये, देता है वह राम हर समय॥

हम प्रकाश मे ढूँढ न पाये, चित का वासी चतुर चितेरा।
अन्तर मे प्रकाश है, फिर भी- आँखो मे है घोर अँधेरा॥
उसकी अपरम्पार कला है, यह अनन्त निर्माण राम का।
उसको कमी न किसी बात की- जिसे सहारा राम नाम का॥

हीरे मोती की दुनिया मे- हम आँखो वाले आये हैं।
लेकिन जीवन भर काँटे चुग- अन्त समय फिर पछताये हैं॥
कितने पुण्य तपो के फल से- हम मनुष्य का तन पाते हैं।
फूल लगाने आये थे पर- शूल खडे करके जाते हैं॥

ईश्वर को ये वचन दिये थे- जग मे जीवन सफल करूँगा।
ढूँढ मुक्ति के निर्मल मोती- बार बार मैं नही मरूँगा॥
पर सोने के निर्मल तन पर- कालस पोत पडा अर्थी पर।
कवि! अक्षर अक्षर मे धर दे- हर पीडित के मोती चुग कर॥

राम नाम का अमृत पान कर- अमर हुए मेरे जननायक।
मधुर फलो का सजीवन पी- उठ बैठे सन्तरण सहायक॥
नीवू और मौसमी का रस- रसना का रस छलकाता था।
वथवा मेथी पालक धनिया- रसमय का रस बरसाता था॥

निर्मल जल में शहद मिलाकर– पीने वाला अमृत दे गया।
चुगे मुक्ति के मनहर मोती, तट पर वह मल्लाह ले गया॥
वुद्धि वासना काम द्वेप से– परे एक आनन्द-लोक है।
जहाँ न चिन्ता, जहाँ न पीडा, जहाॅ न कोई भेद शोक है॥

श्रद्धा जहाँ नाचती गाती– स्वर्ग उसे ही तो कहते हैं।
उसी लोक मे मोक्ष प्राप्त कर– महापुरुष सुख से रहते हैं॥
समझ भक्ति से उस रहस्य को– नारायण मे लय हो जाते।
तप व्रत सयम सद्भावो से– नर ही नारायण कहलाते॥

वापू ने पहिचान सत्य को– जग मे फैलाया नैतिक वल।
ऊँची नीची इस दुनिया को– आओ सव मिल करदे समतल॥
वापू का डग उठा कि जग के– पैर अनेको पीछे चलते।
वापू के दर्शन करने को– चन्दा सूरज साथ निकलते॥

उन की रसना के हिलते ही– घर घर मे रेडियो वोलते।
उन के अनशन के होते ही– धरती अम्बर साथ डोलते॥
जननायक ने अनशन छोडा, भारत भर मे मनी दिवाली।
आशा की किरणे उगती थी, वीत रही थी रजनी काली॥

दीपमालिका के दीपो ने– वापू की आरती उतारी।
भारत भर ने खुशी मनाई, गीत गा रही थी फुलवारी॥
प्राण लौट आये वापू के, कोटि कोटि को प्राण मिले थे।
रोते रोते सूख गये जो, तरु तरु पर वे फूल खिले थे॥

आत्मोत्सर्ग किया वापू ने, आत्म-शुद्धि से ईश्वर पाया।
गाॅधी जी के उपवासो ने– अद्भुत चमत्कार दिखलाया॥
महापुरुप को दैवयोग से– साथी सन्त मिला करते हैं।
वापू के साथी 'भसाली', जो तप तप मधु-रस भरते हैं॥

तीन साल तक 'लन्दन' मे पढ- 'भसाली' भारत मे आये।
गये हिमालय पर्वत पर फिर, जहॉ तपस्या कर प्रभु पाये ॥
सात वर्ष तक मौन रहे वे, ओठ सी लिये थे तारो से।
पीते चून घोल पानी मे, तन्मय थे सत् के नारो से ॥

कभी शाक ही खाते केवल, तन मन से होते थे उज्ज्वल।
जननायक से मिली प्रेरणा, राष्ट्र-मुक्ति हित आये निर्मल ॥
अँगरेजो की दमन नीति पर- किया भक्त ने अनशन जारी।
हत्याकाण्ड 'चिमूर' 'आष्टि' के- देख किया था यह व्रत भारी ॥

वासठ दिन तक निराहार रह- जल तक पिया न "भसाली" ने।
वासठ दिन के वाद डाल पर- फूल खिलाये उस माली ने ॥
'शासन परिषद्' से सदस्य गण- त्यागपत्र दे वाहर आये।
जो प्रण व्रत पूरे करते है- वे ही तो आदर्श कहाये ॥

छोड ब्रिटिश की 'शासन परिषद्'- परिवर्त्तन की लहरे लाये।
'सर मोदी' 'सरकार' 'अणे' ने- जीवन पथ पर फूल विछाये ॥
'श्री सप्रू' 'शकरन' आदि ने- अँगरेजो को दीप दिखाया।
या कि प्रेरणा ने वापू की- राजमहल से उन्हे जगाया ॥

लोक लाज से नेताओ ने- सम्मेलन की करी योजना।
अँगरेजी शासन के आगे- नेताओ ने धरी योजना ॥
'एच० गजनवी' 'तेजवहादुर', और 'मुखर्जी' जिसमे वोले।
खोला ब्रिटिश राज्य का चिट्ठा, उलझे हुए प्रश्न कुछ खोले ॥

गद्दारो की पीठ ठोकना, अँगरेजो का यही काम है।
देशभक्त का खून वहाना, इस इति पर उनका विराम है ॥
वलपूर्वक यह मॉग हमारी- तुम तुरन्त जननायक छोडो।
सिन्धु-मार्ग से तार गया यह- भारत मॉ के वन्धन तोडो ॥

यही 'सर्वदल सम्मेलन' मे– 'राजा जी' ने करी घोपणा।
लेकिन 'चर्चिल' ने झल्लाकर– उठा ताक मे धरी घोपणा॥
अँगरेजो की चालवाजियॉ– तरह तरह से घूम रही थी।
सत्ता की बोतल पी पी कर– भ्रष्ट नशे मे झूम रही थी॥

अँगरेजो की राजसभा मे– गॉधी जी पर जहर उडेला।
कह 'फादर जोसेफ' उन्हो को, ब्रिटिश राज्य ने मारा ढेला॥
'ग्रे अमिनेस' एक पुस्तक है, वह 'फादर जोसेफ' कथा है।
मधु मे जहर मिला कर देना, यह 'फादर जोसेफ' प्रथा है॥

यह 'आल्डस हक्सले' लिख रहे, क्या बापू की यही कहानी ?
उस से गॉधी की तुलना कर– करी 'एमरी' ने मनमानी॥
किन्तु 'एटली' ने फौरन ही– दिया 'एमरी' को यह उत्तर–
तुलना करी शरारत से यह, वह था वगुला, यह है ईश्वर॥

जैसी जिसकी रही भावना, वैसा ही वह दिया दिखाई।
रत्न पारखी को हे वापू, और तुम्हे वे दियासलाई॥
सज्जन की आँखो मे सज्जन, दुर्जन की आँखो मे दुर्जन।
'राम' पुजारी की पूजा मे, दलित वर्ग को लगते हरिजन॥

'चर्चिल' को विद्रोही लगते, छली 'एमरी' की आँखो मे।
और 'एटली' की भापा मे– वे ही हे उडान पॉखो मे॥
वे 'कुरान' हैं मुसलमान की, हिन्दू की 'गीता', 'रामायण'।
वसे 'वाइबिल' की भाषा मे– जननायक कर्त्तव्य परायण॥

वे 'सुकरात' और वे 'ईसा', वे 'प्रहलाद' 'बुद्ध' की आत्मा।
जैसा जिसका दर्पण होता, वैसा ही देखा परमात्मा॥
टँगा हुआ खूँटी पर कम्वल, भ्रम से भूत वना करता है।
समझ सर्प रस्सी का टुकडा, भ्रम से पच भूत डरता है॥

दशा यही थी 'जिन्ना' की भी, उल्टे सीधे वहक रहे थे।
सूखे हुए ठूठ से चिपटे, चीख़ रहे थे, चहक रहे थे॥
अपनी 'लीगी' चिडियाओ पर- 'जिन्ना' को अभिमान वहुत थे।
चलने को जवान थी उनकी, सुनने वाले कान वहुत थे॥

भिन भिन करते थे भुनगे से, वडे गर्व से कहा अकड कर-
'पाकिस्तान' मान कर मेरा, गाँधी चिट्ठी भेजे मुझ पर॥
अँगरेजो की क्या ताकत है- जो उनकी वह चिट्ठी रोके।
प्रतिध्वनि मे कह उठी प्रकृति यह- 'जिन्ना'! क्या आये हो सो के?

ये अँगरेज़ तेज चाकू हैं, जिस पर दोनो तरफ धार है।
प्यार न तुम से और न हम से, सोने के खग से दुलार है॥
फिर भी वापू ने कारा से- 'जिन्ना' पर चिट्ठी भिजवाई।
पर अँगरेजो ने वह चिट्ठी- छिपा जेव मे जान वचाई॥

खवर लगी जव 'जिन्ना' जी को- पीटी मेज और झल्लाये।
"मेरी चिट्ठी रोक न सकते", 'जिन्ना' जी कह कर पछताये॥
'मुस्लिम लीगी प्रान्त' देश मे- नई नई दिक्कते डालते।
दो राष्ट्रो का नारा लेकर- इधर उधर कीचड उछालते॥

इसीलिये भारत पर होती- नौकरशाही की मनमानी।
हाय! इसी की वलिवेदी पर- 'फजलुलहक' की चढी जवानी॥
जो हक की कहता था उसको- नौकरशाही नोच डालती।
डाल पिट्ठुओ को कुछ टुकडे, नौकरशाही श्वान पालती॥

ब्रिटिश वर्ग-शासक ने जल कर- शासन मे से उन्हे निकाला।
'फजलुलहक' का मुँह उजला है, अन्यायी का मुँह है काला॥
अपनो के विश्वासघात से- 'हक' को दुःख हुआ ही होगा।
हिन्दू मुस्लिम मारकाट मे- सुख क्या मिला? दुःख ही भोगा॥

मुस्लिम लीगी जहाँ जहाँ थे– वहाँ वहाँ होता था दगा।
मुस्लिम लीगी डाल रहे थे– स्वतन्त्रता मे घोर अडगा॥
प्रादेशिक सरकारे सारी– आन्दोलन मे अस्त व्यस्त थी।
अपनो के झझट झगडो से– भारत की ज्योतियाँ अस्त थी॥

'आगा खाँ' के वन्दीगृह मे– भारत का दिनमान वन्द था।
पराधीनता के पिँजरे मे– मानव का सम्मान वन्द था॥
'आगा खाँ' का महल राजसी, जिसमे बापू वन्द पडे थे।
कन्धो पर बन्दूक सँभाले– पहरो पर सन्तरी खडे थे॥

शान्त भावना सी 'बा' पति के– सेवामृत से जीवन पाती।
पहुँच राष्ट्र-माता के पद पर– जननायक के चरण दवाती॥
'सीता' 'सावित्री' 'तारा' सी– 'वा' थी जननायक की छाया।
हर पग पर उस दीप-शिखा ने– हृदय-दीप का हाथ वटाया॥

जननायक की उस पग-ध्वनि ने– प्यारे पति की गति पहचानी।
नारी का अभिमान वन गई– 'वा' माता की अमर कहानी॥
पति-सेवा मे, राष्ट्र-भक्ति मे– जननी का वलिदान अमर है।
उसी राष्ट्रमाता के तप से– नारी का अभिमान अमर है॥

'बा' का हृदय तभी फटता था– जव भी पति को पीडित देखा।
वापू का उपवास हृदय पर– खीच गया चिन्ता की रेखा॥
जननायक की चिन्ता मे 'वा'– प्रतिपल मन मन मे घुलती थी।
बापू की सुन्दर सरिता से– यह मैली दुनिया धुलती थी॥

स्वास्थ्य गिर गया 'वा' माता का, माँ पड गई रोग-शैया पर।
'आगा खाँ' के वन्दीगृह मे– आया कवि का मानस भर भर॥
'वा' की पीडा देख कैद मे– कवि की विरह-व्यथा शरमाई।
हृदय-रोग के दौरो से माँ– वापू के आगे मुरझाई॥

'वा' को घेर लिया रोगो ने, घिर आये चिन्ता के वादल।
औषधि कोई लगी न उनको, सव उपचार हो गये असफल॥
दीपशिखा टिमटिमा रही थी, जीवन-दीप बुझा जाता था।
चढती थी पुतलियाँ पलक मे, पति का हृदय भरा आता था॥

'हीरालाल' पास थे माँ के, 'देवदास' सेवा करते थे।
'तुम्हे देखकर मुझे वहुत सुख'– माँ के वाक्य नीर भरते थे॥
माता के दुलार के आगे– तीनो लोको की निधि लघु है।
माँ के मधुर स्नेह के आगे– 'भक्ति काल' की गति विधि लघु है।

पडी रोग-शैया पर 'वा' ने– ईश्वर की झाँकी पाई थी।
नब्ज चढ रही थी ऊपर को, निर्मम नीरवता छाई थी॥
'वा' के पास खडे गाँधी जी– अन्तिम झाँकी देख रहे थे।
आँखो के अन्दर ही अन्दर– मन से आँसू टूट वहे थे॥

धीरे धीरे 'वा' वोली यह– "खडे खडे थक गये नाथ तुम।
सोओ प्रभु! मै अभी न मरती, श्वास श्वास मे नाथ! साथ तुम॥
सूर्योदय के वाद मरूँगी, अभी न मैं मरने वाली हूँ।
मरते समय वुलाऊँगी मैं, तुम से ही मैं उजियाली हूँ॥

जव तक पास न आओगे तुम– तव तक नही मरूँगी स्वामी!
तव तक श्वास कण्ठ ही मे मैं– अटकाये रक्खूँगी स्वामी!
उपवासो से दुर्वल हो प्रभु! खडे खडे सारा दिन वीता।
सोओ स्वामी! सोओ स्वामी! मैं मन मे पढती हूँ गीता॥"

जगजननी ने 'देवदास' को– तीन वजे के समय जगाया।
वोली, "मैं जा रही पुत्र! अव, नारायण ने मुझे वुलाया॥
जो आया है उसे एक दिन– जग से निश्चित ही जाना है।
क्यो न आज ही जाऊँ फिर मैं? पुत्र! उठा पानी दाना है॥"

इसके वाद वैठ कर 'वा' ने- हाथ जोडकर करी अर्चना ।
"प्रभु ! तुम ही मेरे आश्रय हो, दया करो तुम यही प्रार्थना ।।"
मुँह से 'राम राम !' उच्चारा, 'देवदास' के आँसू निकले ।
महाकरुण रस के सागर मे- 'आगा खाँ' के पत्थर पिघले ।।

'पेनिसिलिन' ले इतने ही मे- वायुयान से डॉक्टर आया ।
कृषि जब पीली पडी रोग से- तब अम्बर मे घन मँडराया ।।
फिर भी 'देवदास' ने चाहा- माँ के 'पेनिसिलिन' लगवाऊँ ।
घबराये से सोच रहे थे, कैसे माँ को आज वचाऊँ ?

"वचा नही सकते अब माँ को !" गाँधी जी ने कहा शान्ति से ।
"माँ को अपनी कष्ट न दो अब, इन्जेक्शन की व्यर्थ भ्रान्ति से ।।
यदि न वात मानोगे मेरी, तो मैं सहमत हो जाऊँगा ।
पर ईश्वर के हाथो मे वह, मैं तो 'राम ! राम !' गाऊँगा ।।

लेकिन 'पेनिसिलिन' लगवाकर- माँ को शारीरिक दुख दोगे ।
उसका समय निकट आ पहुँचा, अब औषधि देकर क्या लोगे ?"
बापू ये बाते करते थे, इतने मे 'बा' ने बुलवाया ।
जोडे दोनो हाथ सामने, मुँह मे गगाजल डलवाया ।।

हाथो से गोदी मे रक्खा- बापू ने जगदम्बे का सर ।
मन मन मे बापू रोते थे- 'बा' की झाँकी देख देख कर ।।
अन्तिम श्वास ले रही थी 'बा'- जननायक के अमर सहारे ।
बिजली चमकी, प्राण उड गये, प्रथम बार जननायक हारे ।।

सती साधना जननायक से- पल भर मे ही विदा हो गई ।
मरी हुई ऐसी लगती थी- मानो पडकर अभी सो गई ।।
देशभक्ति की दिव्य मूर्ति माँ- मानो लेट गई बन प्रतिमा ।
जगदम्बा बन गई आज माँ, वनी विश्व की गौरव गरिमा ।।

सन्ध्या मे शिवरात्रि दिवस की– 'वा' माता निर्वाण हो गई।
भारत माता की पूजा कर– चिर निद्रा मे शान्त सो गई॥
शव के पास खडे हो सब ने– घेरा चन्द्राकार बनाया।
'वा' जो भजन रोज गाती थी– बापू ने वह भजन सुनाया॥

मरने से पहिले कारा मे– 'वा' को हुए मृत्यु के दर्शन।
आश्रम की महिला से 'वा' ने– अपनी करी कहानी वर्णन॥
मेरे मरने पर मेरे सब– कपडे उन उन को दे देना।
मिलूँ न मरते समय अगर मैं– मेरी राम राम ले लेना॥

गाँधी जी ने सूत कात कर– जो 'वा' की धोती बुनवाई।
मरने से पहिले ही 'वा' ने– वह बन्दीगृह मे मँगवाई॥
कहा कि मरने पर यह साडी– बहिनो! मुझको पहिना देना!
राम! सुहागिन की अर्थी को– अपने कन्धे पर धर लेना!!

बापू ने अपने हाथो से– शव गगा-जल से नहलाया॥
चन्दन चर्चित कर 'वा' का तन, सब नयनो ने नीर चढाया॥
गाँधी जी के कते सूत की– साडी फिर 'वा' को पहिनाई।
बापू ने जो बुनी कात कर– उस कफनी से देह सजाई॥

गाँधी जी के कते सूत की– हाथो मे चूडियाँ सज गई।
पडी कण्ठ मे तुलसी माला, बिछवो से उँगलियाँ सज गई॥
चन्दन कुकुम मल माथे पर– अलको मे सिन्दूर लगाया।
मानो श्वेत कमल पर श्री ने– अन्त समय सिन्दूर चढाया॥

माँ के निकट ओ३म् चित्रित था, स्वस्तिक चिह्न कमल के नीचे।
नौका मे भर भर बापू ने– सारे आँसू आज उलीचे॥
किसी स्वप्न मे सोई सी 'वा'– धीरे धीरे मुसकाती थी।
गीता के उस पारायण मे– मानो 'राम राम!' गाती थी॥

००००OOOO००००

दाह त्रिया के लिये जेल मे- चन्दन की लकडियाँ आ गई।
सुरवालाये मूक रुदन मे- राम नाम के गीत गा गई॥
वापू वोले, मैं निर्धन हूँ, कैसे क्रिया करूँ चन्दन मे।
पेड स्वयम् कट कर आ पहुँचे- जगदम्बे के अभिनन्दन मे॥

पूरा एक वृक्ष चन्दन का- दाह क्रिया के लिये आ गया।
मानो गिरा शोक से वह तरु- स्वाह क्रिया के लिये आ गया॥
तरु तरु रो रो कर कहते थे- किसका माँ के बिना सहारा ?
हृदय फट चुका है, अब तन भी- जल जाने दो साथ हमारा॥

पुष्पो से ढक कर 'वा' का शव, अर्थी धरी उठा कन्धो पर।
चली सुहागिन की यह अर्थी, जाते हैं जननायक लेकर॥
"वैष्णव जन तो तेते कहिये", गीत साथ गाते चलते हैं।
वापू से 'बा' दूर जा रही, आँखो से आँसू ढलते हैं॥

कौन सुहागिन जाती है यह, नारायण कन्धा देते हैं।
जो शहीद होते हैं उनको- कन्धो पर बैठा लेते हैं॥
सौ गज की दूरी पर 'बा' की- जननायक ने चिता बनाई।
शव वापू ने धरा चिता मे- आई धरते समय रुलाई॥

निकल पडे बापू के आँसू, टप टप बरसे चिता किनारे।
सृष्टि शून्य सी खडी हुई थी, मानो सब परलोक सिधारे॥
चिता किनारे रोते रोते- जननायक ने करी प्रार्थना।
कारा मे मरने वाली उस- जगदम्बे की करी अर्चना॥

बापू 'देवदास' से बोले- अपने आँसू गिरा कफन पर।
'महादेव' को जला चुका मे, 'वा' की दाह क्रिया अब तू कर!
हाय! हृदय-द्रावक वाणी से- बापू ने ये शब्द कहे थे।
इन पृष्ठो को लिखते लिखते- मेरे आँसू फूट वहे थे॥

रचो चिता चन्दन कपूर की, घृत डाला, दमके दृग-मोती।
अग्नि प्रवेश चिता मे कर दी, फूट फूट कर धरती रोती॥
'राम! राम! गोविन्द!' नाम ले– 'देवदास' ने चिता जलाई।
अग्नि प्रवेश कर लिया 'वा' ने, शक्ति शक्ति मे दी दिखलाई॥

बैठी चिता मे जय भोर सी माँ,
मानो उषा मे रवि खेलते है।
सीता विराजी जल-अग्नि मे हा!
सुनार सोना जल मे गलाता॥

बोली चिता की जलती शिखायें–
स्वतन्त्रता है बलिदान माँ का।
बापू! तुम्हारी पग-चाप मे है–
सम्मान माँ का, अभिमान माँ का॥

रोता किसी का मन मानसी सा,
छोडा अकेला प्रिय देवता को।
पूजा बनी आज स्वतन्त्र देवी,
देवी भवानी! जय हो तुम्हारी॥

जाओ सिधारो दिविलोक मे 'वा'!
मेरे प्रवासी मन मे विराजो!
आँसू किसी के चुपचाप बोले–
सितार टूटा, स्वर मूक सारे॥

तोते चिता के घन चूमते है,
रोते विचारे, रुकते न आँसू।
खोयी चकोरी नभ मे किसी की,
चकोर पाने वह चाँद दौडा॥

रोते पगो ! क्यो ? गति आज खोई,
　　ग्रामो ! न रोओ, कृपि भी वही माँ।
किसान ! तेरी यति आज जीती,
　　मेरी युगो की गति आज हारी ।।

गीता वनी माँ, कविता वनी माँ,
　　पूजा वनी माँ, सविता वनी माँ ।
वोली चिता से यह आ रही है–
　　वापू ! तुम्हारी सुपमा वनी 'वा' ।।

कैसे कहूँ मैं कलिकाल वोलो ?
　　'वा' सी सती भी जव देश मे हैं।
जो वो गई माँ अपने करो से–
　　उद्यान मे वे तरु आज भी हैं ।।

ज्वाला चिता की सुलगे फणो सी,
　　देवी सती भी कव हारती है ?
आदर्श पत्नी जलती चिता मे–
　　न छोडती है पति-धर्म सत्या ।।

प्रेमी पतगे ! प्रण प्रेम तेरा–
　　न है पगो की रज भी सती के ।
प्रदीप्त हो दीप जले तभी तू–
　　पा लाग ठण्डी जलती सती ही ।।

ढूँढा, न पाया अति प्रेम ऐसा,
　　न है, कभी भी न त्रिकाल होगा ।
जले चिता मे शव साथ पत्नी,
　　प्रेमी पतगा जलता, जलाता ।।

जाता चला दीप जला जहाँ भी,
कभी न होता वह एक ही का।
परन्तु होता पति एक प्रेमी–
प्रमाण पूरा जलती सती का ॥

श्मशान जाते शव साथ मे ले,
जाता न कोई पर साथ नाता।
जाती सती ही शव अंक मे ले,
जाता न कोई जलती चिता मे ॥

देखो, चिता से लपटे उठी हैं,
मानो सती के पग चूमने को।
उठी हुई ये लपटे सती को–
ले जा रही हैं पति-लोक मे क्या ?

विश्वास आदर्श सतीत्व मुक्ता–
'सीता' सती 'वा' जननी जहाँ हैं–
कमी न होगी सुरलोक की भी–
ध्रुवो! सती की करलो परीक्षा ॥

सौभाग्यशाली वह दीप की लौ–
बुझी हुई भी जय-ज्योति है जो।
सुहाग बोला, जय हो सती की,
विहाग बोला, जय हो सती की ॥

प्रभात की रश्मि किरीट को छू–
आती उसी के पग चूमने को ॥
सुहाग बिन्दी वह चाँदनी है–
चन्दा जिसे पा चमका निशा मे ॥

दिव्य देह मिल गई आग मे, खडे देखते रहे खेल सब।
मर्त्यलोक का यही खेल है, बिछडा करते यहाँ मेल सब ॥
खडे पेड के नीचे बापू- स्वर्गारोहण देख रहे थे।
गई बुढापे की वह लठिया, कवि ने हारे शब्द कहे थे ॥

गोदी मे अब बैठ राष्ट्र किसकी 'माँ ! माँ !' कहेगा किसे ?
बोलो माँ ! यह राष्ट्र-पुत्र किस गोदी मे रहेगा यहाँ ?
रोती है जनता दुखी, विकल पक्षी, राष्ट्र-माता गई !
देखो राष्ट्र-पिता खडे नयन खारी नीर से धो रहे !!

रोते बालक, माँ गई ! हृदय बापू का दुखी गाय सा।
आँसू भी अब है नही, जलज देखो नीर मे गा रहा ॥
मेघो ! क्यो झरते यहाँ ? कुलिश राजा सोखता नीर को।
ये जो सागर देखते तरल पीडा से फटी है धरा ॥

बासठ वर्ष साथ रहकर 'बा' ! छोड गई बापू को किस पर ?
पागल कवि ! बापू तो वह है, यह सारी दुनिया है जिस पर ॥
पर मनुष्य के बाने मे है, पीडा कैसे सहन करेगे ?
कवि अपने पृष्ठो मे कैसे- महा उदधि का नीर भरेगे ?

उस दिन सारी रात खाट पर- बापू चुपके चुपके रोये।
'बा' की स्मृति के मधुर नीर ने- आज उन्हो के वस्त्र भिगोये ॥
'बा' के जाने से बापू का- जीवन सूना सूना सा था।
'बा' के जाने से बापू की- कमर झुक गई, उट्ठा माथा ॥

ईश्वर ! कैसी आज परीक्षा- तूने ली, पर तेरी इच्छा !
बनी रहे प्रभु ! तेरी इच्छा, चली गई प्रभु ! मेरी इच्छा ॥
प्रभु ! मेरी ही तो इच्छा थी- 'बा' मेरे हाथो मे जाये।
उस जगदम्बे के सुहाग पर- चार चाँद की आभा गाये ॥

स्नेहमयी उस दीपशिखा ने– अपने पति की गोदी पाई।
भाग्यशालिनी थी 'वा' जिसकी– जननायक ने चिता जलाई ॥
चिता बुझ गई 'वा' माता की, शेष रह गई अमर कहानी।
अर्घ्य चढाने को आँखो मे– वस दो बूंद बचा है पानी ॥

मुक्त हो गई वह जगदम्वा, जग-बन्धन की रस्सी तोडी।
पुत्रो ने माता की भस्मी– 'इन्द्रायणी नदी' मे छोडी ॥
चिता जल गई, पर उसमे से– सावुत निकली पॉच चूडियाँ।
अमर सुहागिन की विन्दी है, जला न पाई आँच चूडियॉ ॥

अस्थि चयन कर 'देवदास' सुत– फूल 'प्रयाग राज' ले आये।
केलो के पत्ते पर रखकर– सगम मे वे फूल चढाये।
गगा की निर्मल लहरो मे– मानो श्वेत कमल लहराये।
पुत्रो ने अपनी माता के– वस वे अन्तिम दर्शन पाये ॥

'महादेव' की ही समाधि के– पास समाधि वनाई माँ की।
आओ उसकी पूजा कर ले– जिसकी रही कहानी वाकी ॥
जय जय जय जगदम्वे! जय हो! भारत माता की जय जय जय!
कण कण मे समाधियॉ निर्मित, मेरी माता अणु अणु मे लय ॥

'सेवाग्राम कुटीर' आज भी– मॉ की सेवा का प्रसाद है।
'आश्रम सावरमती' आज भी– माता की साकार याद है ॥
अथक सेविका 'वा' के तप से– जननायक का हर डग दमका।
'चम्पारन' 'खेडा' 'अगस्त' के– सत्याग्रह मे जीवन चमका ॥

'वा' के वहुत साधना मन्दिर, जिनमे मॉ साकार आज भी।
'सावरमती' नदी मे वहता– जगदम्वे का प्यार आज भी ॥
भारत माता के मन्दिर मे– 'वा' माता की अमर मूर्ति है।
जीवन मे जो जो भी कमियॉ– मॉ उन सवकी अमर पूर्ति है ॥

पचविंश सर्ग

शब्दो के फूलो की माला— कवियो की स्वीकार करो माँ !
मोती ढुलक ढुलक आये हैं, इन हसो को प्यार करो माँ !
ये ठोकर मे पडे फूल माँ ! तेरे मन्दिर मे आये हैं।
जननायक के पद-चिह्नो के— मोती बीन बीन लाये हैं ॥

रश्मि सती पर स्वर्ण लुटा कर—
नीरज को सहला थिरती है।
वायु वही घन घोर घटा रच—
पा पग-धूलि उडी फिरती है ॥
दीपशिखा बुझ स्नेह गई बन,
दीपक स्नेह लिये जलता है।
मजिल दूर, थका पथ-दर्शक,
सूरज मार्ग दिखा चलता है ॥

षड्विंश सर्ग

बुझते शोले

तारो मे शशि पूर्ण है, कुमुद देखो रास मे गा रहे।
तू क्यो सूर्य जला? किये कमल वन्दी! रात मे जा छिपा!
चन्दा की यह चाँदनी मधुर भाती क्यो नही वावले?
वोला सूरज, चाँद की मधुरता मे खो गई है कला॥

छूटा है अव धैर्य, क्रान्ति दहकी, ज्वाला जली सिन्धु मे।
तारे भी जल रात मे ,सजग हैं स्वाधीन होगी धरा॥
वापू की पग-धूलि ले जलज सा पाषाण भी तैरता।
जो वैज्ञानिक पाँव पत्थर तिरादे वज्र! वे पैर छू!

काँपती थी गति समय पर, यति समीरण वन चली थी।
सूर्य की स्वर्णिम किरण सी, एक चिनगारी जली थी॥
प्रलय-पारावार मानो श्वास लेता था तडप कर।
लाल अगारे उगे थे, फूल जैसे आँसुओ पर॥

पेट से पट्टी वँधी थी, हृदय पर पत्थर धरा था।
कमर मे चाकू घुसेडा, घाव सीने का हरा था॥
ओठ सूखे थे पिपासे, प्राण पथराये हुए थे।
हाथ वन्दी थे हमारे, नयन शरमाये हुए थे॥

क्रान्ति की गति पर तडपते, गीत उडते जा रहे थे।
लाल वादल लाल आँसू, खून लेकर आ रहे थे॥
लिपि चिताओ के धुएँ की– लिख रहा इतिहास जिसमे।
कह रही करुणा कला से, कल्पना की प्यास इसमे॥

अस्त व्यस्त थी राज्य व्यवस्था, ढलता सा साम्राज्यवाद था।
प्राणो मे पीडा पीडित थी, परिवर्त्तन का शखनाद था ॥
भूखे घुटने दिये पेट मे– 'रोटी! रोटी!' चिल्लाते थे।
दबे कोयले दहक रहे थे, 'भूख! भूख!' भूखे गाते थे ॥

काल पड गया 'कलकत्ता' मे, तड़प उठा 'बगाल' भूख से।
सडको पर ककाल पडे थे, ठिठरे थे भूचाल भूख से ॥
'विधि तिराणवे' का शासन था, अन्न वस्त्र का काल पड गया।
नौकरशाही की बोतल से– 'लिनलिथगो' का मगज सड गया ॥

चावल का आयात रोक कर– पट्टी बँधवा दी पेटो पर।
नगे भूखो की पीठो पर– ऊपर से बरसाये हटर ॥
ताले डाल डाल वाणी पर– अँगरेजो ने ओठ सी दिये।
भूख लगी तब पत्ते चाबे, प्यास लगी तो ओठ पी लिये ॥

राज्य कूँजडे का गल्ला था, प्रजातन्त्र था मारकाट का।
'बेजवाड़' मे भाव 'आठ' का, 'कलकत्ता' मे भाव 'साठ' का ॥
अँगरेजी अत्याचारो से– घर घर मे दुर्भिक्ष पड़ गया।
उधर महल मे पड़ा पडा ही– लाख अरब टन अन्न सड गया ॥

उस काले शासन के अन्दर– 'कलकत्ता' का हाल न पूछो!
उस दुर्भिक्ष काल के अन्दर– तुम भूखा 'बगाल' न पूछो!
सडक सडक पर, गली गली मे– पडे भूख से तड़प रहे थे।
भूखे ककालो के चमडे– पागल कुत्ते हडप रहे थे ॥

मरी पडी माँ, किन्तु हाय! वह– शिशु उसका तन चूस रहा है।
काट रहा दाँतो से स्तन वह, पर न लाश से दूध बहा है ॥
हाय! भूख से तडप तडप कर– उस शिशु ने भी प्राण दे दिये।
ओ दुर्भिक्ष! हाय हत्यारे! बच्चे के भी प्राण ले लिये ॥

मरी पडी माँ, मरा पडा शिशु, लाशें जाती छकडे भर भर।
ठठरी से चिपटी बच्ची की– ठठरी पडी हुई सडको पर॥
वह भूखी बगालिन देखो– मुर्दा बच्चे को खाती है।
उस भूखी बच्ची को देखो– माँ का खून पिये जाती है॥

वह भूखा प्यासा हड्डी को– चूस रहा है, चाब रहा है।
वह देखो! सूखी चमडी को– हा! दाँतो से दाब रहा है॥
वह देखो! भूखे बगाली– चबा रहे पेडो की छालें॥
वे कोमल कन्याये देखो! खाती है बबूल की डालें।

"रोटी! रोटी! भूख! भूख! हा! रोटी! रोटी! भूख! भूख! हा!'
'कलकत्ता' शमशान बन गया, सडको पर शव गये सूख हा!!
बहिनो की इज्जते बेच दी– एक एक रोटी के ऊपर।
गुण्डो ने लडकियाँ खरीदी– पत्ता भर चावल दे दे कर॥

बापो ने बेटियाँ बेच दी– एक एक टुकडे के ऊपर।
लाखो की इज्जते बेच दी– बीस बीस दाने ले लेकर॥
वह 'भूखा बगाल' देखकर– छप्पनिया अकाल शरमाया।
फूलो को भौरे खाते थे, गुण्डो ने पेशा कमवाया॥

बहिनो की चमडी के ऊपर– किसने हुस्न बजार लगाये?
हा! हा! वह दुर्भिक्ष भयानक, जिससे नगे भी शरमाये॥
पर न हया उसको आती है– जो बाजारो मे जा बैठी।
वह औरो को कैसे छोडे– जो अपने तन को खा बैठी॥

'कलकत्ता' की गली गली मे– लाशो को कुत्ते खाते थे।
ठठरी पजर ककालो पर– कौए चोच चला जाते थे॥
कुत्ते मुर्दो को खाते है, जिन्दो को इन्सान खा रहे।
खानेवाला रहा न कोई, मुर्दो को शमशान खा रहे॥

पत्तो पर सतीत्व तक वेचा, लज्जा वेची, वेचा तन मन।
अमरीकन, अँगरेजी फौजी– डसते थे वहिनो का जीवन॥
वहिन वेटियो से भारत की– 'अमरीकन फौजी' खेले थे।
फिर 'मीनावाजार' लग गये, उनके महलो मे मेले थे॥

वाणी रुकी, ठुक गये ताले, कही न जाती वुरी कहानी।
रुकी लेखनी लिखते लिखते, आँखो मे भर आया पानी॥
एक अकेली उस महिला पर– कुत्ते वीस वीस वे झपटे।
'अमरीकन फौजी' शराव पी– खूनी तीस तीस वे झपटे॥

पर 'मुस्लिम लीगी जिन्ना' की– खुली न इतने पर भी आँखे।
दवे साम्प्रदायिक नागो की– खुली न विप खाकर भी आँखे॥
छुआछूत की वीमारी यह– मिटी न तव भी, जली न तव भी।
आँखो के खारी पानी से– विप की पथरी गली न तव भी॥

चारो ओर धुआँ उडता था, धधक रहे थे मन के वादल।
जलधर पर जल वरसाते थे– जन जन के जननायक उज्ज्वल॥
उठ सोते शमशान! जाग अव, परिवर्तन ललकार रहा है।
उठ भूखे वगाल! तडप कर, शखनाद हुङ्कार रहा है॥

अरे भूख से मरने वालो! उठो, करो या मरो चलो तुम!
अरे भूख से जलने वालो! परवाने वन आज जलो तुम!!
भूखो! जव मरना हो है तो– स्वतन्त्रता के लिये मरो तुम!
क्राति क्राति वस क्राति क्राति हो, याद 'फ्रास' की क्राति करो तुम!!

'आगा खाँ' के हिले सीखचे, कारा की दीवारे टूटे।
स्वतन्त्रता का दीपक दमके, वापू वन्दीगृह से छूटे॥
अपने पेटो की ज्वाला से– अव तुम ज्वालामुखी जला दो!
अपनी आँखो के पानी से– लोहे के हैवान गला दो!!

घरड घरड कर आँखे बरसे, बिजली टूट गिरे आहो मे।
सागर लहराये अम्बर मे, भारतमाता की चाहो से॥
सुलग उठे सागर का मानस, धधक उठे अन्तर की ज्वाला।
भभक उठे झनझना बेडियाँ, टूट गिरे जेलो का ताला॥

सागर के ऊपर लहराये– विप्लव बन ज्वाला से नगे।
भूखो के जलते श्वासो से– रग दिखाई दे सतरगे॥
यह परिवर्तन की पुकार है, भूखो! लेकर बटो तिरगा।
स्वतन्त्रता का आन्दोलन है, यही नहाने की है गगा॥

इधर यहाँ दुर्भिक्ष भयानक, उधर 'उडीसा' मे विभीपिका।
'लिनलिथगो' के कार्यकाल मे– प्रीति बन गई मरुमरीचिका॥
दुर्भिक्षो के रुधिर-पृष्ठ पर– अकित है यह विपम गीतिका।
आँसू ने इतिहास लिखा है– 'लिनलिथगो' की दुष्ट नीति का॥

गाती गीत चिता की लपटे, नौकरशाही का विनाश हो!
बाट देखता भूखा मरघट, अन्यायी की शीघ्र लाश हो!!
'लिनलिथगो'! भारत से जाओ! बोल उठा इतिहास उन्हो का।
जल्दी से जल्दी जल जाये– प्रभु! पापी सहवास उन्हो का॥

वायसराय यहाँ जितने भी, हम पर हुकुम चलाने आये।
किये सभी ने घाव, घाव पर– सबने ही अगार गिराये॥
पर कुछ ने तो घाव हृदय मे– तीखा मरहम लगा किये थे।
छोड गये कुछ अपने स्मारक, कुछ ने स्मारक जला दिये थे॥

'कर्जन' ने प्राचीन भवन के– कानूनो की घडी इमारत।
पृथक् चुनावो की उलझन ला– 'मिन्टो' ने की घोर शरारत॥
'चेम्सफोर्ड' ने गर्म खून से– पोता था 'जलियान बाग' को।
और 'लॉर्ड रीडिग' यहाँ पर– लेकर आये नई आग को॥

'गाँधी-अर्विन समझौते' का– 'अर्विन' ने शुभ पैर उठाया।
'लॉर्ड विलिंगडन' ने कार्यों से– स्मृति पर चिर यश-गान सुनाया॥
पर 'लिनलिथगो' ने भारत को– अपनी गिद्ध-दृष्टि से देखा।
उसके कार्यकाल के ऊपर– खिंची हुई स्याही की रेखा॥

उलझन सुलझाने आया था, पर उसने सुलझन उलझाई।
पैशाचिकता शरमाती थी, भारत मे वह धूलि उडाई॥
जिसमे 'लिनलिथगो' की लीला– वह नाटक दु खान्त हुआ है।
वाणी बोली, पाप न कर अब, पाप न तेरा शान्त हुआ है॥

'बापू' का त्रसरेणु कह रहा– 'लिनलिथगो' ! भारत से जाओ !
हरा भरा यह बाग उजाडा, आग जडो मे तो न लगाओ ! !
यहाँ नरेशो को भडका कर– लोकतन्त्र मे आग लगादी।
भर भर फूट फूस की फुकनी– विषम विषैली गैस उडादी॥

आहो ने धक्के दे दे कर– 'लिनलिथगो' को खेद निकाला।
बिस्तर बाँध चले चमगादड– करवा कर अपना मुँह काला॥
उन्हे विदाई दी मरघट ने, और चिता की चिर ज्वाला ने।
उन्हे विदाई दी गा गा कर– गर्म हड्डियो की माला ने॥

लाशो पर जाते 'लिनलिथगो', देता है दुर्भिक्ष विदाई।
शिशुओ की ठठरियाँ गूँथ कर– मरघट ने माला पहिनाई॥
उनकी काली करतूतो ने– बाँधी उनके साथ बुराई।
साथ किसी के गई बुराई, याद किसी की रही भलाई॥

जिसे फूल प्यारे होते हैं– उसे शूल सहने पडते हैं।
फूलो तक जाने वाले के– काँटे पैरो मे गडते हैं॥
फूल डाल पर खिलते हैं पर– काँटे भी करते मनमानी।
खिले डाल पर, चढे मूर्त्ति पर, फूल ! तुम्हारी यही कहानी॥

सौरभ को वरदान मिला है- फूलो के भूले पर भूले।
सौरभ की मस्तानी लय पर- भ्रमर-गीत गुजन-पथ भूले ॥
शूल फूल से कहते हैं यह- एक नही हैं भारतवासी।
किसकी चाकू सी जवान ने- भारत की तस्वीर तराशी ?

क्या अँगरेजो के आपस मे- झगडे नही हुआ करते हैं ?
अधिकारो पर वात वात मे- क्या न वहाँ कटते मरते हैं ?
क्या उदार अनुदार वहाँ पर- अपनी अपनी नही चलाते ?
क्या न विचार विभिन्न वहाँ पर, कहाँ न वर्तन शोर मचाते ?

जहाँ चार प्राणी होते हैं- वहाँ खुडकते ही हैं वर्तन।
कोई वडा न कोई छोटा, समतल पर सव नर हैं हरि जन ॥
भारत को वन्दी रखने का- यह है केवल एक वहाना।
'वेवल' वायसराय हो गये, भारत मे आ गाया गाना ॥

अस्थिर जग मे वतलाओ तो- किस किस का विश्वास करे हम ?
धूमिल पथ पर प्राण जला कर- कव तक कहो प्रकाश करे हम ?
सौरभ सिंचित मधु समीर भी- धूलि वना देती है आँधी।
पर दुर्गन्ध सुगन्ध वनाता- चन्दन फूल चाँद सा गाँधी ॥

कोई जीवन वना पहेली, जग मे उलझन डाल रहा है।
कोई दीपक वुझा रहा है, कोई दीपक वाल रहा है ॥
दुनिया एक समस्या जिसमे- सव का भला चाहना ही हल।
दमक रही दामिनी लहर पर, नश्वर गति पर प्राणी पागल ॥

यह अस्थिर ससार गूँथता- चचल छल लहरो की माला।
पहिना कर मन की हिलोर को- वुदवुद पर पागल मतवाला ॥
जो भी आया, वही यहाँ पर- रटता रहा वही परिभाषा।
पर जव तक जीवन है तव तक- घोर निराशा मे भी आशा ॥

जलती जजीरो मे उलझी- भारतमाता वन्द पडी थी।
प्रेम शान्ति की शाश्वत ध्वनि पर- परिवर्त्तन की प्यास खडी थी ॥
कुछ कुछ उलझे, कुछ सुलझे से- 'दिल्ली' मे 'वेवल' थे विह्वल।
षड्यन्त्रो के इन्द्रजाल मे- वायसराय यहाँ थे 'वेवल' ॥

चढ खजूर के लम्बे तरु पर- उसने भी वह बीन बजाई।
अगली तिथि की जाली हुडी, वही 'क्रिप्स' वाली दिखलाई ॥
राज्य लालसा कितनी मादक, सारहीन, पर प्राणी पागल।
षड्यन्त्रो की चक्की चलती, पीस रहा है प्राणी को छल ॥

राजनीति मे कदम कदम पर- बुद्धि उलझती ही जाती है।
अन्दर मैल किन्तु ऊपर से- रग रेशमी दिखलाती है ॥
छुरी चलाना, गला दबाना, खा जाना ही राजनीति क्या ?
अपना कह कर गला काटना, राजनीति की यही प्रीति क्या ?

राजनीति मे कपट जाल है, जीवन का आदर्श नही है।
जनता का निष्कर्ष नही है, जीवन का उत्कर्ष नही है ॥
बापू बोले, राजनीति मे- सत्य, प्रेम आदर्श न भूलो!
कच्चे धागो के झूले पर- ले लम्बे झोटे मत झूलो!!

वही तान छेडी 'वेवल' ने, जो 'लिनलिथगो' छोड़ गये थे।
पर काले कानून उन्हो के- घर के चूल्हे फोड गये थे ॥
'वेवल' की हलचल मे भारत- अपना भाग्य टटोल रहा था।
पर इस क्रान्ति काल मे 'जिन्ना'- अपनी रट मे बोल रहा था ॥

पूछे प्रश्न पत्र-प्रतिनिधि ने- "जिन्ना! कहो किया क्या जाये?"
'जिन्ना' बोले, "दो राष्ट्रो मे- गाँधी भारत को बटवाये ॥
'हिन्दुस्तान' हिन्दुओ को दे, 'पाकिस्तान' मुसलमानो को।
दीपक इधर ज्योति देता है, उधर जलाता परवानो को ॥

'पाकिस्तान', जहाँ भारत का– चौथाई ही भाग रहेगा।
शेप तीन चौथाई लेकर– भारत सुन्दर वाग रहेगा॥
हिन्दू, मुस्लिम एक न होगे, गाँधी व्यर्थ डालते उलझन।
शान्ति असम्भव अन्य तरह से, और उलझ जायेगी सुलझन॥

पूरव, पश्चिम अलग अलग है, कैसे हम दोनो मिल जाये ?
'कावा' 'काशी' अलग अलग हैं, कैसे सर से पैर मिलाये ?
हिन्दू और मुसलमानो का– एक देश मे रहना भ्रम है।
एक सघ मे वँध न सकेगे, यह गाँधी का उल्टा क्रम है॥"

"दो राष्ट्रो की वात मान कर– क्या हम तुम कमजोर न होगे?"
"नही, विना इस अरुणोदय के– हम तुम तम मे भोर न होगे॥"
"पर इससे गृह-युद्ध छिडेगा, आपस मे ही कटा करेगे॥
खण्डित और अखण्डित कह कह– आपस ही मे कटे मरेगे ?"

"नही, पडौसी वनकर दोनो– वडे प्रेम से रह सकते हैं।
और 'एशिया' भर मे दोनो– दो नदियो से वह सकते हैं॥
सागर ने यदि ललकारा तो– दोनो नदियाँ मिल जायेगी।
सागर की छाती मे घुस कर– पानी चीर रत्न लायेगी॥"

प्रतिध्वनि मे तूलिका लिख गई– क्या शोणित से रग भरोगे ?
भारत की तसवीर काट कर– क्या माथे पर मुकुट धरोगे ?
कटे-फटे भारत के सर पर– ताज दमक क्या दिखलायेगा ?
मुकुट खून मे भीगा होगा, उठा हुआ सर झुक जायेगा॥

कवि की वाणी पर वापू ने– वन्दीगृह से यही पुकारा।
एक नाव पर वैठो सव मिल, टेर रहा है तुम्हे किनारा॥
आज एक झण्डे के नीचे– वीरो का वलिदान चाहिये !
स्वतन्त्रता के लिये जवानो ! दान चाहिये दान चाहिये !!

मनुष्यता के लिये देश को– कोटि कोटि 'सुकरात' चाहियें !
अन्धकार मे आज विश्व को– हँसते हुऐ प्रभात चाहिये ! !
'आगा ग्वॉ' के पत्थर बोले– उन आहो से पिघल पिघल गल ।
गिरे जा रहे, शर्म आ रही, झुके जा रहे हैं दृग पल पल ॥

मेरे अतिथि ज्योति जननायक, मैं पत्थर पहिचान न पाया ।
मैं ने हाय ! डस लिया 'बा' को, जननायक का हृदय रुलाया ॥
कचन के प्यालो मे ढलती– मदिरा मे बेहोश रहा मैं ।
गडा जा रहा हूँ धरती मे, आँसू बन कर आज वहा मैं ॥

अँगरेजो की अय्याशी का– वना रहा हूँ मैं क्रीडास्थल ।
आज शर्म से झुका खडा हूँ, फटा जा रहा है अन्तस्तल ॥
यदि मेरे पाषाण हृदय मे– मुक्ति दिवस पर बापू आते–
तो मेरे मरघट से मन मे– बुझे हुए दीपक जल जाते ॥

पर बापू को बन्दी करके– मुझे घोर पापो मे डाला ।
पहिले पापो से पत्थर हूँ, आगे को सुलगादी ज्वाला ॥
स्वर्ण महल था, लेकिन अब तो– मैं पिंजरा हूँ, मैं पत्थर हूँ ।
स्वतन्त्रता के पथ पर पत्थर, गाज आज मैं भारत पर हूँ ॥

'महादेव' को खाया मैंने, 'बा' की चिता धधकती देखी ।
जिनकी स्मृति मे जननायक की– छाती रोज सुलगती देखी ॥
गिरा न मैं उस समय जिस समय– बापू ने उपवास किया था ।
जला न मैं उस समय जिस समय– 'बा' ने नाता तोड लिया था ॥

और आज भी गिरा नही जब– जननायक बीमार यहाँ पर ।
घोर पाप से मुझे बचाओ, त्राहि ! त्राहि ! पत्थर के ईश्वर !
क्या जननायक की अर्थी भी– मेरे आँगन मे निकलेगी ?
क्या इनकी भी चिता यही पर– मेरे पापो से धधकेगी ?

मैं ही हूँ वह भाग्यवान जिसके वन्दी स्वयं राम है।
मैं ही हूँ वह वज्र जो कि गिर के टूटा पगों मे नहीं ॥
मैं हूँ शान्त इसलिये कि जल से वापू मुझे रोकते।
जो पापाण हिले अभी रगडते ही देखना होलिका ॥

मूक रहा मैं अव तक लेकिन– अव न क्रोध रोके से रुकता।
धरती से लग गया हिमालय, मेरे आगे झुकता झुकता ॥
या तो मुक्त करो वापू को, वर्ना अव पत्थर वरसेंगे।
मचल उठा है पत्थर पत्थर, पत्थर अव सर पर वरसेंगे ॥

या तो फाटक खोलो जल्दी, वर्ना दावानल धधकेगा।
या तो मुक्त करो पिँजरे से, वर्ना भूतनाथ भभकेगा ॥
चेतन क्या जड भी जागे ये– जव वापू की वीणा वोली।
मूक वेदना से वापू की– हिला हिमालय, धरती डोली ॥

दीवारो को फोड विश्व मे– गूँज रहा था वापू का स्वर।
ताले तसले की रगडो से– जलते थे अंगार भयंकर ॥
'आगा खाँ' के वन्दीगृह के– ताले खुले, खुल गये फाटक।
जय 'वा' की! जय 'महादेव' की! जय जनता! जय जय जननायक!

वापू मुक्त हुए पिँजरे से, तन जर्जर था, मन मे पीडा।
उज्ज्वल दिव्य दृष्टि मे उनकी– पराधीनता की थी व्रीडा ॥
दो छटाँक के सूखे तन मे– काँप रही थी जग की हलचल।
'आगा खाँ' के राजमहल से– मुरझाया सा निकला उत्पल ॥

'वा' की मूक याद वापू को– मन ही मन मे तडपाती थी।
स्वतन्त्रता की दीपशिखा वह– दीपक से कुछ कह जाती थी ॥
यहाँ 'राम' को सता चुकी है– 'सीता' के वियोग की पीडा।
विरह व्यथा रोती रहती है, हँसती है दुनिया की क्रीडा ॥

वे मर्यादा पुरुषोत्तम थे, पर क्या विरह व्यथा सह पाये ?
टूटा हृदय लिये रोते थे, सुख से कब किस क्षण रह पाये ?
यहाँ 'कृष्ण' को रुला चुकी है– 'राधा' के वियोग की पीडा।
कभी किसी को नही सुहाती– तडपन मे दुनिया की क्रीडा ॥

आँसू रोते हैं वियोग के, साध हृदय की मिल जाती है।
मेह बरसता है अम्बर से, सूखी कलिका खिल जाती है ॥
'आगा खाँ' के स्वर्ण महल से– छुटकर पर्णकुटी मे आये।
देवी 'ठाकरसी' सुषमा ने– जननायक के दर्शन पाये ॥

'पूना' की उस 'पर्णकुटी' मे– दल के साथ रहे जननायक।
फूलो ने आरती उतारी, घिर घिर आये बूढे बालक ॥
किरणो ने सहलाया तन को, पात पात ने रस बरसाया।
अमृत पिला बूटी बूटी ने– बापू का जीवन सरसाया ॥

जननायक 'बा' के मन्दिर मे– श्रद्धा सुमन चढाते प्रतिपल।
फूल फूल मे उसे देखते, पात पात मे थी वह उज्ज्वल ॥
खुली हवा मे तरल झूल पर– मुक्त मूर्त्त के दर्शन पाये।
बिना शर्त छूटे गाँधी जी, गली गली ने दीप जलाये ॥

पत्रो मे बापू की आकृति, चित्रो मे थे पूज्य महात्मा।
मृत्युलोक मे पीडित से थे, सब के परम पिता परमात्मा ॥
कुछ दिन 'पर्णकुटी' मे रह कर– 'जूहू' चले गये जननायक।
अगरक्षिका बनी 'सुशीला', सागर-तट बन गया सहायक ॥

स्वास्थ्य-लाभ के लिये जहाँ पर– बापू ने विश्राम किया था।
वहाँ एक रस मे सब रस ने– बापू को आराम दिया था ॥
बापू की मण्डली एक दिन– बैठी थी बापू को घेरे।
मानो सूरज को घेरे थी– स्वर्ण-रश्मियाँ किसी सबेरे ॥

वापू वोले, अगर इस समय- 'वा' भी होती साथ हमारे।
तीनो लोक यही पर होते, स्वर्ग वनाते इसी किनारे ॥
आँसू निकल पडे आँखो से, मन भर आया, आँखे वरसी।
तट पर देवी के दर्शन को- जननायक की आँखे तरसी ॥

वोले, मैं आ गया जेल से, वन्दीगृह से उसे न लाया।
छोड गई वह मुझे अकेला, मैं अपना सव कुछ खो आया ॥
रोती थी मण्डली फूट कर, सागर की आँखे भर आई।
तव से ही उसका जल खारी, जननायक की आँख चुराई ॥

खुली हवा मे उडने वाला- पिंजरे से छुट कर आया था।
'जूहू' के रमणीक किनारे- वापू ने दीपक गाया था ॥
कभी सिन्धु मे विन्दु तैरता, कभी किनारे पर तट चलता।
कभी लहर पर लहर नाचती, कभी सीप मे मोती पलता ॥

कभी सीपियाँ चुगने लगते, जननायक वच्चे वन जाते।
कभी वालको मे वालक वन- गाँधी वावा खेल खिलाते ॥
छोटे छोटे शख वीनकर- वच्चो मे करते थे क्रीडा।
वच्चो के मीठे कलरव से- धोते थे मानस की पीडा ॥

वीते वर्षो मे वापू पर- पडे वहुत चोटो के सोटे।
उन चोटो को खेल खेल कर- धोते थे वे वालक छोटे ॥
कोई छडी पकड वापू की- फक फक दौडा इजिन वनकर।
खेल खेल मे गिर पडते थे- वच्चे वापू के पैरो पर ॥

कोई वापू से कहता था- मैं गाँधी हूँ, मे गाँधी हूँ।
मुँह से धुआँ छोड कहता था- मैं इजिन हूँ, म आँधी हूँ ॥
कोई गा गा सुना रहा था- जाग मुसाफिर ! हुआ सवेरा।
वाल-कल्पना के पखो पर- वच्चे लगा रहे थे फेरा ॥

बहता था वात्सल्य उदधि मे, बच्चे उन से लिपट रहे थे।
कुछ गोदी मे, कुछ घेरे थे, कुछ लाठी से चिपट रहे थे ।।
मानो 'सूरदास' सागर मे– वहा रहे वात्सल्य सुधा-रस।
घोर ग्रीष्म की तप्त आग पर– बच्चो की क्रीडा थी पावस ।।

बच्चो मे भगवान स्वयम् हैं, अमृत बाल-क्रीडा मे मिलता।
बालक होनहार माली हैं, जिनसे पौधा पौधा खिलता ।।
बच्चो से मन बहला बापू– घाव हृदय के सुखा रहे थे।
पर भारत के दुख याद आ– घाव उन्हो के दुखा रहे थे ।।

दुर्भिक्षो से मरे प्रान्त की– चोट हृदय मे कसक रही थी।
भारतमाता के मानस की– चीस हृदय मे चसक रही थी ।।
कौन जानता है कि फूल के– प्राणो मे है कितनी पीडा।
जग तो बाहर की आँखो से– देख रहा है उसकी क्रीडा ।।

डाली पर हँस रहा फूल पर– मूक वेदना चसक रही है।
उसकी कोमल पॉखुडियो के– भीतर पीडा कसक रही है ।।
मुस्काता है और सृष्टि को– सौरभ से सिचित करता है।
झूल हवा के मृदु झूले पर– जग मे मादकता भरता है ।।

फूल ! तुम्हारी सुरभि सत्य को– कर प्रत्यक्ष दिखा जाती है।
तेरी पॉखुडियो पर सचमुच– इन्द्रपुरी झुक झुक गाती है ।।
तुझमे कवि की चाह मचलती, तुझमे मस्ती छलक रही है।
तेरे अधरो पर चुम्बन की– शरद पूर्णिमा झलक रही है ।।

तेरे आगे रग बिरगे– रगो की आँखे झुक जाती।
मूक मस्त मनहर मधु-पूरित ! तुम से सब डाले मुस्काती ।।
स्वास्थ्य-लाभ के लिये जनार्दन– भ्रमण कर रहे थे फूलो मे।
मधुकर मँडराते गाते थे, प्यार भर रहे थे फूलो मे ।।

'पर्णकुटी' मे कभी कभी वे— चन्दा की शैया पर सोये।
और कभी तारे गिन गिन कर— सुवह ओस के हार पिरोये॥
अलवेली स्वर्णिम किरणो पर— कविता वैठी थी विहाग सी।
जिसके मन मे देश-प्रेम की— ज्योति जल रही थी सुहाग सी॥

जिसका जीवन सृजन सजा कर— सौरभ से पथ करे प्रकाशित।
उसकी सुन्दरता सूरज है, जो जन जन के शुभ से शासित॥
वाट देखती थी यह दुनिया— जननायक के चमत्कार की।
अव क्या करते हैं गाँधी जी, कठिन समस्या इसी वार की॥

'वेवल' आये और उन्होने— तरह तरह से कदम उठाये।
तरह तरह की वाते छेडी, तरह तरह के गुड्डे लाये॥
उलझन मे गाँधी 'वेवल' ने— किया पत्र-व्यवहार प्रेम से।
कुछ वुझते थे, कुछ जलते थे, आपस मे अगार प्रेम से॥

वापू वोले, मुझे मिलाओ— काँगरेस की कार्यसमिति से।
वन्द पडी है जो पिँजरे मे, तग आ गई है जो अति से॥
शायद कार्यसमिति से मिल कर— मैं कोई पथ ढूँढ निकालूँ।
सीधी तरह विना उलझन के यह दुस्तर उलझन सुलझालूँ॥

वापू की यह वात न मानी, 'वेवल' ने इन्कार कर दिया।
जाने हँसते हुए प्यार मे— कहाँ कहाँ का खार भर दिया॥
इन तूफानो की हलचल मे— वापू ने वक्तव्य निकाला।
चरण-चाप से, शव्द शव्द से— अन्धकार मे हुआ उजाला॥

कहा, कि काँगरेस की आज्ञा— मिले विना मैं कुछ न करूँगा।
जव तक देश स्वतन्त्र न होगा— तव तक मैं निश्चित न मरूँगा॥
परदेशी भारत को छोडे, अँगरेजी सरकार हटाये।
पीडा उसकी चमत्कार है, जो आँसू को अमृत वनाये॥

जिस जिस ने भी हिसा करके- आन्दोलन अभिशाप किया है-
स्वतन्त्रता के आन्दोलन मे- उस उस ने ही पाप किया है॥
दूध आँच पर रक्खा जाता, आता जब उफान तपने से-
दूध उफन कर खिँड जाता है, सीमा का विधान तजने से॥

दूध विखरने से रुकता है, ठण्डे पानी के छीटो से।
दूध पतीली सहित गिरेगा- यदि तुम मारोगे ईटो से॥
राजनीति क्या! अर्थशास्त्र क्या! सदाचार क्या! सब पर बोले।
गाँधी जी के नैतिक बल से- बड़े बडे सिहासन डोले॥

जिधर जिधर से आँधी आई, उधर उधर वे खडे हो गये।
जितने झुकते गये नम्र हो, उतने ही वे बडे हो गये॥
स्वतन्त्रता का पथ रोका था- अपनी आपस की खाई ने।
'लीग' 'लियाकत' को पुचकारा- 'भूलाभाई देसाई' ने॥

'राजा जी' ने 'जिन्ना जी' की- बँटवारे की नीति मानली।
छनी न और किसी कपड़े मे, अन्त फटे मे दवा छानली॥
क्योकि ब्रिटिश से छुटकारे का- केवल यह उपाय था बाकी।
इसी तरह से कट पाती थी- जकडी हुई बेडियाँ माँ की॥

'जिन्ना' बोले, हे 'राजा जी'! अपने गाँधी को समझालो!
मेरी 'पाकिस्तान' माँग पर- मैं राजी हूँ, उन्हे मनालो!!
मेरी शर्ते माने, तब तुम- 'अस्थायी सरकार' बनाओ!
अपना चूल्हा अलग करो तुम, मेरा चूल्हा अलग कराओ!!

और 'लियाकत अली' इसी पर- 'जिन्ना' जैसे अडे हुए थे।
उन्हे मनाने को 'देसाई'- दुर्गम पथ पर खड़े हुए थे॥
'राजा जी' मध्यस्थ बन गये- उलझी गुत्थी सुलझाने को।
सुलझाता कोई विरला ही, यहाँ बहुत हैं उलझाने को॥

'जिन्ना' की सुनकर 'राजा जी'– जननायक से मिलने आये।
शोणित के आँसू बापू को– 'राजा जी' ने बाँच सुनाये॥
बापू! यही मार्ग है अन्तिम, इसी राह से चाह चलेगी।
दबी हुई पत्थर के नीचे– इसी तरह उँगली निकलेगी॥

जब उँगली सड़ जाती है तब– अन्त काटनी ही पड़ती है।
उँगली से पहुँचा, पहुँचे से– गल गल गर्दन तक सड़ती है॥
नब्ज देखकर बापू बोले– उसकी राजी भी नाराजी।
जाने 'जिन्ना' की राजी पर– सरस्वती कौनसी बिराजी!

कोटि कोटि की लाशो पर क्या– उसका 'पाकिस्तान' बनेगा?
भारतमाता के टुकडे कर– क्या आपस मे खून छनेगा?
पर जैसी ईश्वर की इच्छा! मन भर आया कहते कहते।
ईश्वर के आँचल मे मोती– पहुँच गये तब बहते बहते॥

भारत की स्वतन्त्रता के हित– मैं 'जिन्ना' से स्वयम् मिलूँगा।
फटे दिलो पर पेमँद बनकर– मैं दुनिया मे सदा सिलूँगा॥
जिद्दी 'जिन्ना' से मिलने को– जननायक 'बम्बई' पधारे।
कितने ही मैले हृदयो ने– श्वेत कमल पर फेके गारे॥

कोई हिन्दू छुरा तान कर– उनके आगे आ जाता था।
लेकिन गाँधी दुर्गम पथ पर– शाश्वत फूल पडे पाता था॥
कुठित होती धार छुरे की, जननायक आगे बढ जाते।
और शूल जो बिछा रहे थे, उनके पथ मे फूल बिछाते॥

'जिन्ना' के शाही बँगले पर– पहुँचा एक लँगोटी वाला।
किसी जन्म के किसी पुण्य से– 'जिन्ना' को यह मिला उजाला॥
अन्धकार से महा ज्योति ने– मानो अपना हाथ मिलाया।
या कि जहर को गाँधी जी ने– एक कटोरा शहद पिलाया॥

अन्धकार के बिना ज्योति का– तेज दिखाई किसे दिया है।
अन्धकार मे ही दीपक से– सब ने प्रेम-प्रकाश लिया है।।
और तिमिर को ही उजियाला– तप तप कर चाँदना बनाता।
भोर उसी को तो कहते है– जो सोता ससार उठाता।।

बापू बोले, जिन्ना! बन जा– चाहे तू भारत का राजा।
लेकिन टुकडे कर न देश के, फिसलन से समतल पर आजा!
अपने इस सोने के घर से– अँगरेजो को बाहर कर दो!
'शाह बहादुरशाह जफर' की– कब्र किनारे दीपक धर दो!!

लेकिन 'जिन्ना' ने बापू की– अमृत-पगी वह बात न मानी।
बोला, बन्द करो गाँधी जी! बार बार की वही कहानी।।
बँटवारे के फल स्वरूप ही– यह निबटारा हो पायेगा।
पहिले 'पाकिस्तान' बनेगा, पीछे ब्रिटिश राज्य जायेगा।।

बापू बोले, जिन्ना जी! तुम– अगारो पर उछल रहे हो।
चिनी हुई ईटे खुरपे से– खोद रहे हो, उदल रहे हो।।
अच्छा! जो ईश्वर की इच्छा, नारायण! हम तो जाते हैं।
सब का भला करे परमात्मा, भले यही हर पल गाते हैं।।

बापू की पावन कुटिया मे– बाट देखते थे 'देसाई'।
'राजाजी' ने दर्वाजे पर– आँखो की चाँदनी बिछाई।।
मन्द मन्द साकार शान्ति से– जननायक मन्दिर मे आये।
श्यामल मेघो के छाते मे– नाचे मोर, भक्त जन छाये।।

लाखो आँखो के दीपक ने– बापू की आरती उतारी।
'राजाजी' की उत्सुकता ने– रसना की रसधार पसारी।।
"बापू! क्या लेकर आये हो?" "दानी नही लिया करते हैं।
हाथ नही दानी फैलाते, दानी दान दिया करते हैं।।

मैं तो अमृत बाँटने निकला, 'जिन्ना' को भी गया पिलाने।
पर वह विष उडेलनेवाला, भरा अमृत-घट लगा खिंडाने ॥
खून खराबे पर उतरा है, उसने मेरी बात न मानी।
उसको कौन राह पर लाये, जिस पर है पारे का पानी ॥

वह दो राष्ट्रो के पत्थर पर- पैनी छुरी तेज करता है।
उसने जिस हाँडी मे खाया- उसमे आज छेद करता है ॥
खून खराबे का भविष्य है- उसका 'पाकिस्तान' माँगना।"
"पर बापू ! पथ और कौनसा, जिस पर चल कर मिले चाँदना ?"

प्रतिध्वनि बोली, आग युद्ध की- नया सृजन ले धधक रही है।
धधका लाल सूर्य पश्चिम मे, भूखी ज्वाला भभक रही है ॥
'बर्लिन' तक आ गई आग वह, जो 'हिटलर' ने सुलगाई है।
आँधी के पीछे दीपक है, फूलो के नीचे खाई है ॥

आग लगाने वाले जलते, होली से 'प्रह्लाद' न जलते।
सूरज ज्वाला मे जीते हैं, फूल सदा काँटो मे फलते ॥
दुनिया नाम इसी का तो है, पल पल मे परिवर्त्तन आये।
आज धधकती आग और कल- दुनिया सुधा बरसता पाये ॥

घटनाओ की तेजी देखो, पल पल मे ससार बदलता।
'तीन बडो' को आज चढी है, धूँ धूँ धूँ धूँ 'जर्मन' जलता ॥
बडे बडे जनरल 'जर्मन' के- महायुद्ध मे भस्म हो गये।
गिरा जहाँ भी बम का गोला- लाखो सैनिक वही सो गये ॥

'ब्राउटसिट्स' 'हैलडर' 'हिमलर', 'ब्लोमबर्ग', 'गौब्ल्स' जल गये।
'बैक' 'बोक' 'जनरल गुडीरियन', 'फ्रिट्स' 'मैन्सटाईन' गल गये ॥
'रोमल' 'रुण्डस्टेट' 'गोयरिंग' ! बोलो अब अभिमान कहाँ है ?
बात न मानी तब बापू की, अब 'हिटलर' की शान कहाँ है ?

जोते हुए 'रूस' के 'जनरल- वीर जुकोव' वढे जाते थे।
वीर 'वुडैनी', 'टिमोशैनको'- गढ पर अभय चढे जाते थे ।।
ब्रिटिश फौज के जनरल जूझे, 'ऑकिनलेक' गर्ज बढते थे।
'लॉर्ड मौन्टगुमरी' सेनापति- गिरते जर्मन पर चढते थे ।।

'हिटलर' की आशाये टूटी, गिर पडी रेत की दीवारे।
जो टकराती थी अम्बर से, गिर पडी आज वे मीनारे ।।
'जर्मन' के हँसते हुए नगर, शमशान वन गये पल भर मे।
उलटी आँधी की एक लपट- चीत्कार कर उठी घर घर मे ।।

धरती मे समा गया 'हिटलर', लपटो मे 'नाजीवाद' जला।
जो गला रहा था लोहे को, वह रेतीला इन्सान गला ।।
इस हार जीत की दुनिया मे- कोई हारा कोई जीता।
उसके अतीत के दिन लिखती- उसकी वह बची हुई गीता ।।

'हिटलर' की मिट्टी से पूछो, वह वीर जीत कर क्यो हारा ?
डर गया नाश से दुनिया के, 'अणु-वम' इसलिये नही मारा !
फिर समय पडे पर साथी ही- हा ! मुझे अकेला छोड गये।
'जापान' और 'इटली' दोनो- मेरा अन्तस्तल तोड गये ।।

मेरा क्या, मैं तो मरता हूँ, पर मरता हूँ सर ऊँचा कर।
लेकिन लटकाये जायेगे- फॉसी पर उन हारो के सर ।।
कल या परसो मे उन पर भी- गोलियाँ चलाई जायेगी।
जो जिन्दा लाशे चलती हैं, वे वहाँ जलाई जायेगी ।।

बढ गये अगाडी 'मित्रराष्ट्र', वह जीता सिह पछाड दिया।
'हिटलर' पर विजय प्राप्त करके- 'जर्मन' मे झडा गाड़ दिया ।।
फिर 'इटली' को करके परास्त, सर 'मुसोलिनी' का कटवाया।
जो कल तक सिहासन पर था, उसको अब कुत्तो ने खाया ।।

यह समय वडा वलवान, हाय ! राजा भी वन्दी वन जाते ।
जो सिंहासन पर होते हैं, वे कभी थपेडे भी खाते ।।
फिर भीपण वम के गोलो से– 'जापान' ग्राग मे धधक उठा ।
भूचाल भयकर जाग उठे, भीपण दावानल भभक उठा ।।

जो 'जर्मन' से लाये गोरे, वह 'ग्रणु-वम' उस पर चला दिया ।
उस 'ग्रणु-वम' के ग्रगारो से– 'जापान' निमिप मे जला दिया ।।
वह 'ग्रणु-वम' जिसकी ज्वाला से– जल गये ग्रनेको गाँव शहर ।
सभ्यता वहा ले जाती थी– उस महाप्रलय की एक लहर ।।

यह खेल ग्राग वह पानी का, खेला करते हैं मतवाले ।
जिनको पीने की ग्रादत है, पीते हैं शोणित के प्याले ।।
'जापान' जलाया गोरो ने, 'जनरल तोजो' भी पकड लिये ।
'इटली', 'जापान' ग्रौर 'जर्मन', उन 'तीन वडो' ने जकड लिये ।।

दुनिया की इस नौचन्दी मे– वम नाश ग्रौर निर्माण शेप ।
मिटता वनता इतिहास यहाँ, रह जाता है निर्वाण शेप ।।
उन 'तीन वडो' की जीत हुई, वुझ गई ग्राग, रह गया धुग्राँ ।
निर्माण हमारा वाकी है, उडता उडता कह गया धुग्राँ ।।

जलता वह 'हिरोशिमा' जिसके– उद्योग धुएँ मे उडते ह ।
जो करते थे निर्माण नये– वे लोग धुएँ मे उडते ह ।।
प्रतिशोध भूलकर दुनिया मे– निर्माण करो ! निर्माण करो !
फिर से उजडा 'जापान' वसे, कुछ सृजन करो, कुछ प्राण भरो ! !

जलती दुनिया मे उडता था– पीडित श्वासो से लाल धुग्राँ ।
मानो शकर के डमरू पर– देने निकला था ताल धुग्राँ ।।
यह है 'इम्फाल' वही मोर्चा, जिस पर 'सुभाप' की है समाधि ।
इस मिट्टी मे मेरा 'सुभाप', इसमे वीरो की छिपी ग्राधि ।।

भारत माँ के माथे पर है- जिस असफलता का सफल ताज ।
काँटो पर खिलने वाले को- कब भाता है भौतिक स्वराज ।
तलवार खीचकर बिजली सी- बन गया सिपाही से तारा ।
हीरे मोती मे तुलते हैं, जिनको है स्वाभिमान प्यारा ।।

जो अपने प्राणो पर खेले, वे 'रासबिहारी बोस' कहाँ ?
जो निकल पड़े दीवाने बन, वे भारत के जयघोष कहाँ ?
इस स्वतन्त्रता की वेदी पर- बलिदान बहुत से चढे हुए ।
गतिमान त्रिवेणी गगा मे- फूलो के पौधे पडे हुए ।।

सो गया जगा कर दुनिया को- वह सेनानी 'सुभाष' प्यारा ।
'आजाद हिन्द सेना' निकली, गूँजा 'जयहिन्द' अमर नारा ।।
षड्यन्त्रो के स्वप्निल जग मे- चक्की न कभी चलती मन्दी ।
सेनानी का कुछ पता नही, 'आजाद हिन्द सेना' बन्दी ।।

कोई कहता मर गये 'बोस', गिर पडा उन्हो का यान कही ।
वे जन जन के मानस मे हैं, गिरते न अमर अभिमान कही ।।
सागर की लहरो के ऊपर- जिसके जयकारे लहरे है ।
उस की जय हो! उसको प्रणाम! जीवन से झण्डे फहरे हैं ।।

भारत माता! तुझको प्रणाम! कह गया 'बोस' चलता चलता ।
छिप गया सूर्य किस कोने मे, छिप गया दीप बलता बलता ।।
उसका इतिहास बताता है- वह जला किन्तु दीपक बन कर ।
'एकला चलो रे !' चला गया- एकाकी दुनिया से ऊपर ।।

इन घटना-चक्रो की चक्की- चलती रहती है घरर घरर ।
दुनिया के कोल्हू में प्राणी- पिलता रहता है चरर चरर ।।
पर कितने ऐसे होते हैं- इतिहास स्वयम् बन जाते जो !
इस स्वतन्त्रता के दीपक पर- परवाने बन जल जाते जो ! !

धरती हिलती, अम्बर हिलता, तिल भर हिले नही जननायक।
ऐसी कोई जगह बताओ, जिस पर खिले नही जननायक ।।
जन जन मे झनकार वही हैं, वे ही गीतो मे झनकारे।
वह नाविक पतवार बिना ही— ले जाता था नाव किनारे ।।

महायुद्ध के क्रूर काल मे— बडे बडे सम्राट जल गये।
महाकाल के महानृत्य मे— कितने ही बुलबुले गल गये ।।
लेकिन अडिग रहा लहरो मे— अमर नाव सा सन्त हमारा।
समय साथ लेकर चलता जो— मिल जाता है उसे किनारा ।।

चिनगारी दब गई राख मे, महायुद्ध का अन्त हो गया।
'कट्टरपन्थी राजनीति' का— स्थिति की गति पर भाग्य सो गया ।।
समय समय की बात विश्व मे, आज भिखारी, कल है राजा।
कल राजा है, आज भिखारी, करता रहता समय तकाजा ।।

समय पुकार उठा पीडा से— भारत को आजाद करो अब!
नेता छोडो! बन्दी छोडो! वचन भरे जो याद करो अब !!
भारत-मन्त्री ने 'वेवल' को— भारत से बुलवाया 'लन्दन'।
समय लिख रहा था पल पल मे— राजनीति मे नव परिवर्तन ।।

चलते हुए समय की गति पर— 'वेवल' पहुँच गये 'लन्दन' मे।
नये चुनावो की चर्चा थी, रस था 'चर्चिल' के खण्डन मे ।।
भारत के प्रति नये भाव थे, जाग उठी सोई सच्चाई।
कुछ अँगरेज महापुरुषो ने— भारत की पीडा दफनाई ।।

भारत हित 'बर्नार्ड शा' उठे, बोले, "कैसा हर्ष मनाये?
यहाँ मनाये हर्ष, वहाँ हम— उन जिन्दो की चिता जलाये ।।
भूखे कही, कही नगे हैं, अभी कही भी शान्ति नही है।
चारो ओर लाल बादल हैं, तुम कहते हो क्रान्ति नही है!

'बर्लिन' के उस महानाश को– मैं मानव की हार कहूँगा ।
पराधीन भारत को रखना– मैं तो अत्याचार कहूँगा ।।"
प्रिय 'बर्ट्रेंड रसेल' कह रहे– 'भारत छोडो ! भारत छोडो !
भारत मुक्त करो पिंजरे से, अपने कच्चे धागे तोडो ।।

मुक्त करो भारत के नेता, जेलो के दर्वाजे खोलो !
जो विष फैलाया है अब तक– उसे चूस कर मधु रस घोलो ।।
मानवता की रामायण मे– ऊँचा रहे चरित्र तुम्हारा ।
प्रेम-भाव से नाता जोडो, बना रहे यह देश हमारा ।।"

कहा 'एमरी' ने 'वेवल' से– 'भारत का क्या हाल बताओ ?"
"हम से ऊब चुके वे बिलकुल, बा तन आगे और बढाओ !"
'चर्चिल' बोले, "लेकिन जब तक– जम सकते हो जमे रहो तुम !"
प्रतिध्वनि में कह दिया समय ने– और चार दिन बने रहे तुम ।।

चर्चिल ! दो दिन बाद यहाँ पर– तेरी यह सरकार न होगी ।
जीत 'श्रमिक दल' की निश्चित है, तेरी कुछ दरकार न होगी ।।
'चर्चिल' बोले, "कहो यही अब– हम भारत को छोड रहे हैं ।"
देखो पिले हुए गन्ने को– 'चर्चिल' और निचोड रहे हैं ।।

'वेवल' बोले, "लेकिन 'चर्चिल' ! नेताओ को जल्दी छोडो !
'अहमदनगर किले' मे बन्दी– हाथो की हथकडियाँ तोडो ।।"
"अच्छा ! नेताओ को छोडो, शीघ्र सन्धि की बात चलाओ !
कुछ दिन और खीच लो गाडी, असफल उनकी नीति बनाओ ।।

आम चुनावो मे यदि फिर हम– जीत गये तो पौ बारह है ।
और 'श्रमिक सरकार' बनी यदि– तो हम सब नौ दो ग्यारह हैं ।।"
ये कुचक्र के भाव हृदय मे– लेकर 'वेवल' वापिस आये ।
और 'एमरी' ने भाषण मे– भारत को कुछ स्वप्न दिखाये ।।

आओ 'अहमदनगर किले' मे, जहाँ वन्दियो की चिर आहे।
जहाँ सिसकते कवि के आँसू, जहाँ वन्द भारत की चाहे॥
'कार्यकारिणी' वन्द पडी है- 'अहमदनगर किले' के अन्दर।
'काँगरेस' के वीर सिपाही- वन्द 'जवाहर लाल' जहाँ पर॥

पूज्य 'पटेल' जेल के अन्दर- खीच रहे हैं भारत-रेखा।
'मौलाना आजाद' राष्ट्रपति, जिसने भूत भविष्यत् देखा॥
पर इन सव के अन्तस्तल मे- मेरे जननायक है व्यापक।
सव की वाणी और हृदय मे- ज्योति जगाते हैं जननायक॥

असफल होती नही साधना, पूजा कभी न निष्फल जाती।
देर मगर अन्धेर नही है, भक्ति शक्ति पर भी जय पाती॥
अँगरेजो की दुरभिसन्धि को- ये पिँजरे मे जाँच रहे थे।
स्वतन्त्रता के उस मन्दिर मे- भक्त भक्ति मे नाच रहे थे॥

भक्तो ने आरती उतारी, महाशक्ति ने खोली आँखे।
कारा की दीवारे काँपी, वन्दी उडा फडफडा पाँखे॥
'अहमदनगर किले' के फाटक- एक रोज खुल गये अचानक।
मुक्त हुए भारत के नेता, जय जनता! जय जय जननायक!

उड पिँजरे से वुलवुल आई- अपने प्रिय गुलाव के वन मे।
तारो मे चन्दा से चमके- वीर 'जवाहरलाल' चमन मे॥
कारा से छुटते ही जग मे- वे श्यामल वादल से वरसे।
प्राणो से पूरित पराग पर- वे स्वरूप परिमल से वरसे॥

कहा गर्ज कर, "मुझे गर्व है- 'वयालीस के आन्दोलन' पर।
उन पर है अभिमान गये जो- अपने प्राण-प्रसून चढा कर॥
उनको मेरा अभिवादन है- जो शहीद हो गये देश पर।
जय हो उनकी चले गये जो- निज प्राणो के दीप जला कर॥"

छुटते ही 'पटेल' बोले यह– "मस्तक ऊँचा हुआ हमारा।
दर्वाजे तक आ पहुँचा है– विजयी विश्व तिरगा प्यारा।।
स्वतन्त्रता का द्वार आ गया, द्वार खोल अन्दर जाना है।
हिमगिरि के उत्तुग शिखर पर– हमे तिरगा लहराना है।।

मजिल तुम्हे पुकार रही है, आगे बढते चलो जवानो!
लक्ष्य तुम्हारी बाट देखता, दीप चूमते चलो दिवानो!!"
भारत माँ के अमर पुजारी– तपे स्वर्ण से चमक रहे थे।
दीपशिखा पर परवाने से– भारतवासी दमक रहे थे।।

छुट कर भारत के सपूत वे– बापू की कुटिया पर आये।
तीन वर्ष के बाद उन्होने– पूज्य पिता के दर्शन पाये।।
घोर तपस्या बाद वीर वे– भारत भर की चाह बन गये।
स्वतन्त्रता की राह बने वे, गाँधी उनकी राह बन गये।।

आँखो से ओले गिरते हैं, बुझते हैं धरती के शोले।
आँसू बन कर रह जाते हैं, जलते हुए आग के गोले।।
अगारे बुझते जाते थे, तेज हो रही थी तलवारे।
काँटे पैरो मे गडते थे, चरण चूमती थी मीनारे।।

बन्दी हैं हम जेल मे पवन भी बन्दी पडा है यहाँ।
बापू भी यह मुक्त शान्त स्वर से है देश मे गा रहे।
वाणी से उस प्राण मेघ बरसे, है गा रही चाँदनी।
गाँधी की पग-धूलि लेकर तिरगा है उडा देख लो।।

जाती है यह नाव, सिन्धु लहराता आ रहा साँप सा।
खेता है पर नाव नाविक, चली जाती तरी तैरती।।
मेघो मे रवि सिन्धु की लहर सी नौका चली जा रही।
बैठे हैं जिसमे धरा भर लिये मल्लाह बापू दिवा।।

सप्तविंश सर्ग

तलवार की धार

घेरे थे घन राजनीति मकडी के जाल डाले हुए।
खारी सिन्धु लिये विचार करते बापू धरा के शिव ॥
गोरो की उलझी हुई विषमता की नीति मे राष्ट्र था।
बापू की रसना-तरी सुपथ थी बिच्छू भरी नीति मे ॥

सॉपो के फण हैं भरे जिस पिटारी को लिया हाथ मे।
देखो काट न ले विषाक्त इनसे खेलो जरा दूर से ॥
बापू ने विष को उतार विष पी डाला गले मे फणी।
कैसे खेल खिला रहे फणिक को भोले मदारी यहाँ ॥

सघर्षो का नाम विश्व है, कण कण मे होते भीषण रण।
ससृति के सुन्दर वसन्त मे– परिवर्तन होता है क्षण क्षण ॥
चार दिनो के इस मेले मे– हर मनुष्य हँसता रोता है।
दुनिया भूल भुलैया इसमे– खोता पथिक, खूब सोता है ॥

नेताओ ने नाव छोड दी, सागर तट पर ज्योति जगाई।
सारी स्थिति पर दृष्टि डाल कर– जननायक ने डगर बनाई ॥
बोले, वातावरण आज का– बदला, बदली घुमड रही है।
पात पात पर परिवर्तन की– नई रागिनी उमड रही है ॥

आम चुनाव नये होगे अब, 'लन्दन' मे परिवर्तन होगा।
शीघ्र नई 'मजदूर सभा' का– लोकसभा मे आसन होगा ॥
शुद्ध भावना, शुद्ध हृदय से– वहाँ 'श्रमिक सरकार' बनेगी।
अमर अहिंसा के आसन पर– विश्व शान्ति साकार बनेगी ॥"

समय तीव्र गति से चलता है– पग पग पर इतिहास बनाता।
घटना-चक्रो के जालो मे– समय स्वयम् गुत्थी सुलझाता॥
समय-शिला पर 'वेवल' बोले– "लो ! हम देते हैं आजादी।
सब दल के नेताओ ! आओ, मैने यह तसवीर बनादी॥"

सभी दलो के प्रतिनिधित्व से– 'शिमला सम्मेलन' बुलवाया।
पर सवर्ण हिन्दू को उसमे– समय-शिला ने पृथक् भुलाया॥
फिर से कदम उठा 'वेवल' का, कानाफूसी चली देश मे।
फैल गई सनसनी देश मे, जीवन दीखा कॉंगरेस मे॥

सब दल के नेता 'शिमला' मे– शामिल हुए, हुई पचायत।
'मौलाना आजाद राष्ट्रपति'– वहॉं आँसुओ की थे आयत॥
'जिन्ना' और 'लियाकत' अपनी– अलग लियाकत दिखलाते थे।
'फजलुलहक' का फजल उन्हो पर, दोनो मूँछे पैनाते थे॥

खोल तिजोरी, फूक मार कर– 'वेवल' ने तसवीर निकाली।
रग बिरगे दीप धरे थे, दीख रही थी दूर दिवाली॥
'कृपलानी' ने कहा दूर से– रग बहुत अच्छे भर लाये।
यह पतग का कागज जिसको– काट काट कर दीप बनाये॥

जागरूक 'नेहरू' निपुण ने– उस पर नई रोशनी डाली।
किन्तु 'लीग' ने दिखा तर्जनी– पल मे उल्टी करदी प्याली॥
दिव्य दृष्टि से देख रहे थे– खेल खिलौनो का जननायक।
वातायन से झॉंक रहे थे– अखिल विश्व मे व्याप्त विधायक॥

पखवारे तक 'शिमला' मे यह– चर्चा चलती रही बरावर।
राजनीति के दो कूलो मे– धारा बहती रही बरावर॥
'जिन्ना' यही वाक्य रटते थे, 'लीग' मुसलमानो की प्रतिनिधि।
स्वर्ग विश्व मे रचा रही थी– अलसाई सी सुलझन की विधि॥

खेल विगाड दिया 'जिन्ना' ने, खोदा पर्वत, निकला वीना।
खेल खराव किया 'वेवल' ने, खत्म हो गया खेल खिलौना ॥
असफलता के अगारो पर- तलवारो ने धरी सफलता।
पानी नही धार से कटता, जीवन नही आग पर जलता ॥

कोई चित्र बनाता, कोई- चित्र विगाड दिया करता है।
कोई वात वनाता, कोई- वात उखाड दिया करता है ॥
नये चुनाव हुए 'लन्दन' मे, वैधानिक परिवर्त्तन आये।
श्री 'पैथिक लॉरेंस' जीत कर- जग मे नई रोशनी लाये ॥

जीत 'श्रमिक दल' आगे आया, मत मे 'कट्टरपन्थी' हारे।
आसन पर आ गये 'एटली', 'चर्चिल' अपने लोक सिधारे ॥
ढाँचा बदला ब्रिटिश राज्य का, आशा पख लगा कर आई।
राजनीति की छाया वदली, स्वर्ण किरण ने ली अँगडाई ॥

कहा ब्रिटिश सम्राट जॉर्ज ने- 'लोक सभा' के उद्घाटन मे-
"भारत मे स्वायत्त राज्य अब- स्थापित होगा इस सावन मे ॥"
राजनीति की चर्चा दौडी, 'वेवल' को 'इॅग्लैंड' वुलाया।
समालोचना करी समय की, नये राज्य ने कदम उठाया ॥

'वेवल' 'लन्दन' गये, वहाँ पर- चर्चा चली 'श्रमिक शासन' से।
"भारत को स्वाधीन करेगे", कहा 'एटली' ने आसन से ॥
"वहाँ लोकमत के नेता ही- भारत के होगे अधिकारी।
अब भारत स्वाधीन बनेगा, बहुत वह चुके आँसू खारी ॥

जल्दी ही अव भारत मे हम- 'ब्रिटिश शिष्टमण्डल' भेजेगे।
जनता जिसको बतलायेगी- हम उसको सत्ता दे देगे ॥
किस नेता की अधिक चाह है, वहाँ 'शिष्टमण्डल' देखेगा।
सत्ता-सूत्र उसी को देगे- भ्रमर जिसे उत्पल देखेगा ॥

'ब्रिटिश शिष्टमण्डल' भारत के- गाँव गाँव मे जाँच करेगा।
भारत के हित हेतु वहाँ से- वह जनता के भाव भरेगा॥
शासन-सूत्र उन्हे सौपेगे- जिनके लिये लोकमत होगा।
जो जितना बलिदान करेगा, वह उतना ही उन्नत होगा॥"

बातचीत के वाद लौटकर- 'वेवल' जल्दी भारत आये।
अपने बुझे हुए से मन से- भारत को सन्देश सुनाये॥
राजा की 'शासन परिषद्' ने- भारत को सत्कार दिया है।
भारत को स्वायत्त राज्य के- रचने का अधिकार दिया है॥

प्यार फूल से करना है तो- काँटो को भी साथ लगाओ!
जीवन मे यदि हँसना है तो- दु खो मे भी बढते जाओ!!
चोटी पर चढने वाले के- पत्थर पैरो मे गडते है।
पलको के तट पर आँसू के- दीप जलाने ही पडते हैं॥

स्वतन्त्रता के परवानो की- देख रहे थे अमर कहानी।
भारतमाता की आँखो का- किस किस ने पोछा है पानी॥
यह 'आजाद हिन्द सेना' जो- 'लाल किले' मे बन्द पडी है।
सेनानी 'सुभाष' की इच्छा- 'लाल किले' मे तृषित खड़ी है॥

ये वे मुक्त पुजारी जिनके- जीवन की पग-ध्वनि जागृति है।
ये वे अमर सिपाही जिनकी- स्वतन्त्रता सुन्दर आकृति है॥
ये परवाने स्वतन्त्रता के- दीपक पर जलने वाले हैं।
इनके बलिदानो के बल से- बुझे दीप बलने वाले है॥

यह 'सुभाष' की सेना जिसके- लाखो वीर शहीद हो चुके।
पराधीनता की स्याही के- जो माथो से दाग धो चुके॥
कितने ही 'आजाद हिन्द' के- मोर्चो पर मर गये सिपाही।
धीरे धीरे चले जा रहे- आने जाने वाले राही॥

ये वे राही है जो जग मे— राही बन कर राह बन गये।
ये वे दीपक जलते है जो— स्वतन्त्रता की चाह बन गये॥
अँगरेजो का न्याय इन्हो पर— यहाँ मुकदमा चला रहा है।
ये तो दीपित अग्निपुज है, पगले किनको जला रहा है?

स्वतन्त्रता के लिये लडे ये, काँगरेस पैरवी करेगी।
इन वीरो के लिये न्याय से— काँगरेस जी खोल लडेगी॥
'लाल किले' मे चला मुकदमा— स्वतन्त्रता के दीवानो पर।
सबकी आँखे लगी उधर ही, करवट बदल उठा भारत भर॥

'दिल्ली' दहकी, 'लाल किले' से— चहल पहल मचली सारे मे।
कितना पानी भरा 'बोस' ने— प्रिय 'जयहिन्द' अमर नारे मे॥
एक नया इतिहास बन गई— अमर वीर की अमर कहानी।
जय के झरनो से झरता है— सेनानी 'सुभाष' का पानी॥

पानी, आग और आँधी मे— जिनकी मिटती नही कहानी।
उनका जीवन मिटा सकेगी— क्या अँगरेजो की नादानी!
स्वतन्त्रता की आग फूंक दी— हृदय खोल कर अखबारो ने।
चला मुकदमा, जीवन आया, ज्योति जगाई जयकारो ने॥

जय 'आजाद हिन्द सेना' की, चोगा पहिन 'जवाहर' निकले।
चले लाल स्वर्गिक मोती के, बन वकील नर नाहर निकले॥
नई दलीले खोज निकाली— 'भूलाभाई देसाई' ने।
नई जिन्दगी भरी देश मे— लौह पुरुष 'वल्लभ भाई' ने॥

'लाल किले' मे न्यायालय की— कुरसी पर जज साहब आये।
'सहगल', 'शाहनवाज' सिपाही— खडे कठघरे मे मुसकाये॥
बडे बडे नेता भारत के— चोगा पहिने खडे हुए थे।
मथ साहित्य वकालत का सब, 'भूलाभाई' अडे हुए थे॥

°°°°OOOO°°°°

जय 'आजाद हिन्द सेना' की, 'लाल किला' ललकार रहा था।
आज उसे अभिमान बहुत था, सत्ता को फटकार रहा था॥
चला मुकदमा चहल पहल से, चहल पहल जीवन मे आई।
बहस शुरू हो गई, बहस मे– गर्ज उठे नाहर 'देसाई'॥

'भूलाभाई देसाई' के– नयनो मे जय-ज्योति विराजी।
तर्कशास्त्र वाणी मे आया, बुद्धि गिरा गौरी ने माँजी॥
सरकारी वकील का उत्तर– बडी शान से दिया उन्होने।
देश-दीप्ति को नया उजाला– दीपदान से दिया उन्होने॥

यह अधिकार पराधीनो का– बन्धन की ज़ंजीरे तोडे।
जन्मसिद्ध अधिकार मनुज का– तोड बेडियाँ, कारा छोडे॥
हर गुलाम को हक है यह, वह– हर उपाय से स्वतन्त्रता ले।
किसी तरह भी बन्धन काटे, किसी न्याय से स्वतन्त्रता ले॥

हर गुलाम को हर उपाय से– हक है पर का राज्य बदल दे।
पराधीनता के पिँजरे पर– जैसे तैसे आग उगल दे॥
यह 'अजाद हिन्द सेना' जो– स्वतन्त्रता के लिये लडी है।
'लाल किला' यह उसका जिसमे– बन्दी बनकर आज खडी है॥

न्याय, तर्क वह कानूनो से– तुमको इन्हे छोडना होगा।
जिससे इन्हे बाँध रक्खा वह– रस्सा तुम्हे तोडना होगा॥
'भूलाभाई देसाई' के– तर्क अकाट्य, काटकर निकले।
जो सरकारी कुरसी पर थे, उनकी बुद्धि चाट कर निकले॥

सारा भारत 'लाल किले' को– देख रहा था आँख लगाये।
'भूलाभाई देसाई' ने– कारा के फाटक खुलवाये॥
झुकी लोकमत-बल से सत्ता, जय 'आजाद हिन्द सेना' की।
समय लिख रहा था पृष्ठो पर– किस किस ने कितनी सेवा की॥

भारत माँ की जय जय गाते– 'लाल किले' से वन्दी छूटे।
जय 'आजाद हिन्द सेना' की– धरती वोली, वन्धन टूटे॥
जन-सागर ने उमड उमड कर– लहरो की निधि न्यौछावर की।
घन-परियो ने घुमड घुमड कर– नयनो की निधि न्योछावर की॥

शशि भानु 'सुभाप' प्रकाश प्रभा–
'जयहिन्द' भरी उसकी गति है।
करता शतवार प्रणाम उसे,
शुभ मजिल ही जिसकी यति है॥
पथ हार गया उसके डग से,
उस की पग-चाप पुकार रही।
चलता चल जीवन-ज्योति लिये,
वह नाव तुझे कर पार रही॥

हार जीत की इस दुनिया मे– कौन हारता ? कौन जीतता ?
साँप निकल जाता है जव तव– खाली हाथ लकीर पीटता॥
क्या मृत्युजय के जीवन पर– काला पानी चढ सकता है !
ज्योति जले जिसके जीवन से– राष्ट्र उसी से वढ सकता है॥

देश-प्रेम की मधुर भावना– भारत भर मे लहराती थी।
सेनानी 'सुभाप' की गाथा– नई जवानी वरसाती थी॥
परिवर्त्तन की प्रथम किरण मे– नये चुनावो की हलचल थी।
जीवन मे उत्साह भरा था, गाँधी जी की चहल पहल थी॥

नये चुनाव हुए भारत मे, नेताओ ने विजय प्राप्त की।
स्वतन्त्रता की सरल सलोनी– गाँधी जी ने हवा व्याप्त की॥
प्रान्तो की सरकारे वदली, काँगरेस के झण्डे लहरे।
विजय वाँसुरी वजी केन्द्र मे, जननायक फूलो पर फहरे॥

'ब्रिटिश शिष्टमंडल' भारत मे- वहती हवा देखने आया।
गॉव गाँव मे गया शिष्ट दल, फूल फूल में समरस पाया ॥
गया जिधर भी सुनी उधर ही- गॉधी की जय! गॉधी की जय!
गाँव गॉव मे गूँज रहे थे- बापू की वाणी के निश्चय ॥

कॉगरेस सरिता सारे मे- नई हवा ले लहराती थी।
कॉगरेस की गति ग्रामो में- गाँधी जी के गुण गाती थी ॥
कही कही खोलो के ऊपर- 'जिन्ना' का रँग चढा हुआ था।
कुछ ग्रामो पर हरे रग का- खस्ता कागज मढा हुआ था ॥

स्वॉग रचा कर बहकाते थे- 'लीगी' लोगो के हथकण्डे।
खतरे मे 'इस्लाम' आ गया- कह कह उठा रहे थे झण्डे ॥
गंगा की गति सा पवित्र था- झण्डा उडता हुआ तिरगा।
इधर नृत्य करती थी लहरे, उधर नाच होता था नगा ॥

प्रतिवेदन के शब्द फूल ले, गया 'शिष्टमण्डल' भारत से।
चॉद अमा को साडी पहिना- चला गया उज्ज्वल भारत से ॥
कोई पूरा तोल रहा है, कोई कमती यहॉ तोलता।
एक प्रभात टटोल रहा है, एक उषा मे तिमिर घोलता ॥

आँखो में ले चित्र देश के, गया 'शिष्टमण्डल' अपने घर।
ज्वाला भरे फूल दिखलाये, ब्रिटिश राज्य परिषद् में जाकर ॥
भारत ही क्या, सारे जग में- गॉधी की पूजा होती है।
पराधीनता के पिँजरे मे- बन्दी भारत मॉ रोती है ॥

वाह! 'जवाहरलाल नेहरू'- राज्य कर रहे हैं हृदयो पर।
'वल्लभ भाई' 'कृपलानी' की- तसवीरे रक्खी हैं घर घर ॥
मजहब का आधार पकड कर- 'लीग' मुसलमानो पर छाई।
एक तरफ चौतीस कोटि हैं, कुछ ने खिचडी अलग पकाई ॥

'जिन्ना' के प्रति गिने चुने ही– अच्छे भाव वहाँ रखते थे।
गाँधी जी के लिये हृदय सब– भारी चाव वहाँ रखते थे ॥
'जिन्ना' यह दावा करते थे– 'लीग' मुसलमानो की प्रतिनिधि।
दो राष्ट्रो के निश्चय पर थी– 'जिन्ना' और 'लियाकत' की विधि ॥

सुनी रिपोर्ट 'मन्त्रिमण्डल' ने, फिर यह की योजना प्रकाशित–
"मेल करा स्वाधीन करेगे, भारत नही रहेगा शासित ॥
उनका समझौता करवाने– 'ब्रिटिश मन्त्रिदल' भारत जाये।
सब को एक साथ बैठा कर– 'अस्थायी सरकार' बनाये ॥

जिसमे सब दल के प्रतिनिधि हो, ऐसी राजसभा निर्मित हो।
ऐसी विधि से उलझन सुलझे, सब का सुलझाने मे चित हो ॥
भारत छोड रहे हैं हम पर– सद्भावो को कैसे छोडे ?
उस गगाजल के वर्तन को– चोट मार कर कैसे तोडे ?

'चर्चिल' ने की चीपटाक पर– पकी नही चावल की खिचडी।
'चर्चिल' की तीखी चोचो से– भारत माँ की वात न विगडी ॥
श्री 'पैथिक लॉरेस', 'क्रिप्स' वह– 'अलेकजेडर' भारत आये।
यही 'मन्त्रिदल' था तीनो का, जिसने फिर से रास रचाये ॥

भारत की उलझन सुलझाने– 'ब्रिटिश मन्त्रिदल' भारत आया।
बारी बारी से 'दिल्ली' मे– सब नेताओ को बुलवाया ॥
कभी बुला 'जिन्ना' को बोले– बतलाओ क्या माँग तुम्हारी ?
कभी पूछते थे गाँधी से– क्यो इन आँखो मे जल खारी ?

बापू बोले, भारत छोडो! मानो अच्छी बात हमारी।
फलीभूत होगी दुनिया मे– सुन्दर भावो की फुलवारी ॥
पर 'जिन्ना' तो नही मानते, कैसे झगडा मिटे तुम्हारा ?
गाँठ नही खुलती 'जिन्ना' की, बतलाओ क्या दोप हमारा ?

अच्छा, गाँधी जी ! 'जिन्ना' से– बात करो तुम मेरे आगे।
जब सब मिल कर सुलझायेगे– शीघ्र सुलझ जायेगे धागे ॥
हमने यह सकल्प किया है– इन धागो को सुलझायेगे।
भारत माता के मन्दिर के– हम दर्वाजे खुलवायेगे ॥

'भारत छोडो' नीति तुम्हारी– हम इस बार मान कर आये।
शुद्ध हृदय से प्रेम भाव से– भारत की स्वतन्त्रता लाये ॥
'जिन्ना' आये, गाँधी जी से– बात 'क्रिप्स' के मध्य चली फिर।
पडी एक दो बूँद स्नेह की, मन्दी मन्दी ज्योति जली फिर ॥

बापू बोले, आओ जिन्ना ! एक नाव पर चले बैठ कर !
जिन्ना बोला, ऊँ हूँ गाँधी ! मुझे नाव पर लगता है डर ॥
तुम तो तूफानी सागर मे– पत्तो की यह नाव चलाते।
नाव डुबा देगी कागज की, जिन्ना ! क्यो जिन्दगी गलाते ?

भारत का बँटवारा करके– टूटी फूटी नाव बनाते।
धर्म नही आधार राष्ट्र का, क्यो टुकडे टुकडे करवाते ?
जिन्ना बोला, हिन्दू मुस्लिम– नही मिलेगे, नही मिलेगे।
बापू बोले, एक बाग मे– तरह तरह के फूल खिलेगे ॥

हम मनुष्य हैं, मनुष्यता से– मीठे और महान रहेगे।
हिन्दू मुस्लिम क्या चिडिया है ! हम सब ही इन्सान रहेगे ॥
बने एक मिट्टी से हम सब, मिट्टी ही मे मिल जायेगे।
ईश्वर खुदा एक ही तो हैं, जुदा न उनको कर पायेगे ॥

कच्चे धागे पर समझौता– कुछ उलझा सा दिया दिखाई।
'ब्रिटिश मन्त्रिदल' जो लाया था– वह योजना सामने आई ॥
खोल पिटारी 'मन्त्रि मिशन' ने– अपनी वह योजना निकाली।
पल भर को सारे भारत मे– विजली सी चमकी उजियाली ॥

क्योकि चमक से चकाचाध हो– मचल रहे थे नयन निराले।
कुछ ऊपर से उजले थे पर– अन्दर से थे विलकुल काले॥
कहा 'मन्त्रिदल' ने उन सवसे– "सारा भारत 'ए वी सी गुट'।
'ए गुट' छ प्रान्तो वाला है, और तीन सूवो का 'वी गुट'॥

'सी गुट' मे दो सूवे शामिल– 'वग' और 'आसाम प्रान्त' हैं।
'सिन्ध' और 'पजाव' प्रान्त वह– 'सीमा' 'वी गुट' धाम प्रान्त हैं॥
'मध्य' और 'मद्रास' 'उडीसा', 'युक्तप्रान्त' 'वम्वई' 'विहारी'–
'ए गुट' मे शामिल हैं, अव तुम– मिलकर मानो वात हमारी॥

प्रति दस लाख व्यक्तियो पर तुम– चुन चुन एक एक प्रतिनिधि को–
रच 'विधान परिपद्' अव अपना– राज्य सँभालो रच रच विधि को॥
जव तक इस 'विधान परिषद्' का– वन विधान आगे आयेगा–
तव तक 'अस्थायी सत्ता' रच– भारत स्वतन्त्रता पायेगा॥

रच 'विधान परिपद्' भारत मे– अपना नया विधान वनाओ।
'अस्थायी सरकार' वनाकर– स्वतन्त्रता के दीप जलाओ॥
और 'सवर्ण हिन्दुओ' से भी– भारत का यह मुकुट सजाओ।
पर 'अन्त कालीन' राज्य मे– सव वर्णो के प्रतिनिधि लाओ!॥"

शीघ्र राष्ट्रपति ने भारत मे– कॉगरेस की सभा वुलाई।
वॉच 'दीर्घकालीन योजना'– 'मन्त्री-दल' की वहाँ सुनाई॥
जननायक की वात मानकर, कॉगरेस ने छाप लगादी।
मान योजना 'मन्त्रि मिशन' की– प्रथम किरण की झलक दिखादी॥

पर अन्तरिम योजना तज दी, नाम 'सवर्ण हिन्दु' से चिढकर।
कॉगरेस ने अस्वीकृति दी, 'मुस्लिम लीग' जम गई उस पर॥
'मन्त्रि मिशन' ने कॉगरेस के– विना उसे इन्कार कर दिया।
इसी फूट की चिनगारी ने– आग लगाकर जहर भर दिया॥

वाट देखकर कॉगरेस की– पुन 'मन्त्रिदल' ही अकुलाया।
तार भेज तत्काल उन्होंने– पुनः 'नेहरू' को वुलवाया॥
कहा कि अपने रग ढंग से– 'अस्थायी सरकार' वनाओ!
जो राष्ट्रीय धीर मुस्लिम हैं– उनको अपने साथ वसाओ!!

सुनकर उनकी वात 'नेहरू'– गाँधी जी के पास पधारे।
वापू वोले, लगा सकोगे– इसी तरह अव नाव किनारे॥
आज योजना 'मन्त्रीदल' की– इसी तरह स्वीकार करो तुम।
वीच भँवर मे नाव देश की, इसी तरह से पार करो तुम॥

मेरी अभिमति यही इस समय– 'मन्त्रि मिशन' की वात मानलो।
दो पल वाद दिवस निकलेगा, यह ढलती सी रात मानलो॥
मानो तुम 'अन्तरिम योजना', स्वीकृति दे दो 'मन्त्रीदल' को।
सच्चाई से लो स्वतन्त्रता, हवा न छूने देना छल को॥

'अस्थायी सरकार' वनी पर– 'जिन्ना' ने इन्कार कर दिया।
स्वतन्त्रता की स्वर्ण-रश्मि पर– दहका कर अगार धर दिया॥
स्वतन्त्रता के प्रथम चरण पर– विगड़ 'लीग' ने लात लगाई।
भभक उठी सस्ती भावुकता, सुलग उठी पथ की परछाई॥

इधर 'नेहरू' ने भारत मे– 'अस्थायी सरकार' वनाई।
भारतमाता की छाती पर– उधर 'लीग' ने आग जलाई॥
सीधा हमला किया लीग ने, 'खुली कार्रवाई' अति वोली–
आज जलेगी, आज जलेगी, गाँधी! स्वतन्त्रता की होली॥

हत्या करने, आग लगाने– निकल पडी गुण्डो की टोली।
रोली थाल सजाती थी जो– पुछने लगी उन्हो की रोली॥
वह 'सोलह अगस्त' जिस दिन हा! 'कलकत्ता नरमेध' हुआ वह॥
जिस दिन दीवारे रँगते थे– शोणित के पतनाले वह वह।

जव दीप जलाकर भारत के- मस्तक पर धरने चले ताज-
जननी के चरण चूमने जव- सव खडे हुए राजाधिराज-
तव 'वग' भूमि की छाती पर- हत्यारा 'पाकिस्तान' चढा।
चढ गया खून, वढ चली 'लीग', कायरता से 'इस्लाम' वढा॥

हाथो मे खूनी छुरे लिये- घुस गये घरो मे मुसलमान।
लाशो पर दाँत चलाने को- या मरघट मे घुस गये श्वान॥
देखो! वूढे वगाली को- घर के खम्भे से वाँध दिया।
फिर कत्ल 'वग' जननी को कर- आँखो के आगे खून पिया॥

उसके जवान अन्तस्तल को- कुण्ठित कटारियो से काटा।
दुधमुँहे विचारे वच्चे का- माँ के आगे लोहू चाटा॥
भालो की नोको के ऊपर- सगीनो पर वच्चे टाँके।
नगी कर अग काटते थे- अपनी दुखिया भारत माँ के॥

उस सती साधना सुकुमारी, वगालिन नारी को खीचा।
फिर उसकी गोदी के शिशु को- दो सख्त मुट्ठियो ने भीचा॥
घुट गया वही दम वच्चे का, फिर खीच वीच से चीर दिया।
फिर माँ की आँखो के आगे- उसके वच्चे का खून पिया॥

यह देख रो पडी वेशर्मी, धरती की देवी चीख पडी।
क्या तुम मनुष्य हो? डूव मरो! रो रही आज मैं खडी खडी॥
ओ कृष्ण! सुदर्शन कहाँ गया? सो गया कहाँ वह शख-घोष?
छिप गया कहाँ भैया 'सुभाष'? छिप गये कहाँ 'अरविन्द घोष'?

ये वहिने टेर रही तुमको, गाँधी वापू! भैया पटेल!
लुट रही यहाँ मेरी अस्मत, खिल रहा खून से यहाँ खेल!!
ओ वीर जवाहर लाल! आज- 'वगाल' खून मे रँगा पडा।
ओ मुसलमान! तेरा 'कुरान'- यह देख रहा है खडा खडा॥

तू स्वतन्त्रता के दीपक की– वत्ती पीछे से खीच रहा।
तू अपनी ही माँ वहिनो के– शोणित से किस्मत सीच रहा॥
तू खून 'जफर' के वेटो का– अपने माथो से धो न सका।
तेरे मुँह पर कालिमा लगी, पर तू हाथो से धो न सका॥

किसने मनुष्य को सिखा दिया– इन्सानो का आमिष खाना?
झगडे बढते ही गये किन्तु– खूनी भेडिया नही माना॥
'कलकत्ता' का सूखा न खून, हो गया लाल 'नोआखाली'।
पशुता के नगे नर्तन मे– बजती थी गुण्डो की ताली॥

'लीगी' थी सरकार 'बग' मे, बग भूमि छुरियो ने घेरी।
'सुहरावर्दी' ने कानो पर– उँगली रख कर आँखे फेरी॥
ले टट्टे की आड 'लीग' ने– खून हिन्दुओ के करवाये।
'लीग मन्त्रिमण्डल' थे जिनमे– उन प्रान्तो मे पशु शरमाये॥

खून खरावा मारकाट थी, वलात्कार का राज्य वहाँ था।
'केन्द्र' इसलिये चुप बैठा था, 'वेवल' वायसराय यहाँ था॥
महा लोमहर्षण पशुता थी, वहिनो को ले गये उठाकर।
वे सुकुमारी कोमल वहिने– आज मुसलमानी हैं घर घर॥

काँप रही लेखनी शर्म से, कहते कहते आँसू आते।
हा! सुकुमारी एक कली का– मैं क्या कहूँ कि क्या कर जाते!
पडी खून मे लथपथ देखो– नगी चौराहे के ऊपर।
जिसका खून निचोड लिया है– उन गुण्डो ने चाव चाव कर॥

कितने 'ईरानी हरमो' मे– वहिनो से टाँगे दववाई!
किये धर्म परिवर्त्तन कितने, कितनी नवयुवतियाँ उठाई!
पहिले पशुता, फिर तलवारे, वाँध पेड से जला रहे थे।
हाय! हिन्दुओ के मातम मे– मीठी ईदे मना रहे थे॥

दो दो चार चार आनो मे– वेची हैं वेटियाँ हमारी।
काट गँडासो से शिशुओ को– पका रहे हैं वे तरकारी॥
'नोआखाली' जिला कि जिसके– गाँव गाँव मे शोणित वरसा।
यही 'रामपुर', यही 'फतहपुर', यही 'दासपाडा' जो तरसा॥

'वादलकोट' आदि ग्रामो की– ये हैं रक्त रँगी तसवीरें।
पूरा वर्णन कर न सकेगी– लिखी हुई ये चार लकीरें॥
धूँ धूँ जलते हुए गाँव वे– जिनमे वच्चे जिन्दा जलते।
वे आँसू वह रहे कि जिनसे– पत्थर गिरते, पत्थर गलते॥

वह है 'नन्दीग्राम' कि जिसमे– लाखो गुण्डे घुसे जा रहे।
जला रहे घर, लूट रहे धन, नोच नोच कर मास खा रहे॥
ओ धरती! तू फटी न क्यो तव? गिरा नही आकाश! तले क्यो?
जो सतीत्व को लूट रहे थे, कहो न वे पाषाण गले क्यो?

धूलि! वतलादे तनिक तू, धूलि मे कितने मिले हैं?
धूलि मे मिलते सभी वे, फूल जितने भी खिले हैं॥
आग उगली आँसुओ ने, आँधियाँ आई उमड कर।
विजलियाँ कडकी गगन मे, डोलते देखे डगर डर॥

प्रलय पारावार दौडा, क्रोध के अगार फूटे।
शेष-शैया से उठे हरि, सिन्धुओ के वाँध टूटे॥
कौन रोकेगा प्रलय जल, कह रहा यह कौन किससे?
कौन है ऐसा धरा पर, रुक सकेगी प्रलय जिससे?

कौन नागिन के फणो को, फूँक देगा फूक ही से?
कौन पोछेगा नयन-जल, भावना की हूक ही से?
मेदिनी भूखी तडपती, भीख चुटकी भर न मिलती।
दीप की लौ काँपती है, कँपकँपी से धरा हिलती॥

अष्टाविंश सर्ग
शान्ति के चरण

फैलाये फण आ रहा उदधि, मानो क्रोध ही आ रहा।
पीडा है, बडवाग्नि है, प्रलय मानो मेदिनी ला रही॥
देखो ! मानव रोकता उदधि को, जैसे दुखी को दया।
देते हैं करुणा-सुधा सुमन जैसे वे, कला गा रही॥

रक्तपात से धरती दहली, काँप उठा आहो से अम्बर।
आसन डोल उठा बापू का, काँप उठे जननायक थर थर॥
डगमग करते उठे चरण वे, तीनो लोक काँपते पाये।
'नोआखाली' की यात्रा को– जननायक ने कदम बढाये॥

दुखियो के दुख दर्द मिटाने– चला लँगोटी वाला बाबा।
साथ चली भक्तो की टोली, आगे पीछे 'काशी' 'काबा'॥
उन चरणो के साथ साथ ही– हवा बदलती चली अगाडी।
प्रश्न कर रही थी पग-ध्वनि यह, फुलवाडी किस लिये उजाडी ?

हिली 'बग सरकार' डगो से, 'सुहरावर्दी' ने रुख बदला।
'लीग मन्त्रिमण्डल' का आसन– उनकी पग-ध्वनि सुनकर सँभला॥
'कलकत्ता' से स्टीमर द्वारा– बापू 'नोआखाली' आये।
ग्राम 'चौमुहानी' ने पहिले– जननायक के दर्शन पाये॥

मन-मन्दिर मे 'राम' साथ थे, और अमृत वर्षा आँखो मे।
जो ज्वाला को पानी करदे, कौन एक ऐसा लाखो मे ?
पीडाये सुनते लोगो की, द्रावक दशा देख रो पडते।
सुन्न खडे रह जाते थे वे, राख बने घर मे जब बढते॥

देख रक्त-रंजित कमरों को, जले भुने शव पड़े देखकर–
'राम !' कहा, फिर मौन हो गये, अपनी छाती पर रख पत्थर ॥
गाँव गाँव श्मशान बना था, घोर वेदना फूट रही थी ।
धरती रोयी, पर्वत फूटा– आँसू-सरिता छूट रही थी ॥

बहुत दुःख माना बापू ने, बहुत सूक्ष्म आहार कर दिया ।
अपने प्राण दिये मृतकों को, मानों विष में अमृत भर दिया ॥
गाँव गाँव में मुसलमान आ– बापू को देते आश्वासन ।
उन चरणों में लगे बरसने, अंगारे बन बन कर सावन ॥

'रामगंज' में गये, जहाँ पर– अपना भोजन और घटाया ।
'नन्दनपुर' में गाँधी जी ने– अपने तन को और सुखाया ॥
घोर वेदना थी मानस में, रह रह मनुष्यता रोती थी ।
जन जन के पीड़ित हृदयों के– घाव आँसुओं से धोती थी ॥

गाँव सैकड़ों जले जहाँ पर– लाखों घर बर्बाद हो गये ।
वहाँ चार आँसू पीड़ा के– युग युग को आबाद हो गये ॥
धन जन की उस घोर हानि से– बापू सिसक सिसक कर रोये ।
पुनः बसाने को उजड़े घर– आँसू उस खँडहर में बोये ॥

वहाँ अरबपतियों को पाया– दो गज का चीथड़ा लपेटे ।
बिना कफन के शव सड़ते थे, भूखे थे भारत के बेटे ॥
गाँव गाँव में जा जननायक– जादू भरा प्रभाव डालते ।
खँडहर जहाँ मनाते मातम– वे उस घर में दीप बालते ॥

पैदल यात्रा करते चलते, चलती दीपशिखायें जलतीं ।
मानों सूरज निकल चल रहा, चारों ओर रश्मियाँ चलतीं ॥
साथ मण्डली ग्रामीणों की– प्रेम-सुधा पीती चलती थी ।
रात हटाता सूरज चलता, बुझी हुई बत्ती जलती थी ॥

'भोर भया, उठ जाग मुसाफिर!' जागृति सोई शक्ति जगाती।
या कि उषा की उज्ज्वल आभा- किरणो मे ज्वाला दहकाती॥
चमत्कार करते पग पग पर, जननायक आगये 'रामपुर'।
मानो राम नगर मे आये, 'राम राम' जपते सारे सुर॥

कहा मण्डली से बापू ने- "अलग अलग सब कार्य करो अब!
सत्य अहिंसा प्रेम एकता, कूट कूट कर यहाँ भरो सब॥
और अकेला मैं जन जन मे- जा जा कर सद्भाव भरूँगा।
या तो शान्ति यहाँ पर होगी, वर्ना मैं बस यही मरूँगा॥

'नोआखाली' के ग्रामो मे- जब तक शान्ति नही पाऊँगा-
तब तक सेवा यही करूँगा, वापिस लौट नही जाऊँगा॥"
घबराई मण्डली शब्द सुन, बोली- बापू! क्या एकाकी?
कैसे तुम्हे अकेला छोडे, बिना तुम्हारे क्या है बाकी?

ये गुण्डो के गाँव भयानक, दैत्य यहाँ दिन रात डोलते।
खून लगा है उनके मुँह को, वे दाँतो से खाल खोलते॥
ये डरावने गाँव, इन्हो मे- रहते है खूँखार भेडिये।
बच्चा हो या बूढा कोई, खाने को तैयार भेडिये॥

मुसकाकर बोले जननायक- "इस दुनिया मे कौन दुकेला?
एकाकी आता जाता है, चलने वाला चला अकेला॥
किसका भय? किसको भय? क्यो हो? जो आया है वह जायेगा।
जैसी जिसकी पूजा होगी, वह वैसा प्रसाद पायेगा॥"

फिर जननायक बोले सब से- "आँखे बन्द करो पल भर को।
मुझे टटोलो अब अदृश्य मे, देखो सब अपने अन्तर को॥
अन्तर की आँखो से देखो, मैं सब जगह दिखाई दूँगा।
व्यापक जो सर्वत्र उसी से- जीवन की गहराई लूँगा॥"

भ्रम मे पडे हुए भक्तो का– गाँधी ने भ्रम-भूत उतारा।
माया का पर्दा हटते ही– सन्तो को मिल गया किनारा॥
उस रस की अनुभूति मुझे पर– कहना चाहूँ तो गूँगा हूँ।
जिसकी दमक स्वयम् ही देखूँ, मैं ऐसा मोती मूँगा हूँ॥

यहाँ मुसलमानो मे वापू– ऐसे थे जैसे 'कुरान' हो।
या कि भक्ति के पूर्ण स्रोत मे– गोते खाता हुआ ध्यान हो॥
ग्यारह मुस्लिम यहाँ भेट को– ले सिन्दूर चूडियाँ आये।
अपनी झुकी हुई आँखो से– रोली मे आँसू वरसाये॥

वोले, हम सिन्दूर चूडियाँ– उनके लिये यहाँ लाये है–
पुछे यहाँ सिन्दूर जिन्हो के, जिन पर यहाँ जुल्म ढाये है॥
आँसू ढुलकाये वापू ने, वोले– करो प्रार्थना प्रतिदिन।
सव के गाँधी जी सव के हित– करते वहाँ अर्चना प्रतिदिन॥

मन ही मन मे वापू सव को– करते वार वार अभिवादन।
ईश्वर से भी कही वडा है– उसके भक्तो का आराधन॥
पूजा मे वापू वैठे थे, दीप समझ कर शलभ आ गये।
चन्दा समझ चकोर चल पडा, मेघ समझ कर मोर छा गये॥

स्वाति समझ कर चातक दौडे, सूर्य समझ कर कमल खिल गये।
मन-सागर मे नये ज्वार थे, भक्तो को भगवान मिल गये॥
चाँद समझ चाँदनी आगई, शरद पूर्णिमा थी सावन मे।
मृतको को जीवन मिलता था, जननायक के आश्वासन मे॥

समझ वसन्त सन्त वापू को– पतझड मे ऋतुराज राजता।
सावन भादो समझ उन्हो को– कपियो पर झूला विराजता॥
जननायक की वजी वाँसुरी, सुर लय पहुँची गाँव गाँव मे।
चली प्रार्थना मे वापू की– भाव भरी सव चाव चाव मे॥

वनी प्रेम मे पागल सी सव– जननायक की ओर चल पडी।
किधर चले, हर ओर तान वह, इधर उधर रह गई वे खड़ी॥
वच्चा रोता रहा किसी का, तवा किसी का चढा रह गया।
थाली परसी रही किसी की, दूध किसी का उफन वह गया॥

सास टेरती रही किसी को, अरी! साथ शिशु को भी लेजा!
'अभी आ रही हूँ अम्मा जी!' हवा वनी सर्राटे से जा॥
पीछे पीछे वालक लेकर– सास उधर ही को चल देती।
कोई सेज छोड़ कर चलदी, कोई साथ न वुर्का लेती॥

जननायक की तान छिडी जव– छोड़ दिया सवने सव धन्धा।
वापू के प्रकाश के आगे– रहा न कोई भी तो अन्धा॥
वीन वही है जिसके आगे– काले विषधर भी झुक जाये।
आकर्षण तो वह है जिससे– भौतिक आकर्षण शरमाये॥

वापू की प्रार्थना-सभा मे– हिन्दू मुसलमान सव आये।
वह ऐसी नौका थी जिसने– छाती पर पत्थर तैराये॥
जीवन का सन्देश यही है– पथ भूले को पथ वतलाये।
वोल उसी के मुँह से निकले– जो रसना से रस वरसाये॥

शुरू प्रार्थना-सभा हुई जव, प्रभापुज जननायक वोले–
"उन पर रस धारा वरसादो, जला चुके जो कुछ भी शोले॥
प्रेम भाव से एक रहो सव, जो उजड़े घर उन्हे वसाओ!
'क्षमा करो वह भला करो' की– नीति प्रेम से सव अपनाओ!!

जव तक एक नही होओगे– मैं जाऊँगा नही यहाँ से।
मेरे हरे भरे उपवन मे– ले आये अगार कहाँ से?"
सवकी आँखे झुकी हुई थी, जननायक जव वोल रहे थे।
मानो शरमाई आँखो से– धरती मे रस घोल रहे थे॥

वापू की वाणी सुन मुन कर- अपने फटे हृदय सव सीते।
शेर और वकरी दोनो मिल- एक घाट पर पानी पीते॥
इसी तरह प्रतिदिन जननायक- उन सव मे घुलते मिलते थे।
इसी तरह कीचड से ऊपर- प्रतिदिन नये कमल खिलते थे॥

रोज टहलते सुवह शाम वे, उजडे हुए घरो मे जाते।
ईश्वर की प्रार्थना वहाँ कर- आँसू से वे दीप जलाते॥
एक ध्वस्त खँडहर मे वापू- पहुँचे जव कि प्रार्थना करने-
धूलि उडा कर किया रुदन से- वापू का स्वागत खँडहर ने॥

कहा ध्वस्त खँडहर ने उनसे- वापू! मेरी सुनो कहानी!
मेरे ऊपर वीत चुके है- वापू! लाखो युग तूफानी॥
कैसा भी तूफान भयकर- आया लेकिन नही झुका मैं।
वडे वडे अगारे वरसे, किन्तु किसी से नही फुका मैं॥

मेरे घर का जलता दीपक- वुझा न पाये आँधी पानी।
पर जव इस आँगन मे देखी- नन्हे शिशुओ की कुर्वानी-
जव देखा नन्ही वच्ची को- सगीनो पर वे उछालते-
जव देखा घर की रानी पर- वे अपने मन की निकालते-

जव देखा उन शैतानो ने- वूढे वच्चे कत्ल कर दिये-
जव देखा अस्मत के ऊपर- अन्धो ने अगार धर दिये-
जव देखा शोणित मे लथ-पथ- अपने आँगन की रानी को-
जव अपनी विटिया पर देखा- उन पशुओ की शैतानी को-

एक वार जी चाहा तव यह- इनके ऊपर गिरूँ टूट कर।
वरसादूँ अन्तिम गुस्से से- इन खूनी चीतो पर पत्थर॥
चाहा नभ के तारे तोडूँ, चाहा आज प्रलय कर डालूँ।
चाहा पत्थर मार मार कर- अपनी नन्ही कली छुडालूँ॥

पर फिर सोचा ये पापी जो- घोर पाप मे पशुता करते-
जो खूनी हत्यारे पागल- खून नही करने से डरते-
उन्हे पाप से छुडा उन्हो का- करने को कल्याण रहा मैं।
इसीलिये तो टूक टूक हो- अपने रोके प्राण रहा मैं ॥

उनकी पशुता से लज्जित हो- मैं धरती मे गडा पडा हूँ।
अब तुम तूफानो से लडना, मैं तो अब तक बहुत लडा हूँ ॥
खँडहर के ठिकरो पर अकित- मेरी बीती हुई कहानी।
मेरी आँखो मे बन्दी है- उन सब की आँखो का पानी ॥

प्रलय न हो जाये इस डर से- उस पानी को नही छोडता।
गला रुँध गया कहते कहते, बापू ! अब मैं हाथ जोडता ॥
उसी ध्वस्त खँडहर पर बापू- आँखो ही आँखो मे रोये।
ईश्वर की प्रार्थना वहाँ की, आँखो से वे खँडहर धोये ॥

वही शिला पर बैठ राम ने- दीप जला आरती उतारी।
हाथ जोड गिर पडी पगो मे- तीनो लोको की अँधियारी ॥
ग्राम ग्राम मे जले हुए घर- अपनी विपदाये कहते थे।
ग्राम ग्राम मे जले घरो से- बुझे हुए आँसू बहते थे ॥

जले घरो मे जा जा बापू- मरघट को फिर नगर बनाते।
हिन्दू मुसलमान दोनो ही- जननायक पर फूल चढाते ॥
गाँधी अपना मर्म हृदय ले- गाँव गाँव घर घर मे जाते।
सुनो भाइयो ! बहिनो आओ ! गया धर्म वापिस लौटाते ॥

कितनी ही पत्थर महिलाये- उन चरणो से पार हो गई।
एक 'अहिल्या' नही अनेको- चरण-धार से दाग धो गई ॥
चलती फिरती कुटिया उनकी- जहाँ पहुँचती लिये सबेरा-
मेरे जननायक बापू का- जहाँ कही लगता था डेरा-

पल भर मे उनकी कुटिया पर– लगता गाँव गाँव का मेला।
दुनिया पीछे पीछे चलती, चला गया वह जिधर अकेला॥
किसी कृपक के कच्चे घर मे– वूढे वावा कभी अतिथि थे।
जिसमे चाँद सूर्य मिलते हैं– गाँधी वावा वे शुभ तिथि थे॥

महाप्रलय के जल-प्लावन मे– तैर रहा था वही सन्तरण।
मानवता की परिभापा के– गाँधी जी थे शुद्ध उद्धरण॥
उधर हिन्दुओ की रग रग मे– खून खौलने लगा लाल हो।
चीख़ पडी भारत की वेटी, महाकाल हो! महाकाल हो!

ये काले विपधर जिनको हम– दूध पिला कर पाल रहे हैं।
ये खूनी भेडिये जिन्हे हम– मास खिला कर पाल रहे हैं॥
उधर भेडिया दाँत निकाले– माँ वहिनो का खून पी रहा।
और इधर माँ की अस्मत दे– भारत माँ का शेर जी रहा॥

डूव मरो तुम कोटि कोटि हो, चुल्लू भर गहरे पानी में।
धिक धिक! उठती हुई जवानी, धिक धिक! ऐसी नादानी मे॥
अपनी वहिन वेटियाँ दे दे– उनसे नाता जोड रहे हो!
वार वार वे छुरा दिखाते, वार वार तुम छोड रहे हो!

वारह वर्प रही नलकी मे, फिर भी कुत्ते की दुम टेढी।
वे हो सकते नही तुम्हारे, काट धरो तुम चोटी एडी॥
जव वे घर तक मे घुस आये– तव भी आँखे वन्द पडी हैं।
देखो! आँख खोल कर देखो– वे नगी नारियाँ खडी हैं॥

उनके मुँह से सुनो कहानी– जो वर्वाद वने भिखमगे।
जिनके घर छिन गये, मरे जो, और खडे जो भूखे नगे॥
नये सृजन मे काली राते, गा गा नया सवेरा लाओ!
छोड दिये हथियार 'पार्थ' ने, 'गीता' का उपदेश सुनाओ!!

अभी मास की भूख उन्हे है, अभी खून की प्यास उन्हे है।
अभी और भूठे टुकडो की- इधर उधर से आस उन्हे है॥
अभी दूर वैठे वैठे भी- आग फूस वे मिला रहे हैं।
अभी हमारी माँ वहिनो का- खून उन्हे वे पिला रहे हैं॥

अभी और फुकार रहे हैं- इधर उधर से विपधर काले।
अभी और वे छील रहे हैं- भालो से छाती के छाले॥
मास खा रहा खडा भेडिया, भावुक! तुझे मोह ने घेरा।
चला तीर, तम चीर हटा दे, लादे जग मे नया सवेरा॥

उधर खडे वे खूनी कब से- भारत माँ को काट रहे हैं।
उधर देख! स्वाधीन देश को- वे लाशो से पाट रहे हैं॥
उधर देख! बूढे वच्चो पर- उन गुण्डो की बर्वरता है।
उधर 'द्रोपदी' को 'दु शासन'- सडको पर नगी करता है॥

इस नगे नर्तन मे भारत! तुझको धनुष उठाना होगा।
इन लम्बे लम्बे दाँतो पर- तुझको तीर चलाना होगा॥
धधक उठी ज्वाला 'विहार' मे, हिन्दू मुसलमान पर टूटे।
काट काट सर होली खेली, लोहू के पतनाले छूटे॥

ताजा गर्म लहू पीने को- निकल पडी तलवार भवानी।
लाल हो गई धरा खून से, नगी हो नाची नादानी॥
लोथे कही, कही सर उछले, कभी आग धधकी कण कण मे।
शोणित की वर्षा होती थी- सारी दुनिया मे क्षण क्षण मे॥

ओ पागल हिन्दू! रुक कर सुन, यही वीरता है क्या तेरी?
खून भाइयो का करता है, यही धीरता है क्या तेरी?
हैवानो को देख देख कर- ओ मनुष्य! हैवान न वन तू!
यह तेरा प्रतिशोध नही है, अपनो को तूफान न वन तू!

पागल! यह तेरा ही घर है, अपना घर वर्वाद न कर तू!
अपने पाँखुडियो से घर को– काँटो से आवाद न कर तू!
ऐसी आग लगा मत जिससे– स्वतन्त्रता देवी जल जाये।
फूस इकट्ठा कर घर ही मे– तूने क्यो अगार घुसाये?

स्वतन्त्रता आने से पहिले– जला न तू घर अगारो से।
मनुष्यता की पाँखुडियो को– अरे! काट मत तलवारो से॥
लपटे लपक रही थी लप लप, गाँधी जी का जी जलता था।
जग मे तलवारे चलती थी, वापू का जीवन वलता था॥

वापू वोले, यदि 'विहार' का– रक्त-पात यह शान्त न होगा–
तव तक को अनशन कर दूँगा– जव तक खून समाप्त न होगा॥
पर 'विहार सरकार' निमिष मे– झगडो पर वरसी वादल वन।
क्रुद्ध हिन्दुओ के सीनो पर– वरस पडी गोलियाँ दनन दन॥

वापू के प्रण की पुकार ने– रक्तपात दो दिन मे रोका।
तलवारो की वीन दे गया– आकर मधुर हवा का झोका॥
स्वतन्त्रता आने से पहिले– ये तूफान यहाँ पर आये।
दीप जलाने से पहिले ही– अर्चक ने अगार जलाये॥

'अस्थायी सरकार' देश मे– नये सृजन के दीप जलाती।
पर प्रभात के जल-प्रपात मे– 'लीग' भयकर आग लगाती॥
परिवर्तन की शुभ वेला मे– परिवर्तन होते थे पल पल।
पल मे घोर घटाये घिरती, पल मे सूर्य दीखता उज्ज्वल॥

यह अस्थायी दुनिया, इसमे– क्रीडा करती रहती कम्पन।
परिवर्तन ही तो नवीनता, दुख सुख का होता परिवर्तन॥
कभी अँधेरा, कभी उजाला, शाम सुवह आते जाते हैं।
कभी फूल खिलते सरसो के, और कभी पतझड आते ह॥

'अस्थायी सरकार' वन गई, पहिले उसमे 'लीग' न आई।
झाँक झाँक कर खिसयाई सी– पीहर को चल पडी लुगाई ॥
पीछे पीछे 'वेवल' दौडे, लाये उसे मनाकर घर मे।
ज्यादा समझदार लोगो के, क्या कीडा भी होता सर मे ॥

मनोनीत हो गई 'लीग' भी– 'अस्थायी सत्ता' के अन्दर।
आँख मिलाकर हाथ धर दिया– चतुर 'लियाकत' के कन्धे पर ॥
मिले 'नेहरु' और 'लियाकत', मिले नयन, पर मिले नहीं मन।
रह 'विधान परिपद्' से वाहर– करी 'लीग' ने टेढी गर्दन ॥

'गुटवन्दी' मे हुए न शामिल, फिर से डाला नया अडगा।
सीधी गगा लगे रोकने, लगे वहाने उलटी गगा ॥
वह सारी योजना लौट दी, जो कि 'मई सोलह' को आई।
उलटे घडे भर रहे पानी, 'उलटे वाँस वरेली' लाई ॥

तीखे काँटो की झाड़ी ने– फूलो का खिलवाड वनाया।
दूध और पानी करने को– दोनो को 'लन्दन' वुलवाया ॥
चले 'जवाहरलाल' 'विलायत', मानो मनहर चाँद चल रहा।
राजनीति का नौनिहाल वह– वन तारो का दीप जल रहा ॥

भारत की तकदीर वदलने– गाँधी जी का प्यार जा रहा।
भारत माँ का मुकुट सजाने– कवियो का शृगार जा रहा ॥
उस तट से स्वतन्त्रता लेने– नौका वह पतवार जा रही।
'जिन्ना' भी जा रहे उधर ही, जीत जा रही, हार जा रही ॥

'जिन्ना' लिये 'लियाकत' पहुँचे– 'लन्दन' की चिकनी सडको पर।
पैर फिसल जाता है उनका– जो देखा करते हैं अम्वर ॥
'चर्चिल' के मखमली कोच पर– गोरे 'जिन्ना' गेंद वन गये।
रग कहूँ या कहूँ खून मे– उनके दोनो हाथ सन गये ॥

सज्जन से सज्जन मिलते है, चालवाज से चालवाज ही।
मूल नही कौडी भी ली पर– भारत को खा गया व्याज ही ॥
दुनिया देख रही थी क्या हो, क्या कैसा होगा परिवर्तन।
'कट्टरपथी' कूट नीति मे– नई नीति करती थी नर्तन ॥

उधर 'जवाहरलाल नेहरू'– रग वदलते देख रहे थे।
स्वतन्त्रता पर अँगरेजो को– जहर उगलते देख रहे थे ॥
'सोलह मई योजना' की फिर– विस्तृत व्याख्या हुई वहाँ पर।
वदल श्लेप से अर्थ भाव सव– वदला शव्द शव्द वह अक्षर ॥

शव्द शव्द अक्षर अक्षर का– अर्थ अनर्थ वहाँ होता था।
क्या क्या अर्थ लगाती दुनिया– सार्थक देख देख रोता था ॥
अभिधा मे लक्षणा व्यजना– वहाँ कूट भापा मे देखी।
परुपा मे गौरी पाँचाली– भौतिक अभिलापा मे देखी ॥

दिया यही निर्णय 'व्रिटेन' ने– 'जिन्ना' अर्थ ठीक करते हैं।
प्रतिध्वनि मे कह दिया किसीने– सव टेढे ही से डरते हैं ॥
'अस्थायी सरकार' वनी जो– 'लीग' पृथक् है उसमे रहकर।
आवश्यकता नही कि आये– वह 'विधान परिपद्' के अन्दर ॥

इस भापा का अर्थ यही है– 'गुटवन्दी' मे 'लीग' न आये।
यह भी सम्भव हो सकता है– रवि से धूप अलग हट जाये ॥
पूज्य 'जवाहरलाल नेहरू'– कुछ चिन्तित से खडे रह गये।
सदा वहे है, सदा वहेगे, आँसू अपनी कथा कह गये ॥

जीवन के उत्थान पतन मे– जाने यह दुनिया कैसी है।
पल पल परिवर्त्तन होता है, दुनिया जैसी थी वैसी है ॥
वैठा सा मन ले 'लन्दन' से– भावुक अपने देश चल पडे।
आज 'जवाहरलाल नेहरू'– लहरो के मँझधार थे खडे ॥

लहरें अपनी ओर खींचती, वे लहरों के उलटे चलते।
कभी निकलते घटा चीर कर, कभी सान्ध्य लाली में ढलते॥
इसी सोच-सागर में डूबे- आ पहुँचे वे 'नोआखाली'।
धरा-गोद में खेल रही थी- जहाँ कि बापू की उजियाली॥

दुनिया की आँखों का तारा- बापू ने ले लिया गोद में।
या अपनी आँखों का तारा- दुनिया ने दे दिया गोद में॥
प्रेम पगे 'नेहरू' नयन ने- गोदी में मोती ढुलकाये।
मन के मोती गिरे अंक में, मन के हंस उन्हें चुग लाये॥

आँसू पोंछ कहा बापू ने- अरे लाड़ले! चिन्ता मत कर।
तुझे भरोसा मेरे ऊपर, मुझे भरोसा है ईश्वर पर॥
जहाँ बैठते थे गाँधी जी- वही जगह मन्दिर बन जाती।
तीनों लोकों की निधि गा गा- वहीं प्रेम से रास रचाती॥

देख उदासी नेताओं की- बापू मन मन में मुसकाये।
मुसकाने की मधुर ज्योति से- चारों ओर उजाले छाये॥
फिर सब नेताओं से बोले- सब नारायण की माया है।
शब्द किये निर्माण उसी ने, अर्थ उसी ने करवाया है॥

हमको खेल खिलाने वाले- खेल स्वयम् उसमें खेलेंगे।
चाहे जितने पर्वत टूटें- पर हम स्वतन्त्रता ले लेंगे॥
ये रंगीन मेघ कहते हैं- मीठा खून अभी बरसेगा।
स्वतन्त्रता आने से पहिले- आँखों का पानी तरसेगा॥

चाहे जितना खून लगे पर- फूल खिलाने ही हैं हमको।
इस उजड़े उपवन में फिर से- पेड़ लगाने ही हैं हमको॥
अत ब्रिटिश का 'श्लेष लेख' वह- हर्ष मान स्वीकार करो तुम!
मणिवाला वह साँप मिल रहा, डरो न उससे, प्यार करो तुम!!

कहा 'जवाहर' ने वापू से- कैसे साँप गले मे डाले ?
जहर मिला है जिस मीठे मे- उस मीठे को कैसे खाले ?
कितना भी गुणवान दुष्ट हो, उससे दूर दूर ही शुभ है।
सर्प शूल है मणिवाला भी, दुख देता रहता चुभ चुभ है॥

हाथ पीठ पर फेर प्यार से- नीति निपुण जननायक वोले-
वादल मे पानी होता है, पानी से वुझते हैं शोले॥
वे हैं साँप, मदारी हो तुम, वे विप हैं, तुम शिवशकर हो।
सत्य नही जलता ढलता है, सत्यम् शिवम् सुन्दरम् हर हो।

राजनीति के दाँवपेच मे- मैंने हार नही सीखी है।
अटल सत्य पर जो है उसने- झूठी रार नही सीखी है॥
कूटनीति हारी वापू से, दाँतो नीचे उँगली दावी।
भारत के भविष्य पर चमका- एक निमिप मे रग गुलावी॥

एक जगह वैठे थे लेकिन- गाँधी जी सर्वत्र विराजे।
राजनीति ने माथा टेका, वजने लगे जीत के वाजे॥
'लन्दन' की वह श्लेप योजना- सारे नेताओ ने मानी।
लेकर मुकुट रक्त-सागर से- लडने चली देश की रानी॥

'नोआखाली' से सन्यासी- स्रप्टा और सृप्टि मे लय था।
भूत भविष्यत् वर्तमान सव- उसकी दिव्य दृप्टि मे लय था॥
ग्राम 'रामपुर' मे वापू के- चरणो ही मे वस विराम था।
सतयुग था उस समय वहाँ पर, पर्ण-कुटी मे राम धाम था॥

'कृपलानी' 'नेहरू' आदि ने- चरण-धूलि का अजन डाला।
अन्धकार खो गया हृदय का, आँखो मे आगया उजाला॥
राम ग्राम के दर्शन पाये, नयनो ने अपनी निधि पाई।
नेताओ के दर्शन करने- जनता उमड उमड कर आई॥

००००OOOO००००

अप्टाविंश सर्ग

००००OOOO००००

वापू की कुटिया पर सवने– नेताओ के दर्शन पाये।
जनता को सव नेताओ के– गॉधी जी ने हृदय दिखाये ॥
वोले, ये भारत के नेता, इनसे गहराई का नाता।
सच्चे देशभक्त हैं ये सब, ये भारत के भाग्य-विधाता ॥

ग्राम 'रामपुर' से नेता गण– पवन वेग से 'दिल्ली' आये।
और उधर वापू ने अपने– डगमग करते चरण वढाये ॥
अपनी लम्बी लकुटी लेकर– जव झुक खडे हुए जननायक।
जितने झुकते गये शान्ति से– उतने वडे हुए जननायक ॥

हाथ 'सुशीला' के कन्धे पर– धर कर जब वे वढे अगाडी–
चरण चूम वोली धरती मॉ– क्यो मन्दिर की मूर्त्ति उजाडी ?
मन्दिर की प्रतिमा ! बोलो तुम, मन्दिर छोड कहॉ जाती हो ?
दो पल मे अपनी कर मुझको, नाता तोड कहॉ जाती हो ?

विरह सहन गोपियॉ करेगी, मैं उपासिका रह न सकूँगी।
आँखो से वहते बहते भी– बिना तुम्हारे बह न सकूँगी ॥
मैं न प्रतीक्षा मे पल भर भी– जीवन चला सकूँगी मर मर।
जीवन नही गला सकती हूँ– मैं रो रो कर भी जीवन भर ॥

मेरी तो साकार अर्चना, निराकार क्यो बनते हो तुम ?
जीत बने थे, अब जीवन की– कहो हार क्यो वनते हो तुम ?
डेरा उठने लगा उन्हो का, ग्रामवासियो ने पग घेरे।
किस पर हमे छोड कर जाते, हे जीवन के स्वर्ण सबेरे !

बच्चे बोले, वूढे बोले– विरह तुम्हारा सह न सकेंगे।
पागल बन जायेगे हम सब, रोते रोते रह न सकेंगे ॥
हवा रुक गई चलते चलते, पकड लिया [illegible]
विधवा सी मासूम खडी थी, चुप थी पात [illegible]

जननायक बढ चले अगाडी, रोने लगे ग्रामवासी सब।
भगी के बालक ने पूछा– बापू जी! अब आओगे कब?
खा पछाड गिर पडा पेड वह– जिसने उन पर फूल चढाये।
ग्रामवासियो की आँखो ने– लगातार आँसू बरसाये॥

बूढे बालक युवक युवतियाँ– रोने लगी हिचकियाँ भर भर।
ग्राम छोड चल पडे साथ ही– सब जननायक के चरणो पर॥
ग्रामीणो का प्रेम देखकर– बापू की छाती भर आई।
जिन्हे न माया मोह उन्होने– प्रेम अश्रु की धार बहाई॥

कहा वियोगी से योगी ने– अब हमको आगे जाने दो!
उजड़े गाँव बहुत बाकी हं, उनको फिर से बसवाने दो!!
मैं जाता हूँ, लेकिन हर पल– प्रेम तुम्हारा साथ रहेगा।
आत्मा सब के साथ साथ है, हृदय तुम्हारे हाथ रहेगा॥

महिलाये बोली, ओ बापू! कैसे किस पर यहाँ रहे हम?
लाखों दुख सहे हैं लेकिन– सहन नही कर सकते यह गम॥
जब यह देखा जननायक ने– प्रेम-विभोर हो गई ये सब–
भूल गईं अपने को भी ये, मधु मे डूब खो गई ये सब–

तब जननायक ने उन सब पर– पल को अपनी माया फेरी।
जडवत् सब हो गये निमिप को, जननायक ने करी न देरी॥
जल्दी जल्दी कदम बढा कर– बापू थे आँखो से ओझल।
पल भर बाद चेतना आई, इधर उधर दौडे बन पागल॥

एक दूसरे से कहता था– कहो किधर को चले गये वे?
हमे प्रेम से छल कर छलिया– किस 'राधा' से छले गये वे?
जिसने हमे प्रेम मे बाँधा, कहाँ गया वह मुरलीवाला?
जिसका यह प्रकाश अब भी है, कहाँ गया वह मूर्त उजाला?

अरी ! किसी ने देखा हो तो– उसे बताओ ! उसे बताओ !
अरी ! किसी ने देखा हो तो– उसे दिखाओ ! उसे दिखाओ ! !
प्रेम-विरह मे पागल सी सब– खा खा कर पछाड गिरती थी ।
सभी गोपियाँ बनी हुई थी, पगली सी रोती फिरती थी ।।

आज 'यशोदा' गैया बन कर– 'मोहन ! मोहन !' रम्भाती थी ।
आ मेरी आँखो के तारे ! माँ सडको पर चिल्लाती थी ।।
बापू के पद-चिह्न ढूँढती– कोई चलती ही जाती थी ।
कोई बियाबान जगल मे– 'बापू ! बापू !' चिल्लाती थी ।।

कोई कोयल से कहती थी– गा गा कर वह सुरभि उडा ला !
कोई पवनराज से कहती– जा ! बापू को दौड बुला ला ! !
कोई तोते से कहती थी– चिट्ठी बाँध गले मे दे आ !
गिरा हस से कहती थी यह– जा उडकर बापू को ले आ ! !

जहाँ प्रार्थना करते थे वे– याद वहाँ हिचकी भर रोयी ।
कहता था प्रार्थना समय यह– कहाँ मनोहर मैना खोयी ?
चारा छोड दिया गउओ ने, चुग्गा छोड दिया चिडियो ने ।
चन्दा से चाँदनी न निकली, सब श्रृगार तजे तिरियो ने ।।

बकरी ने पत्ते खाने तज– 'बापू ! बापू !' रटा रात दिन ।
बापू के वियोग मे शशि ने– रात बिताई तारे गिन गिन ।।
सारे दुख सहे जाते हैं, विरह वेदना सही न जाती ।
दीप टिमटिमाया करता है, स्नेह-शिखा मरघट मे गाती ।।

बापू ! बापू ! लुट हम गये हैं, कहाँ हो सहारे ?
बोलो बोलो ! हृदय बिरवे, भावना के किनारे ।।
तारो वाली, तृषित लहरे, बाट मे हैं तुम्हारी ।
तूफानो मे, पवन कर दी, नाव न्यारी हमारी ।।

वापू ही हैं, पवन तन मे, प्राण हैं वे सभी के।
पूनो हैं वे शरद ऋतु की, त्राण हैं वे सभी के॥
मायावी वे, मनन मन मे, प्यास मे आग भी है।
कंठो मे हैं, ललित लय वे, दूर हैं पास भी हैं॥

भौंरे आये, कमल खिलते, प्रेम मे वे वहे हैं।
जाते हैं वे, जिधर विरले, चाँद शरमा रहे हैं॥
क्रीडा होती, सघन वन मे, काकली गा रही है।
वापू जाते, कुमुद शशि से, चाँदनी जा रही है॥

श्वासो मे वे, सघन कविता, कण्ठ मे गीत है वे।
कानो मे हैं, मधुर मुरली, हार मे जीत है वे॥
रोती राधा, विरह वन मे, प्राण है प्रीति है वे।
भापा हैं वे, हृदय गति की, प्रीति की रीति है वे॥

जा रे तोते! विरह व्रत के, चार आँसू दिया तू।
कैसे मेरा, हृदय वह है, सूचना तो लिया तू!!
आँखो! जाओ, उधर वरसो, सार से सीचने को।
मेघो! जाओ, कुसुम-कुल को, प्यार से सीचने को॥

चन्दा! वापू, थकित जव हो, चाँदनी ही विछाना।
बैठे वापू, जव कि तप को, ध्यान मे मेघ! छाना॥
आ आ माली! कुसुम वन मे, रागिनी राग गा तू!
सन्ध्ये! जाओ, समय वह है, राम को ढूँढ ला तू!

oooo०OOOOoooo

अष्टाविंश सर्ग

oooo०OOOOoooo

ऊनत्रिंश सर्ग

अरुणोदय

योगी उसी विरह मे तरु और छाया।
मानो किसी विगत की अब याद हैं वे॥
यात्री चला लहर सा पथ धन्य है तू!
पा पद्म से चरण वे कविता विराजी॥

जाते प्रकाश पथ से तरु साथ जाते।
खोये उलूक रवि का जब तेज छाया॥
जैसे नये सुजन से जय ज्योति आती।
ऐसे शिव पथिक से पथ हार माना॥

छूने लगी सुबह थी उनके पगो को—
मानो खिले कमल मे दिनमान जागे॥
जैसे खुले नयन मे पुतली बसी हैं—
ऐसे बसे हृदय मे मन मोह से वे॥

जैसे किसी हृदय मे रहती प्रिया है—
ऐसे बसे हृदय मे सब के सदा वे—
जैसे हताश कवि को प्रिय दुख होता—
ऐसे दुखी हृदय मे सुख थे विधाता॥

जैसे किसी कृपण के घर चचला हो—
बापू इसी तरह से हर दीन के थे॥
जैसे प्रकाश मन का दृग खोल देता—
बापू इसी तरह से पथ थे दिखाते॥

जैसे उडान वश मे करते तपस्वी—
रोडे कठोर पथ के प्रिय यो दवाते ॥
ऐसे झुके चरण मे सव फूल देखो—
जैसे दया सरल के मन को झुकाती ॥

चुभ रहे काँटे पगो मे, फूल खिलता चल रहा है।
आ रहे तूफान लेकिन- दीप मेरा जल रहा है॥
प्रलय-पारावार मे भी- नाव गति से चल रही है।
तिमिर के धूमिल डगर मे- ज्योति शाश्वत जल रही है॥

चल रहे वापू जिधर से- अर्घ्य आँखो से वरसता।
छू हवा उनके पगो की, पेड पतझड मे सरसता॥
व्यजन झलती वायु चलती, छाँह ताने मेघ चलते।
पेड स्वागत कर रहे हैं, मार्ग मे नभ-दीप जलते॥

नीर वरसाते चले वे, आग वुझती जा रही है।
सूर्य पर किरणे लुटाकर- गीत कोयल गा रही है॥
ग्राम स्वागत मे उन्हो के- खेतियाँ लाये सजा कर।
प्रकृति स्वागत कर रही है- पेड के पत्ते वजा कर॥

पेडो की छाया मे वापू- चले जा रहे थे छाया से।
वटिया नई वनाता हर डग, उस मायावी की माया से॥
पेड सुपारी के झुक झुक कर- वापू को प्रणाम करते थे।
धरती के श्रमकण वापू के- चरणो मे विराम करते थे॥

गाँव गाँव की पैदल यात्रा- इसी तरह करता था राही।
हृदय हृदय पर राज्य करे जो- जग मे वही जिन्दगी शाही॥
काम क्रोध मद लोभ न उनको- झुके खडे मात्सर्य विजेता।
महापुरुष मे वोल रहे ह- सुरभित सतयुग द्वापर त्रेता॥

उसी चित्र मे 'राम' खिँचे हैं, उनमे 'बुद्ध', 'कृष्ण' चित्रित हैं।
वे 'ईसा' के चित्र दूसरे, उनमे प्रलय सृजन अकित हैं॥
बापू के जीवन का हर डग- हमे दे गया नया कथानक।
महाकाव्य कितने ही लिख लो, इतने विस्तृत हैं जननायक॥

'रामचन्द्र' की 'बनयात्रा' के- दृश्य दिखाई दिये अनेको।
एक 'अहिल्या' क्या ! बापू ने- पत्थर मानव किये अनेको॥
धरती पर, अम्बर पर, जल पर- चित्रित चरण चाप बापू की।
पा न सकूँगा, लिख न सकूँगा, पूर्ण असीम माप बापू की॥

उस यात्रा की अमर कहानी- जितनी लिखता उतनी बढती।
उस ऊँची सीढी के ऊपर- गिरा थक गई चढती चढती॥
आओ ! अब बापू के दर्शन, करले हम चल कर 'विहार' मे।
यहाँ वहाँ सब जगह सुनो तुम, ऐसी लय है उस सितार मे॥

मानवता के उस मोती मे- हर प्राणी के लिये दमक थी।
हिन्दू हो या मुसलमान हो- हर मनुष्य के लिये चमक थी॥
जहाँ धधकती ज्वाला देखी- वही बुझाने चला गया वह।
वह समतल पर चला निरन्तर- भेद भाव सब भुला गया वह॥

बापू बोले, अरे हिन्दुओ ! अमृत-कुञ्ज के सरस विहारी !
इस रसाल बन को मत नोचो, खूब महकने दो फुलवारी।
क्या हिन्दू का जाता बोलो ? क्या जाता है मुसलमान का ?
भला नही होता 'गीता' का, भला नही होता 'कुरान' का॥

उसके जी से पूछो जिसके- घर को अन्धे जला रहे हैं।
उनके जी से पूछो जिनको- खारे आँसू गला रहे हैं॥
वे न जलेगे, वे न गलेगे, तुम जलते हो, तुम गलते हो।
बच्चो के टुकडे कर कर के- खूनी टुकडो पर पलते हो॥

मुसलमान पागल वनता है, तो क्या हिन्दू भी वन जाये ?
हिन्दू अगर भूल करता है, मुसलमान भी क्या विप खाये ?
खून नही प्रतिशोध खून का, यह कोई प्रतिकार नही है।
जो थोडे हें उन्हे सताना– वहुतो का अधिकार नही है ॥

जुल्म न जुल्मो से जीतोगे, उनको जीतो गले लगा कर।
राज्य विश्व पर कर सकते हो– वैर भाव का भूत भगा कर ॥
चाह फूल की वुलवुल को है, प्यास प्रेम की है वदली को।
काट नही सकती तलवारे– सत्य अहिंसा की तकली को ॥

एक पाँखुडी से जननायक– लाखो कलियुग से लडते थे।
फूल खिला ही रहा वरावर, काँटे पैरो मे गडते थे ॥
उन डगमग करते चरणो से– अँगरेजो का शासन डोला।
अपनी थाती आप सँभाले– व्रिटिश मन्त्रिमण्डल यह वोला ॥

'वीस जून सन् अडतालिस' तक– हम भारत निश्चित छोडेंगे।
प्रेमनिमज्जित सद्भावो से– हम सव से नाता जोडेंगे ॥
धन्य धन्य 'एटली' कि जिसने– भापण मे मधु घोल उडेला।
उसके मुँह मे घी शक्कर भर– जिसके मुँह से सुनी सुवेला ॥

व्रिटिश राज्य की सार्वभौमता– भारत पर से उठ जायेगी।
अमृतकुज मे अमर भाव ले– छम छम स्वतन्त्रता गायेगी ॥
'वेवल' वायसराय वहाँ से– अव हम 'लन्दन' वुलवायेंगे।
'एडमिरल माउँटवेटन' अव– उनकी जगह वहाँ जायेंगे ॥

आशा करता हूँ सव मिलकर– भारत का विधान रच लेगे।
चाहे भी जैसे लेना तुम, हम तो स्वतन्त्रता दे देगे ॥
निश्चित तिथि तक जल्दी ही अव– सत्ता हस्तान्तरित करेगे।
भारत माँ का राजमुकुट हम– उसके सर पर शीघ्र धरेगे ॥

भारत ही क्या, दुनिया भर मे– स्वागत! स्वागत! की लय लहरी।
लेकिन 'लीग' और 'चर्चिल' की– खूनी चाह हो गई बहरी॥
आशा की इस स्वर्ण किरण पर– कोई फूल चढाने आया।
और किसी ने आशाओ पर– उल्टा अङ्गारा दहकाया॥

छुरे मुसलमानो के चमके, चमकी कूटनीति 'चर्चिल' की।
खूनी डायन चीख कह उठी– आज निकालूंगी मैं दिल की॥
'जिन्ना' का खूँखार भेडिया– उबल खून मे चला डूबने।
अत्याचार सहे खुरपो के– इस दुनिया मे हरी दूब ने॥

वह खूनी 'पजाब' कि जिसकी– धरा रक्त मे नहा रही है।
शोणित मे बैठी भारत की– किस्मत आँसू बहा रही है॥
लो 'पठान' गर्जे 'कबायली'– दहक हिन्दुओ पर चढ आये।
माता के आगे बच्चो पर– हत्यारो ने छुरे चलाये॥

फिर बच्चो के कतले करके– चूल्हे पर कडाह मे डाले।
पति को लगा दिया चूल्हे मे, गर्म तेल मे खूब उबाले॥
फिर माँ के मुँह मे बच्चे के– भुने हुए वे कतले ठूसे।
और नमक भर भर कतलो मे– माँ को दिखा दिखा कर चूसे॥

फिर दुखिया माँ को नगी कर– छाती पर वे खडे हो गये।
पहिले मनमानी की फिर उस– गर्म लहू मे हाथ धो गये॥
घेर हिन्दुओ के सारे घर, सब को बाहर खडा कर लिया।
अलग जवान लडकियाँ ले ली, सब बूढो को कत्ल कर दिया॥

बच्चे काट दिये, पतियो को– कोडे मार मार कर मारा।
जो अधेड थी उनको काटा, बुढियाओ पर चला दुधारा॥
भोली कलियाँ तब काटी जब– खून सैकडो चूस चुके थे।
झुकी हुई थी आँख, हृदय मे– कवियो के अगार फुके थे॥

जी मे आया वीणा छोडूँ, शंख फूक दूँ डगर डगर मे।
जो न बुझाये बुझे आज वह— आग लगा दूँ नगर नगर मे॥
जो ये जुल्म ढा रहे उनको— कहो कौन इन्सान कहेगा ?
खूनी ! तुझको भी मरना है, तू न सदा ही अमर रहेगा॥

हाय ! विचारे हिन्दू लुट कर— छोड छोड घर भाग रहे हैं।
जानेवालो को खाने को— पथ मे भी पशु जाग रहे हैं॥
कोई स्वामी के मरते ही— चीख मार कर वहीं मर गई।
कोई सती कूद ज्वाला मे— अपने तन को राख कर गई॥

'कलकत्ता', 'नोआखाली' की— अब तक बुझी नही चिनगारी।
'सिन्ध' और 'पंजाब' एक क्या ! जगह जगह चल पडी कटारी॥
मुसलमान के पागलपन से— हिन्दू भी पागल बन भभके।
दबे हिन्दुओ की छाती मे— बदले के अंगारे धधके॥

नीच नीचता से मानेंगे— कहते कहते निकल पडे वे।
अब तक जो आँखो ही मे थे, अब खूनी आँसू उमडे वे॥
हुंकारा 'पंजाब' दहककर— महा भयानक आग बन गया।
किया बाप ने गुन्हा पुत्र पर, गुस्सा बन कर खून तन गया॥

भारत माता ने जब देखा— मेरे बच्चे कटते जाते।
निर्दोषो का मांस अभी तक— थके नहीं वे खाते खाते॥
इस से तो अच्छा है अपने— हाथ पैर इन से कटवालूँ।
अपने अंग कटा कर इन से, अपने खिलते फूल छुडालूँ॥

एकाकी बापू बैठे थे, भारत माता गई वहाँ पर।
गाँधी जी ने आसन छोडा, बैठे माँ के चरण पकड कर॥
माँ ! क्या करूँ बताओ मुझको ? माँ से पहले बापू बोले—
चार बुझाता, आठ दहकते, धरती माता पर ये शोले॥

दोनो हाथ उठा कहता हूँ- कोई मेरी नही मानता।
आज न मेरी सुनता कोई, मनुज आज शोणित उछालता।।
अब तुम ही वतलाओ माँ! मैं- इन दगो मे आज करूँ क्या?
खून चाटने वाले जग मे- माँ! मैं अपना अमृत भरूँ क्या?

हाथ फेर सर पर बापू के- बोली, मुझको कटी मान ले!
टुकड़े होने दे अब मेरे, अपने जी मे जुडी जान ले!!
पानी पर कटार चलने से- क्या पानी कटता है बेटे!
धूलि डालने से सागर मे- क्या सागर पटता है बेटे!

'पाकिस्तान' मान ले अब तू, हिन्दुस्तान अलग होने दे।
मेरे ही शोणित से उसको- अपना हरा कफन धोने दे।।
सुन कर माँ की बात एकदम- बापू चौंके, खड़े हो गये।
मानो सत्य अहिंसावादी- पल को अपने होश खो गये।।

बोले, माँ! यह कभी न होगा, देखूँ कौन तुझे काटेगा?
सत्य अहिंसावादी शशि भी- क्या निशि का शोणित चाटेगा?
बापू ने यह कहा कि पल मे- 'प्रलय! प्रलय!' बोले परमेश्वर।
भारत माता ने बापू को- फौरन रोका हाथ पकड़ कर।।

माता ने वात्सल्य अमृत से- शान्त किया उस शान्तिदूत को।
थपकी देकर माथा चूमा, शान्त किया अपने सपूत को।।
बोली, पुत्र! वचन दे मुझको, माता तुझसे भीख माँगती।
वचन मुझे दे! वचन मुझे दे! दाता! तुझसे भीख माँगती!

माता ने आँचल फैलाया, बापू चिपट गये आँचल से।
माँगो! माँगो! दूँगा! दूँगा! बापू कहते थे पागल से।।
बात विभाजन की मानो अब, 'पाकिस्तान' अलग बनने दो!
'जिन्ना' की तलवार आज तुम- मेरे शोणित मे सनने दो!

माँ ! क्या मेरी ही छाती पर– तेरा निर्मल खून गिरेगा ?
माँ ! क्या मेरी चिता किनारे– मुझे ढूँढता फूल फिरेगा ?
मेरे होते यदि माँ ! तेरे– कोई अग भग कर देगा–
तो मेरे ही शव के ऊपर– स्वतन्त्रता का ध्वज फहरेगा ॥

आँसू बहा कहा माँ ने यह– आवश्यकता अगर पडेगी–
तो स्वतन्त्रता के मन्दिर मे– मेरे सुत की भेट चढेगी ॥
देकर आशीर्वाद पुत्र को– माँ धरती मे लीन हो गई ।
जोडे रहे हाथ जननायक, स्वप्न सदृश वह बीन सो गई ॥

यह सारी लीला माया मे– देख न पाये दुनिया वाले ।
बापू का जीवन सागर मथ– कवि ने अमर रहस्य निकाले ॥
अन्तर्द्धान हो गई माता, अद्‌भुत ने सारा जग देखा ।
होनी तक को चली जीतने– मेरे जननायक की रेखा ॥

नये सृजन की शुभ वेला मे– उलटी सीधी हवा बही थी ।
पल पल के इस परिवर्तन मे– दीपशिखा टिमटिमा रही थी ॥
दीप बुझाने को चलती थी– रक्त रँगी रगीन हवाये ।
फूट डकिनी खून खेलती, जय कहती झण्डे फहराये ॥

राजनीति के नये रूप ने– 'वेवल' को 'लन्दन' बुलवाया ।
'माउँटवेटन' भारत आये, द्वार 'एटली' ने खुलवाया ॥
वायसराय नये भारत के– प्यारी पत्नी सहित पधारे ।
चन्द्रमुखी के साथ चाँद सी– पुत्री ने भी पख पसारे ॥

मानो फूल गुलाब 'पामिला', तितली के नर्तन जैसी थी ।
जैसे मधुर हँसी बिखरी हो, वह कोमल कलिका ऐसी थी ॥
अधरो की मुसकान सुनहरी– मानस के दर्शन देती थी ।
आँखो की मनहर रगीनी– मन के फूल चूम लेती थी ॥

वह थी फूलो की प्रदर्शिनी, आकर्षण से सजी हुई थी।
सुषमा से वात्सल्य पूर्ण था, सुन्दरता से लदी हुई थी॥
मन के तारो की जाली मे– महक महक खिल रही कली थी।
'काशमीर' के गहने पहिने– तितली उडती हुई चली थी॥

वह विजली का फूल गुलावी, तन पर थे वसन्त के गहने।
मधुकर आँखो मे वन्दी थे, कविता चली कामना कहने॥
सौरभ से उड़ते थे उसके– श्यामल सुन्दर वाल हवा मे।
विरह सजा कर साध गा रही, चली निराली चाल हवा मे॥

जव कि हवा मे हँसी उडी थी, और उमडती थी अँगड़ाई।
अँगड़ाई मे एक ज्योति थी– वोल रही थी शुभ शहनाई॥
स्वतन्त्रता की प्रथम रश्मि सी– माँ की उँगली पकड़े आई।
भारत ने जिसके स्वागत मे– दीप जलाये ज्योति विछाई॥

युग युग की इन्द्राणी 'दिल्ली', राजाओ की रूप जवानी।
आज नया स्वागत करती थी, जनता की वह अमर कहानी॥
नये सृजन के अग्रलेख से– वायसराय भवन में आये।
उनकी चन्द्रमुखी पत्नी से– झेपे कुमुद, चाँद शरमाये॥

चन्दा से भी वढ कर थी वह, क्योकि रात दिन जगमग जगमग।
मीठी थी रसाल कानन सी, टी वी टी वी करते मन-खग॥
वोली, प्रियतम! थके हुए हो, तुम लेटो, मैं चरण दवाऊँ।
फूलो की माला! आओ मैं– तुमको कण्ठाभरण वनाऊँ॥

चली हवा, चाँदनी खिल गई, प्याला दिया रात-रानी ने।
स्वप्नो में ससार सो गया, करी गुदगुदी दीवानी ने॥
रात अगर होती न कहो फिर, सुख की नीद कौन सो पाता?
हारा थका पथिक दो पल को– कैसे दुख भूल सो जाता?

विना अँधेरे के जीवन मे– कव किसने प्रकाश देखा है ?
जिसके मन मे प्यास नही है– उसने कव विकास देखा है ?
जाग मुसाफिर! हुआ सवेरा, वायसराय उठ गये सोकर।
नई जिन्दगी वरसाता है– जग मे नया सवेरा होकर॥

जननायक की कुटिया पर वह– राजमहल का राजा आया।
वादशाह के उस प्रतिनिधि को– गाँधी जी ने गले लगाया॥
वोला वायसराय उन्हो से– वापू! राजभवन मे आओ!
'जिन्ना' को भी वुलवाया है, किसी तरह गुत्थी सुलझाओ!!

अच्छा है यदि सव मिल जुलकर– भारत की स्वतन्त्रता लोगे।
वापू वोले, मैं राजी हूँ, यदि 'जिन्ना' को समझा दोगे॥
टूटी की वूटी न विश्व मे, पर उपचार अन्त तक कर ले।
इस अशान्ति के विपम विश्व मे– जितना मधु भर पाये भर ले॥

'वायसराय भवन' मे वापू– गये समस्या सुलझाने को।
फूस लिये 'जिन्ना जी' पहुँचे– दियासलाई सुलगाने को॥
'माउँटवेटन' ने दोनो को– व्रिटिश राज्य की नीति सुनाई।
करो नीति कार्यान्वित मिलकर, प्रेम-पगी यह सन्धि सुझाई॥

'जिन्ना' वोले, सव से पहिले– वात विभाजन की है मेरी।
आवादी अदला वदली मे– पल भर की भी करो न देरी॥
हिन्दू 'पाकिस्तान' छोड दे, मुसलमान 'भारत' से जाये।
दोनो अपने अपने घर मे– अपनी अपनी खुशी मनाये॥

वापू वोले, लेकिन ये जो– मन्दिर, मस्जिद यहाँ वहाँ हैं–
ये कैसे उठकर जायेगे ? ये कल्पित वुद्धियाँ कहाँ हैं ?
कैसे नदियाँ काटोगे तुम, कैसे जागीरे वाटोगे ?
जिनके घर हे यहाँ वहाँ पर– कैसे उनके घर ला दोगे ?

लम्वे चौडे महाद्वीप के– टुकड़े करने मे क्या फल है?
साथ पडौसी भी फिसलेगे, यह ऐसी फिसलन दलदल है।।
लम्वे चौड़े महाद्वीप के– टुकडे कर वेमौत मरो मत!
'जिन्ना' लाल आँख कर बोले– मुझसे ज्यादा बात करो मत!!

देश बँटेगा और देश की– आवादी भी वदलेगी ही।
इधर उषा होली खेलेगी, उधर अँगीठी उवलेगी ही।।
बापू बोले, बता कि क्या यह– खेल खून का मानवता है?
'जिन्ना' बोले, मैं कहता हूँ– दानवता है, दानवता है।।

मैं न खेलता खेल खून का, खेल रहे जो उनको रोको!
रोक अगर सकते हो तुम तो– अपने घर के घुन को रोको!!
इसका एक इलाज यही है, जो मैं कहता वही करो तुम!
कवि ने कहा, तुम्हारी इच्छा! पाकिस्तानी रग भरो तुम!!

बापू बोले, अच्छा! हम तुम– सव से करे अपील शान्ति की।
मार झपट्टा हस्ताक्षर ले– उडी हवा मे चील शान्ति की।।
उस सयुक्त शान्ति की भापा– एक हाथ की बजी हथेली।
रुका नही वीभत्स खेल वह, भावो से वह भाषा खेली।।

रहे ढाक के तीन पात फिर, बन्द रहा किस्मत का तारा।
बात न मानी अनहोनी ने, भाग्य 'एशिया' भर का हारा।।
दीप 'एशिया' का जलता था, 'जिन्ना जी' ने फूक मार दी।
मानस के सुन्दर सुमनो की– गुँथी हुई माला उतार दी।।

बापू ने देखा कि 'एशिया'– आज अँधेरे मे चलता है।
गर्वोन्नत 'यूरोप' खडा है, सूर्य 'एशिया' का ढलता है।।
आज 'एशिया' का चन्दा जब– चीर घटाये निकल रहा है।
किसने मेरे कानो मे आ– बना 'नया एशिया' कहा है।।

वुला 'जवाहरलाल' कुटी पर, वापू वोले, जगा 'एशिया' ।
वीच भँवर मे डोल रहा है, एक किनारे लगा 'एशिया' ।।
सभी एशियायी देशो का– भारत मे सम्मेलन कर तू !
एक वना 'एशिया' विश्व मे, जग मे नई जिन्दगी भर तू !!

इधर मिला आदेश, उधर वस– 'पण्डित जी' ने कदम वढाया ।
सव देशो को भेज निमन्त्रण– भारत सम्मेलन वुलवाया ।।
'दिल्ली' का वह किला पुराना, जहाँ कि गत इतिहास व्याप्त है ।
जहाँ 'पाण्डवो' का प्रभात था, जिसे अटल अभिमान प्राप्त है ।।

जो सदियो से देख रहा है– दुनिया की रगीन कहानी ।
जिसकी ईटो मे सोई है– भारत की जाज्वल्य जवानी ।।
आज उसी के आँगन मे यह– दीप्तिमान सम्मेलन होता ।
आज युगो के वाद तृपातुल– सूखे ओठ नीर से धोता ।।

अमर 'एशिया' के प्रतिनिधि ये– अधिवेशन मे शोभा देते ।
वे तैरे, तैराया करते– जो इनके दर्शन पा लेते ।।
'वर्मा', 'चीन', 'अरव', वह 'लका', 'हिन्द एशिया' देश विराजे ।
'फिलिपाइन', 'ईरान', 'मिश्र' वह– 'मगोलिया', 'कोरिया' साजे ।।

वे 'अफगानिस्तान' आदि के– ज्ञानी प्रतिनिधि राज रहे हैं ।
'शहरियार' की चमक दमक है, 'सुतन', 'सैदिवी' साज रहे हैं ।।
अध्यक्षा 'सरोजिनी देवी'- मधुर कहानी सी शोभित थी ।
स्वर्णिम कोयल सी मुखरित थी, नई जवानी सी शोभित थी ।।

उठे 'जवाहरलाल' मच पर, वोले मधु-जीवन वरसाते ।
वापू की प्रेरणा त्याग से– हम सब मस्तक आज उठाते ।।
मानवता का मूर्त्त रूप वह– मानव की सेवा मे रत है ।
वह सूरज जैसा सेवक है, लेकिन धरती जैसा नत है ।।

अभिमानी साम्राज्यवाद की– दीवारे गिरती जाती हैं।
सत्य अहिंसा के आँगन मे– नई नई कलियाँ गाती हैं॥
अगर 'एशिया' की स्वतन्त्रता– तो दुनिया मे शान्ति रहेगी।
जब तक अणु बम का घमण्ड है– तब तक जग मे क्रान्ति रहेगी॥

गगा से गाँधी जी आये, सब स्वागत मे खडे हो गये।
'जय बापू की! जय बापू की!', हर्ष मुखर था, शब्द खो गये॥
आते ही 'सरोजिनी' बोली– महा महामानव आये हैं।
'नोआखाली' से आये हैं, जग के लिये सुधा लाये हैं॥

जय जननायक! जय जगपालक! जय जय भारत-भाग्य विधाता!
जिसने दीप दिया दुनिया को– जय जय जय वह 'पुतली' माता!!
जिस प्रकाश का पार न मिलता– जय हो उस सब के त्राता की!
जिसने हमे प्रेम से पाला– जय जय उस भारत माता की!!

सत्य प्रेम साकार हो गये, महा महात्मा उठे मच पर।
सतयुग का उपदेश दे रहे– दसो दिशाओ को गा गा कर॥
सत्य प्रेम से जीतो जग को, पश्चिम करो प्रेम से वश मे।
दुनिया को सन्देश अमर दो, डूबे रहो सत्य के रस मे॥

पश्चिम 'अणु बम' से पीडित है, 'अणु बम' जग के लिये नाश है।
घोर अँधेरे मे मानव को– सत्य प्रेम का ही प्रकाश है॥
यह सन्देश वही जो 'ईसा', 'बुद्ध' और 'जोरोस्टर' का है।
सार यही 'मन्सूर' आदि का, यही पाठ परमेश्वर का है॥

जितने भी पैगम्बर आये– उन सब का उपदेश यही है।
'राम', 'कृष्ण' कह गये यही सब, ऋषियो का सन्देश यही है॥
सिर्फ बुद्धि पर नही, हृदय पर– प्रेम-पूर्ण अधिकार चाहिये।
केवल तर्क न मुक्ति-मन्त्र है, श्रद्धा से सत्कार चाहिये॥

जिस भापा मे वोल रहा मैं– वह न राष्ट्रभापा है मेरी ।
यह है घोर विदेशी भापा– जिसने सारी दुनिया घेरी ॥
भारतीय भापा विदेश मे– चलती चलती अभी चलेगी ।
यह अन्तर्राष्ट्रीय गुलामी– जलती जलती अभी जलेगी ॥

'दिल्ली' या 'वम्वई' आदि मे– भारत की तसवीर नही है ।
वडे वडे शहरो के अन्दर– दुनिया की तकदीर नही है ॥
असली भारत ग्रामो मे है, सत्य गाँव की झोपडियो मे ।
सात लाख ग्रामो मे सुख है, शान्ति घास की झोपडियो मे ॥

युग वीते तव चले खोजने– कुछ वैज्ञानिक प्रेम सत्य को ।
भिन्न भिन्न देशो मे पहुँचे– वे पाने आनन्द-नृत्य को ॥
जव भारत के किसी गाँव मे– गया एक राही वैज्ञानिक ।
छोटे से टूटे छप्पर मे– पाया उस राही ने नाविक ॥

वह भगी का छोटा छप्पर– जिस मे सत्य प्रेम रहते हैं ।
जिसने ढूँढा उसने पाया– जिसे कि कहाँ ? कहाँ ? कहते हैं ॥
मैं जो कुछ भी वोल रहा हूँ, अनुभव ही है उसकी आत्मा ।
मुझे प्रेरणा वही दे रहा– जो है हम सव का परमात्मा ॥

पश्चिम का जो ज्ञान आज वह– पूरव ही की पूर्व देन है ।
सव का भला करो जीवन से, जीवन का घुल रहा फेन है ॥
उठो ! पुरातन नया करो फिर, तुम अतीत के रत्न न खोओ !
नया वही जो नया रूप ले, स्वप्निल सज-धज मे मत सोओ !

वापू का रसनामृत सव ने– मानस-घट मे भरा भाव से ।
चूम लिये भावी विधान ने– जननायक के चरण चाव से ॥
सव प्रतिनिधियो ने वापू पर– अपनी श्रद्धा न्यौछावर की ।
जीवन उतना वता रहा मैं, जितनी थाह मिली सागर की ॥

सब देशो के प्रतिनिधियो ने– अपना अपना रस बरसाया।
महा महात्मा के चरणो पर– सब ने मानस-अर्घ्य चढाया॥
पर अब तक पैशाचिक लीला– नाच रही थी नगी होकर।
कौन डकिनी खेल रही थी, खून मास धरती का खोकर?

वह 'लाहौर' कि जिसके आगे– 'इन्द्रलोक' लज्जित होता था।
वह 'लाहौर' कि जो धरती पर– रूप जवानी मे बोता था॥
वह 'लाहौर' कि जिधर निकलते– सौरभ ही सौरभ उडता था।
जिसकी मधुर 'अनारकली' पर– यौवन से जीवन जुडता था॥

उसमे आग लगाई ऐसी– जो न बुझाये कभी बुझेगी।
यह तो वह विप बोया जिसकी– बेल फैलती हुई उगेगी॥
शुरू हो गई मारकाट फिर, बना भयंकर बूचडखाना।
दुनिया कैसे भूल सकेगी– 'जिन्ना'! तेरा वह अफसाना॥

देख देख यह खून खराबा– वायसराय गये फिर 'लन्दन'।
क्या करते! जल भुन कर लाये– जला भुना सा काला चन्दन॥
ब्रिटिश राज्य की नई योजना– फिर वे नये रूप मे लाये।
गाँधी जी के पास बैठ कर– नये नये सब चित्र दिखाये॥

बोले, हम पन्द्रह अगस्त को– सत्ता हस्तान्तरित करेंगे।
जितनी देर करेंगे उतने– हिन्दू मुस्लिम कटे मरेंगे॥
हिन्दुस्तान इधर हो जाये, 'पाकिस्तान' उधर बन जाये।
ऐसा साँप दूर ही अच्छा, दूध पिलाने पर जो खाये॥

रहा न कोई अन्त दूसरा, खून खराबे से डरता हूँ।
बापू बोले, नेताओ से– अच्छा! परामर्श करता हूँ॥
हारे थके 'राम' मे लय हो– गाँधी जी कुटिया पर आये।
खाये कुछ खजूर आश्रम मे, उबले हुए साग कुछ खाये॥

वैठ गये प्रभु के चरणो मे, भक्त उसी से ध्यान लगाते।
कभी प्रश्न करते थे वापू, कभी प्रेम से चरण दवाते॥
फिर वापू ने नेताओ को– अपनी कुटिया पर वुलवाया।
आज वहुत दिन वाद धरा ने– नदी नदी का सगम पाया॥

आज 'जवाहरलाल नेहरू'– नये सृजन से वहाँ पधारे।
भाव भरे आसन पर वैठे– 'मौलाना आजाद' हमारे॥
तेजपुज से चमक रहे थे– 'भारत वल्लभ भाग्य सितारे'।
ऊँचे आसन पर वैठे थे– नीति निपुण 'सरदार' हमारे॥

रम्य राष्ट्रपति के आसन पर– शोभित कलाकुज 'कृपलानी'।
नये सृजन मे नये रूप से– 'राजाजी' ने लिखी कहानी॥
वैठे वहाँ 'नरेन्द्र देव' थे, 'जयप्रकाश नारायण' थे लय।
'सरोजिनी नायडू' वहाँ थी, 'पुरुपोत्तम टण्डन' की थी जय॥

सव नेताओ के सगम मे– जननायक थे सव के सगम।
जिस जिसके जो भाव वहाँ थे– वापू के थे सव हृदयगम॥
फूलो की क्यारी मे वापू– सव फूलो की अमर चाह थे।
राह नही थी जहाँ, वहाँ वे– थके पथिक के लिये राह थे॥

चाह सवेरा ले आती है– राह पकड कर उस तारे की।
उठे 'जवाहरलाल' मच पर, चर्चा छेडी वँटवारे की॥
'तीन जून' की व्रिटिश योजना– 'वी', 'सी' गुट का है वँटवारा।
'ए गुट' सारा भारत मे है, अत मान ले हम वह धारा॥

पशुता के नगे नर्त्तन से– अच्छा अलग अलग ही होना।
मानवता का ध्येय नही है– खूनी वन पशुता मे खोना॥
खडी कल्पना के पखो पर– वालू की हल्की दीवारे।
क्या नदियो को काट सकेगी– रेतीली कल की दीवारे॥

कौन पहाडो को काटेगा ? कैची से धरती न कटेगी।
धरती पर जो नीली छतरी– वह छुरियो से नही फटेगी ॥
कुछ विरोध के बाद वहाँ पर– 'पडित जी' की बात मान ली।
मधुर तर्क के बाद तरी ने– सागर की सब थाह जान ली ॥

'रावी' से सागर तक गूँजे– सेनानी 'पटेल' के नारे।
हरा भरा यह देश करेगे, पग चूमेगे नभ के तारे ॥
कॉगरेस की कार्य समिति ने– देखे शुभ निर्माण सन्त मे।
'तीन जून की ब्रिटिश योजना'– करी वहाँ स्वीकार अन्त मे ॥

आशीर्वाद दिया बापू ने– युगपरिवर्त्तक ! अमर रहो तुम !
ससृति के सूखे मानस मे– सरिता बन कर सदा बहो तुम !!
श्यामल बादल ! बरस बरस कर– काले पीले धब्बे धो दो !
जो मनुष्यता के सुहाग हो– धरती पर वे मोती बो दो !!

धरती माता को पहिनाओ– हरी भरी सुन्दर हरियाली।
फूलो के गहने पहिनाओ, माँ की साडी बने उजाली ॥
चन्दा का टीका माथे पर, सूरज का झूमर पहिनाना।
स्वतन्त्रता के राजमुकुट पर– 'काशमीर' का तिलक लगाना ॥

भारतीय कॉग्रेस हुई फिर, देशभक्त सब वहाँ पधारे।
भव्य मच पर भावुकता से– बैठे थे ऑखो के तारे ॥
सब की चाहो ने बापू के– स्वागत मे आरती उतारी।
नृत्य कर रही थी सौरभ मे– उस पल ऋद्धि सिद्धियाँ सारी ॥

मानो चॉद धरा पर उतरा, खेला चामर की गोदी मे।
चॉद दूर सागर से कितना, पर है सागर की गोदी मे ॥
धीरे धीरे चढे मच पर, मानो रूप बिजलियाँ चलती।
कम्पित हो निष्कम्प रूप से– मानो दीपशिखाये जलती ॥

मानो रिमझिम रिमझिम वर्षा– वरस रही हो हरियाली मे।
मानो मस्ती मचल रही हो– नीर भरी वदली काली मे ॥
वापू वोले महामच से, भापण सुनने लगे लोक सव।
अवतारो के वोल विश्व मे– सुनने को मिलते हैं कव कव ?

घर घर मे रेडियो खुल गये, वैठ गये सव कान लगा कर।
'वोल प्रसारक' से वापू ने, 'व्रिटिश योजना' कही सुझा कर ॥
वोले, 'तीन जून' को वदली– रेखाये भारत प्रदेश की।
रूप वही स्वीकार करो तुम, किस्मत वदली कॉगरेस की ॥

'रावी-तट' से 'अन्तरीप' तक– इसी तरह स्वाधीन वनेंगे।
अन्य तरह अव कट कट मर मर– हम रोदन की वीन वनेंगे ॥
साढे तीन अलग होते हैं, अन्त अलग उनको होने दो !
थोथे से लालच मे दव कर– उनको वडा भाग खोने दो !!

तुम अपने भावी भारत की– सीमाये निर्धारित कर लो !
सव धन जाता देखो यदि तो– जितना भर सकते हो भर लो !!
आया यह प्रस्ताव सभा मे– वँटवारा स्वीकार करे हम।
'टण्डन जी' वोले विरोध मे– वँटवारा विलकुल काला तम ॥

'वन्देमातृरम्' व्यर्थ तुम्हारा, इतने दिन तक व्यर्थ लडे तुम !
वर्षो तक चलते चलते भी– अभी वही के वही खडे तुम !!
वंटवारे पर मत लोगे यदि– तुम जनता मे जा जन जन से।
मान नही सकता कोई भी– भारत का वँटवारा मन से ॥

सव के उत्तर मे वापू ने– कहा कि धरती गोल मोल है।
चले जहाॅ से आज वही पर, मानवता का वडा वोल है ॥
क्या इतिहास भूल वैठे हो, सव कुछ खोकर दवे हुए थे।
पराधीनता की तह पर तह, जिनके अन्दर दवे हुए थे ॥

भारत पूज्य कभी था लेकिन- अव तो सदियो से गुलाम था।
और क्या कहूँ! स्वयम् समझलो, कहाँ आज नर, कहाँ 'राम' था॥
क्या 'अशोक' के वाद देश का- इतना भाग स्वतन्त्र रहा है?
सिर्फ अहिसा का युग है जो- लहरो के प्रतिकूल वहा है॥

बापू जो कहते थे वह तो- परिभाषा मे युग बाँधेगे।
अरे! आज कल परसो ही क्या! गाँधी को सब युग मानेगे॥
बापू के प्रभाव से सब ने- मान लिया प्रस्ताव भाव से।
स्वतन्त्रता की प्रथम किरण ने- चूमे उनके चरण चाव से॥

बापू ही मिट्टी में से भी- सोने को निकाल लेते थे।
बापू ही थे जो आँखो से- काँटो को निकाल देते थे॥
बापू ही दोषो मे से भी- मूल्य मोतियो के निकालते।
बापू ही थे जो गिरतो को- अपने जीवन से सँभालते॥

बापू ही थे जो पतझड में- पीले पीले फूल खिलाते।
एक नदी के दो कूलो को- बापू ही तो गले मिलाते॥
जनता के शुभ से सज्जित हो, चला केसरी 'काशमीर' को।
प्रकृति चाँदनी बाट देखती, याद कर रही थी समीर को॥

गाँधी जी चल पडे, मार्ग मे- उनकी गाडी पर वम मारा।
गाँधी जी को आँच न आई, घायल स्वयम् हुआ हत्यारा॥
'काशमीर' पहुँचे गाँधी जी, चन्दाओ ने चरण पखारे।
स्वागत मे कल कल करते थे- सरिताओ के कलित सहारे॥

भारत के उत्तर पश्चिम मे- 'काशमीर' का मुकुट भाल पर।
मानो खेती मुसकाती है- मिट्टी से सोना निकाल कर॥
मानो अम्बर से उतरी हैं- मेघो की परियाँ बल खाती।
मानो बिजली की मुसकाने- कोमल केसर पर मुसकाती॥

मानो श्वेत कमल के ऊपर– थिरक रही चाँदनी उषा सी।
मानो युग युग बाद विरह में– प्राण-द्वीप बन गया प्रवासी॥
हरे हरे तरुओं की माला– पहिने खडी प्रकृति-पटरानी।
केसर की साडी मे सजकर– नाच रही यह कौन दिवानी ?

लदे हुए फल फूलो से तरु– बने भारवाही संसृति के।
कोमल किसलय चाँद सितारे– आभूषण बन गये प्रकृति के॥
नील कमल सी निर्मल आँखे– खीच रही बरबस दुलार को।
अंजन भरी धनुष सी आँखे– बजा रही जग के सितार को॥

शैल श्रेणियाँ नाच रही थी, मानो पहिना हार प्रकृति ने।
जल-विहार करती नौकाये, मानो नयन भरे संसृति ने॥
रिमझिम रिमझिम झरने झरते, झुरमुट मे झड की झनकारे।
कही कही बिजलियाँ दमकती, मानो खिँची हुई तलवारे॥

शैल श्रेणियो से बादल दल– बापू पर मोती बरसाते।
लहरो पर चलने वाले घर– सुख से बापू को सहलाते॥
फूलो की खिडकियाँ खुली थी, चाँद अनेको झाँक रहे थे।
जननायक के जीवन धन को– मोल अनेको आँक रहे थे॥

वहाँ तीन दिन मे बापू ने– 'काश्मीर' की रचना रच दी।
एक नई तसवीर बनाई, शूली गडी तूलिका तज दी॥
'काश्मीर' से विदा हुए जब– 'काश्मीर' की केसर बोली।
मैं भारत की मुरली, मेरी– राक्षस पोछ रहे हैं रोली॥

मैं स्वतन्त्र भारत की बिन्दी– बन कर माथे पर चमकूँगी।
मैं भारत के राजमुकुट मे– अमिट दामिनी सी दमकूँगी॥
मैं भारत की सुषमा, मुझको– भारत माँ से दूर न करना।
मैं 'सीता' सी शक्ति, प्रभो! तुम– रावण के बल से मत डरना॥

'काश्मीर' से चला पथिक वह, 'हरिद्वार' के तट पर आया।
'हरिद्वार' हर की पैडी पर– 'हर हर महादेव' की माया॥
निर्मल जल पर तैर रही थी– चन्दा की चाँदी चमकीली।
मानो लदी हुई सोने से– नील धार थी पीली पीली॥

दिव्य देवियाँ नहा रही थी, दमक पड रही थी पानी पर।
आग समझ जल के पानी को– भाग चली मछलियाँ फुदक कर॥
खेल रही युवतियाँ नीर मे, नयनो की मछलियाँ वन गई।
तन पर कौध पडी किरणो की, आँखो मे विजलियाँ छन गई॥

जीवन आँक रहे जननायक,
तोल रहे जल की तरुणाई।
तैर चली जल की लहरो पर–
स्वर्णिम सूरज की अरुणाई॥
राम खड़े हरि-द्वार पडे हम,
पागल से पहिचान न पाये।
पैर छुवे तट-पत्थर ने पर,
मूक रहे हम आँख झुकाये॥

तट पर भक्त घिस रहे चन्दन, आँखे घूर रही हैं जल मे।
माला घूम रही हाथो मे, चुटकी चलती अन्तस्तल मे॥
एक दिवस रह 'हरिद्वार' मे, जननायक फिर 'दिल्ली' आये।
अमर लोक के उस माली ने– फूल खिलाये, पेड लगाये॥

छुरे फूल पर चला रहे थे– 'पाकिस्तान' बनाने वाले।
करवट वदले ही जाते थे– माँ का हृदय जलाने वाले॥
लूटमार वह मारधाड की– अभी नही तलवार रुकी थी।
गले काट कर हँसने वाली– अभी न खूनी धार रुकी थी॥

सारा 'पाकिस्तान' खून मे- नहा रहा था नाच रहा था।
तोल नही सकता शब्दो से, गली गली मे खून बहा था ॥
ले जाते लडकियाँ उठाकर, घर पर कब्जा कर लेते थे।
टाँग किसी की, हाथ किसी के, काट काट धक्के देते थे ॥

डर कर इधर उधर से छिप छिप- जोकि विचारे घर से भागे-
बचकर जा न सके गुण्डो से, खडे हो गये गुण्डे आगे ॥
पथ रोका, कपडे तक छीने, नगा करके उन्हे निकाला।
कैसे बुझ पायेगी बोलो! उन सब के मानस की ज्वाला?

हमने देखी हैं वे रेले- जिनमे शरणार्थी आते थे।
शोणित से लथपथ रेलो मे- घायल ही घायल पाते थे ॥
हाथ किसी के, कान किसी के, पैर किसी के कटे हुए थे।
रेलो के दरवाजो पर धड, टँके हुए सर फटे हुए थे ॥

रेलो के पेशावघरो मे- बहिनो की ठठरियाँ पडी थी।
डिब्बे डिब्बे मे बहिनो की- जली हुई हड्डियाँ खडी थी ॥
लोहू मे लथपथ लोथो की- मैंने देखी वे तसवीरे।
जो कि पेट से सिर मे निकली- मैंने देखी वे शमसीरे ॥

वे काफिले दृगो मे अब भी- जिनमे पुरुषार्थी आते थे।
मैंने देखा है लाशो को- कुत्ते नोच नोच खाते थे ॥
मैंने देखा है पेडो से- बाँध बाँध कर आग लगाना।
मैंने देखा है लोहू मे- उन पशुओ का रोज नहाना ॥

फूँक दिया वह गाँव आज, कल- लाखो काट दिये स्टेशन पर।
लूट लिया कल उन लाखो को, फाड दिये उन लाखो के सर ॥
वह मनुष्य का महापतन था, झगडे बढते ही जाते थे।
भारत मे भी प्रति क्षण प्रति पल, खून खौलते ही जाते थे ॥

०००००००००००००

रक्त-रंजित मेदिनी पर नाचती नंगी दनुजता।
रक्त बहता, आग जलती, जल रही जिसमे मनुजता॥
यह प्रलय का नाच है या नाच कलियुग का भयकर।
या सृजन के दीप लेकर नाचते विकराल शकर॥

हाय ! राक्षस युवतियो की कोख मे भाले चढाता।
फूल सी सुकुमारियो को सडक मे नगी नचाता॥
चाँद से नादान शिशु को कत्ल करता दैत्य-दल वह।
खून खौलाता हृदय मे आज तक वह खून वह वह॥

आ रहे भूखे विचारे, सामने पल्ला पसारा।
चार आँसू के सहारे, देखते हैं मुँह तुम्हारा॥
आज ये नगे खड़े हैं, आज ये भूखे खडे हैं।
घाव छाती मे छिपाये, दर्द दर दर पर पडे हैं॥

ये भिखारी से खडे हैं, सामने पल्ला पसारे।
भीख तुमसे माँगते हैं, सिर्फ दृग-जल के सहारे॥
सिर्फ तुम अपने बचे हो, और क्या जग मे हमारा ?
बाल बच्चे कट चुके हैं, अब तुम्हारा ही सहारा॥

राम ! यह कन्या विचारी खून मे लथपथ खडी है।
राम ! वह 'सीता' तुम्हारी बन्द 'लका' मे पडी है॥
मूक होकर देखते हो खून का यह खेल नगा।
दीन दुखियो की चिता से टेरता तुमको तिरगा॥

खून बरसता देख धरा पर– बापू का जीवन जलता था।
जलते देख फूल भारत के– धरती का सूरज ढलता था॥
हत्याओ के इन नाचो से– हस रो रहा था धरती का।
गाँधी के जीवन का हर क्षण– खून धो रहा था धरती का॥

जहाँ कही भी ज्वाला धधकी– वे गगा वन गये वही पर।
अभी यहाँ हैं, अभी वहाँ वे, अभी पोछते अश्रु कही पर॥
अभी किसी मुस्लिम के घर को– जननायक ने स्वर्ग वनाया।
अभी किसी हिन्दू के घर का– वुझा हुआ फिर दीप जलाया॥

कभी किसी हरिजन के घर मे– गाँधी जी 'गीता' पढते हैं।
कभी पहाडो पर गाँधी जी– कदम कदम आगे वढते हैं॥
'नोआखाली' जाने को फिर– गाँधी जी 'कलकत्ता' आये।
उग्र प्रदर्शन मिले कही पर, कही फूल कुम्हलाये पाये॥

यह परिवर्त्तन की दुनिया है, निशि के वाद भोर भी आता।
पहिले मिट्टी मे मिलता है, तव ही वीज मुकुट वन पाता॥
जननायक की चरण-धूलि से– गिरती गिरती दुनिया सँभली।
परिवर्त्तन 'लन्दन' मे आया, 'लोकसभा' वदली सी वदली॥

पास 'एटली' ने करवाया– 'स्वतन्त्रता विल' लोकसभा मे।
मानो जान लाश मे आई, हास्य छा गया शोक-सभा मे॥
कहा 'एटली' ने, "भारत मे– औपनिवेशिक राज्य रहेगा।
दुनिया मे 'पन्द्रह अगस्त' से– भारतवर्ष स्वतन्त्र वहेगा॥

अव कुर्सी पर वैठायेगा– चुन कर वही 'गवर्नर जनरल'।
अपने ही विधान से भारत– जगती तल पर होगा उज्ज्वल॥"
स्वतन्त्रता का रूप देखने– वाणी भारतवर्ष आ गई।
रग वदलने लगा देश का, रग विरगी छटा छा गई॥

यह 'विधान परिषद्' है जिसमे– भारत की तसवीर वन रही।
वनता है विधान भारत का, दुनिया की तकदीर वन रही॥
किन्तु प्रार्थना मेरी यह है– कही 'राम' को भूल न जाना।
भारत के भावी विधान मे– गाँधी जी का रूप वनाना॥

वह देखो 'विधान परिषद्' मे– झण्डे का प्रस्ताव आ गया।
झण्डा लेकर खड़े 'नेहरू', झण्डा चारो ओर छा गया ॥
झण्डे का प्रस्ताव पेश कर– बोले 'पण्डित जी' झण्डे पर।
मैं झण्डे पर बोल रहा हूँ– स्वीकृति गाँधी जी से लेकर ॥

हम जितने भी बढ़े अगाडी– वह सब बापू का प्रसाद है।
इस झण्डे के तार तार मे– गाँधी जी की अमर याद है ॥
पराधीनता मे भी उसने– भारत का सम्मान बढाया।
उसी महामानव ने हमको– अन्तिम मजिल पर पहुँचाया ॥

यह स्वतन्त्र भारत का झण्डा, जिसे आप ऊँचा लहराये।
सत्य प्रेम आदर्श भक्ति का, हम झण्डे मे रूप रचाये ॥
यह जनता का प्यारा झण्डा, चिह्न नही साम्राज्यवाद का।
यह आदर्शो का प्रतीक है, फल है बापू के प्रसाद का ॥

जीव मात्र की भाषा है यह, यह न किसी का हक छीनेगा।
यह प्रतीक है स्वतन्त्रता का, लहरो से सौरभ बीनेगा ॥
यह 'अशोक-युग' का आत्मा है, अकित अमर 'अशोक-चक्र' से।
इसमे है एकता वीरता, यह न डरेगा किसी वक्र से ॥

जहाँ कही जायेगा झण्डा, साथ मित्रता ले जायेगा।
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् सूचक, स्वतन्त्रता के गुण गायेगा ॥
यह 'अशोक' का विजय-चिह्न है, यह देगा सन्देश शान्ति का।
वीर भाव के रग भरेगा, केसरिया है रग क्रान्ति का ॥

श्वेत रग जाज्वल्य ज्योति है, अन्धकार मे अमर उजाला।
हरा रग हरियाली का है, धागे हैं गौरव की माला ॥
इसमे तीनो लोक तिरगे, इसमे बही त्रिवेणी गगा।
लहर लहर मे मुक्ति-मन्त्र है, सगम बन कर उडा तिरगा ॥

पाँचो तत्त्वो का प्रतीक यह, प्रहरी है आनन्द लोक का।
इस झण्डे से बोल रहा है– भाषण तेजस्वी 'अशोक' का॥
अपने दोनो हाथ उठा कर– फिर 'सरोजिनी देवी' बोली।
मानो आलिगन को माँ ने– अपनी दोनो बाँहे खोली॥

बोली, इस झण्डे का स्वागत, उठ कर इसे प्रणाम करो सब!
सब ने उठकर करी वन्दना, देव लोक मे दीप जले तब॥
यह जो झण्डा आज उठा है– कसम तुम्हे है झुका न देना।
इस झण्डे को लेकर जग मे– वीरो! सदा भलाई लेना॥

आई तिथि 'चौदह अगस्त' की, युग परिवर्त्तन के पल आये।
बारह बजे, रात जय लाई, स्वतन्त्रता ने दीपक गाये॥
परिवर्त्तन का क्षण आता है, दुनिया नई बदल जाती है।
पल मे दमक दामिनी जाती, पल मे धूप निकल आती है॥

वह देखो! 'विधान परिषद्' मे– भारत स्वतन्त्रता लेता है।
देखो! आज समय को देखो, एक नई दुनिया देता है॥
अधिवेशन प्रारम्भ हो गया, सब ने 'वन्देमातृरम्' गाया।
चेत 'सुचेता कृपलानी' ने– वन्देमातृरम् मूर्त्त दिखाया॥

बजती थी सितार जैसी वह, वीणा जैसी बोल रही थी।
गाती मगल गीत मनोहर, स्वर मे रोली घोल रही थी॥
फिर 'राजेन्द्र प्रसाद' मच पर– खडे हुए, जय जय ध्वनि छाई।
बरसाया रसना से भाषण, मानो मीठी वर्षा आई॥

बोले, धन्यवाद ईश्वर को, बापू को शत-शत प्रणाम है!
'राम' रम रहा है कण कण मे, सब का दाता वही राम है॥
सर्वशक्ति ही भाग्य विधाता, नारायण को धन्यवाद दो!
प्रेम भाव से स्वतन्त्रता का– समतल पर सब मिल प्रसाद दो!!

धन्यवाद वापू का जिसने– आज रात मे दिन दिखलाया।
श्रद्धांजलि उस महापुरुष को– जिसने हमे स्वतन्त्र कराया।।
और शहीदो को प्रणाम उन– भारत पर वलिदान हुए जो।
स्वतन्त्रता के अमर पुजारी– देव-लोक के ज्ञान हुए जो।।

जिनके रक्त-विन्दुओ से यह– झण्डा ऊँचा गडा हुआ है।
जिनके वलिदानो से भारत– सिर ऊँचा कर खडा हुआ है।।
जो शहीद होते हैं उनके– मन्दिर मस्जिद वन जाते हैं।
जो शहीद हो स्वर्ग सिधारे– यहाँ वहाँ वे फल पाते हैं।।

वापू अमर प्रकाश-स्तम्भ हैं, शाश्वत मार्ग-प्रदर्शक हैं वे।
वे जीवन हैं, वे सस्कृति हैं, दिग्दर्शक आकर्षक हैं वे।।
वे आचार्य, अहिसा वे हैं, जिससे हम आज़ाद आज हैं।
जो जो हैं, जो जो भी होगे, वापू वे सम्पूर्ण साज हैं।।

दु ख विभाजन पर है हमको, पर होनी होकर रहती है।
अव तो हम यह कह सकते है– उलटी गगा भी वहती है।।
फिर लेकर प्रस्ताव शपथ का, खड़े हुए 'नेहरु' मच पर।
मानो मध्य रात्रि मे आया– सूरज काली रात चीर कर।।

वोले, जव कि सो रही दुनिया, भारत जागा और जगाता।
परिवर्तन का क्षण आता है, पल मे नया ज़माना आता।।
भारत, मानवता, जनता की– सेवा का व्रत लेते हैं हम।
सुन कल्याणी वाणी उनकी, नाची दसो दिशाये छम छम।।

वोले, सव से वड़े व्यक्ति उस– वापू की है यह अभिलाषा।
एक एक आँसू पुछ जाये, रहे न कोई जग मे प्यासा।।
जव तक आँसू नही पुछेगे, शान्त न होगी पीडा जव तक–
हमे न तव तक शान्ति मिलेगी, शान्त नही वैठेगे तव तक।।

शपथ सदस्यो ने ली, वोले– शपथ उठा कर मैं कहता हूँ–
वह मिट्टी चन्दन कर दूँगा, मे जिस मिट्टी मे रहता हूँ ।।
भारत वह जनता की सेवा– तन मन धन से सदा करूँगा ।
विश्व-शान्ति मे साथी हूँ मैं, हर प्राणी मे अमृत भरूँगा ।।

सतत सत्य पर दृढ रह कर मैं, फैलाऊँगा सदा भलाई ।
भूतल स्वर्ग वनेगा जल्दी, गले मिलेगे भाई भाई ।।
वारह वज कर अर्ध मिनट पर– घण्टे वह घडियाल वज गये ।
शख वजे, जय जय ध्वनि गूंजी, दीपो से वाजार सज गये ।।

शख वजे, घडियाल वजे अलि !
रात गई, दिनमान खिला है ।
भारतवर्ष स्वतन्त्र धरा पर,
आज हमे अभिमान मिला है ।।
रग उमग उडेल रही जय,
दौड रही लहरे जनता मे ।
रास लिये मधुमास लिये अलि !
आज वही लहरे जनता मे ।।

दीप जले रजनी न रही अलि !
तारक ये दिन मे निकले हैं ।
नाच रही लहरे लहरो पर,
फूल खिले अलि आ फिसले हैं ।।
रग वनी जनता रस मे रँग,
चाँद धरा पर खेल रहा है ।
रग लिये ऋतुराज खडा अलि !
शान्त सुगन्ध उडेल रहा है ।।

शरमीली स्वतन्त्रता आई, जन जन ने आरती उतारी।
शुभ्र चाँदनी की साडी थी, तीन रँगो की जडी किनारी ॥
मानो सुन्दरता रजनी मे- कर सोलह शृंगार आ रही।
मानो मनमोहन की मुरली- रुनझुन करती आज गा रही ॥

अम्बर की थाली मे देखो, यह कितना दहेज लाई है।
धरती की गोदी मे देखो, आज नई दुलहन आई है ॥
फूलो की पाँखुडियो पर यह- यौवन की वरसात हो रही।
आज चाँदनी के चौके मे- प्रकृति प्रिया से वात हो रही ॥

आज हवा उड़ रही निराली, आज घटा छा रही उजाली।
रजनी मोती लुटा रही है, आज रात है हँसने वाली ॥
स्वतन्त्रता की करी घोपणा, फिर 'राजेन्द्र प्रसाद' धीर ने।
भारत की 'विधान परिषद्' मे- आँसू पोछे आज पीर ने ॥

'माउँटवेटन' को 'परिपद्' ने- घोषित किया, 'गवर्नर जनरल'।
गाँधी जी की जय जय मे था- स्वतन्त्रता का उत्सव उज्ज्वल ॥
फूल फूल पर मँडराते थे- भारत माँ के लाल 'नेहरू'।
गये 'गवर्नर जनरल' के घर, ले दीपो का थाल 'नेहरू' ॥

स्वतन्त्रता की अमर आरती- लेकर पहुँच गये वे उज्ज्वल।
स्वतन्त्रता की पूज्य आरती- लेकर उठे 'गवर्नर जनरल' ॥
आज आरती राज भवन मे, आज दिवाली, आज दिवाली!
पात पात मे हरियाली है, फूल फूल मे है उजियाली ॥

आज आरती स्वतन्त्रता की, जगमग दीपक जलते।
नीली मणियो की थाली मे झिलमिल दीपक चलते ॥

दीपमालिका चन्द्रोदय का रूप आँकने आई।
घूँघट मे से तारो वाली तरी झाँकने आई ॥
आज नवेली स्वतन्त्रता की मुँह दिखलाई है क्या ?
चन्दा तारो से दीपो ने होड लगाई है क्या ?

जगमग जगमग झिलमिल झिलमिल नभ के दीप निकलते।
आज आरती स्वतन्त्रता की, जगमग दीपक जलते ॥

स्नेह शहीदो का दीपो मे जलता, जले पतगे।
गली गली मे, नगर नगर मे लहरा रहे तिरगे ॥
आज उजाली के आँगन मे वही त्रिवेणी धारा।
दीप जला पहरा देता है झण्डा प्यारा प्यारा ॥

वदल वसन्ती चोला लाखो इन दीपो पर वलते।
आज आरती स्वतन्त्रता की, जगमग दीपक जलते ॥

दीपक लेकर थका वटोही मजिल पर चलता है।
दीपशिखा पर जलने वाला दीप जला जलता है ॥
वही दिवाली जिसमे काली रात उजाली हो अलि !
भारत माता के मन्दिर मे रोज दिवाली हो अलि !

स्वतन्त्रता के प्रहरी वन कर मणिमय दीपक चलते।
आज आरती स्वतन्त्रता की, जगमग दीपक जलते ॥

छम छम छम छम रुनझुन रुनझुन– आई स्वतन्त्रता शरमीली।
सोने सी पीली पीली थी, चाँदी सी सफेद चमकीली ॥
'दिल्ली' के दर्वार चौक मे– भारत वैठा सिहासन पर।
सभी राजपद हुए सुशोभित, जनता आई उमड उमड कर ॥

धन्य राजदर्बार! जहाँ पर- लाखो लोग प्रसन्न घूमते।
गूँज रहे जयकारे जग मे, लोग तिरगे लिये झूमते॥
यही राजदर्बार जहाँ से- अब शाही जलूस निकलेगा।
'कौंसिल हाउस' से भारत का- अब न कभी निशान फिसलेगा॥

चली सवारी स्वतन्त्रता की- जनता के जय जयकारो मे।
'कौंसिल हाउस' पर जलूस से- बिजली दमक उठी तारो मे॥
दुर्ग चूम कर चरण पथिक के- 'स्वागत! स्वागत!' गीत गा रहा।
परिक्रमा कर राज-भवन मे- ज्योतिर्मान जलूस जा रहा॥

आगे बढे 'गवर्नर जनरल'- तरुण तिरगा फहराने को।
खीच 'यूनियन जैक', तिरगा- आज चले ये लहराने को॥
उतर गया 'यूनियन जैक' वह, झण्डा फहरा दिया तिरगा।
आज तपस्या से बापू की- जग मे बही त्रिवेणी गगा॥

फिर 'विधान परिषद्' मे आये, जहाँ नागरिक, नेतागण थे।
स्वतन्त्रता के सुन्दर पल थे, कोटि कोटि पुण्यो के क्षण थे॥
पूज्य महात्मा गाँधी की जय! जिसके जीवन से प्रभात यह।
पोछ रहा पीडा के आँसू, 'कलकत्ता' मे महापुरुष वह॥

भारत की 'विधान परिषद्' मे- आज राजदूतो की जगमग।
पूजा कर लो! फूल चढा लो! ढूँढ ढूँढ कर बापू के डग॥
शुभ सन्देश विदेशो के पढ, जय बोली 'राजेन्द्र' दीप ने।
मोती बरसाये आँखो ने, मगल गाये महाद्वीप ने॥

फिर 'माउँटबेटन' ने उठ कर- पढा 'किंग' का शुभ सन्देशा।
"सुख से ऋद्धि सिद्धि फल पाये- प्यारा भारतवर्ष हमेशा॥
सुख से रहे आपकी जनता, मानवता की फले भलाई।
मेरी शुभ कामना साथ है, भारत की हो खूब बडाई॥

सव स्वतन्त्रता प्रेमी सज्जन- हर्ष मनायेगे साथी वन ।
मुझ को हार्दिक हर्ष आज है, आज आप सब का अभिनन्दन ।।
यद्यपि अभी आप के आगे- गहन समस्याये उलझेगी ।
लेकिन गाँधी जी की गति से- सभी समस्याये सुलझेगी ।।

त्याग और वलिदान आपका- देख मुझे विश्वास वहुत है ।
आप विज्ञ हैं और आप मे- साहस बुद्धि विकास वहुत है ।।
आज आपने चुना 'गवर्नर-जनरल' मुझको वैध रीति से ।
मुझे आपने मोह लिया है- अपनी मनहर मधुर प्रीति से ।।

मैंने वापू के चरणो मे- प्रेमामृत का पान किया है ।
मैंने यह पद आज आपका- सेवा हित स्वीकार किया है ।।
जो उलझने आप के आगे- सुलझाऊँगा साथ वैठ कर ।
आज ऐतिहासिक दिन पर हम- फूल चढाये गाँधी जी पर ।।

जिसका आत्मा सभी जगह है, हम सव श्लाघ्य उसी वाणी से ।
फूले फले देश की सस्कृति, परम्परागत कल्याणी से ।।
चली सुगन्धित वायु विश्व मे, फर फर उडने लगा तिरगा ।
तोपे छूटी, हुई रोशनी, जग मे वही प्रेम की गगा ।।

'भारत द्वार' आज हर्षाया, उत्सव मे हो रहे प्रदर्शन ।
वाजे वजते, गीत फूटते, टूटे आज युगो के वन्धन ।।
उमड उमड जनता घिर आई, तिल धरने को जगह न मिलती ।
सेना के हो रहे प्रदर्शन, डाल डाल पर कलिका खिलती ।।

वायुयान उड रहे गगन मे, फूल देवता चढा रहे ह ।
स्वतन्त्रता की वेला आई, प्रेम-नदी मे कूल वहे हैं ।।
सुनने वालो ! सुनो ध्यान से, जड भी तो कुछ वोल रहे हैं ।
कटु जीवन मे अमृत प्रेम का, चुपके चुपके घोल रहे हे ।।

स्वतन्त्र मातृभूमि है, छा रही प्रसन्नता।
प्रभात का प्रकाश ले, आ रही प्रसन्नता॥
प्रसन्न देवियाँ चली, थालियाँ सजा सजा।
प्रसन्न बाल कूदते, तालियाँ बजा बजा॥

प्रसन्न लोग प्रेम से आज गीत गा रहे।
प्रसन्न देश के लिये आज फूल ला रहे॥
जलूस में चले सभी आज झूमते हुए।
धरा गगन रसाल मे आज घूमते हुए॥

प्रसन्न नाद आज है, गूँजती गली गली।
उमग आज रग मे, चाँद चूमती चली॥
असख्य आज गा रहे– जय स्वतन्त्र देश की !
असख्य ताज गा रहे– जय स्वतन्त्र देश की !

आज रसाल बबूलो पर है, रसना मे रस घोल रहे हैं।
नेताओ की शाश्वत भाषा– आज रेडियो बोल रहे हैं॥
फिर सब आये 'लाल किले' पर, जिसकी आँखे बरस रही थी।
स्वतन्त्रता के लिये युगो से– जिसकी आँखे तरस रही थी॥

जिसकी आँखो के आगे ही– बडे बडे इतिहास बन गये।
जिसकी छलनी सी छाती मे– जाने कितने खून छन गये॥
उसी किले पर चढे 'नेहरू', तले 'यूनियन जैक' उतारा।
राष्ट्र-मुकुट ने 'लाल किले' पर– फहरा दिया तिरगा प्यारा॥

आज देश मे दीप जल रहे, किन्तु कहाँ आँखो का तारा ?
आज देश मे सब कुछ लेकिन– नही दीखता 'बोस' हमारा॥
अरे ! कौन ले गया चुरा कर– उस चालीस कोटि के धन को ?
किस निर्मोही ने फूंका है– मेरे उस चन्दन के बन को ?

आज यहाँ सारे भारत को– उसका अभिनन्दन करना था।
उस सेनानी के मस्तक पर– सब को आज मुकुट धरना था ॥
आज दिवस वह जिस दिन के हित– देश छोड़ परदेश गया वह।
आज दिवस वह जिस दिन सब को– याद आ रहा है वह रह रह ॥

'लाल किले' पर आज तिरगा– झण्डा हमने गाड दिया है।
अपने सेनानी 'सुभाष' की– उम्मीदो को प्यार किया है ॥
प्यार किया है 'भगतसिह' को, 'शेखर' का सम्मान किया है।
आज शहीदो की समाधि पर– घी का दीपक बाल दिया है ॥

टूट कर गिरी बेडियाँ आज, आज माँ के मस्तक पर ताज,
ताज पर 'सिह-चक्र' का छत्र,
मनाओ दीपमालिका सब ! शहीदो की पूजा करलो !!

खिलादो ससृति पर श्री फूल, भूल जाओ सब अपनी भूल,
लगाओ सारे जग को कूल,
हस की तरह न्याय कर दो, प्रेम से सब कौली भर लो !

हिमालय की चोटी पर चढो !
शेर से वीरो ! आगे बढो !!
गाड दो अपना झण्डा अचल।
सूर्य सा रहे राज्य यह अटल ॥

रचो अब अपना नया समाज ! बनो सारे जग के सरताज !
रहो तुम यत्र तत्र सर्वत्र,
कहो सब भारत माँ की जय! विश्व मे जय जय जय भरदो !

टूट कर गिरी बेडियाँ आज, आज माँ के मस्तक पर ताज,
ताज पर 'सिह चक्र' का छत्र,
मनाओ दीपमालिका सब ! शहीदो की पूजा करलो !!

मेदिनी शस्य श्यामला रहे ।
सुधा-धारा सी गगा वहे ।।
चिताये जले दुखो की यहाँ ।
बाँसुरी बजे सुखो की यहाँ ।।

आज फिर भारत हुआ अशोक, ताजपोशी करता आलोक,
तिरगा चूमे तीनो लोक,
विश्व की उजडी सूखी कृषि, सत्य शिव सुन्दर से भर दो।

टूट कर गिरी वेडियाँ आज, आज माँ के मस्तक पर ताज,
ताज पर 'सिह-चक्र' का छत्र,
मनाओ दीपमालिका सब। शहीदो की पूजा कर लो।।

गीत गूँजते रहे खुशी के, कदम वढाता उडे तिरगा ।
सुरभि उडे, ससार मुग्ध हो, बहती रहे अमृत की गगा ।।

वढते जाये चरण प्रगति के, स्वर्ण रश्मियाँ रास रचाये ।
अमर अखण्डित प्रेम-ज्योति से– हृदय-हृदय मे दीप जलाये ।।
ससृति को सन्देश सुमन दे, तारो तक उत्तुङ्ग उडे यह ।
मीत बने झण्डे के नीचे, गीत उडे लहरो से बह बह ।।

हरियाली उजियाली गति ले– लहरे मुक्ति-पर्व की गंगा ।
गीत गूँजते रहे खुशी के, कदम वढाता उडे तिरगा ।।

शान्ति शिखा पर दीपक लेकर– भारत माँ आरती उतारे ।
चरणो मे पूजा गाती हो, श्रम धरती का मार्ग वुहारे ।।
मानवता की विजय तूलिका– आदर्शो के चित्र रचाये ।
झझा के झोको मे झण्डा– प्राणो की पतवार वनाये ।।

अमर रहो, आदर्श वनो तुम, ऊँचा उड उड कहे तिरगा ।
गीत गूँजते रहे खुशी के, कदम वढाता उडे तिरंगा ।।

मेघो की माला मे फहरे, केसर के फूलो पर थिरके।
गति पर झुक झुक नाच रही हो, वदली घुमड घुमड घिर घिर के॥
स्वतन्त्रता का स्वर्ण सवेरा– नये सृजन को सोना घोले।
ऊँचा उडता रहे तिरगा, दुनिया ऊँचे स्वर से वोले॥

गगा यमुना सरस्वती सी– वहती रहे त्रिवेणी गगा।
गीत गूँजते रहे खुशी के, कदम वढाता उडे तिरगा॥

भारत माँ के आँसू पोछे, आज तिरगा झण्डा फहरा।
ये झण्डे की लहरे हैं या– आज हवा मे सागर लहरा॥
यह इतिहास शहीदो का है, या वीरो की अमर निशानी।
लहर लहर पर लिखी हुई है– गाँधी जी की अमर कहानी॥

स्वतन्त्रता जव चली किले मे, विना जलाये दीप जल गये।
स्वतन्त्रता ने घूँघट खोला, ऋषि मुनियो के पुण्य फल गये॥
स्वतन्त्रता के दर्शन पाकर, विना सजाये लोक सज गये।
स्वतन्त्रता की रुनझुन सुनकर, विना वजाये साज वज गये॥

स्वराज्य रागिनी छिडी अगस्त-अस्त रात को।
प्रकाश रश्मि दीप से रिझा रहा प्रभात को॥
किसान झूम झूम गा! नया प्रभात आ गया।
विकास घूम घूम गा! अशोक हास छा गया॥

लुटा रही प्रसन्नता विहाग सी स्वतन्त्रता।
झुला रही उषा प्रिया सुहाग सी स्वतन्त्रता॥
समीर नाचता चला विकास दीपिका जली।
खिले गुलाव फूल ले हिलोर हासिनी चली॥

ऊनत्रिंश सर्ग

दिनेश दे रहा प्रकाश, आरती उतार लो !
सरस्वती ! सितार से स्वतन्त्रता दुलार लो ! !
प्रमुक्त हो गई धरा 'अशोक-चक्र' चूम लो !
खिला सरोज मुक्त भृङ्ग सूर्य चूम झूम लो ! !

माँग में सिन्दूर भर आई उषा।
रँग शहीदो का चुरा लाई उषा॥
बूंद शोणित की उषा बन आ गई।
लो जवानो की निशानी छा गई॥

रक्त मे भीगे हुए ये फूल हैं।
नाव से बिछुडे हुए ये कूल हैं॥
काट कर बाँटा हुआ यह देश है।
रात बीती है अँधेरा शेष है॥

सो न जाना प्रहरियो! खूनी खड़े।
फूल के हर ओर हैं काँटे बडे॥
अश्रु हँसने के लिये मजबूर है।
जीत से विश्राम काफी दूर है॥

तप किसी का भोग मे खोना नही।
राज्य पाकर मौज मे सोना नही॥
रक्त की प्यासी अभी तलवार है।
नाव को घेरे हुए मँझधार है॥

त्रिंश सर्ग

तपालोक

स्वतन्त्र देश हो गया समोद चाँदनी खिली।
ध्वजा विकास की उडी, विभा प्रकाश की मिली ॥
किसी हसीन फूल की सुगन्ध फूटती चली।
शहीद की जली चिता, अनन्त दीपिका जली ॥

चारु चाँदनी की चादर पर- तैर रहे हैं चन्दा तारे।
हरी घास पर उपा प्रिया से- खेल रहे हें आँसू खारे ॥
प्रकृति प्रभा पर शरद पूर्णिमा- पूजा के दो दीप जलाती।
फूल पत्तियो के मेले मे- कोयल मीठे बोल जगाती ॥

सरसो के पीले फूलो पर- विखरे हैं आँखो के मोती।
खेतो पर किसान जाते हें, कृपि हीरो के हार पिरोती ॥
शीतल मन्द समीर कली मे- सिहर गुदगुदी भर देना है।
खिले फूल की सुन्दर ज्वाला- चचल अलि पर धर देता है ॥

मुसकाती स्वर्णिम किरणो पर- मचल रहे हैं गाल गुलावी।
रंग लिये ऋतुराज खडा है, खेलो रग उछाल गुलावी ॥
ऋतुरानी देवर वसन्त से- दूर खडी कर रही ठिठोली।
फैला है गुलाव गालो पर, जलती है प्राणो मे होली ॥

वौछारो की जाली वाली, वल खाती बहकती हवा है।
यह सौरभ की चहल पहल है, या सुन्दर दहकती हवा है?
यह स्वतन्त्रता की आभा है, या जग मे जल रही शमा है?
यह मुसकाती हरियाली है, या नयनो का प्यार जमा है?

स्वतन्त्रता की वजी वाँसुरी, स्वर्ग लोक उतरा भूतल पर।
हरियाली का हृदय रिझाया, कृषि पर कृपको ने गा गा कर॥
स्वतन्त्रता की चहल पहल में- जनता फूली नही समाई।
स्वतन्त्रता के दर्शन करके- काँप उठी असि, अति शरमाई॥

पर वह मुक्त मयक विश्व मे- सच्ची मुक्ति सृजन करता था।
वह आलोक जिन्दगी का पथ- नई उजाली से भरता था॥
लघु मे दीर्घ, दीर्घ मे लघु है, रचना वह रचयिता एक है।
जग के दुख सुख के जीवन मे- बापू ही बस एक टेक है॥

प्रान्त प्रान्त मे देख रहे थे, चित्र बदलती हुई हवा के।
व्यजन झल रहे थे बापू पर- पख निकलती हुई हवा के॥
कुएँ कुएँ का पानी पीते- चले भ्रमण करते जननायक।
सीमा से विस्तार बन गये, आँसू के आधार विधायक॥

रचना रचते हुए राष्ट्र की, राह बने, रचनात्मक निकले।
गाँव गाँव मे, शहर शहर मे- कविता बने, कलात्मक निकले॥
पूज्य महामानव पीडा के- पोछ रहा था आँसू खारे।
खून धो रहा था धरती का- सन्त एक लंगोटी धारे॥

पागल बने पिशाच घूमते, घोल घोल कर मास खा रहे।
बिलो बिलो कर वसा पी रहे, मरघट मे हैवान गा रहे॥
रक्त रँगी पिलपिली खोपडी, भरे हुए लोथडे गिलगिले।
बिना दाँत के बूढे खाते, बूढो के लोथडे पिलपिले॥

हाथ काट छोटे बच्चो के, चम्मच वना खा रहे चावल।
छुरे और काँटे घुसेड कर, आँते खीच खा रहे पागल॥
जीभ निकाले डायन जैसी- फूट खून पी रही देश का।
स्वतन्त्रता पर खून छिडकती, मास खा रही थी अशेष का॥

यह जला दीप ! वह बुझा दीप ! !

सिन्दूर माँग मे भरा और पुछ गया मृत्यु के आँचल से ।
छुट गया आलता पैरो का मुँदती आँखो की पायल से ॥
अपना रँग देने से पहिले हाथो की महँदी छूट गई ।
कगन खुलने से पहिले ही दुखिया की किस्मत फूट गई ॥

यह जला दीप ! वह बुझा दीप ! !

दीपक मे स्नेह भरा, लेकिन वह फूट गया कर से गिर कर ।
काले तम मे रह गई खडी, आलोक ढूँढती पथ पथ पर ॥
मिट्टी मे मिले जले फूटे दीपो को जोड रहा वापू ।
उलटी दुनिया को फिर सीधी गगा मे छोड रहा वापू ॥

यह जला दीप ! वह बुझा दीप ! !

जितना जहर फैलता था सव– युग के शिव पल मे पी जाते ।
आ आ कर भूचाल भयकर– गाँधी जी को हिला न पाते ॥
वापू ने उपवास कर दिया, काँप उठा 'कलकत्ता' थर थर ।
मानवता की नीव रोक ली, नर नारायण ने अनशन कर ॥

शासन रोक न पाया दगे, रोक दिये वापू ने पल मे ।
लाखो पाप धुला करते हैं, निर्मल उज्ज्वल गगा-जल मे ॥
मूर्त्त अहिंसा के चरणो मे– सव ने ला हथियार धर दिये ।
जो खूनी थे उनमे मधु ने– मनुष्यता के अश्रु भर दिये ॥

इधर बुझाते, उधर दहकते, सुलग रहे थे भीपण गोले ।
फूले फले हरे खेतो पर– वरस रहे थे नाशक ओले ॥
'मेवो' के लग गया खून मुँह, गाँव गाँव मे आग लगादी ।
'लीगी' धूर्तो ने 'दिल्ली' की– धरती मे वारूद विछादी ॥

तहखानो मे शस्त्र छिपाये, बड़े बडे वम छिपा धरे थे।
वाहर से वे वने नमाजी, पर अन्दर अगार भरे थे॥
भीतर ही भीतर 'दिल्ली' मे– धधक रही थी आग भयकर।
वडे वडे वम छिपे हुए थे– 'फतहपुरी मस्जिद' के अन्दर॥

पर षड्यन्त्र खुल गये उनके, बरसाया पानी 'पटेल' ने।
छिप कर वार किया दुश्मन ने, यही नतीजा दिया मेल ने॥
टूट पडे गुण्डो पर फिर तो– राजपूत तलवार खीच कर।
सिक्ख गोरखा जाट फौज ने– किया आक्रमण षड्यन्त्रो पर॥

उधर सफेदपोश डाकू थे, इधर स्वतन्त्र देश की सेना।
ओक लगाये 'दिल्ली' कहती– गर्म खून पीने को देना!
खप्पर लिये चण्डिका फिरती, खप्पर आज खून से भर दो!
जीभ निकाले 'काली' कहती– वकरे काट काट कर धर दो!!

भूत प्रेत भूखे वैठे थे, सूना मरघट चीख रहा था।
बँटवारे के बाद खून ही– खून बरसता दीख रहा था॥
छिपे हुए हथियार उठाकर– गुण्डो ने गोलियाँ चलाई।
ये है वफादारियाँ इनकी, फूल और पत्तियाँ जलाई॥

भारत के अद्भुत वीरो से– पापी जूझ न पाये दो दिन।
कैदी बना ले गई सेना– एक एक गुण्डे को गिन गिन॥
साँपो के घर खोद खोद कर– सेना ने हथियार निकाले।
बुझी हुई हिन्दू जनता ने– अब अपने हथियार सँभाले॥

दवा हुआ प्रतिशोध हृदय का– ज्वाला वन कर धधक रहा था।
आज मुसलमानो पर पिछला– पाप भयकर भभक रहा था॥
काट काट सर गेद बना कर– हिन्दू बच्चे खेल रहे थे।
पागल कुत्ते के काटे से– वे भी उलटी ओर वहे थे॥

कितने ही हीरे भारत के- गोली के वन गये निशाने।
वहुत सरल हैं फूल तोडने, वहुत कठिन हैं फूल खिलाने॥
पागल हिन्दू! क्या तू भी अव- पागल कुत्ता वन जायेगा?
क्या गुलाव का फूल सुरभि तज- अव अगारे वरसायेगा?

आखिर तार दिया वापू को, "वापू! 'दिल्ली' जल्दी आओ!
'दिल्ली' जलने ही वाली है, जल्दी आकर इसे वचाओ!"
'कलकत्ता' से 'दिल्ली' आया- सन्त एक लगोटीवाला।
मुण्डमालिनी घूम रही थी, लुढकाती मुण्डो की माला॥

जले हुए घर पडे हुए थे, लाशे लेटी थी सडको पर।
खून दिखाती थी 'दिल्ली' का, यमुना वापू को पुकार कर॥
पर जैसे ही वापू आये, हर हर कर सव खडे हो गये।
शीतल वादल वरस वरस कर- धरती का सव खून धो गये॥

मानो उस वीभत्स काण्ड मे- आये दौड शान्त रस गाँधी।
पल को पलक उठी वापू की, वहती हुई रुक गई आँधी॥
डगमग डगमग पग आये वे, शान्त हो गये खूनी दगे।
गाँधी जी के चरण चूम कर- फर फर उडने लगे तिरगे॥

चमत्कार से डगमग पग वे, 'भगी वस्ती' ने आ चूमे।
मिला विरह को मिलन मनोहर, कमल समझ कर भौरे झूमे॥
जीवन के दुर्गम पथ पर भी- गाँधी थके न चलते चलते।
धन्य धन्य उनका जीवन है, जो फिसलन पर नही फिसलते॥

प्रति पल वापू की आँखो मे- रहती थी तसवीर 'राम' की।
'तुलसी' या वापू से पूछो- महिमा कितनी 'राम' नाम की॥
उस माली से सव ऋतुओ मे- सब लोको का वाग हरा है।
वापू का नैसर्गिक जीवन- वैध और सन्देश भरा है॥

त्रिश सर्ग

प्रात उठ कर करी प्रार्थना, लिखा पढी का काम किया फिर।
शहद मिला पानी मे पीकर, दिनचर्या का ज्ञान दिया फिर॥
दॉतन कुल्ला कर गॉधी जी– रम्य प्रकृति मे गये घूमने।
सूरज दर्शन करने निकले, भ्रमर पगो मे लगे भूमने॥

वापू तप तप सूर्य दे रहे, भगी झुक दे रहा वुहारी।
खुरच रही गोवर सडको पर– फूलो सी कोमल सुकुमारी॥
फटे चीथडे मे रोटी ले– गाता हुआ किसान जा रहा।
और उधर वह कुली रेल से– वोझ किसी का लिये आ रहा॥

ऊँचे महल खडे हैं, नीचे- सडक किनारे श्रमिक सो रहे।
उधर नाच है लाल परी का, रोटी को मजदूर रो रहे॥
किसी शूद्र की रानी है यह, जगत इसे कह रहा चमारी।
सडक कूट कर पडी हुई है, सडक किनारे कौन विचारी!

कौन चीथडो मे लिपटी यह– वता रही दुनिया का परिचय!
दुनियावाले दिखा रहे है– तरह तरह के अद्भुत अभिनय॥
ककड पत्थर पर सोती है, हा! यह सडक कूटने वाली।
इसने ही वे महल वनाये, जिन महलो मे रोज उजाली॥

कराता पेट मजदूरी, कूटती सुकुमारी यह सडक।
चल रहे ठुकरा ठुकरा सव, अरी! हट वच जा, झिडक झिडक॥
पास बैठा गोदी का शिशु, चवाता सडको के पत्थर।
चीथडा चादर मे तन ढक, कूटती सन्ध्या तक ककर॥

कभी ढोती गारा सर पर, कभी ढोती ईंटे सर पर।
कभी जव रोने लगता शिशु, उढाती आँखो की चादर॥
लगा छाती से दूध पिला, हाथ मे दे देती ककर।
खेलने लगता जब वह शिशु, स्वयम् ढोती ईंटे पत्थर॥

डस रहा इसका रूप इसे, छेडती गुण्डो की टोली।
गालियाँ ताँगे वालो की, सुना करती है यह भोली॥
और कहता है कोई यह– अरी! क्यो करती मजदूरी?
वासना-पशु कब समझा है, दुखी नारी की मजबूरी?

धूप जाडे मे पिस पिस कर, बनाती मर मर सुपथ सडक।
तपस्या भग किया करती, जहाँ फैशन की तडक भडक॥
एक रेशम की साडी का– डाल तिरछा पल्ला चलती।
एक की दीपमालिका है, एक की सुन्दरता जलती॥

एक आँखो से ढलती है, एक प्रति पल मानव छलती।
एक पत्थर पर सोती है, एक मद मे अकडी चलती॥
दुरगी दुनिया मे प्रति पल, अनेको रग बदलते हैं।
करोडो प्रति दिन खिलते हैं, करोडो प्रति दिन जलते हैं॥

धूप मे जलती सुन्दरता।
धूलि मे ढलती सुन्दरता॥
किसी के घर मे छम छम है।
किसी के अन्तर मे गम है॥

ईश्वर! तेरी यही विषमता, क्या जग ऊँच नीच को कहते?
बडे न छोटो को ठुकराते, आँसू यदि ज्वाला बन बहते॥
सूखे पत्तो के ढेरो पर– लग जायेगी जो चिनगारी–
तो न बुझाये आग बुझेगी, ज्वाला उगलेगी फुलवारी॥

फुलवारी मे घूम रहे हैं– बापू मधुकर वह माली से।
खिले फूल बाते करते हैं, हँस हँस झूम झूम डाली से॥
झुक झुक कर प्रणाम करते हैं, फूले फले पेड माली को।
रग रग की फूल पत्तियाँ– चूम रही हैं उजियाली को॥

पूजा करते हुए प्रकृति की, जननायक आ गये घूम कर।
पिया मौसमी का मीठा रस, रस से जग का पात्र गया भर॥
मन मथ मथ कर अमृत निकाला, मल कर तेल नहाये पावन।
रुके किनारा वनकर वापू, वने पगु की गति मनभावन॥

सारे काम छोड कर पहिले– ईश्वर की उपासना कर मन !
नारायण को भूल गये जो, सदा दुखी रहते हैं वे जन॥
फिर जननायक ने अपने सव– सिद्धान्तो के पौधे सीचे।
जो गड्ढो मे पडे हुए थे, उनके हाथ पकड कर खीचे॥

सव के साथ वैठ वापू ने– सादा भोजन किया शान्ति से।
रूखी सूखी खा वापू ने– ठण्डा पानी पिया शान्ति से॥
गाँधी ने गौ-ग्रास निकाले, भाग पक्षियो का भी छोडा।
जितना भी है, सव मिल खालो– वॉट वॉट कर थोडा थोडा॥

चन्दा आग उगलता देखा, सूरज अन्धकार वरसाता।
स्वतन्त्रता के राज-भवन मे– कौन जहर का धुआँ उडाता ?
चूक गये थे 'राम', 'कृष्ण' को– छल ने छीन लिया 'द्वापर' मे।
किन्तु 'वुद्ध' 'ईसा' की आत्मा– वापू विजयी रहे समर मे॥

मानव की दुर्दशा देख कर– वापू मुरझाये जाते थे॥
फूलो पर कालिमा देख कर– गॉधी कुम्हलाये जाते थे॥
ऐसा विष फैला फूलो मे, माली तक पर फण फैलाये।
स्वतन्त्रता के फूल खिले तो– ये तुपार के पत्थर आये॥

फेंकी गई धूलि चन्दा पर, सूरज तक पर दोप लगाया।
जग ने किस का हृदय न वीधा, जग ने किस को नही रुलाया !
दुनिया मे सच्चे प्राणी को– रहने का अधिकार नही है।
वुरे व्यक्तियो की दुनिया मे– सच्चो का सत्कार नही है॥

इस युग मे तो वही रहे जो– जेव काट कर दाँत निकाले ।
इस युग मे जिन्दगी उसी की– जो पडौसियो को भी खा ले ॥
इस युग मे जो कहे भले की– उलटा चोर वही कहलाता ।
इस युग मे जो गले काटता– वही प्रेम से पूजा जाता ॥

आज जौहरी की दुकान पर– विकते हैं कोयले करारे ।
दुनिया मे रौनक न रही अव, वरस रहे हैं आँसू खारे ॥
सडके तक रो रही हाय! यह– कैसा काला काल भयकर ?
अपना ही विश्वास नही जव, और यकीन करे किस किस पर ?

स्वप्न जागते हुए देखते, जग मे किस को माने अपना ?
जीवन मे यदि शान्ति चाहिये, दो क्षण राम राम भी जपना !
लो, वे शान्त समागम वापू– आ पहुचे प्रार्थना-मच पर ।
मानो छोड शेष-शैया को, धरा-गोद मे वैठा ईश्वर ॥

सुनो भाइयो! वहिनो! देखो– वापू भजन 'राम धुन' गाते ।
प्रवचन शुरू हुआ गाँधी का, सव सतयुग के दर्शन पाते ॥
"वीच भगियो के रहने मे– मुझको वडी खुशी होती है ।
कथनी करनी अगर एक हो– तो न कभी दुनिया रोती है ॥

क्या या क्यो करने का विल्कुल– रक्षक को अधिकार नही है ।
रक्षा कर न सके जो सव की, वह पवित्र तलवार नही है ॥
वह कर्त्तव्य विमुख शासन है, जहाँ न अल्प जातियो को सुख ।
उस शासन मे शान्ति न होगी, तिनके तक को भी जिसमे दुख ॥

गया आज 'मकवरे हुमायूँ', और 'जामिया मिलिया' देखा ।
मरे कटे वर्वाद वहाँ पर– दिखा रहे थे मौन परेखा ॥
मौत सभी को आती है पर– समय तरीके का अन्तर है ।
दुनिया क्या है, पूछ रहे हो! दुनिया प्रश्न और उत्तर है ॥

आज एक सिख भाई बोले– पोथी रही 'ग्रन्थ साहब' की।
सच्चा सिख न दिखाई देता, श्रद्धा वही 'ग्रन्थ साहब' की॥
तब विनम्रता से मैं बोला– मैं सच्चा सिख हूँ हे भाई!
मेरा धर्म सनातन हिन्दू, कैसी मेरी और पराई?

सच्चा मुसलमान भी हूँ मैं, मैं मनुष्य हूँ प्रेम-पुजारी।
अरे! क्रोध से मत फूँको तुम– स्वतन्त्रता की सुन्दर क्यारी॥
स्वतन्त्रता के फूल सुनहरी, महँगे दामो तुम्हे मिले हैं।
आग लगाओ मत फूलो मे, बहुत दिनो के बाद खिले हैं॥

गुस्सा मुझको भी आता है, पर मैं उसको पी जाता हूँ।
मैं पीडित का दुख देख कर– उससे अधिक दुख पाता हूँ॥
'पाकिस्तानी' भूल गये पथ, ले जाते बीबियाँ उठा कर।
तो क्या हम भी जाहिल बन कर– जुल्म करे बीबी बच्चो पर?

वे घर फूँके, तुम भी फूँको, यह तो अच्छा काम नही है।
शरणार्थी आ रहे बिचारे, सुबह नही है, शाम नही है॥
स्वप्निल जग मे हर मनुष्य को– जलता गलता देख रहा हूँ।
मैं मनुष्य को गिरगिट जैसा– रग बदलता देख रहा हूँ॥

आत्म-शान्ति के लिये पतन मे– मानव आज भटकता फिरता।
जिसे बडे दुखो से पाला– वह पौधा फूलो से चिरता॥
युग युग बाद सितार बजा जो, अब तुम उसके तार न तोडो!
बहुत सरल है फूल तोडना, बात तभी जब टूटे जोडो!!

यह जो नदी खून की बहती, जिस मे बहे जा रहे हम सब।
क्या स्वतन्त्रता के फूलो को– तुम ही तोड डुबा दोगे अब?
शलभ दीप पर जल मर जाते, पर दीपक को नही बुझाते।
फूलो की शोभा डाली पर, गुलदस्तो मे मुरझा जाते॥

चाहे यौवन मे मतवाली– उन्हे गले का हार बनाये।
अपने ईश्वर की प्रतिमा पर– चाहे कोई उन्हे चढाये॥
पर डाली से हटते ही वे– पैरो से रोंदे जाते है।
देखो वे शरणार्थी आते, दर दर की ठोकर खाते हैं॥

रक्तपात मे क्या रक्खा है? धर्म न कहते, कटो मरो तुम।
तुम मनुष्य हो, भूल सुधारो, सत्य प्रेम से सृजन करो तुम॥
मुझ बूढे की बात मान लो, मैं कहता हूँ बात भले की।
पेड मधुर फल ही देता है, खा खा कर भी चोट डले की॥

क्या हम भी वह करे कि जो कुछ– भूला 'पाकिस्तान' कर रहा?
मैं तो उसे जहाज मानता, लहरो के प्रतिकूल जो बहा॥
क्या हथियार चलाने का ही– काम शेष रह गया आज है।
वह हथियार राज्य को दे दे– मनुष्यता की जिसे लाज है॥

सब हथियार चलायेगे यदि– तो फिर अन्न कौन बोयेगा?
सब कुछ तो खो चुका बावला, शेष रहा क्या जो खोयेगा?
क्या 'पटेल' को दुःख नही है, क्या न 'जवाहर लाल' दुखी है?
कौन शान्त है इन झगडो मे, इस दुनिया मे कौन सुखी है?

आज तुम्हारे नेताओ की– आँखो मे मुसकान नही है।
अपने भले बुरे की तुम को– अब बिल्कुल पहिचान नही है॥
दोनो हाथ उठा कहता हूँ– मेरी नही मानता कोई।
नाग चढा आता छाती पर, मनुष्यता की भाषा खोई॥

जिस 'दिल्ली' के लिये लडे हम, आज उसी 'दिल्ली' मे हलचल।
मार काट मे गले जा रहे– मानव-जीवन के अमूल्य पल॥
'दिल्ली' मे यदि शान्ति रखो तुम– तो 'पंजाब' चला जाऊँ मैं।
अपनी पलको के पल्ले से– आँसू वहाँ पोछ आऊँ मैं॥

विगडी इसानियत वनाने– 'पाकिस्तान' मुझे जाना है।
मेरे लिये मनुष्य एक सव, मैंने ईश्वर पहिचाना है॥"
प्रति दिन ही प्रार्थना-सभा मे– वापू अमृत-प्रपात वहाते।
धरती के सूरज आते थे– जग मे नया प्रभात दिखाते॥

ओ वेरहम मनुष्य! वता क्यो– जन जन के झोपडे उजाड़े?
ओ हैवान! वता क्यो तूने– हरे भरे ये खेत उखाडे?
शरणार्थी के वीते दिन की– छावनियाँ कह रही कहानी।
अर्घ्य चढाता था शलभो पर– वापू की आँखो का पानी॥

एक वाक्य मे 'गीता' कहते, एक वाक्य मे सव 'रामायण'।
दुनिया वहती थी वहाव मे, पर न वहे मेरे नारायण॥
मुसलमान से कहते थे वे– "पहिले मैं, पीछे तुम मरना।
सव धर्मो का मूल एक है– ईश्वर की उपासना करना॥

हिन्दू यदि तुम को काटे तो– तुम हँसते हँसते कट जाना।
जो हिसा करके हँसता है– उसे अहिसा से शरमाना॥"
वापू के विरोध मे हिन्दू– धधक उठे वन कर अगारे।
दाँत पीसते, ज्वाला वनते– वापू पर गुस्से के मारे॥

'हिन्दुस्तान हिन्दुओ का है'– उठा हिन्दुओ का यह नारा।
लाल रग ले वही देश मे– हिन्दू-राष्ट्र धर्म की धारा॥
अत्याचार दिखा मुस्लिम के– खडी हो गई तानाशाही।
किन्तु हिमालय सा हलचल मे– अडिग खड़ा था अद्भुत राही॥

क्रोध भयकर पागल कुत्ता, जिसे देखता उसे काटता।
जव मनुष्य पागल हो जाता, तव अपना भी खून चाटता॥
जव न सहन होती है पीडा, तव मनुष्य वन जाता पागल।
अपना मांस स्वयम् खाता है, रोता हँसता गाता पागल॥

यहाँ प्यार के वदले हमने– पग पग पर अगारे पाये।
धरती कभी नही सूखेगी, इतने आँसू यहाँ वहाये।।
तडप-दामिनी दमक रही थी, मेघ वरसते थे वापू के।
आँखो की वरसात देखकर– प्राण तरसते थे वापू के।।

गाँधी जी को लगे कोसने, गुस्से मे पागल मतवाले।
वूढा मर जाये तो अच्छा, चीख रहे थे दिल के काले।।
रेलो मे खेले लोहू से, चीरा फाडा वाहर डाला।
उसी आग का तो उडता है– धुआँ आग से काला काला।।

वढते वढते वापू तक भी– पहुँच गई वह काली ज्वाला।
वापू के शीतल जीवन को– अगारो ने वहुत उवाला।।
पर गाँधी जी के जीवन मे– आया नही उवाल कभी भी।
दुनियावाले डाल न पाये– जननायक पर जाल कभी भी।।

कुछ उनकी प्रार्थना-सभा मे– हल्ला गुल्ला लगे मचाने।
जिन्हे न होश लँगोटी तक का– वे वापू को चले सिखाने।।
एक वीच मे वोल उठा यह– "क्यो 'कुरान' की आयत पढते?
कैसे भाई? किसके भाई? क्यो न मुसलमानो से लडते?

राजनीति का क्षेत्र छोडकर– जगल मे जाओ गाँधी जी!
मैं तो अव पत्थर फेकूँगा, तुम ईटे खाओ गाँधी जी!
हिन्दुस्तान हिन्दुओ का है, मुसलमान की वात मत करो!
निशा उजाली से कहती है– दिन मे काली रात मत करो!

जग को छोड किसी जगल मे– कुटी वनाओ तो अच्छा है।
वसो 'हिमालय' पर जा वापू! आश्रम जाओ तो अच्छा है।।"
वापू वोले, 'राम' 'खुदा' तो– नाम और उपनाम सदृश हैं।
फुलहारी या मालिन कह दो, नाम भिन्न, पर काम सदृश हैं।।

तपोभूमि तो वही जहाँ पर- राम नाम ले करे भलाई।
ष्ठीवन किन्तु पाकशाला मे, क्या मनुष्य की है सुघडाई ?
कर्म योग से बडा योग तो- अब तक जग मे हुआ न होगा।
जो न मानते बात बडो की- केवल दुख उन्होने भोगा ॥

इस बूढे की बात मान लो- मनुष्यता के आँसू बोले।
इस बूढे की बात मान लो, बालक बोले भोले भोले ॥
लेकिन हत्यारे हाथो को- रोक न पाये आँसू खारे।
मूक अदृश्य प्रार्थना मे थे- गाँधी जी के अश्रु बिचारे ॥

वीणा की झनकार रो रही, मेघ बरसते आँखो से।
स्वर लय अम्बर मे उडते हैं, आग बाँध कर पाँखो से ॥
आँसू से दीपक जलते हैं, जग-सागर मे नाव चली।
ज्वालाओ के रगमहल मे- बार बार बरसी बदली ॥

सावन भादो की रिमझिम से घन मे फूल नही खिलता।
पीडाओ के महासिन्धु का पारावार नही मिलता ॥
तारे चाँद न छू पाते है, रह जाते आँसू पी कर।
पलको के तट पर प्राणी को जीना पडता जीवन भर ॥

बापू ने सब के विरोध को- सर आँखो पर सहन किया था।
'सीता' के आँसू ही ने तो- दुर्द्धर 'लका-दहन' किया था ॥
पर प्रभात को भी यह दुनिया- काली रात बताती ही है।
जननायक पर भी यह दुनिया- कल्पित दोष लगाती ही है ॥

जननायक तो हर प्राणी को- देते थे सुलझन का अवसर।
पत्थर सरिता रोक न पाये, डूबे हैं पानी मे पत्थर ॥
लहरो के लाखो झोको मे- अचल हिमालय खडा रहा वह।
सिन्धु-लहरियो मे तिल भर भी- अडिग हिमालय नही बहा वह ॥

वह 'चित्तौड दुर्ग' था जिसको- जीत न पाये अजय आज तक।
वह चट्टान खडी है जिसके- चरणो मे झुक गये ताज तक॥
उसी सन्तरण ने भारत की- महा प्रलय मे नाव सँभाली।
उसी सन्तरण ने स्वतन्त्रता- तूफानो मे तैर निकाली॥

मुँह फाडे भूचाल भयकर- आये स्वतन्त्रता आने पर।
डूव गये जल-प्लावन मे सव, फूक रहे थे दीपक निज घर॥
'काशमीर' की कलियो पर भी- धधक उठी प्रलयकर ज्वाला।
'काशमीर' की केसर पर भी- धुआँ छा गया काला काला॥

'काशमीर' के चाँदो पर भी- कडक उठी प्रलयकर विजली।
सुन्दर 'काशमीर' डसने को- 'पाकिस्तानी' डायन निकली॥
स्वतन्त्रता के उस गुलाव पर- खूनी 'कवायली' चढ आये।
'काशमीर' मे घुसे लुटेरे, रग विरगे वादल छाये॥

कुसुम-कुज से 'काशमीर' पर- काली पीली लपटे भभकी।
ससृति के उस राजमहल मे- अगारो सी आँखे धधकी॥
चन्दाओ से 'काशमीर' को- लूट मार से चाहा खाना।
'पाकिस्तानी' दुनालियो का- खिला फूल वन गया निशाना॥

जिसके घर मे आग लगादी, उसे चाहते अपना करना।
यहाँ अमृत की वूँद नही है, वहता यहाँ खून का झरना॥
'काशमीर' का राजा जागा, सावधान होकर यह वोला-
मत धधकाओ, मत धधकाओ, केसर पर ज्वाला का गोला॥

पर न वात मानी जालिम ने, 'काशमीर' की जनता जागी।
जनता की सरकार वना कर- शीघ्र मदद भारत से माँगी॥
गये 'शेख अव्दुल्ला' 'दिल्ली', 'काशमीर' की कही कहानी।
उठे 'जवाहर लाल' भोर से, तडप उठा गगा का पानी॥

कूच कर दिया 'काशमीर' को, शख वज गये, सेना चलदी।
वहिनो ने राखियाँ वाँध दी, माताओ ने लाली मलदी॥
चली चीरती चट्टानो को, शैल-शिखाओ पर चढ जाती।
खाई पाट, फोड पर्वत को- 'काशमीर' का मार्ग वनाती॥

कही लेट कर पुल वन जाते, फौजे पार चली जाती थी।
फाँद पहाडो की ऊँचाई, सेनाये जय जय गाती थी॥
महा भयकर वर्फ शिलाये, जिन पर वढते चले सिपाही।
अम्वर आग और पानी मे- वढे जा रहे थे वे राही॥

जीवन और जवानी सी वह- भारत की ललकार जा रही।
आज युगो के वाद हाथ मे- चमक चमक तलवार गा रही॥
फर फर यान उड रहे नभ मे, वापू फूले नही समाते।
वोले, हर्ष मुझे होता है, उडते हुए यान जव जाते॥

वापू की वाणी सुन सुन कर- सेना मे उत्साह उमडता।
मानो तपी तृषित खेती पर- गीता का घन-ज्ञान घुमडता॥
वापू बोले, 'काशमीर' को- पाकिस्तानी हडप न सकते।
राज्य वढा करते सेवा से, कभी पाप से पनप न सकते॥

सव प्रकार से उचित किया है, भारतीय सेना ने जा कर।
भारी काम किया भारत ने, 'काशमीर' मे कदम वढा कर॥
'काशमीर' की रक्षा मे यदि- सारी जनता भी मर जाये।
चाहे 'काशमीर' मे सारे- नेताओ की वलि चढ जाये॥

मेरी आँखो से आँसू की- एक बूँद भी नही ढलेगी।
वलिवेदी पर रक्त चढेगा- स्वतन्त्रता की वेल फलेगी॥
जो हँस कर शहीद होते हैं, उनकी मौत जिन्दगी वनती।
जीवन वाले ही मरते हैं, जननी शेर एक ही जनती॥

पर्व वीरता का आया है, वीरो! चलो नहाने गगा।
लाये स्वर्ग भूमि पर लाये, फर फर उडता हुआ तिरगा ॥
तन के दीपक, मन की वत्ती, प्राण भरो, जग हो ज्योतिर्मय।
निर्भय वढो, चढो चोटी पर, पग वढने से वढती है वय ॥

मुक्ति मिल गई है, मुक्त विश्व को करो!
एक दिन मरोगे, फिर न मौत से डरो!
सिन्धु की तरह से सिंह! गर्जते चलो!
युद्ध छिड गया है, आज आग से जलो!

दीप जल रहे हैं, मुक्ति-द्वार खुल गये।
फूल खिल गये, दिलो के दाग धुल गये ॥
शख वज रहा है, 'काशमीर' को चलो!
प्यास कह रही है, वीर! नीर को चलो!

विजलियो से टूट युद्ध-क्षेत्र मे गिरो!
घेरते रहेगे शूल, फूल से घिरो!
भौकते रहेगे श्वान, पर न तुम रुको!
हार कर झुके गगन भी, पर न तुम झुको!

क्रान्ति मच रही है, शान्ति विश्व मे खिले।
देश से अलग हुआ जो वह गले मिले ॥
भीत तोड दो जो आज वीच मे खडी।
जिन्दगी निकाल लो जो कीच मे पडी ॥

'वारामूला', 'उरी', 'पुञ्छ' की– शैल-श्रेणियो पर वम वरसे।
भारत माँ के वीर सिपाही– निकले कफन वाँध कर सर से ॥
रक्त रोहिणी का हुकारा, धधक उठी पानी से ज्वाला।
अन्धकार का वक्ष चीरता, गाँधी जी का वढा उजाला ॥

त्रिश सर्ग

जो गुलाव का फूल उसे भी– यह जग ज्वाला वतलाता है।
फूल सदा देता सुगन्ध ही, काँटो मे भी मुसकाता है॥
अन्धा वह जो दुखी न देखे, कोढी वह जो दिल का काला।
आज दिवाली, किन्तु कहाँ है– इस दुनिया मे दीप्त उजाला?

दीप खुशी मे ही जलते हैं, इन दीपो मे खून भरा है।
गली गली मे मातम होते, हृदय हृदय मे घाव हरा है॥
हरी फसल मे खेती सूखी, सावन मे वरसात नही है।
जो मर गये उन्हे लौटा कर– लाना वस की वात नही है॥

पर जो ज़िन्दा हैं उनमे तो– मनुष्यता से शान्त रहे हम।
मेलजोल से प्रेम बढाये, कुत्सित पथ पर नही वहे हम॥
वापू ने देखा 'दिल्ली' मे– हलचल शान्त नही होती है।
वापू ने देखा धरती माँ– अत्याचारो से रोती है॥

वापू ने देखा हिन्दू भी– मुसलमान को लगे काटने।
अपने प्राणो से जननायक– गहरी खाई लगे पाटने॥
अनशन शुरू किया वापू ने, नारायण से ध्यान लगाया।
दिव्य देवता ने धरती पर– निज प्राणो का दीप जलाया॥

वोले– "जव तक शान्ति न होगी, साफ न होगे लोगो के दिल–
इसी तरह जलता जायेगा– जग मे मेरा जीवन तिल तिल॥
मैं उपवास तभी छोडूँगा– जव आत्मा विश्वास करेगा।
आत्मा की आवाज मुझे है, जग मे वही प्रकाश करेगा॥

आत्मा की पुकार से व्रत है, कोई भी नाराज न होना।
आँखे नही देख पाती हैं, मिट्टी मे होता है सोना॥
जव भी मुझको अनुभव होगा– मैं उलटे पथ पर जाता हूँ–
तभी कदम वापिस ले लूँगा, मैं न सत्य मे शरमाता हूँ॥

दिन मे नही दीखता जिसको, उसको मैं कैसे समझाऊँ ?
वर्बादी जो देख रहा मैं, इससे अच्छा है मर जाऊँ ॥"
चमत्कार था उन चरणो मे, दुनिया देखी उस प्रभात से ।
अनशन शुरू किया वापू ने, काँपे तीनो लोक पात से ॥

जहर उगलते थे हम जितना, वापू वह सव पी जाते थे ।
वापू सुवह सुवह टलते थे, नयन हमारे शरमाते थे ।
दिन प्रति दिन वापू अनशन से- खिले फूल से मुरझाते थे ।
पाप शान्त हो! पाप शान्त हो! पीडा के आँसू गाते थे ॥

कल्पना के पख काँपे, सूखती गगा हृदय की ।
भावनाओ के किनारे वाढ आती है प्रलय की ॥
आज जग की जिन्दगी के तार टूटे जा रहे हैं ।
आज किस के आँसुओ से भाव लाखो आ रहे हैं ॥

अनशन छोडो हे जननायक! पेड पेड पर कोयल वोली ।
अनशन छोडो! अनशन छोडो! वोली ग्राम ग्राम की रोली ॥
देश विदेशो मे वापू के- अनशन से थी गहरी हलचल ।
वादल छाये थे चन्दा पर, थर थर काँप रहा था उज्ज्वल ॥

कौन दीप वन कर जलता है, कौन मिला है परवानो मे ।
उसी महामानव के व्रत से- हलचल हुई मुसलमानो मे ॥
अमर तपस्या के आँगन मे- 'मौलाना आजाद' पधारे ।
नाविक को मँझधार देखकर- आ वैठे 'आजाद' किनारे ॥

मुरझाया वह फूल देख कर, हलचल देख हृदय मे भारी ।
धरती माता की आँखो से- टपक पडे दो आँसू खारी ॥
'मौलाना' वोले वापू से, "यह है पाप हमारो का फल ।
तुम से ही तो हम पवित्र हैं, हे आवेहयात गगाजल!"

"बापू! अपना अनशन छोड़ो, हम से पीडा सहन न होती।"
"कैसे ग्रास गले मे उतरे? इन्सानियत आज की रोती॥
मैं तो अन्न तभी खाऊँगा, जब सब मुझे यकीन दिलाये।
शर्तें सात मान कर मेरी, मिल कर सभी गले लग जाये॥

मुसलमान सब रहे सुरक्षित, धर्मो पर कुछ आँच न आये।
मुक्त देश मे मुक्त कण्ठ से- हर मन्दिर मे स्वर लहराये॥
छीन मुसलमानो की मस्जिद- जिनमे अब हिन्दू रहते हैं-
जो मस्जिदे बनाई मन्दिर- जिनमे रोज खून बहते हैं-

वे मस्जिदे मुसलमानो को- मनुष्यता से वापिस कर दो।
स्वतन्त्रता पर आँच न लाओ अपने शीश काट कर धर दो॥
जग मेला है, रहो मेल से, जो घर तेरा वह घर मेरा।
सब धन सब का, कौन पराया, आँखे खोलो, हुआ सवेरा॥

जो 'दिल्ली' से चले गये है- मुसलमान वे वापिस आये।
मुक्त हृदय से मुसलमान को- भेद भूल कर गले लगाये॥
नेता यदि तन मन धन से मिल- खिलने का विश्वास दिलाये-
तो उपवास छोड़ दूँगा मैं, सब सच्चे मनुष्य बन जाये॥"

ये नैतिक शर्तें बापू से- 'मौलाना' लिखवा कर लाये।
ये सातो शर्तें सुनते ही- आँख निकाले हिन्दू आये॥
बोले, "आग धधकती उर मे, हम बदला लेकर मानेगे।
चाहे गाँधी जी मर जाये, हम तो खूब खून छानेगे॥"

शर्तें मानी, हृदय न बदले, ज्वाला दहक दहक उठती थी।
दीपक की लौ काँप रही थी, आँधी बहक बहक उठती थी॥
खून चढ रहा था बदले का, जाडा ग्रीष्म बना जाता था।
आग लगाते थे अगारे, गुस्सा पानी पर आता था॥

आज छठा दिन था अनशन का, त्याग तपस्या चमक रही थी।
गाँधी जी की अमर साधना- 'ध्रुव तारे' सी दमक रही थी॥
'मौलाना' ने नीबू का रस- उन्हे दिया ग्लूकोस मिला कर।
गाँधी जी ने अनशन छोडा, जय नारायण! जय जय ईश्वर!

गोविन्द! गोविन्द! गोपाल! गोपाल!
हे राम! हे राम! हे राम! हे राम!
हरि ओ३म्! हरि ओ३म्! हरि ओ३म्! हरि ओ३म्!
हे श्याम! हे श्याम! हे श्याम! हे श्याम!

सत् शान्ति! सत् शान्ति! सत् शान्ति! सत् शान्ति!
भज नाम! भज नाम! भज नाम! भज नाम!
हे राम! हे राम! हे राम! हे राम!
हे राम! हे राम! हे राम! हे राम!

जननायक राष्ट्रपिता प्रभु ने-
व्रत से, सत से धरती रख ली।
कवि ने उसके रस मे रत हो-
रसना लय से करुणा चख ली॥

कर लो शत वार प्रणाम उसे-
जिसने सब पाप पछाड दिये।
परखो अभिवादन से उसको,
जिसने सब खोल किवाड दिये॥

यहाँ अमृत देने वाले को, जहर पिलाया ही जाता है।
जो प्रकाश देता है उसको- यहाँ जलाया ही जाता है॥
यहाँ दृगो से आँसू गिर कर- पत्थर पर फूटा करते हैं।
मुसकाते ही फूल यहाँ पर- डाली से टूटा करते हैं॥

कितना कठिन जिन्दगी का पथ, लेकिन चलना ही पडता है।
जीवित जलना ही पड़ता है॥

यहाँ आँसुओ की मजिल पर- खाक छाननी ही पडती है।
हँसते रोते हुए आग से- जीवन की भापा लडती है॥
यहाँ स्वार्थ है कदम कदम पर, यहाँ आग है कदम कदम पर।
तूफानो से लड़ना पडता, सागर की लहरो मे घुस कर॥
जो सागर पी गया घूँट भर, वह छेडे से रो पडता है।
ठोकर खा खा कर उठता है, ठोकर खा खा कर लडता है॥

बिजली सी तडपन होती है, लेकिन हँसना ही पडता है।
कितना कठिन जिन्दगी का पथ, लेकिन चलना ही पडता है॥
आगे बढना ही पडता है।

बिच्छू ने काटना न छोडा, जननायक ने जहर न छोडा।
गाँधी जी की नयी क्रान्ति थी, शान्त पथिक ने सार निचोडा॥
किन्तु हवा के लाखो झोके- दीप बुझाने को आते थे।
दुनिया के उस एक फूल पर- लाखो पत्थर बरसाते थे॥

आज प्रार्थना मे जब बापू- अमृत धरा पर बरसाते थे-
अन्धकार से जब प्रकाश मे- वे दुनिया को ले जाते थे-
तब उनकी प्रार्थना-सभा मे- फेका एक बावले ने बम।
आँच न आई जननायक पर, लेकिन लज्जित से थे सब हम॥

और उस समय जननायक तो- खिले फूल से मुसकाते थे।
उस दिन हम युग के 'प्रह्लाद' को- ज्वाला मे बैठा पाते थे॥
बोले, "यदि तुम शान्त रहे तो- मैं तन धारण किये रहूँगा।
वर्ष सवा सौ तक जीऊँगा, मनुष्यता के लिये रहूँगा॥

मेरे श्वास तुम्हे मिल जाये, सेवा मेरा परम धर्म है।
इच्छा जो सब की इच्छा है, जीवन क्या है ? शुद्र कर्म है ॥
पर जीने की इच्छा तब है– जबकि मनुष्य मनुष्य रहेगा।
'राम' न यहाँ मुझे छोडेगा– इसी तरह यदि खून वहेगा ॥

मेरी यह प्रार्थना सभी से– इस दुनिया को स्वर्ग बनाओ !
बहुत खो चुके, शेप रही जो– उससे अपनी बेल बढाओ ! !
बुरी बात करने सुनने से– सुख की कलिका जल जाती है।
जो दीपक बन कर जलते हैं– उनको आँच नही आती है ॥

सब को सुख दो, सब को फल दो, जैसे हरे वृक्ष की छाया।
तन को श्रम से सुमन बना दो, साथ नही जाती है काया ॥
विपय भोग मे रत रहता जो– उसकी तृप्ति प्यास बन जाती।
जिसको सब्र नही होता है, उसकी इच्छा उसे जलाती ॥

शक्ति उसी के चरण चूमती, जिसे नही आसक्ति घेरती।
ब्रह्मानन्द प्राप्त उसको है, जिसको भगवत्-भक्ति घेरती ॥
कर्मशून्य को सुख न जगत मे, ज्ञान न कर्म विना होता है।
जीवन अन्न, अन्न वर्षा से, दानी ही दाने वोता है ॥

क्रोध वडा वैरी मनुष्य का, ढक देता पापो से दर्पण।
काम क्रोध मद लोभ मोह की– लहरो पर है जल का तर्पण ॥
जिस के मन मे सशय है वह– प्राप्त न कर पाता परमात्मा।
जैसे पागल कुत्ता ऐसे– भटका करता शकित आतमा ॥

आत्म-शुद्धि मे सारे सुख हैं, आग न वरसाओ नारी पर।
जो लडकियाँ सतायी जाती, उठ मानव ! उनकी रक्षा कर ॥
जितनी मुसलमान कन्याये– यहाँ हिन्दुओ के घर रहती।
जो हिन्दू लडकियाँ वहाँ पर– आँखो के पानी मे वहती ॥

उनके आँसू धधक रहे हैं, बचो बचो लपटे रोती हैं।
छोडो वहिन वेटियाँ छोडो, पर नारी नागिन होती हैं॥
रोको अंगारो को रोको, दावानल वढता जाता है।
स्वतन्त्रता के फूल जल रहे, मरघट महलो मे गाता है॥

रोको ये तूफान भयकर, डूब न जाये नाव प्रलय मे।
स्वतन्त्रता के लिये आग वन- उठे न कोई भाव हृदय मे॥
यह जो हवा वह रही है वह- सदा नही है रहने वाली।
जो पागल हैं वकने दो तुम, लगी नही रहती है गाली॥

आज चोर बाजार चल रहा, आज घूसखोरी की स्याही।
पता नही कव हस उडे यह, सँभल सँभल कर चल ओ राही!
जन जन में विश्वास नही है, जनता मे पीडा के आँसू।
भारत की आँखो से गिरते- हाय हाय! व्रीडा के आँसू॥

स्वावलम्ब पर आश्रित है जो, वह न रहेगा भूखा नगा।
उद्योगो की अमर शिखा पर- ऊँचा उडता रहे तिरगा॥
भूखा वही, वही नगा है, जिसे नही स्वालम्ब सुहाता।
जो अपने दम पर चलता है, वह हँसता है और हँसाता॥

तुमको किसकी आवश्यकता, स्वावलम्ब का पल्ला पकडो!
तन कूटे से क्या होता है? अपना हृदय शान पर रगडो!!
जो बच्चो को कत्ल कर रहे- वे इस्लाम विगाड़ रहे हैं।
कन्याओ को उठा उठा कर- अपनी जड़े उखाड रहे हैं॥

'काशमीर' मे 'मीरापुर' है, जिस पर चढे आक्रमणकारी।
'मीरापुर' से वहू वेटियाँ- उठा ले गये अत्याचारी॥
उनकी अस्मत लूट, उन्हो पर- अत्याचार शौक से करते।
भूले सभी 'कुरान' 'खुदा' को, फूलो पर अगारे धरते॥

यदि खाने को लूटपाट हो– तो भी बात समझ मे आती।
किन्तु लडकियो पर जल्लादी– स्वतन्त्रता की कली जलाती॥
यह न 'कुरानशरीफ' सिखाता– बर्बादी पर दाँत निकाले।
कोई धर्म न यह कहता है– माँ बहिनो का खून उछाले॥

मेरी मिन्नत है उन सब से– जो बहिने ले गये उठा कर।
प्रायश्चित कर वापिस करदे, उन सब बहिनो को उनके घर॥
लुट लुट कर रोते आये हैं– भारत मे 'मीरापुर-वासी'।
कितना खून तुझे पीना है, डायन! तू है कितनी प्यासी?

यह शैतानी नाच, इसे तुम– धर्म धर्म चिंघाड रहे हो।
अपना धर्म बिगाड रहे हो, अपनी बात बिगाड रहे हो॥
यह अधर्म है, धर्म नही यह, रोते देखो पीडित घायल।
मास घायलो का खाते हैं– आज 'बहावलपुर' मे पागल॥

वहाँ घायलो की सेवा को– आज 'सुशीला' बहिन जा रही।
साथ 'लेसली क्रास' रहेगे, पीडा उनसे प्यार पा रही॥
ईश्वर का है हाथ उन्हो पर, मेरा आशीर्वाद साथ है।
हिन्दू हो या मुसलमान हो, सब दुखियो का एक नाथ है॥

भेद नही भगवान भेजते, भेद किये हैं इन्सानो ने।
नारायण के नियम एक से, काँटे बाँटे हैवानो ने॥
दुखियो की सेवाओ मे सब– अब तन मन धन से लग जाओ!
दुःख न दो दुनिया को भाई! सब दुखियो का दुःख बँटाओ!

घाव तुम्हे आवाज दे रहे, आँसू तुम्हे पुकार रहे हैं।
इन्हे दया की भीख चाहिये, आगे हाथ पसार रहे हैं॥
दुखियो की सेवाये करना– जग मे सब से बडा धर्म है।
मर्यादा मे मानव रहना– जग मे सबसे बडा कर्म है॥

भारत माता की गोदी में– दूर दूर से दुखी आ रहे।
लँगडे लूले अन्धे भाई– धरती माँ के घाव ला रहे॥
कोई पीडा से पागल हो– मुझे मानता शत्रु भयकर।
मुझ से कहता, अरे महात्मा! छोड चला जा तू हिमगिरि पर॥

गुस्से मे लिखते हैं मुझ को, यहाँ हिन्दुओ को मरवाते।
भाग जगलो मे जाओ तुम, हमे तुम्हारे भाषण खाते॥
मैं उस भाई से कहता हूँ– तुम कहते हो तो क्या जाऊँ?
क्या मैं भी पापी पागल बन– पीड़ित जनता को मरवाऊँ?

कोई कहता, यही रहो तुम, कोई मुझे सुनाता गाली।
पर मैं तो सारी जनता को– बाँट रहा हूँ अमर उजाली॥
ईश्वर का जो हुक्म मुझे है– वही कर रहा हूँ मैं भाई!"
जननायक के शब्द शब्द पर– आकर्षित थी अमर भलाई॥

"दुखियो का वेली परमेश्वर, सब का दुख दुख है मेरा।
मुझ मे सब, सब मे मैं रहता, मुझे न आता मेरा तेरा॥
चाहे जितना कोसो भाई! जब आयेगी, तभी मरूँगा।
जैसी नारायण की इच्छा, मैं तो जग मे वही करूँगा॥

'राम'-बुलावे से जाऊँगा, चाहे जितना कहो कि मर जा!
कोई कहता, बूढे बाबा! दुनिया छोड हिमालय पर जा!
रहना वहाँ पसन्द मुझे है, पर मैं हिमगिरि कैसे जाऊँ?
तुम्हे छोड कर इस अशान्ति मे– कैसे स्वयम् शान्ति मैं पाऊँ?

मैं अशान्ति मे शान्ति चाहता, या अशान्ति में ही मर जाऊँ।
दुनिया 'त्राहि त्राहि' करती है, कैसे हिमगिरि पर सुख पाऊँ?
अगर आप सब चले हिमालय, तो मुझको भी साथ ले चले।
सभी दुख सुख मे साथी हैं, सब जीवन की ज्योति बन जले॥

दुख मिटाना अगर चाहते, अगर चाहते सुख निकालना।
करो दुख मे भी सेवाये, भारत माँ के फूल पालना।
कर्म दुखी भी करे प्रेम से, कर्म किये से दुख टलेगे।
दुख जलेगे शुभ कर्मो से, मौज शौक से नही जलेगे॥

'गीता' का उपदेश यही है, 'वेदो' का सन्देश अमर यह।
शेप यज्ञ-फल मिले तुम्हे जो- कर्मवीर का भोग मात्र वह॥
करे नही कुछ, वैठा खाये, मनुष्यता का यह न धर्म है।
चाहे निर्धन या करोडपति, सेवा श्रम ही परम कर्म है॥

जो न कर्म करता दुनिया मे, इस धरती पर भार वही है।
यदि अन्धा लॅगडा लूला हो, उसकी तो यह वात सही है॥
पर जो तगडे आँखो वाले, हाथ पैर चौकस चलते है।
वे यदि काम नही करते कुछ, तो अपने ही को छलते है॥

शिविरो मे शरणार्थी है जो, करे वीर वे काम निरन्तर।
कमर वाँध कर लगे कर्म मे, कृत्रिम मौज शौक सव तज कर॥
बने न वोझ किसी पर कोई, काम करे कुछ चर्खा काते।
जो मिट्टी से भीख माँगते, वे याचक दानी वन जाते॥

यदि सव कर्मवीर वन जाये, तो यह शक्ल वदल जायेगी।
सडा पडा जो आज उसी की- सूरत नई निकल आयेगी॥
कर्मवीर सच्चा किसान है, राजा है वह जीवन दाता।
जिसने वहा देह से मोती, अन्न निकाला, वही विधाता॥

खानेवाले आज वहुत है, गिने चुने है करने वाले।
भारत के भगवान कृपक है, मोती दो पैरो के छाले॥
पर खाना तो तभी मिलेगा, जव हल जोतोगे खेतो पर।
विना किये बरसाने वाला, नही दिखाई देता ईश्वर॥

सादा जीवन ही गौरव है, कर्म किये से सुख मिलता है।
माली बोता और सीचता, फूल तभी फलता खिलता है॥
मुक्ति कर्म मे, पूर्ति कर्म मे, कीर्ति इसी मे, सत्य यही है।"
जिस बापू की वाणी है यह, सब धर्मो की पूर्ति वही है॥

करो भला दया धर्म।
शिव सदा सुखी रहा॥
प्रभात दे गया मुक्ति।
विकास स्वस्ति सत्य से॥

सूर्य तप तप कर उजाला दे रहा है।
आग सीने पर बटोही ले रहा है॥
मत उजाडो बाग, पौधे कह रहे हैं।
छाँह देते, धूप सर पर सह रहे हैं॥

एक स्वर ने दीप बुझने से बचाया।
भूमि काँपी परन राही डगमगाया॥
फूल को तलवार ने काफी उछाला।
कट न पाया फूल का सुन्दर उजाला॥

फूल के सुरभित पवन मे बह रहा वह।
शान्त रहने दो धरा को, कह रहा वह॥
तप उसी का है अँधेरे मे उजाला।
स्वयम् को हर आग पर उसने उबाला॥

वह न होता तो धरा वीरान होती।
खून मे डूबी हुई हर आँख रोती॥
हर सबेरा रात को आवाज देता।
दीप बुझ कर मरघटो मे श्वास लेता॥

वह तपस्या से धरा पर शान्ति लाया ।
वह अकेला ही प्रलय पर मुसकराया ।।
उस दया के दीप पर तूफान छाये ।
तपोवन यम से धरा के प्राण लाये ।।

एकत्रिंश सर्ग

प्राण-दान

खेतो मे हरि हैं किसान, हर हैं भादो भरे मेघ मे।
मेघो की मृगछाल, भाल पर शोभा चाँद की हासिनी ॥
गोदी मे गिरिजा, सरोज सर नाभी मे, प्रभा भस्म है।
नागो की लहरे, बही गगन-गगा रुद्र के ब्रह्म से ॥

मानो श्यामल मेघ ही हृदय मे बैठे शिव राम हैं।
शम्पा है तप का प्रभात, दृग तारे, शान्त है वायु भी ॥
आँखो मे शिवजी बसे, धनुष धारे राम जाते कहाँ ?
बोले राम, मनुष्य की विजय बापू ने बुलाया मुझे ॥

मेघो मे उडते कपोत जल धारा से, अहिसा तरी।
गाता सागर गीत, शान्त घन हैं, पृथ्वी हरी है हँसी ॥
गाँधी जी तट हैं, प्रजा जलधि, मर्यादा मही है जहाँ।
घेरे है जनता, उठा जलज, जागो हे! निशा जा रही ॥

उसी महान के लिये वसन्त फूल ला रहे।
उसी प्रभात के मयूर मेघ-गीत गा रहे ॥
चलो बढो उठो खिलो! शिखा सिखा रही तुम्हे।
दया यहाँ दिया लिये, दिया दिखा रही तुम्हे ॥

उषा प्रकाश पुञ्ज पूज आरती उतारती।
समीर की कला उसी उदार को पुकारती ॥
दुखी न एक भी रहे कि कौन गा रहा सखी!
पिता यही प्रकाश है, प्रभात ला रहा सखी!

कौन पुजारिन पूज रही पग,
फूल लिये कलियाँ उतरी हैं।
रूप अनूप लिये उतरा विधु,
अम्बर की परियाँ उतरी हैं॥
कोमल कोपल कुन्दन सा तन,
नीर भरी बदली सहलाती।
प्राण समीर उडा धरती पर,
जाग मुसाफिर! नींद जगाती॥

फूल खिला करते लतिका पर,
फूल यहाँ झडते रहते हैं।
पकज सूरज से खिलते अलि!
नीरद से झरने बहते हैं॥
पल्लव कोमल प्यार लुटा कर–
सूख गये, ऋतुराज न बोला।
दीपक लाख जले जग मे पर–
मानवता पर हास न डोला॥

निर्मम रात यहाँ दिन को डस–
दीप जला करती अठखेली।
घूम रही दृग-बिन्दु चुरा कर–
सूरज को छल कौन अकेली?
दीपक का हर श्वास जला कर–
पागल हो बुझता परवाना।
दु ख यहाँ सुख ढूंढ रहा अलि!
दु ख गया पर दर्द न जाना॥

जन्म यहाँ पर, मृत्यु यहाँ पर,
नाच यहाँ यदि तो गम भी है।
मान यहाँ, अपमान यहाँ पर,
दीपक है यदि तो तम भी है॥
स्वर्ग यहाँ पर, स्वाँग यहाँ पर,
अश्रु यहाँ पडते बरसाने।
मन्दिर की हर ज्योति-शिखा पर–
प्यार चढा जलते परवाने॥

ससृति के गतिशील मच पर– समय भयकर भी आता है।
परिवर्त्तन की समय-शिला पर– अन्धकार आता जाता है॥
समय न पल भर को भी रुकता, प्राणी समय व्यर्थ खोता है।
चार दिनो के स्वप्निल जग मे– हर प्राणी हँसता रोता है॥

तारे छिटके, चन्दा चमका, दमक उठी दामिनी रात मे।
प्रकृति आज रो रही खडी क्यो, क्यो तारे निकले प्रभात मे ?
उषा अनेको भारत माँ पर– किरणे बरसाने आती थी।
सुख के नीडो मे सन्ध्याये– पूजा के गाने गाती थी॥

अम्बर की आँखो मे आँसू, डाल डाल पर फूल रो उठे।
आज न जाने क्या होने को– काले पीले भूत सो उठे॥
चन्दा ही मे शान्ति शेष थी, सूरज मे था शेप उजाला।
फण फैला फुकार रहा था– समय सर्प सा काला काला॥

'मनु गाँधी' 'आभा गाँधी' के– कन्धो पर धर हाथ सहायक।
सन्ध्या मे सुहाग लाली से– चले प्रार्थना मे जननायक॥
मानो हरे भरे खेतो मे– धीरे धीरे भोर जा रहे।
मानो नयी सुबह के सूरज– हर पकज की ओर आ रहे॥

चरण चल रहे डगमग डगमग, फूल जा रहा है मुसकाता।
अस्ताचल की ओर जा रहा– सूरज वापू से शरमाता॥
उत्सुकता से वैठी जनता– दर्शन करके हरी हो गई।
ऐसी शान्ति मिली जनता को, सुख से सारी सृष्टि सो गई॥

अमृत छिडकते निकले वापू, पूजा जैसे चरण वढाये।
कहा पुजारी से देवो ने, सफल हुए हम जो तुम आये॥
तभी एक हिन्दू ने झुक कर– चुपके से पिस्तौल निकाला।
देख उसे मुसकाये वापू, द्युति दमकी, खो गया उजाला॥

सहसा यम जल्लाद वन गया, वापू पर पिस्तौल चलादी।
तीन गोलियो से आँधी ने– दुनिया भर की ज्योति वुझादी॥
अन्धकार छा गया निमिप मे, धरा धँसी, आकाश खो गया।
हवा रुक गई चलते चलते, ईश्वर! यह क्या आज हो गया?

आज विश्व के किन पापो ने– दुनिया भर का दीप वुझाया?
शोणित के प्यासे खड्गो पर– या उसने वलिदान चढाया॥
सीने मे गोलियाँ लगी थी, मानो भौंरे खिले कमल मे।
सव आशाये राख हो गईं, सारी जनता की उस पल मे॥

मुँह से 'राम राम! हे प्रभु!' कह, गाँधी जी गिर पडे धरा पर।
गोदी मे ले लिया पुत्र को, धरती माँ ने आँखे भर भर॥
रँगे हाथ हत्यारा पकडा, वापू थे शोणित मे लथपथ।
जननायक को लेने आया– देवलोक से फूलो का रथ॥

कौन 'गौडसे' वन्दी है यह, हिन्दू-कुल को डसने वाला!
अमर कभी मर भी पाते हैं, व्यर्थ किया अपना मुँह काला।
लोहू मे लथपथ वापू को– उनकी कुटिया मे ले आये।
जननायक के अन्तिम दर्शन– वस वे ही हम सव कर पाये॥

पुण्य दिवस की उस सन्ध्या मे- पार्थिव तन को छोड चले वे।
धरती से ऊपर अम्बर मे- धरती हित दिनमान जले वे॥
अन्धकार मे खडा 'जवाहर', वालक जैसा आज रो रहा।
लौह पुरुप कट्टर 'पटेल' भी- आँसू से ससार धो रहा॥

हा! 'राजेन्द्र प्रसाद' शान्त भी- खोये खोये से रोते हैं।
वापू का वलिदान-दिवस है, सव के सव अनाथ होते हैं॥
वन उपवन वोले रो रो कर- खोया आज हमारा माली।
मानवता का दीप बुझ गया, धरा लुटी, रो पडी दिवाली॥

आज डसा भगवान भक्त ने, आज धरा डकराई।
आज क्षितिज के पार स्वर्ग मे, पूजा की तिथि आई॥

स्वर्गलोक को गया धरा से, जग मन्दिर का ईश्वर।
मानवता को ढूँढ रहा है, घोर रुदन धरती पर॥
पुछा स्वर्ण सिन्दूर सृष्टि का, रँगा रक्त से आँचल।
रोते रोते आज धरा के, प्राण वन गये पागल॥

पर न लौट कर इस दुनिया मे, वह मृदु सूरत आई।
आज डसा भगवान भक्त ने, आज धरा डकराई॥

कहाँ आज वे डगमग पग हैं, जिनको चलकर छूले।
जिनको छूने से मिट जाये, जीवन की सब भूले॥
कहाँ आज वे मेघ मनोहर, जिनमे अमृत फुहारे।
आज वरसती नही धरा पर, वे मीठी वौछारे॥

चातक की रट लगी हुई है, पिया न प्यास वुझाई।
आज डसा भगवान भक्त ने, आज धरा डकराई॥

आँखो मे आँसू रोते है, प्राणो मे ज्वाला है।
लहराता है अमृत-सिन्धु पर– खाली ही प्याला है॥
विष के दाता बहुत शेष हैं, गया अमृत का दानी।
आँखे हैं पर कौन देखता, है आँखो मे पानी॥

तैराली आँखो के जल मे, बिजली जो लहराई।
आज डसा भगवान भक्त ने, आज धरा डकराई॥

कोई सूरज से खिलता है, भाता नही प्रकाश किसी को।
गाँधी जी गोली से मारे, यह न हुआ विश्वास किसी को॥
पल भर मे यह खबर हवा से– सब लोको मे गई मरण सी।
कविता फूट पडी अन्तर से– आदि काव्य के प्रथम चरण सी॥

जो सुनता था वह कहता था– झूठ खबर है, झूठ बात है।
प्रतिध्वनि मे पीडा कहती थी– धरती पर आँसू प्रपात है॥
डाल डाल पत्ते पत्ते पर– आज दिखाई देता मातम।
शरद चाँदनी मे अँधियारी, कभी नही देखा ऐसा तम॥

आज पक्षियो की आँखो से– आँसू गिरते है धरती पर।
सडको पर मुर्दनी छा रही, सृष्टि बह रही है रो रो कर॥
बापू चले गये दुनिया से, बोल उठा पल भर मे कण कण।
स्वतन्त्रता-सम्राज्ञी बोली– कभी नही सूखेगा यह व्रण॥

जो मिलता था वह कहता था– गाँधी जी गोली से मारे।
बच्चे माँओ से कहते थे– गाँधी बाबा स्वर्ग सिधारे॥
रोते हुए रेडियो बोले– हमने खोया पिता हमारा।
प्रभु की गोदी मे जा बैठा– ज्योतिपुज ईश्वर का प्यारा॥

ईश्वर की इच्छा! गाँधी जी · कानो मे पडता था यह स्वर।
प्रतिध्वनि मे आँसू कहते थे– आज गई सारी दुनिया मर॥
धरती का सिन्दूर पुछ गया, पीडा युग युग तक रोयेगी।
पटक पटक सर मर जायेगा, अगर साँप की मणि खोयेगी॥

आँसू बोले, हृदय-निधि का कौन बाकी सहारा ?
नौका टूटी, भँवर जल मे दूर कोसो किनारा॥
साया होगा दुखित जग का, कौन बापू! बताओ!
आँखो! रोओ, तड़प बरसो, दाग काला मिटाओ!!

रोओ रोओ, नयन जल से घाव धो दो धरा के।
बोया जो था जहर हमने, रग लाया हरा के॥
पापो के ये अधम फल हैं, स्वाद फीका मिलेगा।
माली खोया नलिन-नर ने, फूल कैसे खिलेगा ?

छीनी लूटी नयन निधि क्यो, काल काले बता तू ?
हत्यारे! क्यो जहर उगला, व्याल वाले बता तू ?
खोया तूने अमर पद को, सूर्य खोया सबेरे।
क्या पाया है शरद ऋतु मे, चाँद खो के अँधेरे !

जलज ने जल मे तम से कहा–
तिमिर! तू दिन को हर ले गया।
हृदय का वह दीप बुझा दिया,
हँस रहा तम ! तू दिन को चुरा॥

जगत मे किसको सुख है मिला ?
मरण मे मन की गति रो रही।
नयन मे जल भी जल मे जला,
प्रलय ले मन मे घन छा रहे॥

सुनते ही वापू का मरना, वहुतो ने तो प्राण दे दिये।
धडकन वन्द हुई वहुतो की, वहुतो ने सन्यास ले लिये॥
जिसने खवर सुनी मरने की, वही सुन्न सा खडा रह गया।
जिसने मरण सुना वापू का, शोक-सिन्धु मे वही वह गया॥

चुग्गा छोड दिया चिडियो ने, गउम्रो ने छोडे तृण खाने।
जलचर थलचर नभचर रो रो- दुख दृगो से लगे वहाने॥
पल भर मे सव पत्ते टूटे, ऋतु वसन्त मे पतझड आया।
सूरज ने मुँह ढका शर्म से, जो देखा वह रोता पाया॥

जीवन भार स्वरूप हो गया, मानो छाया घोर वुढापा।
धरती माता छाती धुन धुन- पीट रही थी अपना आपा॥
जो मिलता था वह कहता था- हाय लुट गये! हाय लुट गये!
माताम्रो के रुके न आँसू, गोदी मे से लाल छुट गये॥

वच्चे रोये, वूढे रोये, दुनिया का हर प्राणी रोया।
ऐसा लगता था दुनिया मे, हर मनुष्य मरघट मे सोया॥
जनता का विलाप मत पूछो, मानो हुई वाल-विधवा वह।
मानो जल सूखा सरिता का, मछली तडप रही थी रह रह॥

रो रही जनता विचारी, वन गई वरसात आँखे।
चल नही पाती हवा भी, कट गई है आज पाँखे॥
वोल दो वापू! तनिक तुम, आज ये आँसू न रुकते।
वुझ न पाती चिता मन की, जी रहे पर प्राण फुकते॥

तुम हृदय थे, प्राण थे तुम, भाव भाषा वुद्धि थे तुम।
हस थे कवि के हृदय के, शिव सुन्दर शुद्धि थे तुम॥
तुम दया थे, शक्ति थे तुम, पाप के उद्धार थे तुम।
वहुत कोमल थे कमल तुम, करुण के करतार थे तुम॥

तुम अँधेरे मे उजाले, पगुओ की पूर्ण गति थे।
थकित पीडित त्यक्त जन को देव! तुम ही पूर्ण यति थे ॥
रात थे हम, चाँद थे तुम, पाप थे हम, पुण्य थे तुम।
मौन तुम ऐसे हुए अब, हो गये सब आज गुम सुम ॥

कौन अब पीडित हृदय को- थपकियाँ दे शान्ति देगा?
कौन गड्ढे मे गिरे को- दे सहारा खीच लेगा?
कौन पापी से नही पर- घृणा पापो से करेगा?
कौन बहते आँसुओ को- हृदय-आँचल मे भरेगा?

हाहाकार हुआ सारे मे, शोक-सिन्धु पर घन मँडराये।
जहाँ सो रहे थे जननायक, जन जन वहाँ दौड कर आये ॥
शीशे के कमरे मे बापू, पीडित उन्हे पुकार रो रहे।
क्यो न बोलते हे जननायक! जाने कैसे आज सो रहे?

मध्य रात्रि के बाद देह को- यमुना-जल से स्नान कराया।
मानो गगा-जल पर हमने- यमुना-जल का अर्घ्य चढाया ॥
खादी के फूलो की माला- बापू पहिने हुए सो रहे।
बापू चले गये दुनिया से, जड़ चेतन सब दुखी हो रहे ॥

बापू का परिवार विश्व था, पल भर मे सब दौडे आये।
या तो जनता थी बापू मे, या बापू सारे मे छाये ॥
'वेदो' की ध्वनि गूँज रही थी, मुखरित थी मिट्टी कण कण मे।
मानो सारा विश्व आज था- 'वेद-मन्त्र' की परम शरण मे ॥

धरती की गोदी मे शव था, चारो ओर मन्त्र बुलते थे।
मुक्ति-मन्दिरो के दर्वाजे- 'वेदो' की ध्वनि से खुलते थे ॥
शव के पास जला था दीपक, उडती थी सुगन्ध कण कण मे।
कण कण आँसू बरसाते थे- जननायक के महा मरण मे ॥

फूलो से शव ढका हुआ था, जल के अन्दर जलज सो रहा।
चन्दा की चाँदनी बिछी थी, मानो चन्दा फूट रो रहा॥
फूलो! बडे भाग्यशाली हो, चढे महामानव के शव पर।
आँसू नही हमारे रुकते, ईश्वर! आज दया हम पर कर!

फूल खिले शव बाग गया वन,
या इन मे जननायक सोते।
सौरभ या न रहा इन मे अब,
फूल पडे धरती पर रोते॥
या अब अर्घ्य बने जल मे तप–
ये जननायक के पग धोते।
या बलिदान चढा अपना अब,
सौरभ का बलिदान सँजोते॥

सुन्दर फूल बिछे धरती पर,
सौरभ हैं जननायक मानो।
पकज दूर नही तुम से अलि!
सूरज को उर मे पहिचानो॥
फूल हमे सब दीख रहे पर–
हाय सुवास नही दिखती है।
फूल सुगन्ध मिली तुम को वह–
क्यो फिर पास नही दिखती है?

ढूँढ रहे शव किन्तु कहाँ शव?
पाँव छुवे वह लाश मिले जो।
सौरभ आज बना इन मे शव,
ये सब सुन्दर फूल खिले जो॥

क्योकि वसा इन मे वह सौरभ,
आ शव ऊपर फूल चढे ये।
फूल चढे जब लाग गई छिप,
ढूंढ रहे सब मूक खड़े ये ।।

पौधे छोड दिये फूलो ने, बापू के शव पर आ बरसे।
या जग छोड फूल जाते थे, इस पापी दुनिया के डर से ।।
राष्ट्रपिता के नयन मुँदे थे, मानो मुँदे कमल सोये हो।
मानो मरे नही जननायक, मानो हम भ्रम मे खोये हो ।।

बाँध कतार भीड जनता की, दर्शन करने को आती थी।
जननायक को अभिवादन कर, आँसू लिये चली जाती थी।
आँसू बरस रहे थे ऐसे, वर्षा हो पानी पर जैसे।
हृदय फटा जाता है मेरा, वर्णन करूँ वेदना कैसे !

जन जन की बरसाती आँखे- सारी 'दिल्ली' भिगो रही थी।
उन दर्शन की प्यासी आँखे- मानो मोती पिरो रही थी ।।
जनता उमड़ घुमड घिरती थी, सारी 'दिल्ली' भरी ठसाठस।
हम ने बहुत जगाया रो रो, बापू हुए नही टस से मस ।।

धरती देख रहे थे नेता, फूट फूट 'राजेन्द्र' रो रहे।
बिखर बिखर रो रहे 'जवाहर', बापू कैसे आज सो रहे !
सब देशो के राजदूत आ- चढा रहे चरणो मे मोती।
दुनिया आज अनाथ हो गई, धरती फूट फूट कर रोती ।।

भारत माँ छाती धुनती थी, छाई थी विषाद की रेखा।
हमने मुसकाते फूलो को- टूट टूट कर रोते देखा ।।
ग्यारह बजे महामानव की- शव-यात्रा का समय आ गया।
झुके विश्व भर के सब झण्डे, छाया से आकाश छा गया ।।

राजकीय शव-यात्रा थी वह, सेना और सवार आ गये।
छाया काला रग शोक का, मानो काले मेघ छा गये॥
रक्खा शव सफेद खादी मे, ऊपर थी केसरिया चादर।
अर्घ्य नयन से, फूल भाव से- चढा रहे थे जन आ आ कर॥

पेडो पर, खम्भो पर, पथ पर- जनता ही जनता छाई थी।
कोटि कोटि जनता बापू के- अन्तिम दर्शन को आई थी॥
तिल धरने को जगह नही थी, जन-समुद्र उमडा पडता था।
चरण चूमने को बापू के, आज गगन घुमडा पडता था॥

'प्यारेलाल' आदि भक्तो ने- शव अर्थी पर धरा उठा कर।
अर्थी उठा चले कमरे से, गगन गया जयकारो से भर॥
राजकीय गाडी पर अर्थी, फूल बरसते थे अम्बर से।
धन्य धन्य अर्चना पिता की, आज बने नारायण नर से॥

अर्थी पर जननायक जाते, दर्शन कर लो, फूल चढा लो!
नेताओ के आँसू गिरते, चुग आँचल मे इन्हे उठा लो!!
जनता का विश्वास जा रहा, माँ किस पर अभिमान करेगी?
बोलो किस साकार सत्य का, काव्य-कला सम्मान करेगी?

हम अनाथ बच्चो को बोलो, बाकी किसका रहा सहारा?
माँझी चला गया दुनिया से, आज हुआ मँझधार किनारा॥
अर्थी ऐसे जाती जैसे- स्वतन्त्रता की शान जा रही।
अर्थी ऐसे जाती जैसे- भारत माँ की जान जा रही॥

अर्थी ऐसे जाती जैसे- जाती हो भूखे की रोटी।
अम्बर ऊपर गया धरा से, धरती बहुत हो गई छोटी॥
जननायक की अर्थी जाती, सरिता सिन्धु ताल सब सूखे।
आगे की सन्तति पूछेगी- हरे भरे पौधे कब सूखे?

हृदय-विदारक चिर विलाप मे– यमुना-तट पर अर्थी आई।
चन्दन की लकडी चुन चुन कर– 'राजघाट' पर चिता बनाई॥
जनता से मैदान भरा था, यमुना मे था आँखो का जल।
चरण धो रहा था बापू के– धीरे धीरे यमुना-जल चल॥

नभ से बापू की अर्थी पर– बरसे फूल पुष्प-यानो से।
मानो जलता हुआ दीप वह– घिरा हुआ था परवानो से॥
पन्द्रह मन चन्दन था, जिसका– सौरभ उडता था सारे मे।
दो मन सामग्री थी, जिससे– पवित्रता थी गुण न्यारे मे॥

पूजित फल नारियल एक मन, पन्द्रह सेर कपूर श्वेत घृत।
चर्चित चिता सजी अर्थी से, जीवित से थे शैया पर मृत॥
फूलो की असख्य मालाये– बरस पडी बापू के ऊपर।
फूलो से आँसू ढलते थे, लगी झडी बापू के ऊपर॥

सूरज ढलने लगा जिस समय– 'रामदास' ने चिता जलाई।
जननायक के बडे पुत्र ने– विधिवत् आकर अग्नि लगाई॥
धूँ धूँ करके चिता जल उठी, बरस पडा आँखो से पानी।
जननायक चल दिये जगत से, कण कण मे लिख अमर कहानी॥

जिनको कभी न रोते देखा, फूट फूट वे नेता रोते।
कहती चली चिता की लपटे– बापू जैसे रोज न होते॥
धरती फटती नही रुदन से, गिरता नही गगन धरती पर।
अब तक तो धरती थे बापू, लेकिन आज बन गये अम्बर॥

कुछ घण्टो के बाद चिता जल, एक राख का ढेर रह गया।
अन्त यही है हर प्राणी का, आँसू का इतिहास कह गया॥
प्रकृति पुरुष को तडप रही है, दूर देश चल दिया प्रवासी।
दीप बुझ गया, अन्धकार है, पुछी माँग, छा रही उदासी॥

आँखो से बहते पानी पर— राष्ट्रपिता की चिता जल रही ।
हाय! चिता के साथ साथ ही— जग की जीवन-ज्योति टल रही ॥
चाह जल रही, आह निकलती, नाव पडी रह गई राह मे ।
स्वतन्त्रता की सुख सम्राज्ञी— हाय! खडी रह गई राह मे ॥

हाथो मे से हस उड गया, मन के मोती कहाँ मिलेगे ?
सूर्य अस्त हो गया, कहो फिर— कैसे जग के कमल खिलेगे ?
आँखो के मोती चुगने को— हस कहाँ से लाये अब हम ?
दाह हो रहा, स्नेह नही है, कैसे दीप जलाये अब हम ?

आँखो के खारी सागर से— दिल का दाग नही धुल सकता ।
सागर के चौदह रत्नो से— सुख का द्वार नही खुल सकता ॥
अब तो तब तक रोओ जब तक— पत्थर सा दिल टूट न जाये ।
जब दीपक ही घर को फूँके, कैसे किस्मत फूट न जाये ?

मरने वाला अमर, काल ने— व्यर्थ खून मे हाथ रंग लिये ।
स्वतन्त्रता की फुलवारी पर— दीपक ने अगार धर दिये ॥
कटुता की अन्धी आँधी ने— जग का जलता दीप बुझाया ।
धवल चन्द्रमा की चाँदी पर— काला अमिट कलक लगाया ॥

पत्थर ने माँ की छाती मे— मारी थी किस दिल से गोली ।
विधवा सी रह गई उमगे, दहकादी हृदयो मे होली ॥
हृदय जल रहा है जन जन का, हरे खेत मे आग लगादी ।
स्वतन्त्रता के खिले फूल पर— दीपक दहका चिता जलादी ॥

जब तू ने गोली मारी थी, गिरे न तेरे हाथ टूट कर ।
जल न गया बापू के दृग से, गिर न पडा पिस्तौल छूट कर ॥
पर बापू तो क्षमाशील थे, कैसे तुझे जला देते वे ?
अपने गगा-जल से मन पर— कैसे खून लगा लेते वे ?

सुनते ह 'औरगजेव' ने– 'शाहजहाँ' को कैद किया था।
लेकिन अब इतिहास कहेगा– राष्ट्रपिता का खून पिया था॥
भारत माँ ! क्या ढूँढ रही है ? ढूँढ रही हूँ खोया धन वह।
आँखे उसे टटोल रही है, याद आ रहा है वह रह रह॥

धरती का देवता रूठ कर– स्वर्ग-लोक को चला गया है।
मानवता का बुझता दीपक– चलता चलता जला गया है॥
दीपक पर जलने वाले की– याद तडप कर रह जाती है।
छुई मुई सी स्मृति पीडा से– बिजली सी कुछ कह जाती है॥

आँखो मे सागर भर बादल– आँसू बरसाने आते हैं।
जननायक के पदचिह्नो पर– मोती ढुलकाने आते हैं॥
सरसो के पीले फूलो का– मुकुट लिये ऋतुराज आ रहा।
फर फर उडता हुआ तिरगा– राष्ट्रपिता के गीत गा रहा॥

लहरो पर बापू की कोयल– मीठी बोली बोल रही है।
खोल रही कटुता की गाँठे, जीवन मे रस घोल रही है॥
या बापू के फूल बीन कर, सौरभ प्रकृति उडा लाई है।
या स्वतन्त्रता पर सगम की– भस्म मिलन बन कर छाई है॥

रजनी ! इतने दीप जला कर– तू किसकी पूजा करती है ?
क्या बापू की यादगार पर– मणिमण्डित दीपक धरती है ?
नीलम की थाली मे दीपक, पगली ! कैसी आज दिवाली ?
सौरभ है पर फूल नही है, मुरझाई है डाली डाली॥

अम्बर के इतने तारो मे– 'ध्रुव तारा' दे रहा दिखाई।
उसके आस पास ही देखो ! बापू भी देगे दिखलाई॥
हमने स्वतन्त्रता का दीपक– फूक मार कर बुझा दिया है।
गिरते हुए आँसुओ का बल– हाय ! राम ने उठा लिया है॥

हाय ! हमारे ही हाथो से— अन्धे की लाठी टूटी है।
हाय ! हमारे ही पापो से— भारत की किस्मत फूटी है ॥
हाय ! मनुजता के कन्धो पर— आशाओ की लाश चली है।
हाय ! हृदय के मलयानिल पर— मनुष्यता की चिता जली है ॥

ऐसी एक दिवाली आई, जबकि दीप से हृदय जला है।
मृत्युलोक से देवलोक को— मानवता का दीप चला है ॥
तरुण तिरगे के पहरे मे— धरती का सूरज डूबा है।
स्वतन्त्रता के उजियाले मे— नारायण से नर ऊबा है ॥

हाहाकार मचा दुनिया मे, झण्डे झुके सभी देशो के।
सवेदना प्रकट की सब ने, अन्त नही थे सन्देशो के ॥
'बर्नार्ड शा' विश्व कवि बोले, मानो विश्व-वेदना बोली।
बापू का व्यक्तित्व कह गई— याकि धधक मानस की होली ॥

"जग मे अधिक भला होना भी— कितना खतरनाक होता है !"
रात चाँद को कब रख पाती, दिवस उजाले को खोता है ॥
'ब्रिटिश किग' का तार मिला तत्, सम्राज्ञी सम्राट-हृदय का।
"सब से बडा दु ख है हमको, सारा विश्व कृतज्ञ अभय का ॥

मानवता एव 'भारत' की— यह क्षति कभी न पूरी होगी।
पाप किया हम सब ने लेकिन— करनी जननायक ने भोगी ॥
वह खम्भा था जिसे पकड कर— हम दरियाओ मे कूदे थे।
उसने तन दे हमे बचाया, हम तो सब के सब डूबे थे॥"

और 'एटली' के आँसू ने— जननायक का सार सुनाया।
"विषधर ने डस लिया देवता, दाँतो ने दुनिया को खाया ॥
शान्ति और भाईचारे की— जो आवाज उठा करती थी।
शान्त हुई वह बीन सदा को, जो जग मे जीवन भरती थी ॥"

'अमेरिका' से 'ट्रूमन' बोले- "बापू अमर विश्व की निधि थे।
मानवता की मधुर मूर्ति थे, मनुष्यता की गति यति विधि थे॥
कोटि कोटि जनता पर उनके- उपदेशो का अमर उजाला।
राजनीति अध्यात्म सभी का- आज सो गया रचनेवाला॥

आदर्शों के लिये जिये वे, आदर्शो के लिये मर गये।
सबसे बडा वही स्मारक है, वे जो कुछ भी यहाँ कर गये॥"
'अफ्रीका' से कहा 'स्मट्स' ने- "युग के महापुरुष थे गाँधी।
उस दीपक को बुझा न पाई- जग की कोई भी तो आँधी॥

पूज्य महापुरुषो से थे वे, मान्य मानवो के आदर थे।
जिस मे कमी न किसी रत्न की, वे ऐसे विशाल सागर थे॥"
'भारत-कोकिल' रुँधे कण्ठ से- टूटे तार जोड़ती बोली-
"अडिग तैरती हुई सिन्धु मे- चली गई बापू की डोली॥

पर वह यात्री छोड़ गया है- पदचिह्नो को, चलो उन्हो पर।
जनता जननायक बन जाये, उन के सिद्धान्तो को लेकर॥
सम्राटो का महाशिरोमणि- निर्मल यमुना-तट पर सोया।
'दिल्ली' ने उसके चरणो को- अपनी अमृत-धार से धोया॥

मुट्ठी भर जर्जर शरीर वह- सब वीरो मे महावीर था।
जो न मिटाने से मिट सकती- वह ऐसी अद्भुत लकीर था॥"
पूज्य प्राण 'राजेन्द्र' हृदय से- बोले गगा-जल बरसाते।
"अब वे कोमल चरण नही हैं, जिनका स्पर्श प्रेम से पाते॥

वरद हस्त वे नही रहे अब, जिन का आशीर्वाद प्राप्त है।
अब न सुनेंगे मधुर शब्द वे, जिन मे सारा विश्व व्याप्त है॥
दयापूर्ण वे नेत्र नही अब, रहा न नन्दन वन सा आनन।
अब न रहे वे अमृत-सरोवर, अब न रहा वह सुन्दर सावन॥

पर वापू ही वता गये हैं– देह अनित्य, अमर है आत्मा।
देवलोक से देख रहा है– हम सव को सव का परमात्मा॥
वापू का व्यक्तित्व महा है, अमर हुआ धरती का तारा।
उस पवित्र आत्मा के पथ पर– चलने से सम्मान हमारा॥

गाँधी जी का स्मारक उनके– कार्यो का लम्वा लेखा है।
प्रेम अहिसा के प्रतीक मे– मानव का समाज देखा है॥
गाँधी से वढकर दुनिया मे– कोई हिन्दू हुआ न होगा।
हम सव के पापो का फल उस– हम सव के ईश्वर ने भोगा॥

झुक झुक कर दुनिया के झण्डे– उस को आज प्रणाम कर रहे।
हर मनुष्य उस को रोता है, मुस्लिम उसे सलाम कर रहे॥"
वापू की हत्या से सव के– धधक उठी हृदयो मे होली।
"मेरे केवल दो वेली थे"– 'मीरावेन' तडप कर वोली॥

"ईश्वर एक, दूसरे वापू, अव वे दोनो एक हो गये।
उनको मूँद लिया आँखो मे, मन मे पैर पसार सो गये॥
वापू की आत्मा पहिले से– अव ज्यादा नजदीक छा गई।
एक समय वापू वोले थे, याद मुझे वह वात आ गई॥

जव मेरा पार्थिव शरीर यह– इस दुनिया मे नही रहेगा।
जुदा नही होगे तव भी हम, जल मे जल मिल सदा वहेगा॥
वाधा रूप देह जग मे है, वापू ने ये शव्द कहे थे।
श्रद्धा से ये शव्द सुने थे, कानो मे वे वसे रहे थे॥

अव अपने अनुभव से मैंने– उन शव्दो का सार निकाला।
सत्य समझ पाई हूँ अव मे, अन्तर मे हो गया उजाला॥
भूत भविष्यत् वर्तमान का– भान हो चुका था वापू को।
इस होनेवाली घटना का– ज्ञान हो चुका था वापू को॥

मैंने पूछा था बापू से, जब 'ऋषिकेश' जा रही थी मैं।
मानो आँखो पर पट्टी धर– परम प्रसाद पा रही थी मैं ॥
जब गौशाला बन जायेगी, उद्घाटन को आप चलेंगे?
गाय, गरीब, दुखी, बापू से– पाकर आशीर्वाद पलेंगे ॥

उत्तर मे बोले जननायक– गाँधी नही वहाँ जायेगा।
बात स्वयम् से कर कुछ बोले– मुर्दा क्या कुछ कर पायेगा!
सुन कर शब्द भयकर ये मैं– काँप गई पर कहे न जग से।
चन्दन लगा लिया माथे पर, मैंने जननायक के पग से ॥

अनशन आकर चला गया जब, मैं समझी आपदा टल गई।
पर भविष्य-वाणी न रुकी वह, आशाओ की चिता जल गई ॥
प्रेम दया के सागर थे वे, फूलो से कोमल मन वाले।
किन्तु वज्र से भी कठोर थे, यदि मुँह फाड खडे हो काले ॥

अन्तर के दोपो पर जय पा, बाहर के दोषो को ढाया।
आओ! चलो! बढो उस पथ पर– बापू ने जो मार्ग दिखाया ॥"
बापू की पूजा को आया– हर सागर का खारी पानी।
'बिडला' जी के आँसू बह कर– बापू की लिख गये कहानी ॥

"मैं बाईस वर्ष का था जब, गाँधी जी को तब पाया था।
गुजराती धोती पगडी मे– मानव मुसकाता आया था ॥
उस दिन बापू के स्वागत मे– दौड दौड कर जनता आई।
उस दिन बापू की वाणी मे– दुनिया भर की भाषा पाई ॥

जन्म जन्म के पुण्य फले जो– चरण-कमल बापू के पाये।
उसने लाखो दीप जलाये, हमने लाखो दीप बुझाये ॥
मुझे याद है राजनीति मे– जिस दिन बिल्कुल सन्नाटा था।
तब गाँधी जी ने सीपी से– यह अथाह सागर पाटा था ॥

लहरे उन्हे खीचती उल्टा, पर अनुकूल चले जननायक ।
झंझाग्रो मे दीपक वन कर, जग के लिये जले जननायक ॥
वापू हर प्राणी की निधि थे, सव के सूरज थे धरती पर ।
किसको अपना नही वनाया- वापू ने आत्मैक्य निभा कर ?

अन्तिम अनशन पर वापू के, मैंने कहा कि अनशन छोडो !
त्राहि त्राहि दुनिया मे होगी, और न अपना अमृत निचोडो !
मेरे घर मे भूखे रह कर, मुझे न यम की तरह वनाओ !
व्राह्मण भूखा रहता है जव, तव क्या जी सकते वतलाओ ?

"पर मैं तो व्राह्मण न तुम्हारा", "वापू ! आप महा व्राह्मण हैं ।
महा व्राह्मणो से भी ऊँचे, आप महा व्राह्मण के प्रण हैं ।"
यह सुन कर हँस पडे प्राण पर- हिले नही, उपवास न छोडा ।
अपने प्राण विश्व मे भर कर- अपना अन्तिम अनशन तोडा ॥

जग मे पग पग पर दीपक धर- वापू चले गये इस जग से ।
धरती ने सव कुछ पाया है- गाँधी जी के पावन पग से ॥
कितनी सन्ध्याये आती थी, वापू पर छाया छाने को ।
किन्तु आज सन्ध्या भूखी थी, आई वापू को खाने को ॥

वापू की प्रार्थना-सभा मे- अच्छे वुरे सभी आते थे ।
गाँधी जी निर्मल वाणी से- अमृत सभी पर वरसाते थे ॥
'वम घटना' के वाद उन्हो की- रक्षा को रख दिये सिपाही ।
पथ पर चलता रहा निरन्तर, राम-भरोसे का वह राही ॥

कहा पुलिस ने जो आयेगा, अव हम उसकी झाडी लेगे ।
वापू वोले, मेरी रक्षा- राम करेगे तो कर देगे ॥
मेरे वैद्य 'राम' हैं केवल, मेरी दवा 'राम' ही है वस ।
मेरी रक्षा कर सकता है- केवल 'राम' नाम का ही रस ॥

अन्त 'राम' ही के मन्दिर में– चला गया वह राम-दुलारा।
तिल तिल कर जल गया देश पर, जनता की आँखो का तारा॥
मौते आई और लौट कर– चली गई उनके सर पर से।
'तीस जनवरी' की सन्ध्या को– स्वप्न रह गया मरण-खबर से॥

स्वप्न देखता रहा रात भर, बापू से करता था बाते।
जाने बीत गई दुनिया मे– इसी तरह से कितनी राते॥
कहा स्वप्न मे उठ बापू ने, काम न यह नादान एक का।
यह सब का षड्यन्त्र भयकर, जहर पिया मैंने अनेक का॥

मेरी भारी जीत हुई है, हिसा की इस बडी हार से।
इधर उधर की और अनेको– बाते करते रहे प्यार से॥
लो ग्यारह बज गये, आप अब– मुझ को मरघट ले जायेगे।
यमुना के उस प्रेम-किनारे– सुख से मुझे सुला आयेगे॥

बस चैतन्य रूप मे मैंने– वे अन्तिम दर्शन पाये थे।
आँख खुली तो बापू खोये, अन्धकार जग मे छाये थे॥"
शोक-सिन्धु मे हर प्राणी की– पीडा आँसू बहा रही थी।
ससृति ने लहरो से उस दिन– मृत्यु शोक की कथा कही थी॥

ऐसा प्राणी कौन कि जिसकी– आँखो से सागर न बहा हो।
शायद ही इस जड चेतन मे– कोई रोये बिना रहा हो॥
राजनीति ही नही उस समय– हर निर्मिति मरघट मे रोयी।
मानो शुभ सिद्धान्तो की माँ– हम सब के पापो से सोयी॥

हाथो से खो हृदय-धन को चाँदनी रात रोती।
क्या ऐसा भी समय करता जीत मे हार होती॥
रोओ रोओ प्रलय धधकी, रो रही है कहानी।
रोको रोको जलधि-जल को, ज्वार मे आग पानी॥

वेदना के फूल गीले, शूल से आँके ।
शूल से आँके कि अपनी भूल से आँके ॥

दृगो से मोती बरस कर वज्र पर टूटे ।
सुमन पत्थर पर चढा कर भाग्य ही फूटे ॥
पाप ने वरदान को अभिशाप से तोला ।
भूमि के उत्थान को निज पाप से तोला ॥

बूँद के प्यासे पपीहे कूल पर झाँके ।
वेदना के फूल गीले, शूल से आँके ॥

अर्चना के अर्घ्य से पाषाण कब पिघले ?
मौत धरती की हुई है, अश्रु वह निकले ॥
आज दीपक पर शलभ ने आग उगली है ।
जो न सुननी थी खबर वह आज सुनली है ॥

चाँद सूरज के निलय मे राहु भी झाँके ।
वेदना के फूल गीले, शूल से आँके ॥

देश की स्वाधीनता मे तम न झाँका क्या ?
प्यार को धिक्कार से जग ने न आँका क्या ?
भाग्य को वैधव्य के लघु तूल से तोला ।
अर्चना मे भूल से विष भूल ने घोला ॥

धवल राका मे बहे हैं अश्रु भी माँ के ।
वेदना के फूल गीले, शूल से आँके ॥

चले फूल चुगने बापू के, 'राजघाट' पर चिता-किनारे ।
फूल चिता के चमक रहे ह, या धरती पर चन्दा तारे ॥
चिता शान्त है, बापू सोये, धीरे धीरे फूल उठाओ !
जाग न जाये मेरे बापू, यमुने ! धीरे धीरे गाओ !!

अमृत दुग्ध से अभिसिंचित कर, जननायक के फूल उठाये।
चुन चुन गंगा-जल मे धो धो, ताम्र-पात्र मे फूल सुलाये॥
चन्दन केसर दुग्ध नारियल, गुणातीत तुलसीदल डाला।
सागर आज भरा गागर मे, जल थल नभ मे उदित उजाला॥

आज आरती की थाली मे– बापू बन कपूर जलते हैं।
भस्मी से सौरभ उडता है, चॉद चॉदनी मे चलते हैं॥
तीर्थ त्रिवेणी के सगम पर– बापू की अस्थियॉ ले चले।
लहरे रोक न पाईं उनको, बापू अपनी नाव खे चले॥

'आगा खॉ–मन्दिर' की प्रतिमा, 'बा' के फूल त्रिवेणी-जल मे।
बाट देखते थे दीपक ले, बहते हुए फूल छल छल मे॥
पूजा तन के फूल चढा कर– निर्मल जल को सीच रही थी।
दूर देश से प्रिया प्राण को– पवित्रता से खीच रही थी॥

'राजघाट' से ताम्र-पात्र मे– भस्मी भर ससार चल पडा।
तारो ! तुमसे कही बडा है– गॉधी का परिवार यह बडा॥
स्वतन्त्रता चलती थी ऐसे– जैसे विधवा की सुन्दरता।
जैसे नीर भरे प्यासे दृग, जैसे दुखिया की दुर्बलता॥

'दिल्ली' से विशेष गाडी मे– बापू की अस्थियॉ ले चले।
फूलो से भर गई रेल वह, आॅसू फूट दृगो से निकले॥
ताम्र-पात्र मे फूल फूल को– देते हुए सुगन्ध जा रहे।
जन से जननायक बन कर ये– लेते हुए सुगन्ध जा रहे॥

धरती मॉ ने करवट बदली, नाच रहे गा गा नटनागर।
सागर वहॉ जहॉ धरती है, धरती वहॉ जहॉ था सागर॥
यह मुट्ठी भर भस्म प्रलय की– मनचाही मिल कर रोकेगी।
फूलो की मुट्ठी भर भस्मी– तूफानी सागर सोखेगी॥

चरण-धूलि चन्दन है इनकी, भस्मी सौरभ वन कर जाती।
आज रेल के इस डिब्बे मे– मानो सोमलता लहराती॥
ये उसकी अस्थियाँ जा रही– जिसमे तीनो लोक व्याप्त है।
जिसके फूल जा रहे उससे– पेडो को फल फूल प्राप्त हैं॥

लिये उजाला आया था वह, दिये उजाला चला जा रहा।
बत्ती वन, भर स्नेह हृदय का, देखो! दीपक जला जा रहा॥
जितने फूल हुए, होगे जो, वे उन सब फूलो की माला।
माली सोया, फूल रो रहे, सूरज का रो रहा उजाला॥

फूलो! क्यो अव हँसी नही है? क्योकि नही वह फूल हमारा।
तारो! क्यो अव चमक न तुम मे? क्योकि आज टूटा 'ध्रुवतारा'॥
पेडो! किसे प्रणाम कर रहे? उसे जिसे पहिचान न पाये।
वादल! कव वरसा करते हो? वापू हमे याद जव आये॥

पग-पद्म पखार रहे उसके,
दृग-फूल लिये जल के झरने।
झरने झरते, करुणा झरती,
भव-भाव चले कविता करने॥
वरसे दृग-वादल पीर भरे,
धरती पर रोदन फूट चला।
वह तृप्ति चली जन के मन की,
जनता पर अम्वर टूट जला॥

जय गूँज रही, चल रेल पडी,
दिनमान निहार रहे विधि को।
जनता उमडी पडती पथ मे,
दृग देख रहे अपनी निधि को॥

वह रेल गई जिस मजिल से,
उस मञ्जिल को हम ताक रहे।
हर ओर मुसाफिर की लय है,
हर मजिल से गम झाँक रहे॥

रसना रस-धार उड़ेल रही,
जननायक की जय हो! जय हो!
तरुओ पर कोयल बोल रही,
सुखदायक की जय हो! जय हो!!
उडती चिड़िये जय बोल रही,
कविता जय हो जय हो कहती।
लहरे दृग-बूंद उछाल रही,
हर पर्वत से करुणा बहती॥

धुन मे 'धुन राम' सुना कलिके!
बलिदान सुने जनता सुनले।
हर मानव फूल सुगन्धित हो,
हर दीपक अर्चन को चुनले॥
अलि गूँज रहे रस मे लय हो,
जब फूल लिये जनता चलती।
जलते तब दीप सुधाकर से,
जब ज्योति दिवाकर की ढलती॥

श्यामल बादल सौरभ लेकर,
नीर भरा मधुमास लुटाते।
फूल खिले रँगरेज बने घन,
रग धरा पर छीट बिछाते॥

मानव की वह राख चली अलि!
मेघ बिखेर रहे दृग-मोती।
पल्लव से बिखरी मरमो पर—
कौन खडी दृग-हार पिरोती?

पीपल सूख गये धरती पर,
सावन सूख गये, दृग गीले।
सूख गई सरिता गति रो कर,
आज पडे सब के मुँह पीले॥
हाय! किसे अब स्वागत दे अलि!
कोयल गा कर गीत रसीले।
दीप गया बुझ, सूख गये तरु,
सुन्दर फूल पडे सब पीले॥

किसने यह बाग उजाड दिया?
किसने सुख के तरु तोड दिये?
जग-मोहन से गउएँ बिछडी,
वन मे फिरती, तृण छोड दिये॥
चल फूल रहे, झड फूल रहे,
पथ चूम रहे, पग चूम रहे।
खिल फूल रहे, कृपि मूक खडी,
तरुओ पर पल्लव झूम रहे॥

रजनी भर याद लिये किसकी—
नभ-तारक बालक से रोते।
किसकी यह पीर भरी लय है?
तरु, नीड गिरे, उडते तोते॥

तरु टूट गये, गिर नीड़ पड़े,
उड प्राण चले, करुणा छाई।
किसको उड ढूँढ रहे जुगनू ?
किसकी पग-धूलि हवा लाई ?

बरसात रुकी, रुक वायु गई,
पथ साथ चला, सरिता चलती।
जलती पथ की वटिया पथिका,
झरते झरने, धरती जलती ॥
बदली बरसी, जलती धरती,
मछली जल मे जल पी मरती।
गति आज रुकी, यति दूर हटी,
शिशु की खुशबू जग से डरती ॥

मर्त्य वहाँ पर स्वर्ग गया बन,
तीर्थ 'प्रयाग' प्रभा पर आये।
फूल गये उस के पथ मे बिछ,
सुन्दर फूल 'जवाहर' लाये ॥
शाश्वत फूल लुटा धरती पर-
रेल रुकी प्रभु के गुण गाती।
गूँज उठे जय-घोष धरा पर,
दीपक गा रज दीप जलाती ॥

कविता उमडी करुणा-रस सी,
सरिता पर थी जल की प्यासी।
कविता कहती कवि! आज मुझे-
कर दे जननायक की दासी ॥

पग-धूलि उठा रवना रच लो,
कविता कहती विधवा जैसी ।
सुख देख हँसी, दुख देख हँसी,
दुनिया रचती रचना कैमी !

कण कण मे सौरभ वरसाते, शाश्वत फूल 'प्रयाग' आ गये ।
भस्म आ गई चन्दन वन कर, धरा गगन पर मेघ छा गये ॥
ताम्र-पात्र वह जिसके अन्दर– सव तत्त्वो के फूल धरे थे ।
जितने रस रसना के अन्दर, वे सव घट मे आज भरे थे ॥

चला जलूस भस्म का अद्‌भुत, मानो दिग्विजयी जाता है ।
या जलूस यह वन-यात्रा का, जन जन राम राम गाता है ॥
मानो आज प्रकृति रो रो कर– हरियाली को विदा कर रही ।
सूखा सिन्धु, वावली वदली, पीर प्यास मे नीर भर रही ॥

धरती ने दी ज्योति गगन को, वापू नभ मे दीप धर रहे ।
तरु शहीद पर फूल चढा कर– धरती का दर्वार भर रहे ॥
कात सूत की माला वुन वुन– मजिल मजिल ने पहनाई ।
वरुण वरसने लगे दृगो से, पूजा दीपक वनकर आई ॥

अम्वर छिपा आज जनता से, धरती पर जनता की चादर ।
जिसमे सागर भरा हुआ है, चला जा रहा है वह गागर ॥
फूलो का सौरभ जाता है, धरती का सौन्दर्य जा रहा ।
ठहरो ! मुझे चरण छूने दो, रोता हुआ किसान आ रहा ॥

नीडो मे रो रहे पखेरू, लो नीडो की नीव जा रही ।
कवि का हृदय फटा जाता है, कोयल ! कैसे गीत गा रही ?
छोड गई वचपन मे जननी, 'नयी नवेली' का शिशु रोता ।
वीज पडे रह गये अधूरे, माली सोया वोता वोता ॥

गंगा यमुना सरस्वती के– संगम पर सगम जाता है।
आज त्रिवेणी वना तिरगा– सन्तो की वाणी गाता है॥
मानो नभ-गगा वापू पर– लहरो की निधि चली लुटाने।
जननायक की जय हो! जय हो!! गीत त्रिवेणी लगी सुनाने॥

अर्घ्य लिये पग पूज रही अलि!
फूल भरा घट देख त्रिवेणी।
सगम लेकर दौड पडी गति,
खोल रही विधवा निज वेणी॥
फूल धरे उस नाव नई पर,
जो थल मे जल मे चलती है।
नाव चली अलि! नीर भरे दृग,
अर्घ्य लिये कविता ढलती है॥

'थल-जल मोटर' में घट धर कर– वैठे जगतपिता के वालक।
वोल उठी संगम की लहरे– जय जय जय जय जय जगपालक!
तन की भस्म वन गई धरती, मन की लहर सिन्धु का जल है।
अस्थि-अस्त्र दे दिया विजय को, जय मे उसी ज्योति का वल है॥

चल नाव पडी, जय गूँज उठी,
जननायक की जय हो! जय हो!!
जलवाद्य वजे करुणा-रस मे,
जगपालक की जय हो! जय हो!!
जल को दृग-नाव निहार रही,
लहरे रस-धार उडेल रही।
जल की परिये जननायक से–
जल की लहरों पर खेल रही॥

जल मे मिल के जल रूप बने–
मछली कछवे जल के वासी।
पद-पद्‌म पखार रही जल से,
सरिता चिर दर्शन की प्यासी ॥
वह एक अनेक विवेक वहाँ,
लहरे जिसमे करती क्रीडा।
घुलती मिलती चलती लहरे,
अवगुण्ठन मे जग की व्रीडा ॥

लहरो की माला पर नौका, नौका पर घट घट का वासी।
तैर रहा घट, लहरे लपकी, बदली बरस रही है प्यासी ॥
लहरे चक्कर काट रही हैं, मानो परिक्रमा करती ह।
या वे अर्घ्य चढा कर घट पर– भाव त्रिवेणी मे भरती हैं ॥

चक्कर लगा त्रिवेणी-तट का, अस्थि-नाव सगम पर आई।
सगम पर तीनो नदियो ने– लहरो की माला पहिनाई ॥
'वेद-मन्त्र' जल मे से गूँजे, सुने स्वस्ति-वाचन कण कण मे।
'वेद' सुनाता था दुनिया को– मिलता हुआ क्षितिज क्षण क्षण मे ॥

सगम मे अस्थियाँ छोड दी, अर्घ्य बन गया वह पवित्र जल।
जल मे जलज मिल गया पल मे, नीर बन गया नीरज निर्मल ॥
ऐसे फूल मिले सगम मे, जैसे गीत सुरो मे मिलता।
ऐसे मरण खिला बापू का, जैसे फूल डाल पर खिलता ॥

चित्रकार ने एक रग से– रंग बिरगे चित्र बनाये।
श्यामल बादल किस पर रीझे, रिम झिम करते झुक झुक आये ॥
क्यो तारे धर लिये हृदय मे, क्यो चन्दा को चुरा ले गये ?
क्यो वियोगिनी के नयनो से– काजल लेकर नीर दे गये ?

मेघो से कह रही पुजारिन, मुझे अर्घ्य के लिये नीर दो।
जिसकी तसवीरे आँखो मे, उसको मेरी मधुर पीर दो!!
मैं उसकी स्मृति मे बदली हूँ, जिसके छाया चित्र चल रहे।
मैं युग युग से जला रही हूँ, अम्बर मे जो दीप जल रहे॥

मूक तारे जल रहे हैं, गगन-गगा के किनारे।
दीप बुझ कर कह रहे हैं– टूटते रहते सितारे॥
फूल जग से पूछते हैं– अर्चना बलिदान क्या है?
कह रही यात्रा पथिक से– पगो की पहिचान क्या है!

प्रेम-तरु को ढूँढती है– लीन होकर आज छाया।
तन तपाया, मन हराया, मेघ नयनो को बनाया॥
धूप सौरभ मे मिली अलि! धूप मे सौरभ मिला वह।
मिल गया जल मे जलज अलि! नीर नयनो से गया बह॥

घास की गठरी धरा पर– धर खडी वह कौन रोती?
कौन पतझड सी प्रलय मे– आँसुओ का बोझ ढोती?
ये फटे मानस धरा के, तुम इन्हे कहते गुफाये।
पर्वतो की पक्तियो पर– क्यो न पत्थर दृग झुकाये॥

ह्रस्व हरियाली हुई है, दीर्घ सत विस्तार मे लय।
करुण कोमल कल्पना से, काव्य घन पर कुसुम किसलय॥
साथ हरियाली बटोही, स्वर्ण पगडण्डी जगत की।
लूट ली किसने न जाने, हाय! मन-मण्डी जगत की॥

स्वप्न जो जग देखता था, याद उसकी रह गई है।
रह गई है बात बाकी, दीपिका जल बह गई है॥
राख मुट्ठी मे लिये जग– हँस रहा है, रो रहा है।
स्वप्न ही मे क्या! मनुज तो– जागरण मे सो रहा है॥

नीड जिस तरु पर लगाया, पेड ही वह गिर पडा अब।
दे रहा आवाज किमको, कौन जगल मे खडा अब?
बावले! ससार मे तो बुलबुले का साथ केवल।
विश्व भगुर स्वप्न है यह, चल रहा तू एक दो पल॥

गिर पडे जो वेदना से, वे बने चट्टान टीले।
क्या धरा पर ढूँढते हैं खँडहरो के नयन गीले?
वेदना रोती विजन मे, ग्राम गिरते जा रहे हैं।
मूक कच्चे घर व्यथा से धूलि-स्वर मे गा रहे हैं॥

मोतियो के कोप भर भर, मेघ आते पूजने पग।
घूमते विस्तार बनकर, प्यार बन कर पैर डगमग॥
रत्न धरती मे छिपा कर, ग्राम निर्धन से खडे ये।
गाय मानो खो गईं सब, 'कृष्ण' खोये से पडे ये॥

मूक 'वृन्दावन' न जाने ढूँढता पग-धूलि किसकी?
आज 'गोकुल' मे खडी हैं बेसहारे गाय जिसकी॥
'गोपियाँ' जिसके विरह मे बावली सी डोलती हैं।
ग्राम-बालाये उसी से शब्द लेकर बोलती हैं॥

वह खडा है देख लो सब, शान्त 'सेवाग्राम' बन कर।
शान्त शुभ 'साबरमती' से आ रही वह हवा छन कर॥
आज के निर्माण मे से वह सुगन्धित पवन बहता।
आ रही यह ध्वनि कहाँ से- मैं सदा सब ओर रहता॥

तुम धरती पर पेड लगाना, मैं हरियाली बन आऊँगा।
तुम धरती पर फूल खिलाना, मैं सौरभ बन बस जाऊँगा॥
तुम जग मे कृपि केसर बनना, मैं उसमे फल फूल बनूँगा।
तुम सरिता मे तरिणी बनना, मैं सरिता का कूल बनूँगा॥

तुम बन यत्न अगर ढूंढोगे, तो मैं सिद्धि बना आऊँगा।
तुमने यदि निर्माण किया तो, मैं निर्मिति का फल लाऊँगा॥
दीपक के दिल मे लौ जलती, ज्वाला मे वह तप करता है।
घोर तमिस्रा मे तब ही तो– दीपक का प्रकाश भरता है॥

मैं ही दीपक मे प्रकाश हूँ, मैं ही हूँ मनुष्य की भाषा।
मैं ही हूँ मेघो की वर्षा, मैं ही हूँ रवि की अभिलाषा॥
जिज्ञासा से मिलता हूँ मैं, मानव मेरा ही स्वरूप है।
दीख रहा यह जो कुछ वह सब– मेरा ही प्रतिबिम्ब रूप है॥

पावस से बरसे जननायक,
भावुकता कवि की बन आये।
शान्त सुधाकर ने रसना पर,
पाहुन-प्राण प्रसून चढाये॥
शान्ति सुधा-रस सार वही अब,
राम स्वरूप किसान वही है।
स्वर्ग वही, जगदीप वही गुण,
भक्ति वही, स्वर ज्ञान वही है॥

प्राण वही, मनुहार वही प्रिय,
सावन की झनकार वही है।
नीरद, नीरज, नीर वही अलि!
नाव वही, पतवार वही है॥
काव्य वही, श्रम-सार वही रस,
खेत वही, गुण ग्राम वही है।
सूरज चाँद वही रस-सागर,
कान्ति वही, अभिराम वही है॥

गोकुल का वह 'कृष्ण' कलाधर,
मानव की जय-ज्योति वही है।
कुञ्ज वही, अलि-गुंज गिरा वह,
सगम से सुख-धार वही है॥
मानस मोर मराल वही शिव,
सौरभ-सार वयार वही है।
निर्धन मित्र दरिद्र मिला जब,
मोहन की दृग-धार वही है॥

श्वास बने घन सागर लेकर,
चूम रहे नभ मे शशि का मुख।
रोकर आज किसान रहा कह—
छीन लिया वह सावन का सुख॥
अम्बर लेकर दीप गया जब,
हा! दुनिया पहिचान सकी तब।
जीवन लेकर मेघ गये जब,
जीवन को यह जान सकी तब॥

क्यो अलि! गूंज रहे कमलो पर ?
पागल! ये पग पकज उज्ज्वल।
क्यो शलभो! जलते जलतो पर ?
भावुकते! जय-दीप रहे जल॥
सूरज! क्यो तुम दूर गये बस ?
क्योकि धरा पर पाप गये बढ।
अक सजा नभ मे उसके हित,
सागर लेकर मेघ गये चढ॥

वृन्त! कहो किसके पग पावन-
पूज रहे प्रिय फूल भुला कर ॥
वायु! भुला मत भाव लता पर,
डोल रही स्मृति प्रीति भुला कर ॥
चचल आँचल मे स्मृति ले उड,
ला मनमोहन पास वुला कर ।
स्वप्न मुझे वह याद नही अव,
पॉव गये कव स्वप्न सुला कर ॥

सागर मे अमरत्व मिला वह,
मेघ वनी मनुहार तपस्या ।
अम्वर मे रस-धार गई वह,
प्रश्न हुए हल, शून्य समस्या ॥
इन्दु! कहाँ वह विन्दु कलाधर ?
सिन्धु ! सुधाकर आज कहाँ है ?
ले चल चारु चकोर! वही पर-
पूर्ण प्रभाकर प्यार जहाँ है ॥

नीरज आज खिले जिससे वह-
सूरज की मुख-ज्योति कहाँ है ?
तापस कौन कहाँ तप मे रत,
जो तम मे तप तेज यहाँ है ॥
फूल खिला किस ओर कहाँ अलि!
जो घनसार सुगन्ध यहाँ है ।
सौरभ फैल रहा जिसका यह,
केसर का वह फूल कहाँ है ?

कहाँ गई तरुओ की छाया,
कहाँ गई आँसू की गोदी ?
भूमण्डल जल मग्न हो गया,
हमने कैसी धरती खोदी ॥

दीपो की रोशनी रो रही,
आँसू पारावार वन गये ।
सव पुण्यो की हार हो गई,
फूल डाल को भार वन गये ॥

श्वास श्वास से सागर मथ कर,
गरल पान कर अमृत दे गये ।
तुम शहीद हो गये फूल पर,
पुण्य दे गये, पाप ले गये ॥

चरण-ज्योति छूली जिसने भी,
वही विश्व मे राह वन गया ।
जिस पर दया हुई वापू की,
वह दाता की चाह वन गया ॥

तुम रोये तो प्रलय हो गई,
अगर हँसे तो फूल खिल गये ।
तुम खोये तो धरा खो गई,
अगर मिले तो प्राण मिल गये ॥

अर्चन की आशा ! आ जाओ,
मन्दिर की आरती बुलाती ।
आँखो मे बस गये जागरण,
नीद किसी को नही सुलाती ॥

जागरण मे वस रहे हो।
फूल मे तुम हँस रहे हो॥
गीत मे हर राग हो तुम।
वीज वन कर वाग हो तुम॥

तुम न आते हम न होते।
तुम न खोते हम न रोते॥
तुम बुझे सूरज जगा कर।
तुम गये गगा वहा कर॥

तुम कगारो के कगारे।
तुम सहारो के सहारे॥
तुम चले तो सृष्टि चल दी।
पैर से हलचल मसल दी॥

काल तुमको डस न पाया।
मौत को तुमने हराया॥
तुम न मर कर भी मरे हो।
फूल मे खुशवू भरे हो॥

तुम हिले तो भूमि काँपी।
दो पगो से सृष्टि नापी॥
सब युगो के वोल हो तुम।
हर श्रमिक के मोल हो तुम॥

हर नयन के नीर थे तुम।
हर धनुष के तीर थे तुम॥
तुम रुके तो रुक गई गति।
हर पवन को मिल गई यति॥

आग पर चलते रहे तुम।
दीप से जलते रहे तुम॥
तुम पुरातन पर नये हो।
चाँद सूरज दे गये हो॥

हर चमन मे चहकते हो।
हर महक मे महकते हो॥
नाश के क्षण पर अमर हो।
साँप के फण पर अमर हो॥

दृष्टियाँ नग चूमती हैं।
चोटियाँ पग चूमती हैं॥
तुम सुवह के रथ वने हो।
तुम पथिक से पथ वने हो॥